इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
भारतीकी विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

भाषा बोध

1

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

- इन्दिरा गाँधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

इग्नू
जन-जन की विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

1

भाषा बोध

इकाइ 1
तिरहुता आ देवनागरी : लिपि एवं वर्तनी परिचय 5

इकाइ 2
शब्द आ मुहाविरा 22

इकाइ 3
संस्कृति विषयक बोध एवं शब्दकोशक उपयोग 47

इकाइ 4
समाजविज्ञान विषयक बोध एवं निबन्ध-रचनाक परिचय 62

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. धीरेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. भीमनाथ झा
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.आर.ए.बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर

डॉ. चन्दनन्दन झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.एन. कॉलेज, मधुबनी

प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा

संकाय सदस्य

प्रो. शशिधर कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू कैम्पस गढ़ी,
नई दिल्ली–110068

डॉ. मिनती चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू कैम्पस गढ़ी,
नई दिल्ली–110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाई लेखक

डॉ. रमण झा (इकाई 1)
प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. मीना झा (इकाई 2)
प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा (इकाई 3)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
बी.आर.ए. बिहार वि.वि., मुजफ्फरपुर

डॉ. चन्दनन्दन झा (इकाई 4)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
बी.एन. कॉलेज, मधुबनी

पाठ्यक्रम संपादक

डॉ. धीरेन्द्र झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक

प्रो. शशिधर कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू कैम्पस गढ़ी,
नई दिल्ली–110068

प्रबन्ध संयोजक

डॉ. यू. एन. त्रिपाठी
डॉ. एस. एस. मिश्र
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र,
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

जनवरी 2012

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2012

ISBN-978-81-266-5786-3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी अंश, विश्वविद्यालय या किसी भी अन्य रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के सम्बन्धित पाठ्यक्रम अथवा अन्य कार्यों के लिए इग्नोयू मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित अध्ययन से सम्पर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. सैयदैनी पालीवाल, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

मेसर्स टाइम्स सेंटिक : टेक्स बिंडिंग एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : राज प्रिंटर्स, 7-A, सेक्टर B-2, इंडस्ट्रियल एरिया, झंडेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110058

पाठ्यक्रमक परिचय

ई मैथिलीक आधार पाठ्यक्रम थिक । ई पाठ्यक्रम चारि खण्डमे समायोजित अछि आ प्रत्येक खण्डमे चारि-चारि इकाइ (यूनिट) अछि । एहि इकाइमे कुल 16 इकाइमे अध्ययन सामग्री प्रस्तुत कयल गेल अछि । आशा कएल जे ई कएक सए घंटामे अहाँ एकरा पढ़ि-बुझि जायब ।

ई पाठ्यक्रम भाषाक थिक– मैथिली भाषाक । मैथिलीक अभ्यासक हेतु विभिन्नसरंतिरहुता लिपिक ज्ञानक आवश्यक अछि पहिल इकाइ एहीसँ शुरू कयल गेल अछि । एकरा पाछू जकाँ सीखि आ अभ्यास कऽ अहाँ लिखुआ लिखबा-पढ़बामे पटु भऽ सकैत छी । आधार पाठ्यक्रमक उद्देश्य थिकैक भाषाक आधारभूत कौशलसँ परिचय कराएब । सुनिकऽ बुझब, पढ़ब, बाजब आ लिखब– चैह चारि पॉट तत्व भाषाक आधारभूत कौशल थिक । एहो चारू कौशलकेँ अहाँमे विकास करबाक प्रयास कयल जायत ।

पढ़ब आ लिखब तँ एहि पाठ्यसामग्रीक माध्यमसँ पाछू अहाँ कौशल जा सकैत अछि, मुदा सुनब आ बाजब केर विकास करब कठिनाइ पऽ सकैत अछि । दूरस्थ शिक्षा माध्यमक कारणेँ जगमे शिक्षक रहताह नहि, तेँ मैथिलीक शुद्ध ध्वनि सुनब आ ओहि ध्वनिमे बाजब किनको-किनको लेल कठिनाइ पऽ सकैत अछि । एकर समाधान लेल श्रोताओ-पाठक व्यवस्थापर विचार कयल जा रहल अछि ।

भाषाक चारू कौशलमे दक्षता प्राप्तिक हेतु शब्द-रचना, शब्द-भण्डार, वाक्य-रचना, उच्चारण आ प्रतीक अभिव्यक्तिक प्रकारान उपरांपर एकटु चर्चा । एहि सबहक इकाइमे एही तत्वक समुचित विवेचन कयल गेल अछि, जकरा अहाँ अभ्यास द्वारा सीखि सकब ।

एहि पाठ्यक्रमसँ अहाँ संक्षेपमे मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिसँ अवगत भऽ सकब तथा व्यावहारिक दिशामे, जेना भाषण-कला, पत्र-लेखन, टिप्पण-प्रारूपण, अनुवाद तथा पत्रकारितासँ सम्बन्धित सम्पादकीय लेखन आ संवाद-प्रेषण आदिक सेहो सामान्य परिचय पाबि सकब एवं अभ्यासमेँ एहि सबहक विकास कऽ सकब ।

पाठ्यक्रमक सकल सामग्रीकेँ निम्नांकित खंडमेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि–

साहित्यिक रचना	–	4 इकाइ
ज्ञान-विज्ञान विषयक रचना (मानविकी, समाजविज्ञान, विज्ञान)	–	4 इकाइ
भाषा विषयक पाठ	–	4 इकाइ
लेखन-दक्षता विषयक पाठ (पत्र-लेखन, अनुवाद, पत्रकारिता सम्बन्धी लेखन, कार्यालयीय लेखन)	–	4 इकाइ
	कुल	16 इकाइ

खण्ड 1 क परिचय : भाषा बोध

एहि खण्डक उद्देश्य मैथिली लिपि एवं भाषाक बोध करायब अछि । एहि हेतु चारि प्रकारक पाठ्यवस्तुकेँ देल गेल अछि । पहिल इकाइमे मिथिलाक्षर/तिरहुता लिखबक शिक्षा देल गेल अछि। मैथिलीक छात्रकेँ तिरहुताक ज्ञान आवश्यक मानल गेल अछि । एकर सम्यक् अभ्याससँ ओ तिरहुतामे लिखल पाण्डुलिपिकेँ पढ़ि सकैत छी एवं अपनहुँ तिरहुता लिपि लिखि सकैत छी । मैथिलीमे वर्तनीक भिन्न-भिन्न रूप अछि । कोनो रूप अशुद्ध नहि थिक । अहाँ कोनो एक रूपकेँ चुनि ओकरे अनुशासन करी । ई नहि जे अपन लेखनमे सभ रूपकेँ मिसिया दी । एहि पाठ्यसामग्रीमे बहुमान्य वर्तनीकेँ स्वीकार कयल गेल अछि।

मैथिली भाषाक अधिकार पक्षक हेतु शब्दावलीक परिचय, मुहावरा एवं कहबी (लोकोक्ति)क महत्त्व एवं ओकर समुचित प्रयोग तथा शब्दकोशक उपयोगक जानब बहुत आवश्यक थिक, जाहि व्याकरणक जानकारी लेबी चाही । एहि सभ बिन्दुपर एहि खण्डमे प्रकाश देल गेल अछि ।

संस्कृति एवं समाजविज्ञानसँ सम्बन्धित विषयसँ अनगत करयबाक क्रममे मैथिली भाषाक विभिन्न तत्त्वकेँ स्पष्ट कयल गेल अछि ।

यथास्थान बोध प्रश्न आ अभ्यास देल गेल अछि, जकरा हल करबाक अहाँ मैथिली लिपि एवं भाषापर नीक पकड़ आनि सकैत छी ।

इकाइ 1 तिरहुता आ देवनागरी : लिपि एवं वर्तनी परिचय

इकाइक रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 भाषा एवं लिपि
1.3 लेखन-कला
1.4 देवनागरी एवं तिरहुता लिपि/मिथिलाक्षर लिपि
1.5 लेखनमे कठिनता
1.6 वर्तनी
1.7 वर्तनीक नियम
1.8 सारांश
1.9 वर्तनीक संबंधमे किछु विशेष गप
1.10 अभ्यासक उत्तर
1.11 अनुकार्य

1.0 उद्देश्य

अहाँ मैथिलीक आधार पाठ्यक्रमक पहिल इकाइ पढ़ि आ रहल छी । एहि इकाइमे मैथिलीक हेतु प्रयुक्त लिपि देवनागरी एवं तिरहुता, जकरा मैथिलाक्षर सेहो कहल जाइत छैक, ताहिमे अहाँकेँ परिचय कराओल जायत ।

एहि इकाइकेँ पढ़िकऽ अहाँ

- भाषाक प्रयोगमे लिपिक लाभकेँ बुझि सकब,
- भाषाक प्रयोगमे लिपिक लाभकेँ बुझा सकब,
- लिपिक स्वरूप स्पष्ट कऽ सकब,
- देवनागरी लिपिकेँ बुझिकऽ उपयुक्त वर्णक व्यवहार कऽ सकब,
- तिरहुता/मिथिलाक्षर लिपिकेँ लिखिकऽ उपयुक्त वर्णक व्यवहार कऽ सकब,
- देवनागरी एवं तिरहुता दुनू लिपिक संयुक्ताक्षरकेँ ठीक-ठीक लिखि सकब,
- मैथिलीक उपयुक्त वर्तनीक प्रयोग कऽ सकब आ वर्तनी संबंधी दोषकेँ दूर कऽ सकब,
- लेखन संबंधी कठिनताकेँ दूर कऽ सकब ।

1.1 प्रस्तावना

हमसभलोकनि मैथिली भाषा बजैत छी आ लिखितो छी । एहि माध्यमे एक-दोसराक संग विचार-विमर्श करैत छी । जे गप हमसभलोकनि बाजिकऽ करैत छी तकरा लिखिकऽ सेहो ओहिना प्रकट करैत छी । ई कोना संभव होइत अछि ? उच्चारण आ लेखनमे हमसभलोकनि कोना तालमेल बैसबैत छी ? एकर कारण थिक– लिपि । लिपिक माध्यमसँ हमसभ कोनो उच्चरित शब्दकेँ कागजपर यथावत अंकित करबामे समर्थ होइत छी । लिपि आ उच्चारण भाषाक आवश्यक उपादान थिक । भाषाक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण आ लेखनक हेतु एहि दुनू

उपलब्धक सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करब विशेष आवश्यक अछि । पहिल इकाइमे हमसभ दुनूटा लिपि देवनागरी एवं तिरहुता/मिथिलाक्षरसँ परिचय-पात करब ।

अहाँ देखैत होयब जे लोक एकहिटा वर्णकेँ भिन्न-भिन्न प्रकारेँ लिखैत अछि । कखो प' लिखैत छथि वँ कखो प, कखो घर तँ कखो घर । हमर कोना लिखबाक चाही ? एहिमे अशुद्ध कोनो नहि अछि । विभिन्न समयमे वा एकहु समयमे विभिन्न वर्तनीक प्रयोग भेटत । एकरूपताक हेतु, लेखन-सुलभताकेँ दृष्टिमे रखैत, सम्प्रति जकर व्यापक प्रयोग होइछ, ओकर वर्तनीकेँ अपनाओल गेल अछि । एकर सम्पूर्ण ज्ञान भाषा-शिक्षणक हेतु आवश्यक अछि । मैथिलीमे लेखनक विविधता अछि । ई एकटा एहन भाषा अछि जे देवनागरीक संग-संग तिरहुतामे सेहो लिखल जाइत अछि । प्राचीन हस्तलिपि सभ प्रायः तिरहुतामे लिखल भेटैत अछि । तिरहुतक दोसर नाम थिक— मिथिलाक्षर । प्राचीन समयमे मिथिलामे रहनिहार संस्कृतक पण्डित एकमात्र लिपि जनैत छलाह— तिरहुता । ओलोकनि अपन संस्कृत रचनाकेँ तिरहुतामे लिखैत छलाह । आइयो अहाँ पुस्तकालय जाकऽ पाण्डुलिपि सभकेँ देखब तँ विभिन्न संस्कृतक पण्डित द्वारा लिखल गेल अधिक रचना तिरहुतामे भेटत ।

विभिन्न विद्वान पद्धति अपन लिपिक अभ्युन्नतिक हेतु सचेष्ट रहि रहलाह । जखन आधुनिकताक आविर्भाव भेलैक तखन ओलोकनि देवनागरीमेँ काज चलबऽ लगलाह । तिरहुताक जगह देवीमे बनल । एक दोसर द्वारा दुर्बोधताक पोथी सबकेँ कमल, मुदा साधारण देवनागरीमे एकसार लिखि जनैत छलाह— तिरहुता । ओलोकनि अपन संस्कृत रचनाकेँ तिरहुतामे लिखैत छलाह । आइयो अहाँ पुस्तकालय जाकऽ पाण्डुलिपि सभकेँ देखब तँ विभिन्न संस्कृतक पण्डित द्वारा लिखल गेल अधिक रचना तिरहुतामे भेटत ।

विभिन्न विद्वान पद्धति अपन लिपिक अभ्युन्नतिक हेतु सचेष्ट रहि रहलाह । जखन आधुनिकताक आविर्भाव भेलैक तखन ओलोकनि देवनागरीमेँ काज चलबऽ लगलाह । तिरहुताक जगह देवीमे बनल । एक दोसर द्वारा दुर्बोधताक पोथी सबकेँ कमल, मुदा साधारण देवनागरीमे एकसार लिखि जनैत छलाह— तिरहुता । ओलोकनि अपन संस्कृत रचनाकेँ तिरहुतामे लिखैत छलाह । आइयो अहाँ पुस्तकालय जाकऽ पाण्डुलिपि सभकेँ देखब तँ विभिन्न संस्कृतक पण्डित द्वारा लिखल गेल अधिक रचना तिरहुतामे भेटत ।

मैथिलीक देवनागरीमे लिखी या तिरहुतामे— वर्तनीमे एकरूपता राखब आवश्यक अछि, जाहिसँ लेखन, मुद्रण आदिमे सुगमता होयबे करतैक, संगहि लेखन सौकर्य आ लिखब दुनू सुगम होयत । अहाँ कोनो होयब से जानैत छी तिरहुता ? तँ बुझि लिअऽ— अहाँ शब्दकेँ जाहि रूपेँ कखनहर लिखैत छी, सैह लिखब थिक । मैथिलीमे वर्तनीक विविधता अछि । एकहु धरि कोनो एकटा वर्तनीक विद्वानमे सहमति नहि बनि सकल अछि । 'घर'क उदाहरण ऊपर देल गेल अछि । किछु आरो शब्द देखू-कमल, कमल, कैल; पथर, पाथर, पैर, इत्यादि । आब हमरालोकनि उदाहरण सभ, जाहिमे ऊपर वर्णित सभप्रकार सन्दर्भमे, देवनागरी आ तिरहुता लिपिक सन्दर्भमे, विशेष गप बुझि सकब ।

1.2 भाषा एवं लिपि

एखन जे पढ़ब अहाँ पढ़ब शुरू करबा छी से कोना ? हम कतहु छी आ अहाँ कतहु । मुदा एहन बात लागए जेना हमरालोकनि कोढ़ी-कोढ़ी गप करैत होइ । अर्थात् हम जे किछु कहैत छी से अहाँ अंकित करैत छी जेना कोढ़ीमे रहिकऽ सुनितहुँ, बुझितहुँ । कहू जे ई कोना संभव भऽ सकल अछि ? अर्थात् हमरा लोकनि अक्षर अछि आ इहो लोकनि अक्षरसँ अहाँ हमर भावकेँ हृदयंगम करबामे बुझि रहल छी, ओकर अर्थ बुझि रहल छी । एहिसँ स्पष्ट अछि जे हमरसभ लिखित सामग्रीसँ सेहो अंकित भऽकऽ भावक आदान-प्रदान करैत छी, जेना बाजिकऽ अपन भावकेँ स्पष्ट करैत छी । हँ, अहाँ कहि सकैत छी जे पहनाइ सुनबाक दोसर रूप थिक ।

लिपिक सम्बन्धमे विचार करबासँ पूर्व हमरालोकनिकेँ भाषाक महत्त्वपर सेहो विचार करऽ लेबाक चाही । अर्थात् हमरा लोकनि चाही जे भाषाक विकासहिपर मानव समाजक

बहुमुखी विकास निर्भर करैत छैक । अहींकेँ ई चुक्किओ आश्चर्य होएत जे भाषाक बिना मनुष्य किछु सोचियो नहि सकैत अछि । लोक जे किछु करए चाहैत अछि, तकर चिंतन मातृभाषामे करैत अछि । ओकरा कागतपर लिपिबद्ध करैत अछि । लिपिबद्ध भाषाक जेना-जेना विकास होइत अछि, तेना-तेना ओहि भाषाक साहित्यक विकास संभव होइत अछि । दोसर शब्दमे अहाँ कहि सकैत छी जे भाषाक विकासहिपर ओहि क्षेत्रक सर्वांगीण विकास निर्भर करैत अछि ।

लिपिसँ लाभ

लिखित विकाससँ पूर्व लोक कहैत टा छल । जेना-जेना सभ्यता आ संस्कृतिक विकास भेलैक, तेना-तेना मनुष्य लिखबक प्रयास कयलक । पहिने कागत नहि छलैक, तेँ लोक ताड़क पात अथवा भोजपत्रपर लिखैत छल । आइयो भोजपत्र अथवा ताड़पत्रपर सुन्दर लिखुआ लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि सभ भेटैत अछि । ओहि समयमे लोक पाथर आ धातुपर खोदिकऽ, पोल माटिसँ देबाल आदिपर लिखैत छल, जकर प्रमाण आइयो भेटैत अछि । कल्पना करू जे ओहि समयमे लिखब कतेक कठिन छलैक । संसारमे कतेक भाषाकेँ लिखबाक हेतु लिपिक व्यवस्था नहि छलैक । फलतः मनुष्य विकासक दिशामे अग्रसर भेल । कागतक आविष्कार भेलैक आ तहन लिखल सर्वसाधारण लेल सुलभ भऽ गेलैक । आइ जे व्यापक रूपमे साहित्य अभियान चलाओल जा रहल अछि, से बिनु कागतेँ सम्भव नहि होइत । आइ अशिक्षित दूर भागल जा रहल अछि आ लोक पढ़न-पाठन दिस झुकल अछि । आहि क्षेत्रक लोक बतेक पछड़ल, से क्षेत्र ततेक विकसित मानल जाइत अछि । अहींक मनमे अवश्य प्रश्न उठैत होएत जे लिपि आ क्षेत्रक विकासक बीच कोन संबंध छैक ? एहि प्रसंग अहींकेँ निम्नलिखित बिन्दुपर ध्यान देबऽ पड़त–

- लिपि लोकक विचारकेँ सुरक्षित राखि ओकरा चिरस्थायी उपलब्धि करैत अछि ।
- हमरालोकनि जे किछु चर्चा करी से तत्काले समाप्त भऽ जाइत अछि, मुदा लिखि देने ओ अमिट भऽ जाइत अछि ।
- हम अपन विचारकेँ स्वयं बादमे पढ़ि सकैत छी, ओकरा बुझि सकैत छी, ओहिमे संशोधन कऽ सकैत छी, ओहिमे परिवर्तन कऽ सकैत छी । आलोचक ओहिपर टिप्पणी कऽ सकैत अछि । तेँ लोक बजबासँ बेसी सतर्क लिखबामे रहैत अछि ।
- भजबा आ लिखबाक भाषामे सेहो अंतर छैक । एहि विषयपर हमरालोकनि आगाँ विचार करब । एतऽ हम एहने कहब जे भाषाक विकासहिमेँ चिन्तनक विकास होइत अछि, समाजक विकास होइत अछि आ क्षेत्रक विकास होइत अछि ।
- लिपिबद्ध भाषासँ आगाँ समयक प्रान्तीय ऋषि-मुनिक विचारकेँ अहाँकेँ बुझि सैह सकी । इतकालीनक विचार समाजक सर्वतोभावेन हितक हेतु, उत्थान आ कल्याण- कार्यमे सहायक सिद्ध होएत ।
- लिपिक माध्यमे हमरालोकनि अपन अभिव्यक्तिकेँ दूर-दूर धरि पहुँचयबामे समर्थ होइत छी । यदि अहाँ बाजब, भाषण देब तँ कदाचित किछु हजार व्यक्तिकेँ सुना सकबनि, मुदा जँ समाचारपत्रमे अहींक चिंतन छपत तँ दुनियाँ अहींक विचारसँ अवगत होएत ।
- आइ जँ अहाँ कोनो पोथी लिखिकऽ राखि देबैक तँ पछिलमे लोक ओहिसँ लाभान्वित होएत ।
- निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे मानव सभ्यता, संस्कृति आ ज्ञान-विज्ञानक विकासमे लिपिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण अछि ।

1.3 लेखन-कला

हमसभ जे किछु बजैत छी तकरा ओहो रूपमे अंकित करबाक हेतु वर्णक व्यवस्था कयल गेल छैक । प्रत्येक ध्वनिक हेतु भिन्न-भिन्न वर्ण अछि । दू वा दूसँ अधिक वर्णक मेलसँ एकटा शब्द बनैत अछि आ दू वा अधिक शब्दसँ वाक्य । कोनो भाषाक सभ ध्वनिक हेतु निश्चित वर्ण अछि, जकर क्रमबद्ध रूपकेँ वर्णमाला कहल जाइत छैक । सामान्यतः वर्ण दू प्रकारक होइत अछि—स्वर आ व्यंजन । स्वर स्वतः बाजल जाइत अछि आ व्यंजनक उच्चारणमे स्वरक सहायता लेल जाइत छैक; यथा— अ, इ, उ, इत्यादि स्वतंत्र रूपसँ अपन ध्वनिक द्योतक थिक, 'क'मे क+अ; 'स'मे स+अ; तथा 'प'मे प+अ मिलल अछि । मैथिलीक अपन मूल लिपि थिक तिरहुता, जकरा मिथिलाक्षर सेहो कहल जाइत अछि, किन्तु आइ सुगमताक कारणेँ मैथिलीं देवनागरीए लिपिसँ लिखल जा रहल अछि । एही लिपिमे पोथी छपैत अछि । जाहिया एपाइक व्यवस्था नहि छलैक, मिथिलाक विद्वान द्वारा मैथिली आ संस्कृत तिरहुतेमे लिखल जाइत छल ।

बेसी भाषाक अपन लिपि छैक । ओकर लिखबाक अपन ढंग छैक । तिरहुता/मिथिलाक्षर आ देवनागरी बामसँ दहिन दिशाक दिशामे लिखल जाइत अछि । अरबी भाषा दहिनसँ बाम दिस लिखल जाइत अछि । जापानी भाषामे वर्ण ऊपरसँ नीचाँक क्रममे लिखल जाइत अछि । चीनी भाषाने ध्वनिक पृथक संकेत नहि होइत छैक, अपितु पूरा शब्द एकटा फोटो सन बुझाइत छैक, जकरा चित्रलिपि कहल जाइत छैक । एहिठाम हमरा ई आवश्यक कहल जा सकैत अछि जे लिपि कोनो भाषाक हो, ओ रेखा आ विभिन्न आकृतिक मेलसँ बनल रहैत अछि ।

देवनागरी आ तिरहुता लिपिक पूर्ण परिचय प्राप्त करबासँ पूर्व हम अहाँकेँ रोमन लिपिसँ ओकर मिलान करबाक देखबए चाहैत छी, कारण जे अहाँ रोमन लिपि अवश्य बुझैत होयब । रोमनमे स्वर आ व्यंजन दुनूक हेतु अक्षरक प्रयोग होइत छैक, मुदा देवनागरी आ तिरहुतामे अक्षरमे मात्रा लगाय स्वर जोड़ि देल जाइत छैक । उदाहरणार्थ— 'सीता'मे स आ त मात्र दुटा अक्षर अछि, जाहिमे स मे ईकार आ त मे आकार क मात्रा जोड़ि देल गेल अछि, मुदा रोमनमे अक्षरो अधिक बढ़ैत छैक, यथा- Sita. देवनागरी तथा तिरहुतामे मात्रा लगौने संक्षिप्त भऽ जाइत छैक । अतः रोमन देवनागरी एवं तिरहुताक अपेक्षा स्थान बेसी घेरैत छैक । मैथिलीक हेतु तिरहुत एवं देवनागरी दुनू लिपिक ज्ञान आवश्यक अछि । एतए अहाँ लिपिक उत्पत्ति आ महत्वक विषयमे ज्ञान प्राप्त कयलहुँ । एहिसँ संबंधित किछु अभ्यास एतए देल जा रहल अछि, जकर अहाँ हमरा देखाक चेष्टा करू :

अभ्यास 1

क) एतए किछु वाक्य देल जा रहल अछि जे सत्य वा असत्य अछि । अहाँकेँ देखबयबाक अछि जे कोन सत्य अछि आ कोन असत्य—

अ) मनुष्य बाजब पहिने लिखबाक आ लिखब बादमे । (सत्य / असत्य)

आ) फोनपाक उपयोग एपाइक हेतु होइत छल । (सत्य / असत्य)

इ) लिपिसँ विचारकेँ स्थायित्व भेटैत छैक । (सत्य / असत्य)

ई) बजबाक भाषा आ लिखबाक भाषाक स्वरूपमे कोनो अंतर नहि होइत छैक । (सत्य / असत्य)

उ) चिंतनकेँ समयसँ आगाँ बढ़ाबय लिपिक समयसँ पैघ गुण थिक । (सत्य / असत्य)

ऊ) भाषा सांस्कृतिक विकासमे लिपिक कोनो योगदान नहि छैक । (सत्य / असत्य)

ग) [illegible] (सत्य / असत्य)

घ) [illegible] (सत्य / असत्य)

ङ) मनुष्यक सामाजिक सांस्कृतिक विकासमे लिपिक कोनो योगदान नहि छैक। (सत्य / असत्य)

च) [illegible] (सत्य / असत्य)

छ) कालमे संग [illegible] एहि संग लोकनि, [illegible] एक

क) मात्रो एकहिटा [illegible] अछि से थिक .....। (शब्द/वर्ण/वर्तनी)

ख) मैथिलीक मूल लिपिकेँ कहल जाइत अछि। (तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर / मैथिली)

ग) [illegible]

घ) [illegible] लिखल जाइत अछि। (कातरसँ बाँहा दिस / दहिनसँ बाम दिस / बामसँ दहिन दिस)

ङ) कोनो भाषाक वर्णमाला आरंभ भाषाक ..... ध्वनिक संकेत अछि। (शब्दक / ध्वनिक)

14 देवनागरी एवं तिरहुता मिथिलाक्षर लिपि

[illegible]

देवनागरीएमे हुनगिएँ पोथी सहो छपऽ लगलैक।

[illegible]

तिरहुतेमे लिखितकऽ पद्धतिकेँ प्रथा अछि

एहऽ तिरहुता आ देवनागरीक किछु शब्दकेँ देखू :

तिरहुतामे

ब्राम्ह	कहदी	किरतार्थ	प्रत्यक्ष	रेखदी	[illegible]
ब्राह्मण	कहब	किताब	साक्षात	देखबी	[illegible]

एहऽ [illegible] अछि [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

एहि सब वर्णमे अक्षरकेँ एकाधिक प्रकारक प्रयोग भरल । अक्षरक अन्त्य प्रकारक कोन लागल छैक अहाँ आगाँ देखबैक प्रयास करब तथा किछु विशेष संयुक्ताक्षर सेहो जानब उदाहरणार्थ किछु शब्दकेँ देखल जा सकैत अछि

चश्मा	प्रसाद	हस्त	चक्र	ब्लाक
अभ्यास	दृश्यान्त	लक्ष्मण	त्यान्य	सुस्वान
विश्वास	विन्ध्याचल			

क ङ च ण त न प म य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ ई सभ व्यंजन छी, एहि व्यंजन सभमे अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ स्वर जोड़ल जाइत अछि, उदाहरणार्थ- कवर्गीय, चवर्गीय, टवर्गीय, तवर्गीय, पवर्गीय इत्यादि ।

र कें संयुक्त करबा लेल व्यञ्जन वर्णक नीचाँ रेफ लगाओल जाइत अछि, जेकर उच्चारण किछु व्यञ्जनक बाद आबि कए होइत अछि जेना- कृषि, कृषक, कौमार्य इत्यादि

किछु शब्द आ [illegible] इत्यादि [illegible]

लिखावट / लिपिविन्यास

लिखावट [illegible] लिखबा लेल [illegible] अहाँ अक्षरान्तरक एकसँ अधिक [illegible] लिखबा काल अहाँ [illegible] अक्षरक अन्त्य [illegible] पहिने [illegible] कतहु आपत्ति होयत;

[illegible]	बालक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	बालक	अन्तर्गति	[illegible]	अन्तरंग	[illegible]

कोनो वर्णसँ 'ह' कें संयुक्त करबाक विधान देखू-

लिखावट :	आह	पुस्तक
	आम्ह	पुस्तक

कोनो वर्णसँ 'न' कें एहि तरहेँ संयुक्त करी

लिखावट :	अन्न	प्रन
	अन्न	प्रन

किछु संयुक्ताक्षरक रूपे बदलि जाइत छैक-

लिखावट :	कृषी	आकाश	भक्त	अर्चना
	कृषी	आकाश	भक्त	अर्चना

[illegible] [illegible] [illegible] [

तीन वा चारि वर्णसँ बनल संयुक्ताक्षर निम्नलिखित अछि-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रत्येक चित्रातल्या खेळण्याचे किंवा वस्तूचे नाव आठवा आणि त्याचा पहिला अक्षर लिहिण्याचा प्रयत्न करा.

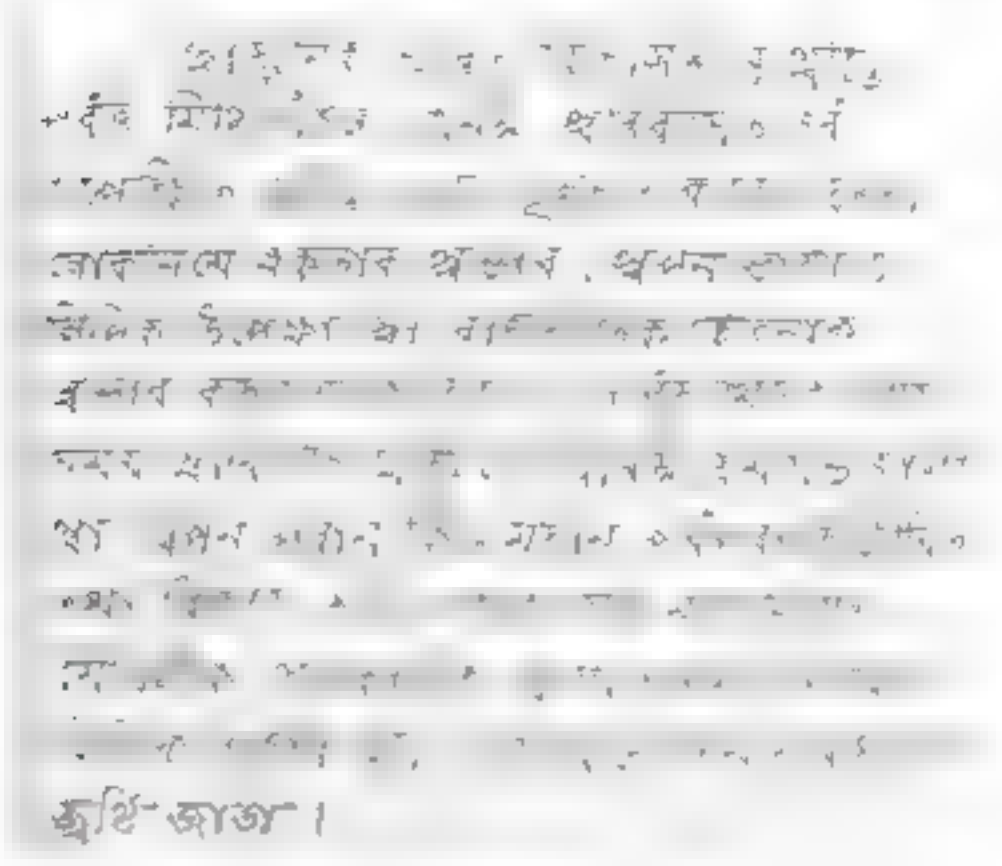

अभ्यास 2

अ) खालील वर्णांचे चित्रातले लिहा -

1. अं	2. ण	3. ऊ	4. ह	5. ऋ
6. ड	7. ते	8. थ्व	9. ए	10. ॲ
11. ओ	12. ट	13. ब	14. कु	15. ओ
16. ट	17. ष	18. फ	19 ग्र	20. क

ब) खालील संयुक्त वर्णांचे चित्रातले लिहा

1. ज्ञ	2. ष्ठा	3. त्व	4. ह	5. स्य
6. ग्ग	7. ह्म	8. ष्ट	9. क्ष	10. प्प
11. र्ग	12. प्त्र	13. त्त	14. ल्ल	15. स्ता
16. श्च	17. ब्ब	18. त्थ	19. ञ	20. म्म

क) खालील शब्दांचे चित्रातले लिहा -

1. चित्रातला	2. अभ्यास	3. गाडगी	4. अस्वल	5 चिखल
6. दुर्बीण	7. हत्तीला	8. पुरस्कार	9. व्यक्ति	10. शुक्रवार
11. सिद्धिवस्तु	12. उदरभ	13. कुत्रा	14. राष्ट्र	15. कंपटक
16. आश्चर्य	17. अभिव्यक्ति	18. पुष्प	19. आरम्भ	20. आह्लाद

ड) खालीलिखित वाक्यांचे चित्रातले लिहा

[illegible] प्रत्येक [illegible] वेगळे [illegible] भिन्नता [illegible] पूर्णांक [illegible] वर्णांचे [illegible] कमल [illegible] पुरुषाला [illegible] आणि [illegible] अधिकार [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

(ङ) निम्नलिखितको देवनागरीमे लिखु–

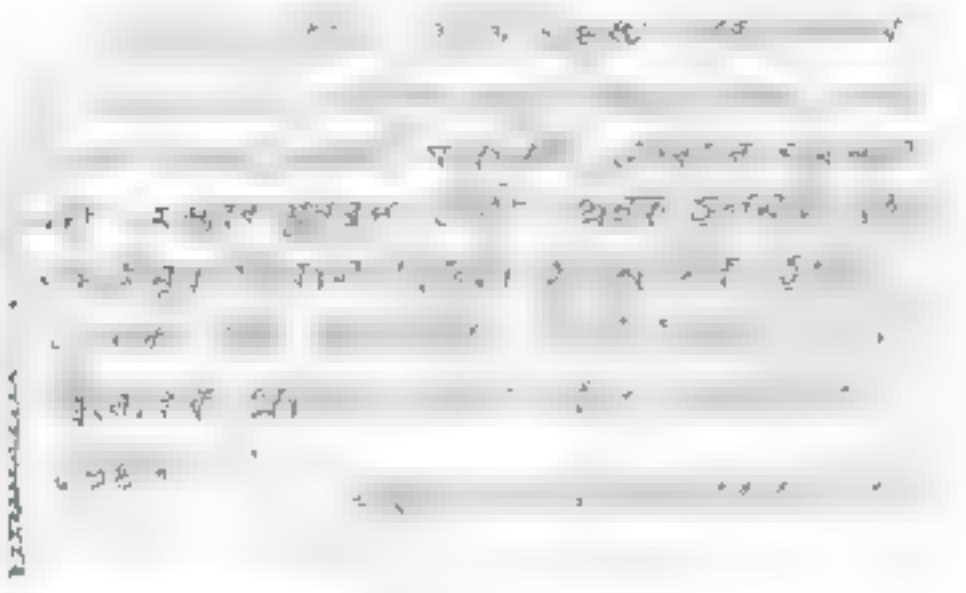

1.6 बर्तनी

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

1.7 वर्तनीक नियम

आब अहाँकेँ ई बुझबामे आबि गेल जे मैथिलीमे वर्णमाला मात्रक रूप स्थिर नहि अछि, जिनि स्थिर अछि से एकर ध्वनि अछि जे एकर ध्वनि लोक तहँ लिखबामे आइत आछ किन्तु एहन शब्द जे देखबामे आबि रहल अछि ओकर ओ ध्वनि नहि रहल जे कोन अर्थक शब्द लिखल जाइत अछि–

कहलनि	कहलैन्हि	कहलन्हि		
अपसाढ	अषाढ	ऐला		
पएर	पाएर	पैर		
खाम	खाएर	खैर		
चएत	चएत	चैत		
अयलनि	कहलनि	कएलैन्हि	कएलन्हि	
घऽ	मए	भय	घ'	भै
कऽ	कए	कय	क'	कै
दऽ	द'	दें	दिअक	दीअक

- [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ह्रस्व स्थानक दीर्घ [illegible] अशुद्ध आ [illegible] शब्दक देखू–

कुशल	पुरस्कार	पितामह	बिहार	कुमार
कूशल	पूरस्कार	पीतामह	बीहार	कूमार

एतऽ ह्रस्वक स्थानमे दीर्घ कएने अशुद्ध भऽ गेल ।

- [illegible] ह्रस्वक दीर्घ आ दीर्घक ह्रस्व करब अर्थ [illegible]

  [illegible]

  [illegible] झाड़नकार,

- [illegible] अछि–

  [illegible]

- किछु शब्दक शुद्ध अशुद्ध रूपक ठेकानि लियऽ–

  अशुद्ध– किरण कृपा कृशल कीपूत कीसान

  शुद्ध – कृषक किरा मुशार कीपुत कीसान

- कखनु कखनु दूटा शब्द एकठाम भऽ जाइत अछि–

  सकैत अछि - सकैत अछि

  कहैत अछि - कहैत अछि

  सुनैत अछि - सुनैत अछि

  जाइत अछि - जाइत अछि

अभ्यास 3

[illegible]

- [illegible] (✓) चिह्न लगाउ–

1. भौंह ( ) / भौंह ( )
2. पथर ( ) / पत्थर ( )
3. रामायन ( ) / रामायन ( )
4. आशिर्वाद ( )/आशीर्वाद ( )
5. चुल्ह ( ) / चूल्हा ( )
6. शोंगार ( ) /शृंगार ( )
7. परिवर्तन ( ) / परिवरतन ( )
8. पसूपांत ( ) / पशुपति ( )
9. पुस्प ( ) / पुष्प ( )
10. पूरान ( ) / पुराण ( )
11. पन्हा ( ) / पण्हा ( )
12. किस्ना ( ) / कृष्ण ( )
13. किया ( ) / कृया ( )
14. द्रोनाचार्य ( )/द्रोणाचार्य( )

1.8 सारांश

- [illegible] पूरा लिपि लेक- लिखुता आ रचनागती ।
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible] लिख ।
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

उपयोगी पुस्तक

1) मैथिलीक अभ्यास पुस्तक - प्रो० विश्वनाथ झा
प्रकाशक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा

2) मैथिली भाषाभास, भाग- 1 2 (लिखुता
लक्ष लहथागी प्रकाशन दरभंगा, मुजफ्फरपुर

1.9 बतनांक सबधमे किछु लिखाए गए

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२ मैथिलीमे सामान्यतया विभक्ति चिह्न शब्दक साहे लगैत अछि मुदा एकरासँ कोनो कठोर बंधन नहि अछि–

विद्यालयसँ कानमे	काकीकेँ	कौआसँ	चोरकेँ
विद्यालय सँ कान मे	काकी केँ	कौआ सँ	चोर केँ

एहन स्थितिमे क्रम कायम करबा लेल चिह्न हटा प्रयोग करब उचित अछि

४ कतहु कतहु विभक्ति चिह्न शब्दक सटा कऽ लिखल जाइत अछि

नेना केर	हुनका छात्र	कतला ठाम

५ [illegible] मैथिलीमे [illegible] संयुक्त करबाक [illegible] मुदा [illegible] पर्याप्त [illegible] वर्णसँ भिन्न हलन्तसभकेँ संयुक्त करबाक आवश्यकता नहि अछि ।

6) 'र' तीन प्रकारसँ संयुक्त करबाक चलन अछि; यथा–

कर्म	प्रकाश	राष्ट्र

7) द्वाक्षरात्मक प्रयोग निम्नलिखित स्थानमे करबाक चलन अछि

[illegible]

शुद्ध-शुद्ध	दौड़ैत दौड़ैत	पढ़ैत पढ़ैत

द्वन्द्व समासक बीच द्वाक्षरात्मक प्रयोग होइत अछि–

पूजा-पाठी	ढोल-ढाकी	पूजा-पाठ

८ [illegible] मैथिलीमे [illegible] अछि [illegible] कहु [illegible] जाइत अछि

श्रीरामदेवजा श्री रामदेव झा

९ [illegible] मैथिलीमे [illegible] राखू जे 'पुत्र' मे छलन्त नहि लागत आ 'इन्द्रलम्' मे लागत ।

१० [illegible] वर्तमान, वर्तनी -वर्तनी इत्यादि , मुदा प्रयोगमे ते सैह अछि ।

११ किछु शब्द सामान्यतया चलक अशुद्ध लिखैत छथि– [illegible] लिखबाक प्रचलन [illegible] शिक्षकवर्ग [illegible] शुद्ध रूप लिखै [illegible] शिक्षकवर्ग ।

५. कलहु कलहु किसलय प्रत्यंचे सहाये शब्द मानि हैत दल जाइल अछि यथा छल-छात्रक सुरक्षाक दृष्टि दुख दूरि हरबैछि अर्थ समझि अपन अपन कर्म निष्ठक कामना करैत अछि जैक यथा अलंकारक उल्लेख हएत।

६. दृश्यात्मक विशेषताक द्वारा ई लोक अनेक प्रकृति भरल शब्दमे लिखल/लिखल जा सकैत अछि। एहन लोक कहैत छथि किन्तु लिखबाक समय ओ वहि अछि आन, छोट छात्र विद्यार्थी एक लेक लोकसँ प्रति ओ आवश्यक चाहि देन लेक कहैत छथि। एक कहल स्पष्ट अछि ओ एक विद्यार्थी एहन किन्तु छात्र अहीन अपन लेक एक लिखल ओ ई दुनू अक्षर लेक आ एक ए पुरा विद्यार्थी देनी भऽ अवश्य- ए, ए ब।

७. कोन अनेक विद्यार्थीक भाषाक प्रयोग अछि म ओ कएँ प्रयोग क लोल पान अछि।

1.10 अभ्यासक उत्तर

अभ्यास 1

क) (अ) सत्य (आ) असत्य (इ) सत्य (ई) असत्य
(उ) सत्य (ऊ) असत्य (ए) सत्य (ऐ) असत्य
(ओ) असत्य (औ) सत्य

ख) [illegible]

ई) कलहसँ बाँचो दिस (उ) व्यसिक

अभ्यास 2

क)

১	৩	২	৭	৪	৭	৪	৩
৯	ৰ	৬	ত	৭	৫	৫	৭
১	৭	১০	৯	১১	৫	১২	৯
১৮	ৰা	১৪	ৰ	১৯	ৈ	১৬	ৱ
১৭	ৰ	১৮	ৱ	১৯	ৱ	২০	৯

খ)

১	ৰ	২	ৰ	৪	৪	৪	ৰ
৯	ৱ	৬	ৱ	৭	ৰ	৫	ৱ
১	ৱ	১০	ৱ	১১	ৰ	১২	ৰ
১৮	ৱ	১৪	ৱ	১৯	ৱ	১৬	ৱ
১৭	ৱ	১৮	ৱ	১৯	ৱ	২০	ৱ

[illegible] [illegible] [illegible] [

ह' ...दहो बुड़ा चौनी ...एलिसै उत्कृष्ट भाइन पढ़ये की सकैत ऊहि ? पृथवी पर मधुर ...खन आ पोरस ...ढ़ाह लागल पान्य पान्य सचारय । पोरयक साह माल दहा ...मधुक मूल रूप चौनी ...भेलक चुटालणि चुड़ा । पुँह लोड़क मलाए पिकेलो अगम पिक ...वृड़ा मूलक दहा मुखलोक ...खना स्वर्लोक । ? ...ड़िन्हाक आनन्द दोसरे काल भाजनए भेटत ?"" हरिमोहन झा (खट्टरकाकक तरंगसँ)

अभ्यास 3

अ) 1. पञ्चवटी 2. लक्ष्मण 3. पण्डित 4. अन्तिका
5. पञ्चवटी 6. अण्डा 7. कण्टक 8. दण्ड
9. लम्फ 10. चम्प 11. कञ्चन 12. मन्थन
13. माण्डवी 14. बन्दु

आ) 1. मौह 2. रावह 3. रामायण 4. आशीर्वाद
5. पुत्र 6. मृगेन्द्र 7 परिवर्तन 8. पशुपति
9. पुष्प 10. पुराण 11. पण्डा 12. कृष्ण
13. क्रिया 14. दीर्घाचार्य

1 11 अनुकार्य

...लिखना पेनसुद्धाक स्वतन्त्र अभ्यास करैत रहू । बतौनोक एकहरणा बनल रहय ताहि लेल दीर्घतोक कोना लिखब अथवा ह्रस्वाक" एक अनुकरण अर्थात् नमूना आ कॉपी

इकाइ 2 शब्द आ मुहाबिरा

इकाइक रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 भूमिका

2.2 शब्दक प्रकार

2.3 भाषाक सामाजिक रूप सँ

2.4 शब्दक विभिन्न रूप शब्द गढ़ि

2.5 शब्दक अर्थ

2.6 शब्द संदर्भ

2.7 शब्द संपदा

2.8 मानकीकरण एवं लागूकरण

2.9 सारांश

2.10 किछु उपयोगी पुस्तक

2.11 बोधप्रश्न अभ्यासक हेतु

2.12 संदर्भ ग्रंथ

2.0 उद्देश्य

एहि इकाइ पढ़ि अहाँ [illegible] एहि योग्य भऽ जायब जाहिसँ अहाँ अपन दैनन्दिन जीवनमे भाषाक विभिन्न प्रयोग सँ परिचित भऽ सकब। विभिन्न विद्वानक मत सभक अध्ययन करब। आशा अछि अध्ययनक बाद अहाँ एकटा विशेष दृष्टिकोण विकसित कऽ सकब। अहाँ अपन दैनन्दिन जीवनमे भाषाक व्यवहारमे सावधानी राखि सकब।

प्रस्तुत इकाइ पढ़ि अहाँ शब्द आ मुहाबिराक महत्त्वसँ परिचित भऽ सकब। एहि इकाइक अध्ययनोपरान्त अहाँ निम्नलिखित उद्देश्यक पूर्ति करबाक प्रयास करब जे अछि

- दैनन्दिन जीवनमे शब्दक प्रयोग आ महत्त्वक बुझि सकब आ तेकर समुचित प्रयोग करब
- शब्दक विभिन्न प्रकार आदिक जानकारी भऽ सकब आ तेकर सही प्रयोग करब सीखि सकब
- शब्द रचनाक ज्ञान प्राप्त करब
- एहिसँ एक दिस शब्दक प्रति अहाँक दृष्टिकोण बदलि सकत आ दोसर दिस अहाँ शब्दक प्रयोग करबाक प्रति सजग भऽ जायब।

2.1 प्रस्तावना

अहाँ बुझैत होयब जे भाषाक शब्दक की आ केहन महत्त्व छैक। शब्दक माध्यमसँ हमरालोकनि अपन विचार व्यक्त करैत छी। शब्दक प्रयोगमे बहु सचेत रहि शब्दक अपन स्वयं गढ़ि सकैत छी। शब्दक चयनमे सेहो जागरूक रहब अपेक्षित अछि। शब्दक प्रयोग करैत काल एकटा बात ध्यानमे राखब जरूरी अछि जे शब्द कोनो व्यक्ति विशेषक नहि होइत अछि। शब्द समाजक होइत अछि। शब्दक प्रयोग करैत काल हमरा सभकेँ समाजक ध्यान राखब आवश्यक अछि। शब्दक प्रयोग करैत काल हमरा सभकेँ समाजक ध्यान राखब आवश्यक अछि। शब्दक प्रयोग करैत काल हमरा सभकेँ समाजक ध्यान राखब आवश्यक अछि।

शब्द म्हणजे काय हे आपण लहानपणापासून ऐकत आलो आहोत. आपण बोलताना, लिहिताना किंवा वाचताना शब्दांचा वापर करतो. शब्द हे भाषेचे सर्वात लहान पण अर्थपूर्ण एकक आहे. शब्दांच्या साहाय्याने आपण आपले विचार व्यक्त करतो. शब्दांचे वर्गीकरण, त्यांचे प्रकार, त्यांचे विविध उपयोग आणि त्यांचे महत्त्व याविषयी आपण या पाठात सविस्तर अभ्यास करणार आहोत. शब्दांचा योग्य वापर केल्यास आपले बोलणे आणि लिहिणे अधिक प्रभावी होते.

शब्द हे भाषेचे मूलभूत घटक आहेत. एकापेक्षा अधिक शब्द एकत्र आल्यावर वाक्य तयार होते. वाक्यांच्या माध्यमातून आपण आपले विचार, भावना, मते आणि माहिती दुसऱ्यांपर्यंत पोहोचवतो. शब्दांशिवाय भाषा अपूर्ण आहे. म्हणूनच शब्दांचा अभ्यास करणे हे भाषा शिकण्याचा महत्त्वाचा भाग मानला जातो.

2.2 शब्दांचे महत्त्व

शब्दांचे महत्त्व अनेक दृष्टिकोनातून सांगता येते. शब्दांमुळे आपण आपले विचार स्पष्टपणे मांडू शकतो. शब्दांच्या योग्य निवडीमुळे बोलणे किंवा लिहिणे अधिक परिणामकारक होते. एकच गोष्ट वेगवेगळ्या शब्दांत सांगितली तर ऐकणाऱ्यावर किंवा वाचणाऱ्यावर वेगवेगळा परिणाम होतो. त्यामुळे शब्दांची निवड काळजीपूर्वक करणे आवश्यक असते.

शब्दांमुळे आपण आपल्या भावना व्यक्त करू शकतो. आनंद, दुःख, राग, प्रेम, आश्चर्य, भीती अशा विविध भावना व्यक्त करण्यासाठी आपल्याला योग्य शब्दांची गरज असते. शब्दांच्या साहाय्याने आपण इतरांशी संवाद साधतो, त्यांच्याशी नाती निर्माण करतो आणि समाजात मिसळतो. त्यामुळे शब्द हे माणसाच्या सामाजिक जीवनाचा महत्त्वाचा भाग आहेत.

शब्दांमुळे आपण ज्ञान मिळवू शकतो आणि ते इतरांपर्यंत पोहोचवू शकतो. पुस्तके वाचताना, शिक्षकांचे मार्गदर्शन ऐकताना आपल्याला नवीन शब्द समजतात. या शब्दांच्या मदतीने आपण आपले ज्ञान वाढवतो. त्यामुळे शब्दसंग्रह जितका मोठा असेल तितके आपले व्यक्तिमत्त्व अधिक प्रभावी होते.

2.3 भाषाके सामाजिक स्तर भेद

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

बोधप्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नोंके उत्तर लिखिये। कुछ प्रश्नोंके उत्तर इकाईके अन्तमें दिये गये हैं। अपने उत्तरको मिलान करें।

क) शब्दके अर्थ कौनसे प्राप्त होते हैं?

ख) [illegible]

अभ्यास 1

[illegible]

तीन अपने क्षेत्रमें प्रयुक्त उदाहरण सहित लिखें–

क) नदी किनारा ( )

ख) लगानी करना ( )

ग) खुलेमें मिलानेवाला ( )

घ) गाँठी मिलनेवाला ( )

ङ) मरि जाना ( )

2.4 शब्दके विभिन्न स्रोत (शब्द भण्डार)

[illegible]

विदेशी शासनकालमें [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]	[illegible]	[illegible]
शब्दघाटय	शब्दघाट	शब्दघाट
शब्दाध्याय	शब्दकाण्ड, ओल्हा	ओल्हा, झा
शस्त्रि	शस्त्री	शस्त्री, शस्त्रि
शस्त्रिका	शस्त्रिका	शस्त्री
शुष्कारिणी	शोखरि	शोखरि
शिम्बुर	शिम्बुर	शिम्बु
शयनम्	शयन	शोन
शुस्राक	शुस्त्रिअक, शुस्त्रिअ	शोभी
शत्र	शस्त्र	शस्त्र
शस्तर	शस्त्र	शस्त्र
शस्त्र	शस्त्र	शस्त्र
शैत्य	-	शाच
शाम्य	-	शाँच
सर्प	सप्प	साप

[illegible] शब्दभव विशेष

विशेषण

[illegible] शब्दभंडार आपन समृद्ध अछि ।

विदेशी

[illegible] साक्षात्कार [illegible] ।

भाषा बोध

1) आवधारिणक भाषाक शब्द

मराठी चालू, लागू

[illegible]

बांगला गल्प

पंजाबी मुंडा

[illegible] आवधारिणक भाषाक शब्द अंतर्गत [illegible] भाषाक आधारभूत [illegible] सहायक करबाक चाही छैक । ई अपना दैनंदिनी भाषाक अंतर्गतक [illegible] अंग्रेजी शब्द आदि इस्तेमाल आ विभिन्न [illegible] किछु शब्द प्रस्तुत अछि-

[illegible] अखबार, सरकार, हिंदुस्तान, मामूल, बांगला, लिआकत ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] भाषाक [illegible]

भाषा बोध

फ्रांसीसी शब्द– रेस्तोरां, कूप, कारतूस ।

जापानी– रबसा (रिक्शा)।

[illegible]

[illegible]

अभ्यास 2

[illegible] आवधारिणक भाषाक अंतर्गत [illegible] सहायतासँ अहाँ एहि आभासकेँ पूरा कऽ सकैत छी–

सदृश्य	सत्यम	सदृश्य	सत्यम	शब्द का पुनरावृत्ति
पति		स्त्री		
आम		[illegible]		
राम		[illegible]		
मन		[illegible]		
चलना		[illegible]		
पैर		[illegible]		
चाक		[illegible]		

अभ्यास 1

निम्नांकित शब्दों के समुचित विलोम शब्द कोष्ठक में लिखें और अपने वाक्यों में निम्नांकित शब्द श्रेणियों में आयत करें

संगीत	( )	ज्ञानालय	( )
दर्शन	( )	विस्तृत	( )
दोष	( )	चतुरो	( )
सगमा	( )	टिकस	( )
लाभ	( )	मशुल	( )
मौन	( )	चालिम	( )

2.5 शब्दक अर्थपक्ष

[illegible] शब्दक [illegible] [illegible] [illegible]

मेल (Male)- पुरुष

पद- ऐसे पदार्थ

पय- दूध

आम- फल

आम- सार्वजनिक

आम- जनसामान्य

वेद- पिता

वेद- सभी से प्राचीन ग्रन्थों का नाम, चार वेद

पानि- वस

पानि- चमक

पानि- हथेली

धान्य- धान

धान्य- अन्न

ब) पर्यायवाची शब्द (Synonym)

समान अर्थ वाले शब्दों पहचानने करने हेतु अधिकांशतः पाठ्यों पर्यायवाची शब्द आदि दिये गये हैं। कुछ प्रमुख शब्दों के कुछ पर्यायवाची शब्द निम्नवत हैं-

रानी - महारानी, पटरिका, बेगम

राजा - नरेश, नृपति, बादशाह

सूरज - सूर्य, भानु, दिवाकर, आदित्य, रवि, मित्र

चाद - चन्द, चन्दमा, शकांश, हजारकान्त

कमल - पंकज, नीरज, राजीव, पद्म, सरसिज

कुल - वंश, खानदान, जाति, कुटुम्ब, समस्त

जीव - जान, प्राण, आत्मा, मनुष्य, देहधारी

झूठ - असत्य, मिथ्या, विस्मार, कूसि

फूल - पुष्प, कुसुम, प्रसून, सुमन

[illegible] [illegible] [illegible] [

(Complementary)

'घर जाइत छी'क स्थानपर 'गृह जाइत छी'क प्रयोग नहि कयल जाइत ।

'गृह प्रवेश' होइछ, 'घर प्रवेश' नहि

गृहस्थ होइछ 'घरस्थ' नहि ।

'गिरहतनी' होइछ 'घरनी' नहि

'घर बसायब' होइछ, 'गृह बसायब' नहि ।

घर उजड़ब होइछ 'गृह उजड़ब' नहि ।

एकर आर प्रयोग देखू घर छोड़ब, गृहत्याग गृहत्याग ।

होलीमे एहि विशिष्टताक सन्दर्भमे आर्यो कैलनी चर्चा कोरल ।

ख) विलोम (Antonym)

देखाकेन द्वारा दोन प्रकारक सम्बन्धक परिकल्पना गेल अछि-

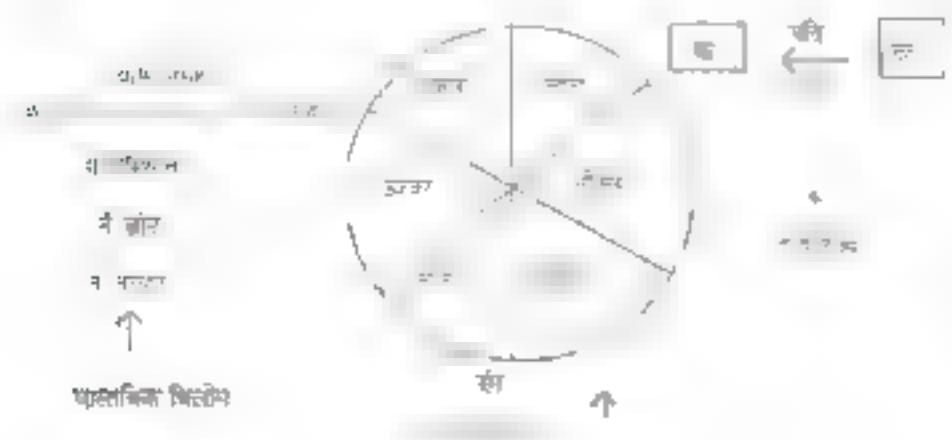

iv) अनेकार्थी शब्द (Polysemy)

कुछ शब्द कैसे अपने प्रयुक्त होने के संदर्भ में बहुअर्थ होते हैं, इसे समझने के लिए शब्दकोशों की सहायता ली जा सकती है। कुछ शब्द उदाहरणस्वरूप देखें

अवस्था– वयस, हालति, स्थिति

याचिका– बात, मोकदमा

ध्यान– स्मरण, एकाग्र, मनोयोग, विचार, बुद्धि

बाट– रास्ता, बँटवारा

अनेकार्थी शब्दों को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। ये अनेकार्थक शब्द अ अनेक शब्दों के अलावा वाक्य में भी पाए जाते हैं। समर्थ भाषा में इनके संदर्भगत अर्थ को समझने की आवश्यकता पड़ती है।

अब कुछ विशेष अर्थ संकेतों को देखते हैं जिनके कारण भाषिक इकाइयों में अर्थ उत्पन्न होता है। इन अर्थों को समझने के लिए हमें शब्द के अनेकार्थों पर विचार करना होगा। शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। (इसके उदाहरण 2.8)।

[illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, 'सोना' शब्द संज्ञा, क्रियापद, विशेषण आदि के रूप में प्रयुक्त होता है।

v) सहप्रयोग (Collocation)

[illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है।

[illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है।

[illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है। [illegible] शब्द के अनेकार्थ होने के कारण ही वाक्य में प्रयुक्त शब्द के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ की आवश्यकता होती है।

अभ्यास 4

1. निम्नलिखित शब्दक दू दू टा अर्थ लैक दुनू अर्थक लेल शब्द बनाउ आ दुनू अर्थ लिखू दीनक लेल शब्दकालमक यदनि सऽ सम्बन्ध छी

आला किल कंस दाल शाक मेल

क

ख

अभ्यास 5

निम्नांकित शब्दसमूहक तीन-तीन टा पर्याय लिखू

कमल

पंखुरि

राशि

पेघ

समूह

मेघ

पुरान

सूर

सिंहासन

[illegible]

2.6 शब्द-निर्माण

भाषाक शब्द कोना बनैत छैक ? आधारभूत शब्द कें [illegible] शब्दांशकें जोड़ि [illegible] शब्दांशकें [illegible] जोड़ि [illegible] शब्द बनि जाइत छैक । [illegible] शब्दांश [illegible] छैक जे [illegible] स्वतंत्र रूपसँ प्रयोग नहि कएल जा सकैत छैक किन्तु [illegible] शब्दांश [illegible] छैक जे [illegible] स्वतंत्र रूपसँ प्रयोग कएल जा सकैत छैक । [illegible] पूर्वक [illegible] शब्दांशकें उपसर्ग कहल जाइत छैक । [illegible] शब्दांशकें प्रत्यय कहल जाइत छैक । [illegible] शब्दांशकें [illegible] शब्दांशकें [illegible] शब्दांशकें

[illegible]

ऋमिकरण	खण्डकल
त्रिघटी ऋमिकरण	खण्डकल
द्वीघट ऋमिकरण	खण्डखण्डकल
द्वाघट ऋमिकरण	खण्डखण्डकल

नौलंख कमीशन	-	हल आयोग
मार्केटिंग	-	विपणन
मार्केटिंग बोर्ड		विपणन परिषद्

[illegible]

2.7 शब्द-रचना

[illegible]

मूल शब्द - वे शब्द जिनके विभाग करने से सार्थक [illegible] नहीं होते, जैसे- घोड़ा, ढोल, डोरी, कलाकारी, गेंद, बरफ, डबकना आदि।

व्युत्पन्न शब्द - [illegible] मूल शब्दों में प्रत्यय लगाकर या अन्य [illegible] बनाए जाते हैं या मूल शब्दों से अर्थविस्तार होता है-

उपसर्ग-	दिन	सुदिन	बिन	बिनिन
	चैन	बेचैन	गर	कुगर
	अकल	बेअकल	दिन	कुदिन
	गंध	सुगंध	अन्न	सुअन्न
	मन	सुमन	मन	कुमन
प्रत्यय-	चल	चलता	एक	एकता
	नव	नवता	देव	देवता
	प्रभु	प्रभुता	सम	समता

[illegible]

संस्कृतके उपसर्ग

[illegible] अनुसार अर्थात् [illegible] प्रयोग [illegible] संस्कृत [illegible] अधिकांश [illegible] पाँच [illegible] पाँच [illegible] विज्ञान [illegible] प्रयुक्त होते [illegible] उपसर्ग पुनः (पुनर्जन्म), सह (सहयोगी), स्व (स्वजन) आदि ।

अरबी फारसीके उपसर्ग

[illegible] अरबी [illegible] फारसी [illegible] उपसर्ग [illegible] प्रयोग [illegible] अधिकांश

i) इतरेतर द्वन्द्व– हाथा घोड़ा, दाँत पीस मरद बड़ा पाप पुण्य, हारि जीत, माछ भात लाठा-डांरी झाग-पात ।

ii) समाहार द्वन्द्व– पशुपक्षी, पांचोपतरा ।

• **बहुव्रीहि समास** बहुव्रीहि समासक समस्त पदमे कोनो एक पद प्रधान नहि होइत छैक अर्थात समस्त पदमे एक विशेष को विस्तृत अर्थ प्रकट होइत छैक उदाहरणस्वरूप देखू

पीताम्बर पीत + अम्बर - जे अर्थात वस्त्र पीयर छनि अर्थात् विष्णु

वीणापाणि वीणा पाणि - अर्थात हाथमे वीणा छनि, अर्थात् सरस्वती ।

नहिना तनुपुत्र यहाबल त्रिलोचन उदयवल चन्द्रावल त्रिनयन ।

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द (Echo words)

अनेक स्थल मे अहाँ बस अथवा ट्रेनमे यात्रा कऽ रहल छी , अचानक महत्माजी हडबडायल धनहासल बेर बुताए अपन ऊपर राखि रहल छथि अपन नीचाँ हँसाथि रहल छथि । अहाँ अवश्य सोचब पुनरुक्ति दोषक नाम हेतु पेल की / एतऽ 'रुकि' शब्दक अर्थ किछु नहि छैक अपितु पुनरुक्तिक भाव आरु टटकापन सेहो किछु आर तँ ने हेतु ? यएमे दोसरा लडकऽ अवश्यमेव टोकबे करत 'रुकाक' पुछारि यदि कयल जायत आ न तँ 'दोसराक संग दोसराक' मात्र होएत एहन शब्दक प्रतिध्वन्यात्मक शब्द कहल जाइछ । उदाहरणस्वरूप किछु शब्द देखू कनी कऽ सोचि सकैत छी की नहि / कोनो अंगरेजी लोकोक्ति याद

याद आए तँ सोचि लेब जे अहाँ बड़ी सोझ उत्तर-पुस्तिका दिअ जिनि बहुरा-तहुरा

प्रथम शब्दक संग मात्र मेलक एकर द्वितीय शब्द मात्र अर्थक होइत छैक दोसर शब्द प्रतिध्वन्यात्मक शब्द प्रथम शब्दक द्वितीय अक्षरक स्थानपर 'म' एवं अन्यो शब्द अर्थक बना ओ पूर्व प्रतिध्वन्यात्मक शब्द बनैत कतिपय पुनरुक्त शब्दक उदाहरण लक्ष्य देखू

दंत दांतिकऽ

पाँति पाँतिकऽ

कऽ कऽकिऽ

बाँकि बाँकिऽ

किछुक ठाम शब्दालंकार जकाँ पुनरुक्तिवाचक कोनो संकल्पनो जनि आबए कैक, से देखलहुँ । पुनः शब्दक अन्य प्रकारक उदाहरण अहाँ तकबाक प्रयास करब । कैक की नीक ?

अंत शब्द बनाक मध्यमे किछु अन्य प्रकारक पदो कहल जायत

पुनरुक्त शब्द एहि कोटिक शब्द दुइ समान शब्दक योगसँ बनैत कैक आ दुनू शब्द समान अर्थ होइत छैक लाक्षणिक एहि शब्दक विशिष्ट अर्थ प्रकट होइत छैक उदाहरणस्वरूप किछु शब्द देखू

गाम-गामसे अर्थात् प्रत्येक गामसे ।

तिल तिल, अर्थात् हरदम, क्षण-क्षण ।

कतिः कतिकऽ, अर्थात् बहुत कतिकऽ ।

नीक नीक गप, अर्थात् बहुत रास नीक गप ।

उपर्युक्त शब्दालंकार एवं शब्दकेँ दू वर्ग बाटल गेल अछि नँ एकरा द्विरुक्त शब्द सेहो कहल जाइछ ।

ध्वन्यर्थ व्यंजक शब्द

[illegible] ध्वन्यर्थ व्यंजक शब्द [illegible] प्रकार होते [illegible] हैं। [illegible] प्रकारके शब्दके विषय अथ [illegible] कुछ [illegible] लेकिन [illegible] ध्वनिसे [illegible] भाव अभिव्यक्त होता [illegible] है। [illegible] [illegible] खलखल खडखड खरपर घरघर टपटप हिपहप हरहर आदि [illegible] खलखलाना खडखडाना खरपराना घरघराना टपटपाना हिपहपाना हरहराना प्रभृति शब्दों [illegible] जा सकते [illegible] हैं। [illegible] [illegible] शब्द [illegible] [illegible] [illegible]

7. समाधान ( ) 8. नीलकंठ ( )

9. शांतिप्रिय ( ) 10. धनुर्धारी ( )

2.8 मुहावरा एवं लोकोक्ति

[illegible] हो [illegible] मुहावरे [illegible] लोकोक्ति [illegible] सार्थक [illegible] मुहावरे [illegible] लोकोक्ति [illegible] मुहावरे [illegible] लोकोक्ति [illegible] मुहावरे [illegible] लोकोक्ति

[illegible] [illegible] [illegible] [

निम्नांकित मुहाविरक संकलन अर्थ देत गेल अछि उचित मुहाँ आकलन एकर प्रयोग करू

रंगमे भंग - बाधक उपस्थित होयब ।

हँसि हँसि पिलायब - जी हजूरी करब ।

मोंछी झाड़ब - आत्मप्रशंसा करब ।

अपन पयपर ठाढ़ होयब - आत्मनिर्भर होयब ।

भण्डा फूटब - भेद खुलब ।

हँसी होयब - अवहित्था होयब ।

खसि पड़ब - चमत्कृत करब ।

टेढ़ी पेखनायब - चमत्कृत आचरण ।

अभ्यास 8

दोसर शैलिर कहबीक अर्थ देल गेल अछि पहिल शैलिक संग दोसर शैलिक मेलान करैत ओहि उक्त कहबीक प्रयोग करबाक लेल वाक्य बनाउ ।

क) आपक आम औंठीक दाम - एक कानमे दोहरी लाभ ।

ख) जकर लाठी तकर भैंस - अन्धाक कानमे बीन ।

ग) कुम्हारिक फल होयब - पेट भेनाइ असम्भव ।

घ) टेक राखब - मर्यादाक रक्षा करब ।

ङ) [illegible]

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4. [illegible]

5) भारी तिनतिमे पहिने गेल रही..... प्रसाद बाबू से रहा गेल ।

मुहाविरा आ कहबी : अर्थ रचना

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

2.9 सारांश

एहि इकाइमे अहाँ समास शब्दावली दन्द आ तत्पुरुष विग्रहके अध्ययन कयलहुँ। समास शब्दावली कोना बनैत छैक। किछु शब्द समासक अपन होइत छैक तँ किछु आन ठामसँ अबैत छैक। आ किछु आवश्यकतानुसार रचल जाइत छैक। एहि इकाइमे हमरालोकनि वैधिलाक शब्दावलीक प्रसंग उपरोक्त तथ्य पर विचार कयलहुँ। साहित्य विश्लेषणमे वैधिलीक शब्दावलीक छायापर विचार कयलहुँ। तखन वैधिलीमे शब्द रचनापर विचार विमर्श कयलहुँ। तकर बाद अहाँ सभ दुनू तरहक समासक परिचय प्राप्त कयलहुँ। एही प्रसंग इहो देखलहुँ जे शब्दक रचना कोना होइत छैक। शब्द रचनाक सन्दर्भमे तीन प्रमुख समासक विश्लेषण कयल गेल। ई तीन समास छिक तत्पुरुष बहुव्रीहि आ द्वन्द्व। प्रत्येक आ समासक संबंधि पुनर्बोध स्वनार्थ व्याकरण शब्दक स्थितिपर सेहो विचार कयलहुँ। उपर्युक्त जानकारीक आधारपर अहाँ अपन सारगर्भित भाषा आ लेखन शैलीकेँ प्रभावशाली बनयबाक प्रयास करब।

शब्दक अर्थगत संदर्भमे अहाँ शब्दक मार्फोलाजिकल रूप संबंधक पहलूपर सेहो विचार कयलहुँ। शब्द आ तकर अर्थक सम्बन्धपर पर्याप्त विचार करैत विभिन्न प्रकारक अर्थक अध्ययन कयलहुँ। अहाँ शब्दक अर्थ बोधक आ अर्थ परिवर्तनक कारणक सेहो अध्ययन कयलहुँ। अहाँ शब्दक संरचनात्मक आ अर्थगत दुनू विश्लेषणक माध्यमसँ मुहावराक सेहो कारणक प्रयोग करब सिखलहुँ।

2.10 किछु उपयोगी पुस्तक

) वैधिली परिभाषिका — गोविन्द झा

वैधली लोकोक्तिक उद्भव आ विकास — ह. लक्ष्मण झा

2.11 बोधप्रश्न / अभ्यासक उत्तर

बोधप्रश्न 1

ताप अर्थक बीच सम्बन्ध द्वारा कोनो एकटा शब्द निर्धारित क', तेकर बादसँ तखन ओहि शब्द आ अर्थक सम्बन्ध स्थापित भऽ जाइत छैक।

समासक संरचना दुइ वा दुइसँ अधिक शब्दक मेलसँ होइत छैक जेना व्याधिरोग भाषा शब्द बनाबैक काज कयबाक आवश्यकता पड़ैत छैक। एहि प्रकारसँ औपचारिक भाषा अनौपचारिक भाषा शिक्षितक भाषा आ शिक्षितक भाषामे अन्तर होइत छैक। तहिना सामाजिक स्तरक कारणे भाषक रूप बदलैत अछि, जाइत छैक।

बोधप्रश्न 2

1. तत्पुरुष
2. द्वन्द्व
3. तत्पुरुष
4. तत्पुरुष
5. तत्पुरुष
6. तत्पुरुष
7. तत्पुरुष
8. तत्पुरुष
9. बहुव्रीहि
10. द्वन्द्व

अभ्यास 2

[illegible]

अभ्यास 6

[illegible]

अभ्यास 8

1. ग, 2. क 3. ख 4. घ, 5. ङ

2.12 अनुकार्य

[illegible]

इकाइ 3 संस्कृति विषयक बोध एवं शब्दकोशक उपयोग

इकाइक प्रारूप

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 पारिभाषिक विश्लेषण

3.3 शब्दकोशक उपयोग

3.3.1 शब्द साधक

3.3.2 शब्दार्थ साधक

3.3.3 शब्दकोशमें अन्य जानकारी प्राप्त करब

3.4 सारांश

3.5 उपयोगी पुस्तक

3.6 बोध प्रश्नावली / अभ्यासक क्रम / संबंधक अनुकार्य

3.0 उद्देश्य

एहि इकाइक अध्ययन कयलाक बाद अहाँ :

- पारिभाषिक संस्कृतीमे प्रयुक्त [illegible] शब्दक अर्थ प्रयोग कऽ सकब,
- [illegible] शब्दकोशक उचित प्रयोग करबाक अभ्यास [illegible] शब्दकोशमे शब्दक अर्थ प्राप्त करब सीख,
- शब्दकोशक ठीक ठीक प्रयोग कऽ सकब ।

3.1 प्रस्तावना

पछिला इकाइमे अहाँ पारिभाषिक शब्दक [illegible] विशेषता पाठमे प्रयुक्त शब्दक अर्थ कयलाक आवश्यकता बला शब्द कोशक [illegible] प्रयोग सम्बन्धमे [illegible] कयलहुँ । आब अपने अहाँ एहि [illegible] विषयमे किएक नै गप करी ?

अहाँ जँ [illegible] तँ अपने [illegible] शब्दकोश [illegible] अवश्य [illegible] प्रयोग कयने होयब । [illegible] शब्दकोशमे [illegible] शब्दक अर्थ [illegible] शब्दकोशमे [illegible] शब्दक अर्थ [illegible] शब्दकोशमे [illegible] शब्दक अर्थ

3.2 पावनि तिहार

पावनि तिहारक रूप सेहो बदलि जाइत छैक।

एकर अनेक उदाहरण भेटत। एक दोसराक प्रेमक बन्धनमे आबिकऽ आनन्द पलन कएल करैत छथि।

हिन्दुक अद्धि सर्वत्र एम आस्था ओ श्रद्ध संकेतक [illegible] प्रदर्शन हएत अछि पैह कारण थिक ई प्रायःपूर्ण विधिसम्मत सबँसे पहिने दबी देवताक पूजा तहुदिन होम आरु नै अन्य एत किछु पूर्वमे थिक अत्यन्त आवश्यक होम हएत अछि अहाँ अनेरे लो ने अपन आँख ठाढ पसार थेथक आगम आयोजनमे हएत अछि नै आरो क्रमसँ कात प्रायमी थान प्रमुख पावनि हाइत अछि, तकर चर्चा एतऽ करैत छी :

1) **मधुश्रावणी**

ई पावन सावन मासक इजोरिया तृतीया दिन हाइत छैक नवविवाहिता कनियाँ लेहु दिन अन्हरियाह पंचमीमे इजोरिया तृतीया धरि तेह श्रद्धेक मन प्रतिदिन पूजा करैत रहथ पहिल दिन साँझ पहर फूलपत्र आनि अनेक प्रकार नागक पूजा करैत छथि पतिदेव हाइत छैक मधुश्रावणी दिन सासुरसँ पठा प्रदेश करि ने पंडितक गहन दुहिता आ बेटा माय बेटी जेवनारक आ पर करैत छैक दही दूधसँ आइत छति सम्पत्ति के मध्य भाइक कल्याण पंडितक कामना करैत छथि विधिसम्मत ई बड़ मनोरम पर्व होइत अछि ।

2) **छौरधन**

[illegible] धन के नागक पूजा छौरधन विधिसम्मत प्रसिद्ध पर्वमे धरि दिन ग्रामक विद्युतिका पूजन आइत अछि जेकरो परिवारमे नहि छौरक आइत [illegible] के पंडित अहि आरु पंडितक कोन अहि हमरा एकैक सन एक [illegible] मनोरम दृश्यक दर्शन करबा आइत अछि [illegible] अपन [illegible] ई कहि अछि आ पंडित अहि आ पंडित बाद सब पुरुषोत्तमसँ [illegible] अछि [illegible] छैक अहि [illegible] छैक छौरधन विधिसम्मत छाल कामनि थिक ।

3) **दशमी**

[illegible] विद्युतिकाकी सब पंडितक [illegible] आइत अछि । ई पर्व कोबाह [illegible] श्रद्धेक पूजेक थिक [illegible] अनेक [illegible] पंडितक [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

एक दोसरकेँ राग-अनुरागमे बान्हि दैत छैक। आनुष्ठानिक अन्तरङ्ग मिथिलामे धरि घर धरैत अछि। आगि दर्शिकता लेहा बनए लगलय अछि। किन्तु गर बाह पोथि बुत मे जाइत छथि से उचित नहि कारण अंशुपे हांग राखब बहु अवश्यक हाइड्रक लोकनिसभमे जिम अवश्यक दनु पहनेमेँ दिन गनैत रहैत अछि परवैया लेहा अपन प्रवासी लोककेँ प्रत्येक अनुष्ठानमेँ करैत अछि। स्वभिवाहित कन्यामे सासुर जाइत छथि आ हँसी ठट्ठामे आनन्द लैत छथि। कम्फ मजाकक संग अपनैत। फानु सबैत लोकसभ चिन्ता फिकिरकेँ बिसरि जाइत अछि। ई पारस्परिक प्रेम सद्भावक पर थिक।

11) वृक्षरोपण

पर्यावरण सन्तुलन लेल वृक्षारोपण दिन पूर्णिमाक दिनहर बरोबर बड़ी मात्र प्रसादक रूपमे प्रदान करैत अछि। आजुक दिनमेँ लोकमे यह परम्परामे बुधिक एकेक गलती अबैत अछि। कतहु कतहु एहनसिमाने लोक विकास लेहा सुखाइत अछि। घरक श्रेष्ठ महिलालोकनि मासपर पानि राखि सबकेँ बुझबैत छथि।

12) बरिसाति

पितर लोक पर्यवेक्षणहेतु कल्पा जेठक आषाढ़क बरक गछ पर पूजा करैत छथि आ आहि दिनसँ बहु दिन धरि अभिलाषा बहुप्रकारक लोक पूजा करैत छथि। पंडितजी लोक मिलु बहिनक संग मायुक प्रतीनी फूलपत्ता लोहिक अबैत छथि। पाँच दिन ५ सासुक गहु आल बस्तु भोजन करैत छथि। पूजाक बाद खाए लोकनि अइहन लोकनिक संग भोजन करैत छथि।

13) ईद

ई लोकनि बहुक महत्वपूर्ण पर्वमे थिक। आगि ई वर्षमे दु बेर मनाओल जाइत अछि। ईद उल फितर आ ईद उल जुहा। ईद उल फितर रमजान मासक उपवास फजैत अछि। रमजानक अंति मासु दुसरिमा चाँद राजे देखैत छथि आ तकरे आधारपर सफलतापूर्वक समापनपर ईद मनाओल जाइत अछि। ई पर्व मुसलमान लोकनि बड़ उत्साह-उमंगक संग मनाओल जाइत अछि। आहि दिन बेर भर लोक पैसार लोक पुरान पहिर सजि धजि पढ़ैत अछि एक दोसरकेँ शुभकामना दैत लगजैत अछि। बच्चासभ पैसाक आसरे उछैत अछि संग संग बड़ो बालस जाइत अछि। कम्म मजदूरक लोक लेहा मुसलमान भाइकेँ ईदक बधाइ दैत अछि।

ईद मन मुख त्याग आ बलिदानक उच्चादर्शे मनाओल जाइत अछि। पैगम्बर इब्राहिम अपने इकलौता बालकेँ अल्लाह प्रिय पुत्रक बलि देबाक हेतु प्रस्तुत भ, पैन कुबानी आही स्मृतिमे ई पर्व मनाओल जाइत अछि।

14) फोहरम

मोहरम महा मासपूर्ण एकमा मनाओल जाइत अछि। ई पर्व इस्लाम धर्मावलम्बी लोकनिक पवित्र धर्मग्रन्थ कुरान हजरत अली साहेबक पुत्र हजरत इमाम हुसैनक बलिदानक स्मृतिमे मनाओल जाइत अछि। एहि अवसरपर हुनका लोकनिक स्मृतिमे ताजिया निकालल जाइत अछि। ताजियाक मोहिया गाओल जाइत अछि। पैगम्बरी लोकनिमे ई बड़ धार्मिक कर्म प्रस्तुत भेल अछि।

एकर अतिरिक्त दोसरोक एक महत्वपूर्ण जातीय आयोजित लेह अनेक पर्व अपन आहि ग्राम मनाओल जाइत अछि जनमे १ जनवरीकेँ नववर्ष दिवस १ अगस्तकेँ स्वतन्त्रता दिवस १ सितम्बरकेँ शिक्षक दिवस २ अक्टूबरकेँ गाँधि जयन्ती १४ नवम्बरकेँ बाल दिवस आदि आदि कतको पर्वक आयोजन समय समयपर होइत रहैत अछि, जे मिथिलाक संस्कृतिक अनुरूप छिक।

भाषा खोप

बोध प्रश्न

1) निम्नलिखित किछु कथन ठाक अछि किछु कथन ठाक नहि अछि ठाकपर अहाँ ई चिन्ह (✓) लगाउ :

क) [illegible] संस्कृति अभ्यासक विकास पल छैक

() सही () गलत

ख) मधुश्रवणी राष्ट्रीय पर्व मिथिलाक । () सही () गलत

ग) बारिसक्ति लोकपर्व थिक । () सही () गलत

घ) मर्यिया लोकगीत थिक । () सही () गलत

2) निम्नलिखित पर्वकें सही लोकात्मक अर्थसँ जोड़ू

1) स्वतंत्रता दिवस	क) आसुरी शक्तिपर विजय
2) दशमी	ख) विद्याक आराधना
3) सरस्वती पूजा	ग) त्याग बलिदानक स्मृतिमे
4) ईदलफ़ित्र	घ) राष्ट्रीय भावना

3) निम्नलिखित वाक्यात्मक अनावश्यक [illegible] वाक्य लेख अछि हालिसे जे कथन उपयुक्त वाक्यक चोख करबैत हो, सकरा चिह्नित करू :

i) पावनि-तिहार सांस्कृतिक महत्वपूर्ण अंग छाइछ ।

क) [illegible] ।

ख) [illegible] ।

ग) पावनि तिहार सम्यताक इतिहास थिक । [ ]

ii) यदि छोड़लहुँ पावनि तिहारकें हम एहि जाय तँ लोकक जीवन अत्यंत नरक भऽ जायतैक ।

क) [illegible] ।

ख) जीवनक उद्देश्य छाइत स्वर्ग प्राप्त करब । [ ]

ग) नरक प्राप्त नहि हो से प्रयास करबाक चाही । [ ]

iii) समाजमे [illegible] संस्कृतिक सदा परिवर्तन भ' जाइत छैक ।

क) सभ्यता संस्कृति स्थायी नहि होइछ । [ ]

ख) समयक परिवर्तन निश्चित छैक । [ ]

ग) संस्कृतिकें सभ्यतासँ कोनो सम्बन्ध नहि होइछ । [ ]

4) एहि हम प्रश्न [illegible] वाक्य बनबलहुँ अछि अहाँ कोन छी ने मिथिलामे कतिपय पर्व [illegible] अछि [illegible] एकटा निम्नलिखित दू [illegible] अछि कतहु दिवस चुड़ा दही आ तातिर खिचड़ि खाइत अछि ने कतहु दिवस खेसारीसँ खयबाक चलन अछि कतहु पूर्णिमाकें दिवस [illegible] कतहु संक्रान्ति दिन संध्याकाल सत्यनारायण पूजा करबाक नियम अछि वा एहि पावनि तिहार टाक उपर करबाक उद्देश्य नहि अछि [illegible] कहब उचित नहि जे एकटि तिहार सांस्कृतिक पर्व थिक, आ हरपालाकेंचिक

[illegible] क्रिया कलापमे सम्मान होइत [illegible] अछि । अहिसँ [illegible] व्यवहारक [illegible] करब आदर [illegible] अपन परम्पराक रक्षा करब [illegible] आदर्श [illegible] प्रकार उपयोगितापर दृष्टिपात [illegible] मूल बिन्दु थिक । [illegible] आदि वाक्यक [illegible] शब्दमे सन शब्दक [illegible] अनुपयुक्त शब्दक [illegible] दिअौक, जाहिसँ वाक्य सार्थक भऽ जाइक ।

1) पर्व मनुष्यक (संस्कृति / सभ्यता)क महत्वपूर्ण अंग थिक ।

2) [illegible] वसन एवं [illegible] प्रकृति [illegible]

[illegible] अनुसार [illegible] शब्दक प्रयोग करए चाही ताहि जाइछ

4) [illegible] (विद्या / धन)क आधारपर मानल जाइत छथि ।

5) छठि (शक्ति / भक्ति)क पर्व अछि ।

6) चौरचनमे (उकड़ू / पिठूकिया) बैसल अछि ।

[illegible] [illegible]

8) [illegible] [illegible]

9) दशामेमे लोक (जयन्ती / जनन) धारण करैत अछि ।

10) कोजागरा (अमावस्या / पूर्णिमा) दिन [illegible] अछि ।

[illegible]

12) पक्षा (हंस / मोरपंख)मे बनाओल जाइत अछि

[illegible]

[illegible]

15) (मोरपंख / हंस)क अलमारपर संख्य बाँटल जाइत अछि ।

4 क) [illegible] शब्दक [illegible] शब्दक [illegible] मे भेद
शब्दक [illegible] प्रयोग दैत शब्दक उल्लेख करू ।

1) [illegible]

2) भूकोष

ख) [illegible] शब्दक [illegible] अन्य शब्दक उल्लेख करू ।

६) [illegible]

अ) [illegible]

आ) [illegible]

७) [illegible]

१) [illegible]

अ) [illegible]

आ) [illegible]

3.3 शब्दकोशक उपयोग

3.3.1 शब्द तालिका

2) [illegible] अक्षरके आधारित [illegible] शब्द अथवा [illegible] आप वैसे प्रश्न कर सकते हैं जिसमें [illegible] अक्षर के [illegible] एक शब्दको खोजना होगा। उदाहरण के लिए [illegible] शब्दों को [illegible] हेतु वे शब्द जिनमें [illegible] प्रकारसे [illegible] हो। यदि दिए गए समूह में [illegible] शब्द न मिले तो [illegible] शब्द [illegible] में [illegible] यदि [illegible] समान शब्द से अधिक शब्दों [illegible] प्रकार प्रत्येक खाने में [illegible] शब्द यदि [illegible] उदाहरण [illegible] शब्दकोशके क्रम [illegible] 4 खानेमें [illegible] शब्दों देखा रहता है। ध्यान दीजिये।

दो वर्ण	तीन वर्ण	चार वर्ण	पाँच वर्ण
घर	घोड़	घरघर	महिलासवार
घर	घपला	घड़कल	घोड़सवार
घर	चरण	घड़कन	फटकाओन
घर	चरक	पटकन	फटकफोड़
घर	अमल	टमटम	भलमानि

शब्दकोशमें [illegible] ऐसे [illegible] प्रकारके शब्द [illegible] एक साथ [illegible] सैकड़ों [illegible] शब्द [illegible] परिस्थितियोंमें [illegible] प्रत्येक खानेके [illegible] क्रमानुसार शब्दकोशके [illegible] क्रम अवश्य [illegible] होगा। [illegible] ऐसे [illegible] शब्दके अर्थ [illegible] किन्तु [illegible] शब्दों [illegible] शब्दकोशके [illegible] क्रममें [illegible] पहले [illegible] और [illegible] शब्दों [illegible] खानेके [illegible] शब्दोंसे [illegible] सकते हैं। [illegible] यदि [illegible] खाने [illegible] ऐसे [illegible] उदाहरण [illegible] देखें [illegible] रहने [illegible] अंकित :

कांक,	कखग,	कलौंर,	कमकस,	कस
कखनो	कचकच,	कच्च-कच्च,	कविया,	
कमजोरी,	कठकोंकाहि,	कड़कड़ायब,	रवगलायब	
दागि,	ढकोच,	प्रदर्शन,	राजनीतिज्ञ,	सज्जा

3) [illegible] यहाँ [illegible] दिया [illegible] के [illegible] कुछ [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible]

हँसन	हंस
कँस	कंस
अँगन	अंग
पँकि	पंक

[illegible] स्वरक मुदा स्वर ल्पन छैक तँ आकार आदि मे [illegible] लगातैक [illegible] परंतु केर क्रममे अन्तर नहि होइछ ।

४ प्रश्न ई उठैत अछि जे स्वरक मात्रात्मक एवं व्यञ्जनात्मक प्रयुक्त वर्णक गहिल कथा कें कोना ताकल जा सकैत अछि ? क्रम तँ बैह छैक-

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ क्

एहि लेल शब्दकोशक क्रम देखू :

कंक, कंकड़, कँकुड़ी, कमोर

कमल कांसी कलश कोंढ़ कँकड़ा

कंचन कँडा कोंटर, कंठ, कओ

कउड़ा, कलधौत कलशोभा कंतिकी कंटोरा,

कनगुरिया, कनसार

काका, कुरथी, खाइ

६) तीन आर आखर अछि : ख, ग, ड । ई तीनू व्यंजन अछि,

क + ष = क्ष

त + र = त्र

ज + ञ = ज्ञ

आब संयुक्त वर्णक तकबाक बाहुल्य रहितो एकर तर्क संगत छै ।

अभ्यास

१ [illegible] शब्दकें शब्दकोशक क्रममे राखू । एकर एकाइकेर प्रयास दोसर सकैत छी

कथा	मरसू	पहाड़	खुरखुर	कारीगर
कान्ह	कतिपय	गुरुक	ओगरबाह	ढबरा
हथोड़	ठाठब	कंठ	किंचाय	उपचयन
मोनियाह	चुनिला	कंचन	कार्य	उनासी
अहना	कठघरा	खजना	ओकर	अस्सी

3.3.2 शब्दार्थ तात्पर्य

शब्दकोशमा तात्पर्यक बाद अहाँ शब्दक अर्थ तात्पर्य ... अनेकार्थक शब्द एहन होइछ जकर अर्थ तँ अनेक होइछ मुदा प्रसंगक अनुकूल उपयुक्त अर्थ बुझलासँ वाक्यक अर्थ स्पष्ट होइत छैक जना

पक्ष = शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष, पाँखि, गुट, विचार ।

पक्षधर = कोनो एक पक्षक समर्थक ।

पक्षपात = एक दिस झुकब ।

पक्षपाती = पक्षपात करयनिहार ।

कर = हाथ, किरण, टैक्स, = करकमल, दिनकर, आयकर ।

उपर्युक्त अर्थ तात्पर्यक हेतु अनेकार्थ शब्दक दोसर पहल **के तात्पर्य कहल जाइत** कहैत छैक ? शब्दकोशमे रहबाक शब्द [illegible] एक शब्द कर विभिन्न प्रयोग के संकेत दैत सभी विशेषण तात्पर्यक दिशामे करी जेना अनि... लोकोक्तिक अर्थ तथा एतिमे नाम मुख्य देल गेल रहैत छैक ।

अभ्यास

1) निम्नलिखित वाक्य शब्दक अर्थ शब्दकोशसँ देखिकऽ लिखू शब्द वाक्यमे चिह्नित अछि :

क/ ओ एकटक आकाश देखैत रहल ।

ख/ ओ मोबुलि बलामे अयलाह ।

ग/ ई चिनैत अछि ।

3.3.3 शब्दकोशसँ अन्य जानकारी प्राप्त करब

किछु एहन शब्द ... तात्पर्यक अछि जाहि कारणे अहाँकेँ अपना अभीष्ट तात्पर्यक शब्द लिखि ... शब्दकोशमे पाबि ... अर्थ तात्पर्य ... शब्दकोशमे अहाँकेँ ई तात्पर्यक रूप शब्दक चारि भेद होइत छैक - तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी ।

तत्सम - संस्कृतक अविकल रूप, जेना- पुत्र ।

तद्भव - संस्कृत शब्दक विकृत रूप, जेना- पूत ।

देशज - क्षेत्रविशेषक प्रचलित शब्द, जेना कुसियार ।

विदेशी - [illegible] ... टेबल इत्यादि

2 शब्दकोशमे प्रत्येक ... शब्दक उच्चारण करबा काल्हि अर्थ आदि तथा जानकारी प्राप्त होइत अछि एतय शब्दक लिंग जानकारी सेहो देल गेल रहैत अछि

3 एतय लिंग शब्द जाहि व्याकरणिक तात्पर्य अछि लिंगबोध कराबय लागिकऽ परिचय सेहो एहिसँ भेटैत अछि । उदाहरणक लेल देखू :

आँखि [संज्ञा स्त्रीलिंग] संस्कृत अक्षि, नेत्र ।

आँखि खराब होब, आँखि मूनब, आँखि फोलब, आँखि गड़ाएब, आँखि चुराएब, आँखि कमजोर होब, आँखि मिलाएब, आँखि [illegible]

- [illegible]

- [illegible]

[illegible]

अभ्यास [illegible]

शब्द	शब्दक स्रोत अथवा मूल शब्द	लिंग अथवा व्याकरणिक वर्ग	व्युत्पत्ति
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			
[illegible]			

3.4 सारांश

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

3.5 उपयोगी पुस्तक

[illegible]

3.6 बोध प्रश्नावली / अभ्यासक उत्तर / सबक अनुकार्य

1) क) सही ख) गलत ग) सही घ) सही

2) 1/घ 2/क 3/ख 4/ग

3) 1/ख २/क ३/क

4) संस्कृति २ क्ष ३ बृहन्महाराष्ट्र ४ ऋण

5/पर्वत ६ महाराष्ट्र ७ सह्याद्रि ८ तुतारी

9/जयन्ती 10/पूर्णिमा 11/मुक्तपीठ 12/सोहरंस

13/राष्ट्रीय 14/स्वतंत्रता दिवस 15/ईद 1

5) क) (i) उमंग उत्साह उल्हास

(ii) भूखंड

ख) अपरंपार पूजा आस्था श्रद्धा प्रेम भक्ति

6) i) सूर्य, चन्द्र राम कृष्ण गणेश हनुमान लक्ष्मी दुर्गा माहादेव

ii) श्रद्धा / भक्ति / पूजा / आराधना / आस्था ।

7) i) [illegible] मधुश्रावणी, सरदतिया, बृहशांतल, आमावसि ।

iii) राष्ट्रीय संघटी भारत अनेक सांस्कृतिकी एकताक मूल्य महत्व घर आज हेतु अछि । राष्ट्रीय पर्वमे प्रत्येक जाति धर्म सम्प्रदाय भाषाभाष एवं भारतीय लोग अपन पारम्परिक प्रेमक प्रदर्शन करैत अछि आर भावात्मक एकता स्थापित करब राष्ट्रीय पर्वक मुख्य उद्देश्य होइत छैक ।

iv) [illegible] प्रेमक भाव प्रकट करैत छथि मधुर वैन बोल । आनन्दक उत्सव थिक ।

अभ्यास

1) अहना अम्मी [illegible] कलिपय कलह [illegible] बाघिआह, फेरसु, प्रचंड, बाक ।

2) क) एकान्तक अत्यन्त दुखित [illegible] ओकिल तुल्लीवला

ख) सोधनि [illegible] ओछुर सौझ पहर [illegible] उडबैन अवैत [illegible]

ग) लिखै छ – जे एंठ नहि कयल गेल हो ।

शब्द	शब्दक स्रोत अथवा मूल शब्द	लिंग अथवा व्याकरणिक वर्ग	व्युत्पत्ति
आगमन	आ (उपसर्ग)	संज्ञा, पुल्लिंग	गम् संस्कृत
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
जाति	संस्कृत	संज्ञा	जाति
कान	संस्कृत	संज्ञा	कर्ण
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
हाट	संस्कृत	संज्ञा	हट्ट
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अनुकार्य

शब्दकोशक सही रूपमें प्रयोग सिद्धताक हेतु एहि स्रोतसँ प्रदत्त कोशत शब्दावलीक अर्थ मैथिली शब्दकोशमे देखू ।

इकाइ 4 समाजविज्ञान विषयक बोध एवं निबन्ध रचनाक परिचय

इकाइक रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 परिचय

4.3 निबन्ध रचना

4.4 व्याकरणिक विवेचन

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 बोधप्रश्न / अभ्यासक उत्तर

4.8 अनुकार्य

4.0 उद्देश्य

एहि इकाइक पढ़सक बाद अहाँ

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

4.1 प्रस्तावना

इकाइ [illegible] अहाँ समाजी विषयक ज्ञान प्राप्त करबहुँ । समाजी [illegible] विषयक अभ्यासक इ करब प्रमाणित करब जेहन [illegible] विकासी एक की परिवार जेहन [illegible] समाज एवं समाजक [illegible] संस्कृति आदि तथा समाजक सम्बन्धित साहित्य जेहन [illegible] सम्बन्धित सामग्रि एवं विषयक व्याकरणिक समस्या सभक विशेषतासँ परिचित भेनाई । एहि इकाइ अहाँ समाज विज्ञान विषयक अध्ययन करब

काल सर्वत्रिक समस्या उत्पन्न भेनाइ करब इकाइक जेहन अथवा कार्य सम्पन्न करबाक लेल कार्य भार लेल जाएब किन्तु व्यक्तिक समूह परिवार सिक्षा तथा अनेको परिचालक भार रचना सिक्षा समाजक गठनक अनेक प्रकार अनेक क्षेत्रमे अथवा समस्या सुलझ आदि [illegible] कार्यहुँ सिद्धान्त स्थापना सम्बन्धित प्रश्न पाठ प्राप्त करब लेल [illegible] परिचय करबाक समाजक अध्ययन सिद्धान्त जेहन व्यक्ति वा परिवार अध्ययनक्षेत्र रचना आदि

एहि इकाइमे हम निबन्ध रचनाक एवं विचार करब [illegible] अपर विद्वानक कार्यक प्रस्तुत करबाक ढंग सहज बनाएब करब [illegible] अहाँ अहाँ [illegible] विषयक विषय वस्तुक प्रस्तुत करबाक ढंग सहज बनाएब लेल हम उदाहरण [illegible] दिशा निर्देश देब । एहि इकाइ [illegible] अहाँक [illegible] खंडमे [illegible] लेल [illegible] बुझबाक [illegible] सहायता भेटत ।

4.2 परिवार

प्रत्येक व्यक्ति चाहे वो पुरुष हो या स्त्री काम व करने परिवारक सदस्य होत अछि. प्रेम अ के पायक रूपमे बेटा या बेटीक रूपमे भाइ कि हसबैंड रूपमे स्त्री सदस्य सामाजिक रूपमे पिता पुत्रीक विभिन्न क्षमतामे व्यक्ति व्यवहार करैत छथि. हुनक कमजोरी थकने रुकने चलैत समय आदमक काम करैत छथि. ओ भावना व्यक्त करैत छथि बच्चासभक सैखार का स्कूल पठबैत छथि. अनेक परिस्थिति बला सह दैत छथि. हुनक आदर परिवारक सभ सदस्य करैत छथि. परन्तु पुनर्क ने सभमे एक ठ हुनकोमे लैत छैक को कठिन अहाँ ई संतानहु थोड़ ३ बाद एक अपन हानिहुक हेतु ताक काट किसक उतरैत छथि / किसक बच्चा तथक विपत्तिहुमय अवस्थामे यदि छ बहुत सभमे बेसी एग अधि सहायिका को आवश्यक है परिवार थिक ई अपन एक सदस्यक हेतु दुख बढ़ने सैन आगू जोड़ सामाजिक परिवार यदि ई पहल सहायक कार्यक्रम को हम कि सकैत छी ?

यदि एक समाजे एक के ने सहायता सेवा अछि प्रदान करैत। यदि ई परिवार सामाजिक कार्यक्रम एकाए, थिक परन्तु सामाजिक नियुक्त हएत थिक ई तथ सामाजिक संस्था थिक आकर बालपर मानव प्रगति का सकल अछि ।

खण्ड- अ

भाव ३ पुरान समेत आंख ७ परिवारक एकक अंग थिक अंग ४ एक व्यक्ति प्रदान हुनैत छी । साथ साथ स्वयं कार्य प्रेम परिवार अन्योन्य व्यवहार सम्बन्ध देन छथि. एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति में अपने अपने व्यवहार को एहने व्यवहार करैत छथि. परन्तु परिवार एक एहन परस्परिक आदि का व्यक्ति एहन से व्यक्ति हेन व्यवहार करैत छथि. एहने से सामाजिक कार्य के परिवार सामाजिक संस्था हेतु अपनाकें तैयार करैत अछि ।

हम समाज में ने सदस्य परिवारक हम सदस्य व्यक्ति व्यवहार स्वयं एक परिवार हित अन्य हम व्यक्ति अछि. ओ एक आवश्यक रूप बहुत देन सकैत. प्रत्येकमे व्यवहार के व्यक्ति हुनकें अपन हुनक व्यक्ति परिवार हेतु व्यक्ति व्यवहार सामाजिक सदस्य व्यक्ति हेतु अपने अपने व्यवहार हित हेन अपने ओ अपने व्यक्ति व्यवहार हुनैत छथि. ओ एक व्यक्ति व्यवहार सामाजिक व्यवहार हेतु

[illegible] [illegible] [illegible] [

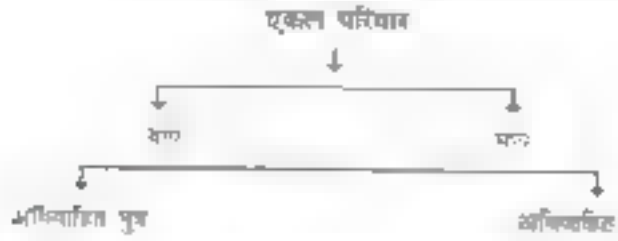

खंड ख

स्त्रीलाकर्त्रिक इंदु न्यायालय कथाकृति नहि छल संयुक्त परिवारमे व्यक्तिक स्थान गौण छल परिवारक समष्टि सर्वोपरि ।

समय बदलल समाजक नव नव व्यवस्था प्रारंभ होबए लागल । ताहिसँ संयुक्त परिवार समाप्त होबए लागल कल कारखाना खुलए लागल मशीनरीक आविष्कार होबए लागल जाहिसँ प्राचीन उत्पादन पद्धति समाप्त होबए लागल जखन आधुनिक संयंत्रपर आधृत समाज आ थाड़ खुलए कारखाना बनए लागल तँ हस्तकारक उद्योग धीरे धीरे होबए लागल कृषक हैसियतसँ खेत जोतबए लागल एहिसँ हरबै खेत जोतब कम भऽ गेल नव नव मशीन पुंजीवादक (Mass Production) केँ जन्म देलक पैघ पैघ कारखाना स्थापित करबए लगल औद्योगीकरण प्रारंभ भेल । एक एक कारखानामे हजार कर्मिक काज करए लागल । ग्रामीण हस्तकरण शुरू भेल । एकर परिणाम ई भेल जे लोक अपन व्यवसायकेँ छोड़ि नोकरीपर जाय लागल अपन कारीगरी केँ खत्म होबए देखए लागल एक परिवारमे जे चारि गोट कर्मीआ भेल से आब एकेटा पुरुष सदस्यपर आय भऽ गेल ओहि प्रकारेँ अपन खास आयक जन्म भेल ।

यद्यपि किछु एक बालक अपन मनसँ अपन पाइ नोकरी करबाक हेतु भिन्न भिन्न शहर वा एक शहर अपन अपन खास विभिन्न ग्राम विभिन्न नोकरी करए लगलाह अछि एक शहरमे परिवारक एक एक दुइ बेकती अछि एकर कारण अछि जे बालक आय भिन्न भिन्न ठाम अछि एक पति बास हजार दस हजार बसए पत्नी हजार तँ कोस बीस हजार कोसपर अछि जखन अपन आयक अनुरूप अपन भाग्य बनेबाक लेल जे घोर पुरुषार्थ करए पड़ैत अछि ई एक, महत्वपूर्ण कारण भेल जाहिसँ संयुक्त परिवार टूटल आ एकल परिवारक निर्माण भेल । ई सामाजिक विकासक स्वाभाविक प्रक्रिया थिक उकरा रोकल नहि जा सकैत अछि ।

औद्योगीकरणक संगहि संगहि नगरीकरणक प्रक्रिया प्रारंभ भेल नगर तथा महानगरक विकास होबए लगल अनेक ग्राम तथा छोट छोट शहरसँ व्यक्ति परिवारक जीवनक हेतु आर्थिक दृष्टिसँ सम्पन्नता लेबाक लेल नगरमे आबए लगलाह । जेना जेना नगरीकरण बढ़ैत गेल तेना तेना एकल परिवारक संख्यामे वृद्धि होइत गेल । ई स्थिति आइ धरि चलि आबि रहल अछि ।

खण्ड ई

एहि खण्डमे सामान्यतः ई देखल जाय सकैत अछि जे लेखक चर्चित सभ पात्र पात्रे छथि वा स्त्री छथि वा पुरुष केवल वर्ण वा रंग वा रूपक विचारक आधारपर कोनो पात्रक चयन नहि कयल गेल अछि । यदि, कोनो पात्रक वर्ण वा रंग अनिवार्य रूपेँ अछि तँ ओकर कोनो विशेष कारण अछि लेखकक उद्देश्य मनोरंजनक संग संग सामाजिक समस्या प्रति लोकक ध्यान आकृष्ट करबाक छनि तेँ ओकरा लेखक एहि रूपेँ प्रस्तुत करैत छथि जाहिसँ पाठक वा श्रोतामे ओहि समस्याक प्रति जागरूकता उत्पन्न होइक । पात्रक चयन वा निर्माणमे लेखक सामाजिक दृष्टि राखल अछि तेँ ओहिमे सामाजिक दृष्टि भेटैत अछि । ई पात्र समाजक समस्या तथा कर्तव्यक आदर्श पर व्यवस्थाक ओर इंगित करैत अछि । ई पात्र हास्यास्पद पद्धति व लोकतंत्रक अवधारणामे परिवारपर कोन प्रकारक प्रभाव पड़ल ।

एहिना लेखकक अन्य प्रकार ई पद्धति से पात्रक चर्चाक क्रम व्यवस्था पर सर्वप्रथम ध्यान देलन्हि अछि ई पात्र ने लेखकक अन्य परिवारक सदस्य जकाँ अपन महत्वपूर्ण स्थान, लेलन्हि ई पात्र पर तथा पात्रक कार्य व्यापार रूप पात्र पर प्रकाश

कयलाक फलस्वरूप स्त्री स्वातंत्र्य संबंधक दृष्टिकोण परिवर्तित भेल आब ई सहजहि देखबामे अबैत अछि जे अनेक परिवारमे स्त्री स्वयं दुनू सकैत करैत अछि वस्तुतः अन्य स्त्री पतिक सहचरी एवं मित्र बनबाक अछि सम्पर्क नव व्यवस्था एक पैघ सामाजिक आन्दोलनक जन्म देलक पूर्वे विवाह एक सहज स्वाभाविक क्रम जाहिमे स्त्रीक अस्तित्व एक पृथक रूप नहि देखल जैबाक चाही आकि स्वामी पतिदेवक सेवा बजाय आत्मनी पितृकल्प कि एक व्यक्ति नव व्यवस्थामे स्त्री अपन कुशल जेना बालविवाह बहुपत्नी वैधव्य तीन आदिमे मुक्त भ गेलीह अछि आब ओ अपन स्वार्थक संबंध विच्छेद कए सकैत छथि एतेक रूपें सामाजिक नव व्यवस्थाक स्थापनामे महत्वपूर्ण भूमिका

नव व्यवस्थाक कारणें कोन व्यक्तिक अपने अनको शंका अथवा समस्या उत्पन्न सामाजिक शिक्षकक पति वा पत्नीक समक्षक अधिकार सम्बन्धमे पारस्परिक अविश्वास सकार आदि सकैत छैक दोसर बात ई जे एकल परिवारमे कोनो व्यक्ति अपन स्त्री आ अविवाहित बहिन बेटी शंका पालन करब अपन दायित्व बुझैत छथि फलस्वरूप दुनूक बीच भय आ शंकाक भाव एकसर कर्तव्यक प्रति विरुद्ध लेने बाधा उपस्थित करैत अछि समस्या एक अतिरिक्त भाग उपस्थित करैत अछि दुहू बात मनमे रखैत ई उचित अपन कोनो परिवर्तन लाबए छैक मे समाजमे समस्या उत्पन्न करैत छैक कतेक नव समस्याक जन्म दैत छैक यदि हमरामे स्वतन्त्रता समानता आ बन्धुत्वक पैघ मूल्यक ज्ञान नहि अछि तँ सामाजिक शंकि परिवर्तनक स्वीकार करबामे पड़त एवं एहिसँ उत्पन्न समस्याक समाधान सकैत रहत

बोध प्रश्न

अहाँ देल गेल वाक्यमे किछु सही अछि आ किछु गलत । अहाँक सही अथवा गलत चिह्नित करबाक अछि-

क) परिवार समाजक एक आधारभूत इकाइ अछि । ( )सही ( )गलत

ख) परिवारक सभ शिक्षामूलक विषय एवं अनौपचारिक स्तर पर आयोजित समस्त कार्यक्रम हेतु सीधाक्षर प्रत्यक्ष सहयोग नहि करैत अछि ।

ग) समाजमे समानताक पैघ पैघ कारखाना छैक । सही गलत

घ) समाजमे परिवार एवं समाजक प्रति व्यक्तिक कुछ दायित्व होइत छैक । सही गलत

ङ) समाजक विभिन्न समूहक बीच एकता । सही गलत

च) औद्योगीकरण शहरीकरणक प्रारंभ कयलक । ( )सही ( )गलत

2. सही शब्दक रिक्त स्थानमे भरू

सामाजिक नियन्त्रणक अर्थ छैक समानता

क) परिवार ..... विकास होइत अछि

ख) सामाजिक ..... में सामाजिक ..... अर्जन करैत छथि

ग) समाजमे पुरुषक ..... पर अधिकार छथि

घ) ..... जे समाजक विभिन्न परिवर्तनमे सही अपने प्रभावी इंजीनियर

ङ) ..... काफी नवीन विचार समाजमे पसरल ।

3) रिक्त स्थानक पूर्ति कोष्ठमे देल शब्दसँ करू-

क) संयुक्त परिवारमे घरक मुखिया ..... होइत छथि ।
(बाप चाचा, सभसँ पैघ वयसक पुरुष)

ख . परिवारक सम्बन्ध सामली व्यवस्थामें छल (एकल संयुक्त

ग) पुँजीपतिनक संबंध ..... सँ अछि ।
(एकल परिवार, औद्योगीकरण शहरीकरण)

घ संयुक्त परिवार परिवारक सब सदस्यकेँ ... सुरक्षा प्राप्त छल
(सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक)

ङ एकल परिवार व्यक्तिक ... पुरुक विकासक लेल अवसर अछि
वैयक्तिक, भौतिक,

4 पाहुनक परिभाषामे स्त्री आ बच्चाक संगहि दुनक बाप माय संग रहैत छथिन साहनक संग दुनक स्त्रीक संगहि धीया पुता रहैत छनि ई दुनू परिवार कोन प्रकारक अछि ?

क) पहिल एकल, दोसर संयुक्त परिवार ।

ख) दुनू संयुक्त परिवार ।

ग) दुनू एकल परिवार ।

घ) पहिल संयुक्त आ दोसर एकल परिवार ।

5) संयुक्त परिवारकेँ टूटबाक कारण छल--

क) सामाजिक व्यवस्थामे मूलभूत परिवर्तन आयब ।

ख) व्यक्तिकेँ स्वार्थी भऽ जायब ।

ग) व्यक्तिकेँ नास्तिक भऽ जायब ।

6) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर तीन-चारि पाँतिमे दियऽ--

क) परिवारमे व्यक्तित्वक विकास कोना होइत अछि ?

ख) सामाजिक दृष्टिसँ परिवारक भूमिकाक स्थान निर्धारित करू

ग) एकल परिवारक अर्थ स्पष्ट करू ।

घ एकल परिवारमे बच्चाक समुचित उत्तरदायित्व करू

ङ) संयुक्त परिवारमे स्त्रीक स्थान की छल ?

एहन उदाहरण अहाँ अपन आसपासहु अनेक भेटत जाहिमे ई चूकऽ जाय भऽ गेल जे अहाँ पाठकेँ कतेक पाठ पढ़ाबऽ चाहैत छलहुँ आ अहाँ ओ अभ्यास देब जे सहज अछि तखनहिं ई पता चलत जे अहाँ पाठकेँ विषय आ भाषाक दृष्टिसँ कतेक बुझलहुँ अछि ।

अभ्यास

पाठक किछु प्रश्नक लागि दऽ गेल अछि एहि वाक्यसमूहक अभिप्राय निम्नलिखित तीन कथनमेँ एक कथन सही रूपमे लिखऽ कहैत लागि तकरा देखाउ

) पाठक द्वारिक एक पुरुष परिकल्पना अछि जाहि व्यक्ति चाह अ अपना हेतु लौकिक प्रेरणा ग्रहण करैत अछि एहि रूपेँ ओ समाजक एक नीक जे प्रतिष्ठित नागरिक बनबाक हेतु अपनाकेँ तैयार करैत अछि ।

क) नीक नागरिकेँ रूपमे जे अपना हेतु प्रेरणा परिवारसँ भेटैत छैक

ख) नीक नागरिक बनबाक लेल प्रस्तुत परिवेश भेटैत छैक

ग) सतत लाभक स्थान आ अवका हतु लोकक प्रथम ग्रहण करैत अछि तथा समाजक लोक स्थायित्व बनैत अछि वैह आकर परिवार थिकैक ।

ii) संयुक्त परिवारक सदस्यमे पैघ गुण ई छैक जे परिवारक सब सदस्यकेँ सामाजिक सुरक्षा प्राप्त छैक ।

क) समाज संयुक्त परिवारकेँ पूर्ण सुरक्षा प्रदान करैत छैक ।

ख) संयुक्त परिवारक सदस्य प्राकृतिक आपदा चारी हर्कतसँ आदिसँ सुरक्षित रहैत छैक ।

ग) आर्थिक व्यक्तिक कमाइपर एकटा परिवार आधारित रहैत अछि आकर मृत्युसँ सम्पूर्ण परिवार असुरक्षित भऽ जाइत अछि ।

iii) परिवारपर सांस्कृतिक अवधारणा अपन प्रभाव देखबैत छैक

क) लोकमध्य स्वतन्त्रता आ समानताक भावना उदय होइत छैक

ख) लोकतन्त्रक प्रभावसँ परिवारक वयस्कलोकनिकेँ मताधिकार भेटल ।

ग) लोकतांत्रिक कारणेँ संयुक्त परिवार विघटित भेल ।

iv) समाज उत्पन्न कोनो परिवर्तन होइत छैक जे समाजमे समस्या अभिवृद्धि करैक

क) सामाजिक आ शान्तिपूर्ण सम्बन्धक हेतु सामाजिक परिवर्तन अनावश्यक अछि

ख) प्रत्येक सामाजिक परिवर्तनक संग किछु नव समस्या उत्पन्न भऽ जाइत छैक ।

ग) समायोजनकेँ बिना कोनो बाधा कएने समाजमे परिवर्तन अवश्यक छाही

५ कोष्ठकमे देल गेल १ शब्दमे शुद्ध शब्दकेँ लिखू अशुद्ध शब्दकेँ काटू, आहिसँ सार्थक वाक्य बनाउ ।

क) परिवार (आर्थिक/सामाजिक) संस्था थिक ।

ख) परिवारक सदस्यकेँ (भावनात्मक/विवेकात्मक) सूत्रमे आबद्ध रहैत छथि ।

ग) कारक (जैविक/सामाजिक) शिक्षाक हेतु काज करैत अछि मुदा संज्ञा आ भावजकेँ (धन/योगदान) लेकऽ दैत अछि ।

घ) संयुक्त परिवारमे समस्त सदस्य (सुविधा/समस्या) परिवारक कुशल आहत छथि ।

ङ) कृषि उद्योग प्रधान अर्थव्यवस्था संयुक्त परिवारक आधार होइत अछि

च) आधुनिक व्यवसायमे सामान्यतः लोक (स्वच्छन्द/परतन्त्र) भऽ काज करैत अछि

छ) संयुक्त परिवारमे परिवारक कर्ता सदस्य क महत्व कमी छैक

ज) औद्योगीकरणक प्रारंभ एकल परिवारकेँ (जन्म देनाक/तोड़नाक) ।

झ) (समता/प्रगति)क भावना लोकतंत्रक आधार थिक ।

ञ) एकल परिवारक सुपरिणाम छैक: पारम्परिक/सामाजिक व्यवस्था)।

4.3 निबंध रचना

आशा अछि जे अहाँ उक्त पाठकेँ गम्भीरतासँ पढ़ने होएब । अहाँ एहा बुझि गेल होएब जे एहि पाठक संरचना निबंधक रूपमे भेल छैक । प्रत्येक निबंधक कोनो मूल कथ्य होइत अछि

अहाँक सम्पूर्ण निबन्धमे लेखक विस्तार दैत आंख कें अहाँ कहि सकैत छी जे एहि पाठक मूल कथ्य की थिक मूल कथ्यकें चिन्हबामे अहाँकें सुगमता प्रदान करबाक हेतु हम एत किछु आधार-बिन्दु प्रस्तुत करैत छी :

क) परिवार : एकटा सामाजिक इकाइ,

ख) सामाजिक उन्नतिमे परिवारक भूमिका

ग) भारतीय परिवारक स्वरूपमे आयल विभिन्न परिवर्तन,

घ) संयुक्त परिवारसँ एकल परिवार बनबाक कारण,

ङ) एकल परिवारसँ उत्पन्न समस्या ।

एहि आधार बिन्दुसभक आधार बिन्दुसभक विकास कोन प्रकारें भेल अछि, तकरा अहाँ स्वय सोचि सकैत छी ।

कोन निबंध या पाठक मूल कथ्यकें आधारहु निबंधक शीर्षक देल जाइत छैक जेना एहि पाठक शीर्षक 'परिवार देल गेल अछि एकर औचित्यता यदि अहाँ कोना शीर्षक कहि सकैत छी वै विचार करू कह ।

विद्यालय स्तरक विद्यार्थीसभ लेखकक क्रमबद्ध शैलीक चाही ई हेतु लेल आवश्यक अछि जे लेखक निबंध पढबाकालमे लेखकक कथ्यकें क्रमे क्रमे बुझ सोहि लेखकक विचार प्रणालीकें सेहो बुझि सकैत। दृष्टान्तस्वरूप एहि पाठक पहिल आ दोसर पैरा पढ़ि एकर पढ़बामे अहाँ सहजे बुझि जएबैक जे प्रस्तुत निबन्धक विषय की थिक ? लेखक के अपन विषयक परिचयसँ हँसए आँखे लेखक प्रस्तावना अथवा विषयप्रवेश करबा आवश्यक अछि ।

एकर पछाति तेसर चारिटा पैरा पढ़ू एहि पैरा मूल कथ्य की अछि ? एहि, आगि पैरा दू मे की उद्धृत करैत छी ।

सम्पूर्ण परिवार एक एहन वातावरण मे रहैत अछि जतए व्यक्ति मात्र अपन अनुभव द्वारा कोन प्रकार सीखैत अछि एहि रूपें ओ समाजक लोक मे प्रतिष्ठित सामाजिक व्यवहार हेतु आवश्यक तैयार करैत अछि ' एहन प्रकारें उपरुक्त पैरा मे की कहल गेल अछि ? परिवार अपन व्यक्ति सदस्यकें पारस्परिक संबंध तथा ओ अन्य व्यक्तिसँ ई विभाग देल अछि जे ओ समाजक प्रत्येक व्यक्ति आवश्यक प्रति एहने भावना राखथि ।

परिवारके दुइ पैरक परिभाषाक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पछाति अहाँ सहजतया कहि सकैत छी जे लेखक की कहए चाहैत छथि ? हुनक कथ्य प्रति ई परिचारिये व्यक्तिक सहजतया प्रति अपन वास्तविक बोध होइत छैक ।'

को अहाँ एहि कथ्यक एहि दुइ पैरक हेतु एक उपयुक्त शीर्षक फुरा सकैत छी ?

हम अहाँकें एकटा उपयुक्त शीर्षक फुरबैत छ परिवारके सामाजिकताक दिशा

एहि प्रकारें क्रम विकासमे लेखक अपन विचारकें क्रमबद्ध भावमे विकसित करैत अछि तथा आहरा विभिन्न पाठक कुशलता चाहि अहिमे अन्त संबंध स्थापित करैत अन्तिम अपन कथ्यकें सार रूपमे सूत्रबद्ध करैत अछि ।

अहाँ एहि लेखकें उपरुक्त वक्तव्यक सन्दर्भमे एतबासँ पढ़ि खण्ड प आ ए ईक हेतु उचित शीर्षक दिअउ ।

निबंधक मूल कथ्यक विस्तृत विवेचनक पश्चात निबंधकार अपन एहिकें समेटैत अछि । एहि संग ओ सम्पूर्ण निबंधक सार प्रस्तुत करैत अछि अथवा कोनो एहन विचार बिन्दुपर निबंधक अन्त करैत अछि जाहिसँ विषयकें पूर्णता प्राप्त होइत हो अथवा मूल कथ्यसँ उत्पन्न कोनो नव चिंता बिन्दुक संकेत करैत अछि आ अहिपर अछि निबंधक खतम पाठक संकेत भेटैत छी ।

अहाँ प्रस्तुत निबंधक खण्ड ई क अन्तिम पैराकें पढ़ू आ बुझाउ ज एहिमे निबंधक सार कोन रूपमे देल गेल अछि ?

विचार विस्तार

हमरालोकनि एकरा नव बिन्दुपर विचार करैत छी खण्ड ई'क पाँचम पैराकें ध्यानमें पढ़ू एहि पैराम संयुक्त परिवारकें विघटित होयबाक कारण देखाओल गेल अछि दृष्टव्य अ लेखक कोन प्रकारें अपन विचारकें विस्तार देने छथि ।

खण्ड 'इ'क पाँचम पैरामे संयुक्त परिवारक टूटब अनेकानेक दुष्परिणाम कहल गेल अछि

खण्ड 'इ' क पाँचम पैरा-

समस्याक उल्लेख (संयुक्त परिवारक विघटन) ।

समस्याक कारण (नव सामाजिक आवश्यकता एवं) ।

नवीन सामाजिक आवश्यकता पूर्तिमे विघटनक दुष्परिणाम (पुरान उत्पादन पद्धतिक स्थानपर नव उत्पादन पद्धतिक आगमन) ।

नव उत्पादन पद्धतिक प्रमुख विशेषता (कम श्रम आ कम लाभमे उत्पादन)

नव उत्पादन पद्धतिक समुचा परिवारपर प्रभाव (पुरान उत्पादन पद्धतिमे अर्जित सम्पत्ति परिवारक विघटन) ।

नव उत्पादन पद्धतिमे सामाजिक आवश्यकता परिवर्तन परिणाम औद्योगीकरण

औद्योगीकरणक समुचा प्रभाव (औद्योगीकरण आ नव नव कार्यक संचार

सामाजिक जीवनमे आगत नव परिस्थिति जिसे प्रत्यक्ष अन्य

एहि प्रकारें हम खण्ड-'इ'क चारिम पैरामे देखैत छी जे-

इ पैरा पहिलका पैराक व्यक्त विचारकें पबैति आइ देत अछि

एहि पैराम ज विचार व्यक्त कएल गेल अछि ओ एक दोसरसँ सम्बद्ध अछि

प्रत्येक पंक्तिम व्यक्त विचार पूर्वक पंक्तिमे व्यक्त विचारमे किछु नव जोड़ैत अछि

अन्तिम पंक्तिमे व्यक्त विचार तार्किक क्रमबद्धतामे अगाँ बढ़ैत अछि

अन्तिम पैराम एकटा पूर्ण विचार शृंखला दृष्टिगोचर होइत अछि जकर अन्तमे एक नव वैचारिक बिन्दु संकेतित अछि ।

- एहि नव विचार बिन्दुक विस्तार अगिला पैरामे अछि ।

अहाँ खण्ड इ क पाँचम पैराक उपर्युक्त विवेचनमे बुझि गेल होयब ज कोनहु निबंधम कोन प्रकारें विचारकें विस्तृत कएल जा सकैत अछि अहाँ खण्ड पैराक उक्त बिन्दुक आधारपर विवेचन करू आ स्पष्ट करू जे अहिं पैराम उपर्युक्त नियमसभक पालन कएल गेल अछि की नहि ।

4.4 व्याकरणिक विवेचन

अहाँ पाठकेँ पढ़ैत काल देखने हएब जे प्रकृति सामान्यतः अधिक मात्रामेँ बहुत मात्रामेँ आदि शब्द प्रयुक्त भेल अछि । ई शब्दसभ किछु प्रत्यय लगाक' बनल अछि एकर ज्ञान हम एहि खण्ड प्राप्त करब ।

बन्धु + त्व बन्धुत्व

मानव + ता मानवता

कवि + त्व कवित्व

एहिना सामान्यमेँ सम्बन्धिक अर्थमेँ अधिक मात्रामेँ मात्रिक शब्द बनैत अछि । एहन ई प्रत्ययमेँ शब्दक अन्तिम वर्णक अथवा अन्तिम स्वरमेँ प्रत्यय यदि लगैत छैक ।

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दमेँ त्व अथवा ता लगाक' नव शब्द बनाउ

गुरु सभ मनुष्य शिव

मैथिलीमेँ ए ओ ऐ औ केँ यदि पाँचम अक्षरमेँ भिन्न भिन्न अर्थमेँ भिन्न भिन्न प्रत्यय लगबामेँ अनेक प्रकारक शब्द बनैत अछि जकरा अलग अलग

ऐ- सेना, चैना, एक ।

ओ- सोहन, जोहन ।

हिआ- कनिआ, बनिआ ।

ओने एतेने, जतेने ओतेने ।

म- छठम, चारिम ।

पन, पना पनी- झमटपन, झमटपना झमटपनी

आहि - अमताह, मधुराह

अकी - लोरकी

ठक - घोरक, अछकुक

अभ्यास

क निम्नलिखित शब्दमेँ हुक्‌ ही ... ई ... मेँ प्रत्यय क्रमशः लगाय शब्द बनाउ

कालि ....., दक्षिन ....., गाम ....., पड़ोसी ..... संसद

ख निम्नलिखित शब्द मे 'क अथवा य' क' उचित प्रयोग क' शब्द निष्पन्न

करण .....

महान .....

सामाजिक .....

सार्हन .....

क) निम्नलिखित शब्दमे दुइ' प्रत्यय लगाउ से शब्द बनल आ चिन्हु

विज्ञान दिन समूह मुक्त

भूगोल व्यक्ति जीव

फलाफ प्रत्यय सात आ आर दुइ अर्थात आठ विभिन्न प्रकारक प्रत्यय छैक एहि मध्य आ सर्वाधिक व्यवहारिक प्रत्यय अछि इन पर पर्याप्त रूपेण आइ आगम आदि प्रत्यय लगैत अछि । यथा

पन - बेनपन

आइ - चतराइ

आगम - पण्डितागम

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दमे उचित प्रत्यय लगाय शब्द बनाउ

सुमिला ..... पण्डित ..... वेद .....

4.5 सारांश

ि इकाइ अर्थ परिवार सहक शास्त्रीय विज्ञान विषयक अध्ययन करबाक अभि

क) भारतीय शास्त्रीय इकाइयों पर चर्चित के सकैत दी

ख) सहक तथा सरल परिभाषा विषयक बात सकेत छी

ग) विषयक लक्षण तथा अंक अध्ययन अध्ययन पद्धतिक महत्व के सकैत छी

घ) निबन्ध रचनामे सहो क्रम दऽ सकैत छी ।

4.6 शब्दावली

आधारभूत : मूलभूत, बुनियादी ।

इकाइ : मौलिक पदार्थ समझा इकाइक मूल अवयव तथा परिवार समाजक इकाइ अछि ।

मंडी : कोनो खास वस्तुक थोक बिक्रीक बजार ।

माल्थस : माल्थस अपन जनसंख्या सिद्धांत एहनाक जयोंच पैघ पैघ जमीन्दारक इलाकामे रहैत छल ओ ओलाकनि आकरा चढ़लामे राजाकेँ धन आ सेना दैत छलथिन ।

पितृसत्तात्मक : जहिमे पुरुषसभी मुखिया के मान सम्मान छल

4.7 बोधप्रश्न / अभ्यासक उत्तर

1) क) सही
ख) गलत
ग) गलत
घ) सही
ङ) सही

2) क) व्यक्तित्व
ख) रूप, संरचना
ग) पितृसत्तात्मक
घ) स्वतंत्रता
ङ) शिक्षा

3) क) सभासँ पैघ वयसक पुरुष
ख) संयुक्त
ग) औद्योगीकरण
घ) सामाजिक
ङ) वैयक्तिक

4) ग

5) क

अभ्यास

6 i) ख
ii) ग
iii) क
iv) ख

6.2 i) सामाजिक
ii) भावात्मक
iii. आत्मनयापन, बोधगम्य
iv. सम्मक्त परिवार
v) कृषि
vi. पुरुषेतर
vii) ढाँचा
viii) जन्म दलक
ix) समता
x) सहसंबंध तंत्र

गलत पूरा सपना सदृश्य अनुभूति विपक्ष

क) कालवृक्ष दक्षिणाही गवैया, पड़ोसिया, पश्चिमाहा ।

ख) कारुण्य महानता सामाजिकता, साहित्य ।

ग) नेतात्मक मैत्रिक सामूहिक मौखिक भौतिक वैयक्तिक वैश्विक ।

अभ्यास चुम्बित्वन पहिताह, वैदग्ध ।

4 8 अनुकार्य

आप अपने शब्दों में एक छोटा-सा निबन्ध लिखें जिसमें आप अपने प्रति प्रत्यय निर्दिष्ट करें

इग्नू
जन जन का विश्वविद्यालय

BMAF 001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

साहित्यक आस्वाद

2

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्तमान विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

– इन्दिरा गांधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

Indira Gandhi

खंड

2

साहित्यक आस्वाद

इकाइ 5
कविता 5

इकाइ 6
कथा ग्रामसेविका (श्री हरिमोहन झा) 35

इकाइ 7
निबंध पॉयर आँकुर (मणिपद्म) 60

इकाइ 8
एकांकी हथलट्टू कुरमी (सुधांशु शेखर चौधरी) 78

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. भीमनाथ झा
पूर्व प्राचार्य, मैथिली विभाग
ल.ना.मि.वि. दरभंगा

डॉ. नीलू झा
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि. दरभंगा

डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष
मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि. दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष मैथिली
विभाग, बी.आर.ए.बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर

डॉ. चन्द्रनन्दन झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष मैथिली
विभाग, जे.एन.कॉलेज मधुबनी

प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग ल.ना.मि.वि. दरभंगा

संकाय सदस्य

प्रो. अरुण कुमार
हिन्दी विभाग
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, मैदान गढ़ी
नई दिल्ली - 110068

डॉ. स्मिता चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, मैदान गढ़ी
नई दिल्ली - 110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाई लेखक

डॉ. फूलचन्द मिश्र (इकाई 1)
प्राचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
हर्षनाथसिंह महाविद्यालय, मेघौल, मधुबनी
डॉ. विभूति आनन्द (इकाई 6)
वरिष्ठ व्याख्याता, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
डॉ. कमला चौधरी (इकाई 7)
प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग
बी.आर.ए. बिहार वि.वि. मुजफ्फरपुर
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय (इकाई 8)
मैथिली विभागाध्यक्ष, महावीरी कलेज, खगरपुर

पाठ्यक्रम संपादक

डॉ भीमनाथ झा

पाठ्यक्रम संयोजन

शैक्षणिक संयोजक

डॉ सुधांशु कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, मैदान गढ़ी
नई दिल्ली-110068

प्रकाशन संयोजक

डॉ. यू. एस. तिवारी
डॉ. एस. एस. सिंह
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र,
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री वी एस पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

जनवरी 2012

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2012

ISBN-978-81-266-5715-0

सर्वाधिकार सुरक्षित. इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी रूप में दृश्य या श्रव्य, मैं फोटोकॉपी नहीं किया जा सकता. मैं इसका कोई भी अंश व्यावसायिक प्रयोजनों से लाभार्जन प्रकाशन करने के लिए इग्नूवी मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 लिखित अनुमोदन से प्रयोग किया जा सकता है।

मैदान गढ़ी स्थित [illegible] के लिए [illegible] द्वारा निदेशक, प्रकाशन विभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेक पेंसिया एण्ड कम्प्यूटर, E-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : [illegible]

खण्ड 2 का परिचय : साहित्यिक आस्वाद

[illegible] भाषाका प्रकृति बुझनमा सहायता पुग्छ ।

[illegible] अछि

[illegible] मैथाइ सक्ने छौ ।

[illegible] आई भाषाहरूको बारेमा सक्नेछौ ।

इकाइ 5 कविता

इकाइक रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

५.१ प्रस्तावना

5.2 विद्यापति

५.२.१ काव्य वाचन

5.2.2 भाव पक्ष

5.2.3 संरचना शिल्प

५.२.४ प्रतिमान

५.२.५ शब्दार्थ सहित व्याख्या

5.3 भक्त कवि

५.३.१ काव्य वाचन

५.३.२ भाव पक्ष

५.३.३ संरचना शिल्प

५.३.४ प्रतिमान

५.३.५ शब्दार्थ सहित व्याख्या

५.४ तुलसीदास

५.४.१ काव्य वाचन

५.४.२ भाव पक्ष

५.४.३ संरचना शिल्प

५.४.४ प्रतिमान

५.४.५ शब्दार्थ सहित व्याख्या

५.५ जगन्नाथदास रत्नाकर 'मधुप'

५.५.१ काव्य वाचन

५.५.२ भाव पक्ष

५.५.३ संरचना शिल्प

५.५.४ प्रतिमान

५.५.५ शब्दार्थ सहित व्याख्या

5.6 सुरेन्द्र झा 'सुमन'

5.6.1 काव्य वाचन

5.6.2 भाव पक्ष

5.6.3 संरचना शिल्प

5.6.4 प्रतिमान

5.6.5 शब्दार्थ सहित व्याख्या

५.७ वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

5.7.1 काव्य वाचन

5.7.2 भाव पक्ष

5.7.3 संरचना शिल्प

5.7.4 प्रतिमान

5.7.5 शब्दार्थ सहित व्याख्या

5.8 रामकृष्ण झा 'किसुन'
5.8.1 काव्य-वस्तु
5.8.2 भाव-पक्ष
5.8.3 संवेदना शिल्प
5.8.4 बिम्बविधान
5.8.5 प्रबन्ध सहित स्वकृत
5.9 सारांश
5.10 बोधप्रश्न / अभ्यासार्थ उत्तर

5.0 उद्देश्य

अध्ययनोपरान्त छात्र-छात्राएँ इस इकाई में [illegible] को काव्यिक अध्ययन करने एवं इकाईवार चर्चा करेंगे :

- मैथिली काव्य-परम्परा में मुख्य प्रवृत्तियों को समझ सकेंगे,
- [illegible] को काव्यगत विशेषता को समझ सकेंगे,
- [illegible] को काव्यगत विशेषता को समझ सकेंगे,
- [illegible] काव्यगत विशेषता को समझ सकेंगे,
- [illegible] काव्यगत विशेषता को समझ सकेंगे,
- [illegible] काव्यगत विशेषता को समझ सकेंगे,
- आधुनिक काव्यगत प्रमुख विशेषता को समझ सकेंगे ।

5.1 प्रस्तावना

[illegible] मैथिली [illegible] के [illegible] काव्य [illegible] [illegible] [illegible]

5.2 विद्यापति

मैथिली काव्यक इतिहास एगारह सय वर्ष पुरान अछि। आदिकाल एगारह शताब्दीक दसम सिद्ध सम्प्रदायक किछु बौद्धिक सिद्धकवि सँ आ संत सिद्धलोनि ओ नाथपंथ आ डाकार्णव' नामसँ प्रसिद्ध अछि। ई बौद्धिकाल आदिकालक काव्य थिक। एहि आदिकालक सिद्धकाव्य कालमे ७४४ ई. मे हरप्रसाद आ संस्कृति संबंधी तथा पुरुष आ पुरुषी गोरख पद रचल गेल। एही कालक थिक डाकवचन आ स्तंभगाथ

आदि बाद आठ समयम काव्यक मुख्य पूर्वनिम संस्थिरंग पाठ अछि। काव्यक काल आ काव्यक रूपमे सामंजस्य स्थापित करैत ओ काव्यक पुन [illegible] ई आदिम ०हि काव्यक 'संसिद्ध कवना मैथिलाम शृंगार आ भक्ति रसप्रधान गीतिकाव्य तथा ज्योतिरीश्वर आ लोकगीतक अजस्र रचना भेल।

बादमे [illegible] ई मे आधुनिक काल अंतर्गतमे अनेक आ मौलिक काव्यक संग आधुनिक काव्य रचना शुरू भेल। आधुनिक काव्यक रूप ई दुनू प्रकारक वृद्धि आ विकास भेल अछि

गीतकाव्य

अहाँकेँ बुझल अछि जे विद्यापतिक नाम यश प्रसिद्धि गीतकारक रूपमे। तथा एतेकी अ नव भावक आ मधुरिम भावनाक रहक पल कहल बहुत अछि। गीत आ गायकक मध्य घनिष्ठ सीमा वैं गीतक भाव आ अर्थ बुझाक रसास्वादन सहज भाइ। गायकक भावनाक आधारमे गीतिकाव्य मे [illegible] अछि। गीतक अर्थ भावनाक अभाव नीक भाव बनि सकैत छैं। [illegible] भक्तिगत वा [illegible] कोनो [illegible] कवि आ [illegible] कवि [illegible] कवि [illegible] कवि

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] लोकप्रिय बनायबामे सहायक भेल अछि ।

5.2.3 संरचना शिल्प

[illegible]

भाषा [illegible] सर्वत्र विशुद्ध मैथिली प्रयोग भेल अछि । [illegible] सर्वत्र मैथिली भाषाक स्वभाव [illegible] ।

शैली [illegible] अछि ।

5.2.4 प्रतिपाद्य

[illegible]

5.2.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

[illegible] हम व्याख्यक हेतु देल गेल पदक व्याख्या दऽ रहल छी ।

पद प्रथमहि सहुर सासुर गेला ।

सन्दर्भ [illegible]

व्याख्या [illegible]

खनिजयुक्त अम्लयुक्त

[illegible]

विशेष

- [illegible] (अम्लयुक्त)मा बाहरमा फिटकारी खरानीयुक्त आदर हाड्न खोलेक
- [illegible]

बोध-प्रश्न

१) तीनमा लिखित वाक्यमा पृथक शब्द देखाउ-

[illegible]

[illegible] सम्बन्ध मिसाउ । (दैनिक जीवन/सम्बन्ध रचना)

[illegible]

चलन क्रमबद्धता जान)

३) विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रतिक्रिया लिखु

अभ्यास

१) एउटा वाक्यमा अंश वैज्ञ अति । रिक्त स्थानमा उचित्त जवाफ लिखु
   क) सिरप्रम आदर के कम कहाँ ।

5.3 चन्दा झा

आधुनिक मैथिली काव्य

चन्दा झा आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छथि ।

जीवन परिचय

(दिसम्बर 1917 ई॰ फारबिस पैत्तनि)

हिन्दीमे सेहो छनि

5.3.1 काव्य वाचन

[illegible] [illegible] [illegible] [

5.3.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

सन्दर्भ [illegible] ।

पद- करुणागार उदार प्राणपति ।

व्याख्या [illegible]

प्रीतमक एहिसँ हँसी छोपलनि ।

विशेष

i [illegible]
नारीक मानसिक पीड़ाक यथार्थ चित्रण कयलनि अछि ।

ii [illegible]
[illegible] कहि गेल अछि ।

iii [illegible]

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियउ ।

1 [illegible]
(मनमोहन/चन्द्रकला) ।

2 [illegible]

3 [illegible]

अभ्यास

३) कि कहब कहक कोनि नहि रहलहुँ, भेलहुँ सबहिकाँ पार रे ।
कतहु राम बानकि जन करते, तीरभुक्तिक दार रे ।।

एहि पदांशक अर्थ स्पष्ट करू ।

5.4 लालदास

[illegible] शक्ति-उपासक (शाक्त) कवि मानल जाइत अछि ।

जीवन-परिचय

[illegible] गाम बुधरस बांध । 1920 में मृत्यु देहान्त भेलनि ।

रचना [illegible] गणेशशतक, गणेशजन्म आदि ।

5.4.1 काव्य-वाचन

[illegible]

सखमाधो हरि कहल बुझाय । बड़ दुख सहलनि सुर समुदाय ।
हम नहिकां दलहुं अज्ञान । अविचारि हरब तेंपुक हम प्रान ।।
अखधपुरी बसबक विचार । सेब सबहि हम न असोर
हानल गेल हमरहि की जाय आर लेखन नहि कत सकल उपाय ।
चलि चलू मखल प्राणपियारि दहु गिरल लेब अमृत मनहारि
सुनि लक्ष्मी कहलनि बड़ बात उचित विचार कहल प्राणेश ।
सहल अपराध हरब अविलम्ब करिअ अमृतं राम उद्यम ।
लहमी मधुसिंह देखिअना भूमि ऋद्धि सिद्धि संग नारिसिंह भूमि

[illegible]

5.4.2 भाव पक्ष

5.4.3 संरचना शिल्प

काव्य भाषा

5.4.4 प्रतिपाद्य

5.4.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

पद १ लक्ष्मीसौं हरि कहत कुभाव ।

[illegible] सीताके रूपमें अवतरित होनेके ।

बोध प्रश्न

अधोलिखित प्रश्नका उत्तर दिइस ।

[illegible]

अ) धार्मिक छंद आ) कथित सोरठा

इ) दोहा-चौपाइ ई) गीतिका कथमाला

४) तुलसीदासक रामचरणमे कोन कथा प्रमुख अछि ?

अ) रामक कथा आ) सीताक कथा

इ) लक्ष्मी विष्णुक कथा ई) सीता रामक कथा

५) राम आ सीताक अवतार कतऽ भेल ?

अभ्यास

[illegible]

एति पद्यांशक अर्थ स्पष्ट करू ।

५.६ कांशीकान्त मिश्र 'मधुप'

[illegible] प्रमुख कवि छथि ।

[illegible]

[illegible]

मुक्तककाव्य दऽ रहल छी जकर आई आगाँ व्याख्या करब ।

5.6.1 काव्य वाचन

[illegible]

[illegible]

छन्दे ई पद्य सकलित अछि ।

चूड़ाकर्म

उपदेशक तीन सबमें महान ।

[illegible]

5.5.2 भाव पक्ष

[illegible]

भाव चूड़ाकर्म एवं आचमन हेतु देल गेल अछि ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

5.5.3 संरचना शिल्प

[illegible]

आता पैपाक आजेश शिल्पक कारणमे सर्वत्र भेटत ।

5.5.4 प्रतिपाद्य

[illegible]

कोष्यकरण देवे मधुपक मुखुस्त किशोपता रहल अछि ।

5.5.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

[illegible]

बोधप्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नके उत्तर दिएऽ

10) मधुपके मानद उपाधि की अवि ?

अ) कवीश्वर् ख) कविकोकिल

ग) कविचूडामणि घ) कविशेखर

11) मधुपके काव्यमे कौन विचारक समन्वय अवि ?

अ) यथार्थ अ प्रगतिशील ख) आस्तिक अ नास्तिक

ग) शैव अ शाक्त घ) अद्वैत अ परंपरागत

अभ्यास

१ चूडामणि कालक द्वारा कवि की अवि देख आवश्यक अवि / वाक्य पाँच पैराग्राफ उत्तर दिएऽ

[illegible]

5.6 मुकुन्द झा 'मुमन'

मुमन झाक जन्म [illegible] इनक पिता श्री [illegible] जनक लेल स्वतन्त्रतासंग्राम [illegible] आदि दशकमे एकटा एक कवि [illegible] मुमन बहु [illegible] मुमन गाधी तथा [illegible] प्रभावित आ कवितामे [illegible] प्रेरक देश [illegible] मे [illegible] कवितामे [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] मुमन [illegible] मुमनकेँ कविक कवि कहल गेल अछि [illegible] अनेक [illegible] [illegible] [illegible]

दरभंगा में प्रधानाध्यापक तथा १९५९ में बिहार विश्वविद्यालय की मैथिली विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक अध्यक्ष पदपर कार्य केलन्हि। ओ मासिक पत्रिका दरभंगा ओ मासिक मिथिला मिहिर छथि प्रथम मैथिली दैनिक पत्र स्वदेश के दू दू बेर प्रकाशन सम्पादन सेहो ई करने छलाह।

रचना

मैथिलीमे भूमिका मूलकमे ई प्रथम प्रयास छल। ओ अपन सम्पादन ग्रंथ आ मौलिक प्रसंग कालपुस्तक अछि प्रतिपदा अपना सम्पादन पदव अंकावलीमे अनेकानेक भाषा वन्दना पर्यालोचन परक खंडकाव्य तथा दर्जन भरि प्रबन्धकाव्य कथाक आंशिक कथा उपन्यास समीक्षा आ सम्पादन कार्य देल गेल। एकर पूर्व पुस्तक छपि ठाढ़ भेलाह अधिक मैथिली पाठीपर हुनक भूमिका पेखल गेल। ओहिमे ७ भूमिकाक संकलन बिन्दु विसर्ग अछि ५ मार्च १९७१ कें हुनक देहावसान भेल छलनि।

5.6.1 काव्य-वाचन

मुनक कवीमे आधुनिक चेतनाक प्राय सभ विशेषता समुचित क्रममे व्यक्त भेल अछि शैलीमे स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्रीय भावनाक काव्य तन्त्र विधान भेल अछि। समाजमे व्याप्त विषमता मानिक संघर्ष आ किसान मजदूर दुखित स्थितिपर हुनक दृष्टिपात भेल छलनि आ अपन कोमल भावुक प्रतिक्रियाकें मानव सुकुमार क्रममे स्वीकार केलन्हि। ओ अपन सांस्कृतिक परंपरामें विश्व कल्याण एवम् नवीनता विकास आ दृष्टिपर मूलत विश्वास राखि कविता। एक-एक हजार लिखल' कविता प्रति प्रायशत समयमे पाठ रहल अछि। १९४० मे प्रकाशित हुनक प्रथम काव्य संग्रह प्रतिपदा मे ६ संकलित अछि आकर वाचन मोल ६ काव्य ६० छल।

जन्म दिवस

जन्म दिवस' थिक माय मोसारनि मनबथि लय फल फूल
धयौ सुगंधित तन' सिंदूरहार सभ करथि चरण पद धूल
पिता आइ पूजा आसनपर मंगल जपही'-पाठ
जुटल' बधाइ देबय आगन' पित्र मण्डलिक ठाठ'
रंग-विरंगक पत्र आकर्षे अभिनन्दन ओर छन्द'
जन्म दिवस थिक हमर आइ छथभरि उमड़ल आनन्द
रंगक गुलथि पट्ट वर्ष-प्रवेशक शुभसूचक अवदात
किन्तु गनी हम पलक बीतनक' बोलल अछि कत नात
सञ्चित आयु कोषमें झाड़ल श्वास-श्वास व्यय कत'
वर्ष प्रवेशक[१०] हर्ष अमृतमे घोरल विषमक[११] अन्त'

अभिनव मल्लिनाथ। ... आलोक पाबक लाग लहलहाति हमरो हृदयमे नव कल्पनाक लहलहाति लया पुलकित फूल देखबाली इच्छित भली ... जनम पत्र ... एक नव वर्ष धरि आयल जन्म दिवस समारोह ... मनाब शुभकामना आयल सन्देश ... पढ़ ... व्यक्तिगत ... एक वर्षक लेल बनाओल आयलक कुशलता ... इच्छ ... जेठक, एक पत्र एम ... ...

5.6.2 भाव पक्ष

[illegible]

कवि पानल गैस छथि ।

[illegible]

आत्मपरक काव्य लिख ।

5.6.3 संरचना शिल्प

[illegible]

छथि ।

[illegible]

शब्दीकरण करबाक कौशल हुनक अद्भुत छलनि ।

5.6.4 प्रतिपाद्य

[illegible]

5.6.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

[illegible]

व्याख्या [illegible]

[illegible]

बोधप्रश्न

सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1) 'कविक ऋषि' किसको कहते हैं ?

अ) मधुपर्क आ) सुमनाक्ष

इ) किरणाक्ष ई) पाशोर्मि

2) सुमन कौन 'चाप' के समर्थक बनता है ?

अ) राष्ट्रवाद आ) समाजवाद

इ) अध्यात्मवाद ई) साम्यवाद

3) 'जन्म दिवस' पै कवयो चित्र अंकित अहि, लिखने वाला लिखो ।

अभ्यास

1) रंग बिरंगे पत्र हमारे अभिनन्दन को भेज
जन्म दिवस पर हमरे आए घर भरि उमड़ते आनन्द
एहि पाँतिक सरल भाषामे व्याख्या करू ।

5.7 वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

[illegible]

जीवन परिचय [illegible]

5.7.1 काव्य वाचन

[illegible] ये 'किरण' (अंक 1) पत्रिकाके ई अंगने छल

मिनुरिआ आम

दुइ कें इवला बुढ़वा गछ ...
कानछलाहर डाढ़ छै-
कइ अछि आकृष्ट मनकें
डालपर लटकल मिनुरिआ आम

कखनि धरसू आ कि चारिम दिन चलता पाकि
पाकि सिहकी रात्रिशक्कें
टाप दए खसि पड़त चुपेचाप
कें कहलकै, लगलैक कक्का हाथ

[illegible]

किसु होउओ, भार्याक चिन्ता नहि छनि
एखन हँ पारकेल नवसकेँ जुड़ा लौं सत्कास"
दिस्य अ अधिमास
करा अछि आकृष्ट मनकेँ
डारिय सटकल सिनुरिआ आम ।

5.7.2 भाव पक्ष

[illegible] काव्यमे क्रान्तिक स्वर अधिक मुखर अछि ।

[illegible]

[illegible]

5.7.3 संरचना शिल्प

[illegible]

[illegible]

[illegible] समासोक्ति [illegible] दृष्टिकोण [illegible] दृष्टिकोण [illegible] दृष्टिकोण

9) किछु होअओ, मानीक चिन्ता नहि करी
एखन तँ फरकल भयसँ जुड़ा लो तत्काल
दिव्य आ अभिराम
करू आँखि आकृष्ट मनकेँ
डारिपर लटकल सिनुरिआ आम ।

अपन भाषामे एहि पंक्तिक व्याख्या करू ।

5.8 रामकृष्ण झा 'किसुन'

[illegible] रामकृष्ण झा 'किसुन' [illegible] प्रेमचन्द [illegible] प्रेमचन्द [illegible] प्रेमचन्द

[illegible] [illegible] [illegible] [

बौद्धिक प्रतिपादन मेल अहि ।

अहि

5.8.3 संरचना शिल्प

मे दि अपन पारिभाषिक प्रदर्शनक हेतु ।

एकर भाव आ अर्थ स्पष्ट अहि । छन्दोबद्ध अहि ।

5.8.4 प्रतिपाद्य

सांकेतात्मक भावना निहित अहि ।

5.8.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

व्याख्या करू ।

बोध प्रश्न

खालील प्रश्नांची उत्तरे लिहा :

१. [illegible]

[illegible]

१०) खालीलपैकी कोणत्याही एकाची सविस्तर टीका करा. 7
पाच वाक्यांत उत्तर लिहा.

[illegible]

शब्दार्थ

[illegible] शब्दार्थ लिहा.

शब्दशक्ति	[illegible] अभिधा (ii) लक्षणा आणि व्यंजना (iii) [illegible]
अलंकार	अलंकारांची काव्यातील शोभा वाढते असते. अलंकारचे तीन भेद असतात- शब्दालंकार, अर्थालंकार, उभयालंकार. (शब्द, अर्थ या आधारावर शब्दालंकारचे तीन प्रकार पडतात असे तर अर्थ या आधारावर अर्थालंकारचे तीन शब्द आणि अर्थ दोन्ही आधारावर उभयालंकारची सृष्टि होत असते
अपभ्रंश	प्राकृत बोलीचे विकसित रूप, अपभ्रंशचा उत्तरकालीन क्षेत्रीय भाषा
आतिथ्य	अतिथि सत्कार.
[illegible]	[illegible] कृषि
[illegible]	अलंकारासह युक्त.
[illegible]	दोन एक वस्तु (उपमेय)ची दुसरी वस्तु (उपमान क कल्पना द्वारा संभावना केली जाते असे. यात उत्प्रेक्षा अलंकार होतो असे

उपमा — उपमालंकारमे उपमेय वा उपमानमे समानता देखाओल जाइत अछि ।

i) उपमेय– जकर उपमा देल जाय ।

ii) उपमान– जकरासँ उपमा देल जाय ।

जेना- चन्द्रमुखी पबारि चन्द्रमा [illegible] मुख मेल उपमेय ।

विद्वान — जनक पण्डित लोग हो वा [illegible] अछि ई [illegible] अछि ।

समाजवादि — कानो [illegible]

लोकनिक — ई [illegible] अछि ई लाक्षणिक अलंकार कहबैत अछि ।

[illegible] — [illegible] हो, मुख समानमे मानल जाइत छै ।

चौदह — [illegible] चन्द्रमाक [illegible] चारि [illegible] चन्द्रमाक [illegible] चौदह चरण 16-16 मात्राक मानलनि अछि ।

[illegible] — [illegible] 3 मात्राक आ दोसर चारिम ।। मात्राक होइत अछि ।

[illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible] शब्द अर्थतत्सम भिन्न । जेना राति-रात्रि ।

[illegible] — [illegible] जेना चतुर्थ-चउठ-चौठ ।

[illegible] — मैथिली क्षेत्रक लोकभाषाक अपन शब्द ।

[illegible] — क्षेत्रि भाषा मैथिली ।

[illegible] — प्रतिपादनक मुख्य विषय, प्रमुख कथ्य ।

[illegible] — पूर्वमे उल्ल अबैत परिपाटी ।

प्रलोक — [illegible] वा [illegible] वा [illegible] वा [illegible] वा मानव ।

[illegible] — [illegible] द्वारा [illegible] दोसर [illegible] [illegible] करब

[illegible] — अकरासँ तुलना कएल जाय । जेना- चन्द्रवदनी बहू ।

[illegible] — ग्लानि, नैराश्य ।

[illegible] — अविश्वास, उपेक्षा ।

[illegible] — अन्यायस्थाक विरुद्ध तामस, न्यायान्य चीत्कार ।

[illegible]	[illegible] इच्छाशक्ति ।
[illegible]	वास्तव, वस्तु सत्य ।
[illegible]	खाल, मानवाच्या वा खाल व मनुष्य नाँद आदि इवीत अशि केली असल केला कलाप
[illegible]	सामान्य जनतेच परस्पर बोलचालीच भाषा ।
[illegible]	सामान्य जनता दिस सकैत जन-सामान्यके व्यानमे राखि
[illegible]	काव्य कथा, नाटक आदि साहित्यक विभिन्न रूप साहित्यक विभिन्न विधा थिक ।
[illegible]	स्वभाव, चरित्र प्रवृत्ति ।
[illegible]	रचनाक अभिव्यक्तिक विशेष ढंग. भाव आ भाषाकेँ समन्वित करबाक ढंगकेँ सेहो 'शैली' कहल जाइत अछि ।
[illegible]	भावना, ठोस अनुभूति, प्रत्यक्ष ज्ञान ।
[illegible]	परम्परागत सामुदायिक जीवन पद्धति आ आचार विचार ।
हार्दिक भाव :	आन्तरिक भावनात्मक सार्वभौमिक आवश्यकता

9 सारांश

[illegible]

- [illegible]
  कार्यिक कारण-प्रवृत्तिक विशेषता कहि सकैत छी ।
- [illegible]
  ऐतिहासिक कालमे आ सामाजिकताक दृष्टि विशेषता कहि सकैत छी
- [illegible]
- [illegible]
  विशेषता सेहो कहि सकैत छी

10 बोध प्रश्न/ अभ्यासक उत्तर

अभ्यास

[illegible]
आदर सत्कार केनाइ नहि करैत अछि ।

[illegible]
एहनेपर सभ ग्राम आदर सम्मान होइत अछि ।

2 बन्दा एक होनाचाक एहि पौलक आंसमे निश्चया अलकरह एहेन पैन अहि-
मिरिसे सुबन बह छाय अर्थात सब अहनि तेहन गय आस रे ।
से बस छाय हार्दि नहि अकरण अहँकाँ बड़का भाय रे ।।

दोसी होनाति ।

आ संगहकें आदिवर्णकाक प्रयास कएने पुलिकाहित करब ।

कएने) अवतरित भेलाह ।

अहा हमरो आँख

आइ हमर जन्म दिन थिक तँ एक परिवारमे आनन्दे आनन्द छैक ।

बोध प्रश्न

1) अ) पौलकलर्सी आ) शिव मंदिरक

2) अ) वैमिल नयनी आ) आहिक यज्ञ उपवीति धार ।

बनौने छलाह

4) चन्द झा

5) मिथिलाभाषा रामायण

6 [illegible] कुलकर्णिनी बनिस्ड अवलोह अहि ।

7) इ) एका चौपाड

8) सीता रामक कथा

[illegible]

10 / इ) कविवृद्धापणि

11) अ) यथार्थ आ प्रातिस्वीतल

12) आ) सुमनकें

13) अ) राष्ट्रनाद

14) अन्य दिवस काव्यमें चारि गंट चित्र अंकित अहि -

1 पूजा पाठ [illegible]

15) ई) प्रकृति-सौदर्य

16) अ) मैथिलीमें बाबी (आ) हिन्दीमें यागार्जुन

17 [illegible]

5 [illegible]

[illegible]

युगीन चेतनासँ संपृक्त रचनाकेँ महत्त्व देत गेल ।

इकाइ 6 कथा : ग्रामसेविका (प्रो हरिमोहन झा)

इकाइक रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 कथा : ग्रामसेविका

6.3 कथा सार

6.4 संदर्भ सहित व्याख्या

6.5 कथावस्तु

[illegible]

6.0 उद्देश्य

[illegible] एहि इकाइक पढलाक बाद अहाँ

- कथाक [illegible] सकब,
- कथावस्तुक विश्लेषण कऽ सकब,
- कथाक प्रमुख पात्रक चरित्र चित्रण कऽ सकब
- कथाक परिवेशक विशेषता कहि सकब,
- कथाक शैली भाषा ओ संवादक स्वरूपकेँ बुझा सकब,
- [illegible]

6.1 प्रस्तावना

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

काशीनाथ हिकियबैत कहलनिन्ह जैह करोत सएह हेतैन ।

चौ. विश्वाहिता अछि कि कुमारि ?

का. दसबामे त कुमारिए चर्चा लगैत अछि ।

[illegible]

आकारा बहाल कैने छैक ।

[illegible]

कथा मानल ? ओकरा 'ग्रामलेखिका' नहि 'ग्रामशर्धिका' कहू

[illegible]

ग्रामए ऐछैक ।

[illegible]

अभिनवमे कोन बाजक छैक ?

[illegible]

कि न ?

भुटकुन हँ ।

काशीनाथ हाथमे कैसे छैक ?

भुटकुन हँ ।

काशीनाथ तखन निश्चय जैह थीक ।

[illegible]

अहाँ पहिने हमरे भांगक आयल अछि ?

[illegible]

चाह दऽ एक खापड़ि कोसिका भुटकुनक गालमे लगा देलथिन्ह ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

त अपटा फुचफुच्चौ बहार भऽ जेतैन्ह

प्रस्फोटित ज्ञानक खानि गेल ।

गापपे अकरहार भऽ रहल अछि ।

चौमकउ पुरुषक छातीपर मूँग किएक दलैत छथि ?

काशीनाथ कहलथिन्ह– आयसंकिका

(छल अछि ।

पैवाह लैछ करैत ।

कथा समाप्त भेल तँ गरदनिमे...

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मिझाय नहि देब । पैह हमर सभसँ पैघ बहुका भिन्न थीक ।

ठहीलनि

गेल छी ?

अछि

बोध प्रश्न :

क) आश्चर्य आकर कयलनि । ख) स्वागतक भाव देखौलनि ।

ग) प्रसन्नता भेलनि । घ) विरोधात्मक भाव व्यक्त कयलनि ।

( )

ग) अपन घर पहुँचबऽ ।

घ, ग्रामसंविकाक सरकार आ क्रिया-कलाप देखबऽ । ( )

3 ग्रामसंविकाक पदोन्नतिसँ गामभरि कोन प्रकारक क्रान्ति आएल ?

क) गामक स्त्रीगण पहिने जकाँ स्वतंत्र देखलनि ।

ख, गामक स्त्रीगण किन्को कथापर ध्यान नहि दैत लगलीह ।

ग) गामक स्त्रीगण स्वास्थ्य एवं शिक्षाक प्रति सचेत भेलीह ।

घ गामक स्त्रीगण पाश्चात्य फैशनक अनुकरण करऽ लगलीह । ( )

कोन गेल अछि ?

क) विमला देवी ख) मुजौनाबाली

ग) स्कुटैनाबाली घ) बैदाउर ( )

क) अपने सारे मिथ्या प्रमाणित मौलाक कारणों ।

ख) विमला एवांक बेश सुधाम बंगला-संस्कारक छाप देखिकउ

ग) एलोक मुहें लिखुत आवकपो पदनाक कारणें ।

घ) चिरसंचित मानसिक संकोचलाक कारणें । ( )

क) सत्तरि शर्मांक दशकक ।

ख) अस्सी दशक दशकक ।

ग) पचास सार्तक दशकक ।

घ) साठि दशरिक दशकक । ( )

7) चौकुआकृक बंठ गायक की नाम छलनि ?

क) कालीचरण ख) फूदनबाबू

ग) चेतबाबू घ) गुरुकुन ( )

क) चौंदशांक विलासही ख) चौंदलाइन

ग) चौंदशांक मिश्र घ) बैदाउन ( )

6.3 कथा-सार

माल चुकि ली ।

परिवर्तनक आकांक्षाक संग आगाँ बढ़ैत छाथ ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

थैह हमर समर्थ पैघ कहका निदेश थिक ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सोझे अछि ।

6.4 सन्दर्भ सहित व्याख्या

[illegible]

कथाक मर्म बुझबाले सहयोग भेटतै ।

उद्धरण : ।

[illegible]

संदर्भ [illegible]

तकर विधान आ आलोचना करैत आइन घुसलाह अछि ।

व्याख्या [illegible]

[illegible]

विशेष :

[illegible]

[illegible]

उदाहरण :

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विशेष

[illegible]

. युग सांस्कृतिक प्रवाहकें कथाक रूप प्रदान करबामे प्रयत्नशील रहलाह अछि ।

. ई कथा पहिनहि जखन विद्यालय [illegible] छात्र छात्रा लोकनिकेँ पढ़ाबए लगलाह तखन हिनका अपन [illegible] प्रकाशित करबाक प्रेरणा देने छलनि ।

अभ्यास : (1) निम्नलिखित शब्दरूपक सप्रसंग व्याख्या करू ।

एक दिन भोजन [illegible] [illegible] [illegible]

6.5 कथावस्तु

[illegible] तीन प्रमाण कर्ता महत्वपूर्ण आहे ।

[illegible]

पौत्र भुरकुन कानडू उभा राहि हा पवित्र ऋषि ।

[illegible] का ही भुरकुन अंकाने साथ उभारे ठीक दिसते ?

भुरकुन– हूँ ।

कोणीनाथ– हात ये वैसो ठीक ?

भुरकुन– हूँ ।

कोणीनाथ– लखन निश्चय वैद्य बीक ।

बोकवाच क्रोधने उभाद होउन झडपाड़ हुडाग्रीवेरांकें और कोण घर नहि पैदलीक ? सभसें पहिने हमरे शोधय आयल अहि ?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] बच्चन पैर छुवेत सङ्कलचिन्ह– बाजा एकी शब्द बजियैक लगि आगे गाम समस्त पैसल अछि ।

[illegible] कौन आवश्यक साधक भविष्यवाणी कयलनि अछि ।

बोध प्रश्न :

निम्नांकित प्रश्नक उत्तर दिअ।

9) विमला ईलोक कोन बातपर लोकक ओछि गरि अयलैक ?

क) हम आर्थिकदृष्टिक बेटी थिकहुँ ।

ख) हम कोनल अपन कर्तव्यक पालन कयलहुँ अछि ।

ग) एहि गामसँ जे ज्योति जागल अछि सकरा मिझाय नहि देब

घ) एतिमे हमर कोन अछाह ? ( )

10) बुच्चन अपन पिताश्रीसँ की कहलक ?

क) बाबा, एम्हरपर चलू ।

ख) हम अबै छी तँ अहाँ चलू ।

ग) ग्रामसंस्कारक विरुद्ध भऽ रहल छी ।

घ) आगे गाम समस्त पैसल अछि । ( )

6.6 चरित्र चित्रण

चरित्र कथा कथाक प्रधान तत्व मानल जैछ। एकर चित्रण कतबाजी कथा वास्तविकरूपें प्राप्त करैत अछि। एहि कथामे अनेक पात्रक समावेश भेल अछि मुदा मुख्यरूपें दूटा चरित्रक विकास देखाओल गेल अछि। ई दूटा प्रधान चरित्र एकर नायक-नायिका छथि। एकर अतिरिक्त आवश्यकता अनुसार कतेक गौण चरित्र सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि जाहि बिना कथाक विकास असंभव छल। एहि चरित्र सभक माध्यमसँ कथाकार समाजक विभिन्न वर्गक प्रतिनिधित्व करबाक प्रयास कएने छथि। किछु पात्र एहन छथि जे कथाक प्रारंभसँ अंत धरि रहैत छथि। किछु पात्र एहन छथि जे कथाक मध्यमे आबि कथाकेँ आगू बढ़बैत छथि। किछु पात्र एहन छथि जे कथाक अंतमे आबि कथाकेँ चरम सीमा धरि पहुँचा दैत छथि। एहि सभ पात्रक विषयमे कथाकार अपन विचार कतहु प्रत्यक्षरूपेँ तँ कतहु परोक्षरूपेँ व्यक्त करैत छथि। कथाकार अपन विचार व्यक्त करबाक लेल कतहु-कतहु अपन पात्रक माध्यमसँ सेहो अपन विचार व्यक्त करैत छथि। एहि कथाक नायिका सुशीला छथि। ओ एकटा ग्रामसेविका छथि। ओ अपन कर्तव्यक प्रति बड़ सजग छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक कोताही नहि करैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक भय वा संकोच नहि करैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक लोभ-लालचक शिकार नहि होइत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक दबाव वा प्रभावमे नहि अबैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक पक्षपात नहि करैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक भेदभाव नहि करैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक स्वार्थ नहि रखैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक अपेक्षा नहि रखैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक प्रतिदान नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक पुरस्कार नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक प्रशंसा नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक आलोचना नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक निंदा नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक उपेक्षा नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक अवहेलना नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक तिरस्कार नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक अपमान नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक अवमानना नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक उपहास नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक व्यंग्य नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक कटाक्ष नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक तानाकशी नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक ताना नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक व्यंग्योक्ति नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक वक्रोक्ति नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक श्लेष नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक यमक नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक अनुप्रास नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक उपमा नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक रूपक नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक उत्प्रेक्षा नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक अतिशयोक्ति नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक विभावना नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक विशेषोक्ति नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक असंगति नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक विरोधाभास नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक विरोध नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक विसंगति नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक विषमता नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक असमानता नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक भेदभाव नहि चाहैत छथि। ओ अपन कर्तव्यक निर्वाह करबामे कोनो प्रकारक पक्षपात नहि चाह

[illegible]

अभ्यास

1 [illegible]

क [illegible]

ख [illegible]

कार्यालयक पालन कैल्हुँ अछि । एहिमे हमर कहाँ कोन ?

6.7 परिवेश

[illegible]

परिणाम थिक हँ कथा

अकलदीप छल ।

शिक्षा संस्कारमे चेंचित छलेह तँ अपन घर कोना इच्छ रखितिअ ?

देखी मुर्गी खिलाइती बोल अहिं ।

[illegible]

[illegible]

6.8 संरचना-शिल्प

[illegible]

शैली कथा-संरचनाके मुख्य अंग मानल जाइत अछि ।

शैली [illegible]

'शाश्वतिका'क ई [illegible]

बनबैत अछि

हमर छाड़ी की अछि सिर्फिक सहभागी छी... ।

पौजसँ प्रश्न करैत छथिन जे की हतर दैत छनि–

संवाद संवाद दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत है। संवाद कथा को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। इनसे पात्रों के चरित्र-चित्रण में मदद मिलती है। पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने में संवाद बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। एक उदाहरण देखें :

ओवर वयस की हैनेक ?

काशीनाथ टिकिदवेस कहलहिक पैह करीब अठारह उनैस

चौ.– विवाहिता अछि कि कुमारि ?

का.– देखबामे त कुमरिए जकाँ लगैत अछि ।

चौ – नयन ओ अनका की सिखौनेक अनेकों सिखाबय बूढ़ दहाकेँ ।

यहाँ प्रस्तुत कथाकार अपने पात्रों के माध्यम से आवश्यकतानुसार संवादों का प्रयोग करते हैं। ये संवाद पात्रों के चरित्र को उभारने में सहायक होते हैं। यहाँ से कथा दोनों भाषा रूपों में संवाद रूप दृष्टिगत होता है।

बोध प्रश्न :

साहित्यिक कथाओं में संवाद के महत्व पर 4-5 पंक्तियाँ लिखें।

क) ..... (ख ..... (ग) .....

(घ) ..... (ङ) ..... (च)

अपने पाठ्यक्रम में पढ़े गए किसी भी साहित्यिक कथा के संवाद रूप पर टिप्पणी लिखें।

अभ्यास

दूसरी कक्षा में पढ़ी हुई किसी कथा को याद करके उसके संवाद रूप पर टिप्पणी लिखें। इन दोनों कथाओं की तीन दो विशेषता लिखें।

4 निम्नलिखित उद्धरणसभ पूरित करैत एहि कथाक मुख्य पात्र ओ विभिन्न दृश्यक चरित्रक निर्धारण अपने करू—

यात्रुक कालक दर चेतला संगे-संगे एक एक दृश्यांक एक विचित्र छटाकेँ देखार कैलक। [illegible] दुनू [illegible] बौकूबाबू मंत्रमुग्ध भय देखैत रहलाह।'

6.9 प्रतिपाद्य

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] पाठ्यपुस्तक पाठ [illegible] पाठ्यपुस्तक पाठ [illegible] पाठ्यपुस्तक पाठ [

6.10 सारांश

[illegible] कथाकृती मांडत असताना त्यांचे हेतूचे या सर्व कलात्मक विश्लेषणाचे [illegible] गांभीर्याने अध्ययन करणे होय ।

- [illegible] कथानकाच्या [illegible] कथावस्तुक आधारावर कथानक विश्लेषण करु शकतो ।
- [illegible] चरित्रात्मक विश्लेषणाच्या व्याख्या करु शकतो ।
- [illegible]
- [illegible] कथानकाचे [illegible]
- [illegible] आधारावर विश्लेषण सेट्टी करु शकतो ।

6.11 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न :

1) ब

2) ड

3) ब

4) क

5) ब

6) ब

7) ब

8) क

9) ग

ख

कार्यालय अधीन कर्मचारीक घर कहलथिन ज ओ सरकारी परीक्षाक भरफर प्रश्न सुधारक काज अपन हांडु नै बेचलहु एहि बातकेँ सुनिते सरकारीय बरमि कहलथिन ओ सरकारक लेल अति उत्तम दायित्व ई सरकार पालन क रहल अछि अनकर बहु बहुत बेसी कमजोर राखु एवं चाही आकरा संचालन स्त्रीक समस्यासँ इच्छा छोड़ ऐछ ई ओ सरकार चलाबक भार अछि चाही

11) बैकुण्ठपुर पंचायतमे ४० सीटि सहलाह ज हुनि दायित्वमे अबैं कहि मुखियाक ओकरा सीट हुनका हाथ सन्हि सरकार बना देत सकारे सबहकेँ आएल बात कहलिऐक ।

13) क. अकबकाइ ख. घंगट ग. फरिछ

घ. छौंड़ी ङ. फरची च. खगता

14 'एहि समये अकबकाइ कहा जाइ ने सेक ओ हमरा घरकेँ खिरहरा आसपास ४5 फीट पड़ाऽऽ मारि करबाकेँ, मारि करबाकेँ पूरा होइछ ऐबेक ।'

15) नारी-खगता

16) क.- गलत

ख. सही

ग. सही

घ.- गलत

अभ्यास

संदर्भ प्रस्तुत पद्यांश हमर सहपाठी [illegible] द्वारा लिखित [illegible] सँ लेल गेल अछि । [illegible] पैतालीस दोसर पड़ावमे [illegible] अछि जाहि कारणेँ [illegible] एहि प्रकारक समस्या [illegible] अछि । [illegible] सँ [illegible] सँ [illegible] सँ

विशेष [illegible]

१ [illegible] मकैस, से माथ प्रबल रूपमे आवल अछि ।

२ क) [illegible] छथि

ख) [illegible] छथि ।

ग) [illegible] मार्गदर्शन करबामे आदर्श चारित्रक रूपमे मानल अछि ।

[illegible]

४) = शुचिता

– ओज

– आलंकारिक कुशलता

५ [illegible] प्रतिपादित करैछ ।

६ [illegible] छथि ।

इकाइ 7 निबंध - पॉयर ऑक्टेव (मणिपद्म)

इकाइक अंशरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 निबंधक चयन

7.3 निबंधक स्वर

7.4 अंतर्वस्तु

7.4.1 विश्लेषण

7.4.2 मूल्यांकन

7.5 परिवेश

7.6 संस्कृतीय व्यक्तित्वक अभिव्यक्ति

7.7 संरचना शिल्प

7.7.1 भाग

7.7.2 शैली

7.8 शब्दांक और परिभाषा

7.9 सारांश

7.10 शब्दावली

7.11 कोष्ठ प्रश्न-अभ्यासक हेतु

7.0 उद्देश्य

[illegible] पूर्वक [illegible] इकाइक [illegible] [illegible] सहज होओ ।

एहि इकाइक पढ़लाक बाद अहाँ

- [illegible] सकब
- निबंधक सार निर्णय सकब
- [illegible]
- निबंधमे व्यक्त लेखकक वास्तविक व्यक्तित्वकेँ परिचित भऽ सकब
- निबंधक रचनाकालीन परिवेशक जानकारी प्राप्त कऽ सकब,
- निबंधक संरचना शिल्पक विवेचन विश्लेषण कऽ सकब
- निबंधक शैलिक एवं प्रतिपादक सामर्थ्यक परीक्षा कऽ सकब

7.1 प्रस्तावना

[illegible] अहाँ [illegible] [illegible] [illegible]

- निबंध एक सशक्त गद्य रचना विधा ।
- [illegible]
- एहिमे लेखकक व्यक्तिगत स्पष्ट प्रकाशन होइत अछि ।
- [illegible]

[illegible] पीपर अंकुरक विस्तृत [illegible] आवश्यक होएत ।

[illegible]

[illegible]

चिन्तनधारा ओ कार्यशैलीक मुख्य विषय रहलनि ।

7.2 निबंधक वाचन

पीपर अंकुर

[illegible]

[illegible]

[illegible] सँ पहिने [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्राद्धश्थलीमे शास्त्रार्थ करैत छपसऽ लागलैक ।

की देन होगतैक ?

एकर पुष्पक मधुर गंध संसार भरि व्याप्त भऽ उठल ।

नलिनी काल नहि लगलैक ।

गेल छथि भिरमिरा एहना आबि ।

विषयक प्रधानता नहि आनि कनेक कनेक महत्वकेँ देखने कऽ सकत ।

चाही, अलंकार, आभूषक आवश्यक चाही ।

बोध प्रश्न

[illegible]

सही उत्तर लेख कांचक संख्यक निर्देश करू—

क) सामन्यक वर्ग तर पछल रहबाक कारणें ।

ख) सामाजिक संस्था जागृत नहि होयबाक कारणें ।

ग) अनुकूल वातावरण नहि रहबाक कारणें ।

घ) राजनीतिक अपेक्षना पैटबाक कारणें । ( )

2) कोनाक अभावमे अंकुर नहि बनपि सकल ?

क) आकार अधिकें काइल नहि गेल ।

ख) आकारपर ककरो ध्यान नहि गेल ।

ग) आलोक, जल आ खादक अभाव भेल ।

घ) समुचित देखभाल नहि करबा गेल । ( )

3) विधिवत्क विकास लेल की आवश्यक अछि ?

क) शिक्षा आ सामाजिक चेतनाक विकास ।

ख) गुलामी आ प्रतिकूल वातावरणकें दूर करबाक प्रयास ।

ग) राजनीतिक संरक्षण भेटबाक दिशामे प्रयास ।

घ) जाति पाँतिक भेदभाव मेटबाक दिशामे प्रयास । ( )

7.3 निबंधक सार

[illegible]

एतबेर विस्तार कयल गेल अछि ।

[illegible]

भेटि गेलैक तँ तिलक सन व्यक्तित्व सेहो उत्पन्न भेलाह ।

[illegible]

इत्यादि बनबा लेल बाध्य भेल ।

सुन्दर अभिनय हजारक हजार दर्शकक मंत्रमुग्ध कऽ देने छल ।

संत विपश भेल ।

पिछबरि पौधर अंकुर भिन्न ।

पबैते अछि ।

छैि ४३ संकल

7.4 अंतर्वस्तु

7.4.1 विचारपक्ष

आवश्यक आंकड़े इस्तगाहि रोष्टर द्वारा सम्यक चिक ।

7.4.2 भावपक्ष

मैंहो थाम का विचारक वैष्ट स्थिति अस्ति ।

7.5 परिवेश

पील अस्ति

स्पष्ट झलक हुन्छ एकै निरंग्म पाइन्छ ।

7.6 लेखकीय व्यक्तित्वको अभिव्यक्ति

सम्म यस परिलक्षित हुन्छ ।

रचनामा देखिने यो सङ्केत आउँछ ।

मांच प्रश्न

विषय : पीपल अंकुर
(पर्णिपत्र)

[illegible] [illegible] [illegible] [

7.7 रचना-शिल्प

7.7.1 भाषा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

7 7.2 शैली

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

7.8 शीर्षक ओ प्रतिपाद्य

पार्न प्रशस्त कयलनि अछि ।

भाइपो विचारणीय थिक ।

बोध प्रश्न

देथिऽ । अन्तमे दिन एक छलमैं विस्तारक साँझ कक

6) एहि निबंधक प्रधान कोन तरहक शब्दक प्रधानता अछि ?

क) तद्भव तत्समहँ मिश्रित

ख) तत्सम

ग) तद्भव

घ) संस्कृत

7) एहि निबंधमे कोन शैलीक प्रधानता अछि ?

क) व्याख्यात्मक शैली

ख) विवेचनात्मक शैली

ग) वर्णनात्मक शैली

घ) संस्मरणात्मक शैली

क) नारी समस्याक चित्रण,

ख) घरतीय प्रतिभाक दुर्दशाक चित्रण

ग) गुलामीक चित्रण

घ) मिथिलाचलक समस्याक चित्रण ।

निम्नांकित लेखकक कोन सही अछि आ कोन गलती ?

ख) स्वानुभवक आश्रय लेल गेल अछि । (सही/गलत

ग) समस्याक निवारणपर जोर देल गेल अछि । (सही/गलत)

अभ्यास

1) प्रति निबंधक माध्य संबंधी विशेषताकेँ की पाँतिमे स्पष्ट करू ।

7.9 सारांश

- [illegible]
- [illegible] की पाठक परस्पर संबंधक विश्लेषण सेवी कर सकते हो ।
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

7.10 शब्दावली (मूल पाठमे प्रयुक्त)

ढेंक	: खासल सकड़ाँक पैघ टुकड़ा
चाकर	चौरस, चौकोन
चारुमान	मरणासन्न
अँकुर	अंकुरित बीया
मिलमिलाइत	: दीप्त होएब, चमकब
बेतहास	व्याकुल
छुटि छुटि	कातर दृष्टिसँ ताकब
आलाक	प्रकाश
दालाक ढेंक	गुलमोहर गाछ
चपाशा	सहारा लेब
अति	अत्यधिक
उपयुक्त	संगत
अंगूर	आत्मतुष्टि
अवेयण	खेदब
पूर्व	प्रथम
विलम्बकृत	कनबा
अनुरूप	: नेनाक मुख दिशा देखबाबाक क्षमता
मौजर	: कमा कमल
शर्त्तमि	[illegible]
अवरुद्ध	: हमकि जायब
विकसित	फुलायब
लोकगीत	: लोकगीतक प्रभेद (विशेष गीत)
विलाप	कहब
प्रस्फुटित	: फुलायल
गहूँर	: भीतर धरि
चित्रण	: आँखिक रूपमे हौब
अतिशात	: क्षेत्रपति
विश्वास	: मुग
परिणाम	: नतीजा
मौलायल	: मुरझायल
अवरोध	प्रतिबंधित समय
चीत्कार	: तेज करुण स्वर
सुपुष्ट	: मूलल
परम्परा	: पूर्वमे अबैत कोनो नियम, व्यवस्था

7.11 बोध प्रश्न/अध्यासक उत्तर

बोध प्रश्न

1) क

2) ग

3) ख

4) घ

5) ख

6) क

7) ख

8) ख

9) क) आहे

ख) नाही

ग) नाही

घ) [illegible]

अध्यास

[illegible] गेले । तें असे बहुत दिवस कि दोन-दोन अवस्थांमें राहि गेल ।

2) [illegible] पुढचे होणे योग्य. [illegible] वैद्य [illegible] मकरंद ही ।

3) [illegible]

4) [illegible] करायचे असेल, [illegible] चर्चासत्रे [illegible] चर्चासत्रे [illegible] चर्चासत्रे [illegible]

5) [illegible] [illegible] [illegible]

इकाइ 8 एकांकी - हथटुटा कुरसी (सुधांशु 'शेखर' चौधरी)

इकाइक रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 एकांकीक वाचन

8.3 कथासार

8.4 कथ्य औ मनोवस्तु

8.5 चरित्र विधान

8.6 परिवेश

8.7 शैलीपक

8.8 संरचना शिल्प

8.9 प्रतिपाद्य

8.10 सारांश

8.11 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

8.0 उद्देश्य

[illegible] इकाइ [illegible] एकांकी [illegible] [illegible] [illegible]

शब्दांकन हसदेव कुमार
सुशासु संस्कार यौधेय ।

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] नहि । हौं ओकरासँ जरैत किएक छलऊ, हौ ?

कंटीर फेर झरकी देह करया इशारेसँ कहु हम कुर्सी लगा दैछी। हम [illegible] बैठि हाथ पैर कहु चालैत छी। हम हाथ सकैनि ने छी। हम नाकी बहुत ठेक धरए अ पसन्द जाए ठेक से आकर रहल छैक, सहज लगैक चाह माहुक प्रयोजन कोन ?

नेपथ्यसँ हौ तों कि बुझैछ छहक बेटा हो वा अनिल हाकरा आछुर हाकरो साइत छैक हाकरोकेँ तँ कने लहक चहक चाहबे करी आगि बेसाह तांत तँ हमरा घरमे किनने अछि। ई सबक कर्त्तव्य छ लाहु लेल जी किएक जोरायब ?

कंटीर [illegible] बचु तँ हमरा सहजो छहरो नेङ्क पैर सनैन नहि अपन कहैत जी तँ इसबत दसकसँ बेसा अबैत छी हमरा बड़ लोक तँ सहिक कहैत ने कखनुक मुह देखि दोस्तीक हाथ बढ़ाबक कहलनि। सत्यवादी हरिश्चन्द्र कहाबी तँ बड़ छी ने मुदा हमरा पुरि अबैत रहलाह। कहलनि जे बैह कुशी छैक।

नेपथ्यसँ [illegible] हम एहने सोचि कहलिऐ [illegible] ने नमरा कहैत छैक [illegible] घरिये बोह [illegible] कहैत ने अपन [illegible] रहि जाइत अछि।

कंटीर [illegible]

नेपथ्यसँ [illegible] बचु [illegible] काज एहनेसँ चलि लेताह।

कंटीर [illegible] कहाबी [illegible] कहैत छी [illegible]

नेपथ्यसँ हौ [illegible] बाबाक पैरसँ [illegible] दहलेसँ [illegible] एकटा [illegible] हमरा [illegible] हौ [illegible] हम, कहाँ जाइ।

कंटीर [illegible] ओ पछि गेल तँ हाकिम चलि गेल।

नेमचंद्र सब अपन अपन भाग लऽकऽ अबैत अछि । आ सौंसे कथीक दुःख छहु ? मेहनति करैत छह, अपन पालन करैत छह जिनगीक दोसर प्रयोजने कोन ?

कंट्रोल (उत्तरल मुहसँ) बाबू, तँ एहि खुरसोकेँ की करिऐक ?

नेमचंद्र कारबारक लेल [illegible] नहि कऽ सकैत छी [illegible] , कारीगरक जयबाक हेतु उद्यत भेलापर [illegible] [illegible] छनि) ।

कंट्रोल बाबू एकटा चौकी आर बाहर [illegible]

नेमचंद्र [illegible] (एकाएक [illegible] निपत्ता भऽ अबैत छथि ।

कंट्रोल [illegible]

नेमचंद्र [illegible] आसछएँ सब किछु दोसर लैत छह ।

कंट्रोल आबि जयताह लखने बूझब जे आबि गेलाह

नेमचंद्र [illegible] (एकाएक बाहरक कलाइ दिस तकैत) के गेलमा ?

डाकपिन (नेपथ्यसँ) नहि हम छी सिरमू ।

नेमचंद्र (अशंकित हाइत आगाँ बढ़ि) [illegible] एखन एखनाहे पठा गेल अछि ।

डाकपिन (प्रवेश करैत) [illegible] ?

नेमचंद्र [illegible] छथि । से अखन धरि पहुँचल छथि ।

डाकपिन खयने तँ मधुरा खयने कतेक हम, एतेक दिनधरि [illegible] । आब अहाँसभक दिन अजस्से पूरत ।

नेमचंद्र से की कहैत छह ? हमर दिन अघलाह कहिया रहल ? आमहर अपन हो कमाइत खाइत छथि, एमहर कंट्रोल अपन अश्रम चलबैत छथि हमरा चाहबे की करी ?

डाकपिन [illegible] चिट्ठी देब [illegible] । अछाबाक उपक्रम) हरबाबू अबैथि तँ हमरो खबरि देब

नेनमणि (मालवे पढ़ि) चिट्ठी [illegible] करतक अछ हमरा चश्मा ताकऽ पड़त ।

डाकपिन (चिट्ठी पढ़ैत) बेचारी सादर [illegible] पुरब तँ फेर चिट्ठी देब ।

नेनमणि (काठ बक्सा हाड़त काजर [illegible] गामसँ की ओ सुन्दर स्थान छैक ?

डाकपिन सुनैत छिऐक जे कश्मीर धरतीक स्वर्ग छिकैक ।

नेनमणि [illegible] आ अहां हमरालोकनि [illegible] एतहि रहब मरब [illegible] हमरालोकनि [illegible] अपन कर्मभूमि एक लायक बुझैत छी । (ऑखिमे नोर आबि अबैत छनि)

कंटीर [illegible]

नेनमणि ओरमे विसोम लैत । [illegible] डाकपिन [illegible] बंगला.... । जाय दैह, हरे कतहु रहबु, सुखी रहबु ।

डाकपिन [illegible]

नेनमणि [illegible] कतहु रहबु, धनहाइत रहबु ।

कंटीर बात बदलि, [illegible]

नेनमणि [illegible] बैसलाह ।

[कंटीर कर्मी लऽकऽ जाइत अछि पाछाँ पाछाँ मुनका मोन डाकपिन चल जाइत अछि । नेनमणि हताश भावेँ चौकापर बैसि रहैत छथि । डाक पाबए चल जाइत छनि पर्दा खसैत अछि ।]

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक [illegible] उत्तरसँ मिलाकऽ देखू ।

[illegible]

क. गुप्त ख) नगर ( )

2) नेमसणिक अधिक स्थिति कंरन छनि ?

(क) मध्यवित्त वृहस्थाक (ख) निम्नमध्यवित्त वृहस्थाक ( )

३ बाचस्पतिजू मेक कलोक्त [illegible] कुन [illegible] कंरन छनि ?

(क) ईर्ष्याक (ख) अनुदारताक

(ग) श्रेष्ठताक भाव (घ) हीनभाव ( )

४ [illegible] कंटीरक केहन व्यक्तित्व प्रकट कोइत अछि ?

(क) यथार्थवादी (ख) प्रायोगमूलक विचार ( )

५ "हँ सत्य यहाँ कहू, [illegible] कंटीरक स्वभावक कोन पक्ष उजागर होइत अछि ?

(क) स्वाभिमानी (ख) प्रतिक्रियावादी ( )

8.3 कथासार

[illegible] हरेकृष्ण झा मैथिलीक [illegible] [illegible] हरेकृष्ण झा ई कथा [illegible] [illegible] हरेकृष्ण झा ई कथा [illegible] [illegible] हरेकृष्ण झा ई कथा

एक्यंकों ब्रथदृष्टा कुमारी
मुधांशु 'शेखर' चौधरी)

8.4 कथ्य का अन्तर्वस्तु

8.5 चरित्र-विधान

[illegible]

8.6 परिवेश

[illegible]

8.7 शीर्षक

बोध प्रश्न

अब नीचे दिये गये प्रश्नों को हल करें और अपने उत्तरों को इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से मिलाकर देखें।

1) हरेक आलोचक प्रस्तावना में क्या-क्या उल्लेख करता है?

क) कंटेंट (ख) नेचर ।

2) इन कौन कारणों को आप नहीं मानते हैं?

(क) पारिवारिक आर्थिक सामाजिक कारण ।

(ख) पारिवारिक जीवन नैतिक प्रभाव ।

3) [illegible]

क) कृपणतापूर्ण (ख) नौकर दयनीय

9) हरक नहि अपलाप केमहँ दुखी के छथि ?

(क) केनमणि (ख) कटोर ( )

अभ्यास

[illegible]

[illegible]

[illegible]

४ एकांकीके चारेत्र चित्रणक विशेषताकें छें लिखू लिखू

५ घटनाक निम्नलिखित अंशक अर्थक विस्तृत रूपें स्पष्ट करू

६ एकाकीक शीर्षकक पूर्ण औचित्य देखबैत अपन विचार प्रस्तुत करू

४ ४ संरचना शिल्प

एहि एकांकीक संरचना शिल्प पर विचार करबा सं पूर्व ई बात ध्यान राखब आवश्यक अछि जे एकर रचना कोनो पारंपरिक ढांचा पर आधारित नहि अछि। एकर कथा-वस्तु एकटा विशेष समय आ परिवेशमे घटित होइत अछि। एहि एकांकीमे दू टा पात्र अछि। दुनू पात्र अपन-अपन विचार आ दृष्टिकोण सं एक-दोसरकें प्रभावित करबाक प्रयास करैत छथि। एहि एकांकीक संरचना अत्यंत सरल आ सहज अछि। एकर कथा-वस्तु एकटा विशेष समय आ परिवेशमे घटित होइत अछि। एहि एकांकीमे दू टा पात्र अछि। दुनू पात्र अपन-अपन विचार आ दृष्टिकोण सं एक-दोसरकें प्रभावित करबाक प्रयास करैत छथि। एहि एकांकीक संरचना अत्यंत सरल आ सहज अछि।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

8.8.1 रंगपंचीयता

[illegible]

[illegible]

[illegible]

8.8.2 संवाद योजना

एकाकीक प्राण हइछ आकि सहज स्वाभाविक संवाद पूर्ण नाटक या कौशलक संग स्वरूपक प्रयोगसँ आन एकर संवाद कौशलकेँ कालक्रमपर पहुँच दर्शन अंतर एकाकीक संवाद अत्यन्त चुस्त दुरुस्त एवं संक्षिप्त होएबाक चाही। जाहिसँ पाठक श्रोताकेँ बोझ नहि बुझि पड़ए एकर सभटि व्यवस्थित प्रस्तुतिक दिशामे ई अंक पहुँच प्रयास करए। आ ई तहि बुझाय ने नाटक देखि रहल छी। संवादमे कथाक क्रमिक वार्तालिक क्रिया कलापक अनुभूति दर्शक कें भवे तैह सम्बन्धित कथ्य मनोरंजक साहित्यमे पूर्ण हाइड़ तेँ कौशलक परिचय एहि एकांकीमे हमरा भेटि :

नवमणि झा आपन नीक नानक सँग खेलैत छलि। अचानक हुनक हर बालक जोरक चपस सँ नामक डाक्टरि इंजेक्शन करमे लग पड़ल छलैन्हि

नवमणि : ई की डाक्टर अनलह कनीर ? हमरेँ ई नीक लगलनि ?

कनीर : कनियेँ रहैत तोरा नीक नीक लगतौ से बात की जानबि ... तोहे बच्चा रहतैक तोहे लड़कऽ नै लागऽ बलमोत ?

नवमणि : कुनो दिन बड़ेत तँ योगदान तोरा डाक्टर हम बनेबऽ, ठीक देखबऽ ... भरि कनियेँ अबैत छलि तँ कनी सिखबा के मन करैत छलि।

कनीर : नीक वस्तु आकेँ ? नीक तँ लोकक अन्त लोक को नीक ... आखिर महत्वपूर्ण होइत छैक।

नवमणि : सामान्य ज्ञानो बात पूछ चुकैत नै। कनी दरबेर ...

कनीर : अहलबल बात बापू ... कि करबह मास्टर जेर से ... कनी तँ कोनो फलेर ले अहाँसभसँ एकटा चपरासीक नोर रहितहुँ ... बापू तँ हमरा भा हाकिम लोक घरक सभ छथु ... हम तँ कोनो फेकाने लोक ... कनीक महत्वपूर्ण हुनकासँ कोनो काज पड़ैत छैन्हि ... आ हमरा सभकेँ ... कनीक काज प्रशंसक तँ आखिर हमरोलोकनिकेँ होइत ने।

एहि संवादक सहजता श्रोता पाठकेँ पूर्ण रूपेँ आकर्षित करबामे सक्षम अछि। ई एक चित्ताकर्षक परिवारक संवाद जहिमे कनियाक पुत्रक चिकित्सक हेबाक लेल मोन छैक। तथा सामाजिक दायित्वक अभिज्ञान छैक। जेहन बालक कनीर सम्पन्नताक कोरा भेटल तेहन बालक नवमणि दरिद्रताक कोरा भेटल। तथापि कनीर नवमणि दुनू बालक मध्य अन्तरंगताक सम्बन्ध छनि। पिताकेँ पूर्ण विश्वास छनि दुनूक भविष्यक।

नवमणि : बस मोन भेलनहेँ डाक्टरि नञ्जु, तेँ अहाँ ... हमरा ओ पता अछि ... एक बेर डिग्री करबाक पछाति ... फेर कोनो डाक्टरी नहि ... जाय दहक ... हमरा ई गप अनेक बेर अहाँ भोजनोसँ सभ किछु देखि लेलाह।

कनीर : ताहि जगतहि एखने सूतल छै आकि गैलाह।

नवमणि : ओ आज दे हम बजारसँ खिलौना ... लेने छलहुँ ... ओकर भोजक बेबाह दिसि ताकि) के ? कनए ?

डॉक्टरांचा : (नेपथ्यातून) नर्सबाई, हात धुवा.

[illegible]
एकत्र पुस्तकाचे पान गेले आहे.

[illegible]
पुस्तक कसं काय एकदम चित्रकला चुकवू शकतं ? की तुम्ही चित्रकार ?

[illegible]
हो ! मी आणि चंद्रकांत छान

[illegible]
मला ते चित्र काढायचं आहे. पण अजून काही
दिवस अवश्य पुरतं.

[illegible]
ते कोण कसले हे [illegible] आणि
ह्यांच्या [illegible]
चालवले की करी ?

[illegible]
हो काय आपण तर इथले खानदानी वैद्य.

[illegible]
इथला चालत आलेला पेशा.

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] कठोर दंडात्मक आदि शब्द सहजै करऽ चलि रैत छथि ।

[illegible] ''

बोध प्रश्न

[illegible] सलासँ मिलाकऽ लिखू ।

[illegible]

(क) अनौत छोड़ि 7

(ख) रोगग्रस्त अवस्था ओ सहजता

(ग) व्यक्ति प्रकाश आ छात्रक निर्देश

(घ) कुशल संचार व्यवस्था

(ङ) व्यावहारिक भाषा । ( )

[illegible]

(क) तटस्थ वर्ग

(ख) हस्तक्षेपक वर्ग

(ग) निष्क्रियक वर्ग

(घ) मित्र वर्ग । ( )

[illegible]

कथन हुनक कोन प्रवृत्तिक सूचक अछि ?

(क) अपन मिथ्या अहंकार व्यक्त करबा लेल

(ख) अपन व्यावहारिकताक

(ग) अपन आदर्शवादिताक,

(घ) अपन स्वाभिमानक । ( )

13) एहि एकांकीक मुख्य प्रतिपाद्य की अछि ?

क) समाजमे निम्नमध्य वर्गक बेथास्थितिक उद्घाटन,

ख) समाजमे मिथ्या प्रतिष्ठा,

ग) बेरोजगार यैवनी उत्पन्न आर्थिक संकट

घ) समाजमे व्याप्त ईर्ष्या द्वेष । ( )

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर लिखए आ अपन उत्तरकें अन्तमे दल गल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँच करू ।

1 एहि एकांकीक भाषा आ शैली अत्यन्त बोधगम्य अछि एहि सम्बन्धमे पाँच पाँक्तिमे अपन विचार प्रस्तुत करू ।

2 एहि एकांकीक शीर्षकौचित्यपर पाँच पाँक्तिमे अपन विचार व्यक्त करू ।

3 एहि एकांकीक प्रमुख नारी पात्रक चरित्रक पाँच पाँक्तिमे स्पष्ट करू

एहि एकांकीक अन्तर्गत अपन अनेक द्वन्द्वसँ पाठक दर्शकक मध्य समाजक निम्नमध्य वर्गक कोन चित्रक दर्शन भेल अछि / ओकर की रेखांकन दिऐ ।

8.10 सारांश

एहि इकाइक समुचित अध्ययन कएलाक पश्चात अहाँ निम्नांकित तथ्यक बारेमे अपन भाषामे लिखि सकैत छी

- अहाँमे एकांकीक माध्यमक द्वारा अपन गप्प अछि जाहिसँ अहाँ एक सफलता विधायक भाषा एकांकीक महत्ताक अपन विचार प्रकट कऽ सकैत छी
- अहाँमे एकांकीक भाव आ ओकर अन्तर्वस्तुक विषय विश्लेषण करबाक गेल अछि एकर संगे अहाँ एहि एकांकीक अन्तर्वस्तुक विशेषताकेँ स्वयं अपन भाषामे लिखि सकैत छी ।
- एहि एकांकीक पात्रक चरित्रक संबंधमे विचार करू एकर शैलीकक दृष्टिकोणसँ समीक्षा विश्लेषण करबाक गेल अछि, अहाँ देखाबिऐ कऽ सकैत छी ।
- एहिमे एकांकीक संवाद शिल्पपर दृष्टिपात एवं संवाद कौशलक महत्वपर विचार करबाक गेल अछि अहाँमे एकर पक्ष आ विपक्षमे विद्वानक मत सोदाहरण प्रस्तुत करैत निष्कर्षित रूपेँ अपन विचार एवं विश्लेषणकेँ अहाँ अपन भाषामे लिखि जाँचि लाभ कऽ सकैत छी ।
- अहाँमे एकांकीक दृष्टिकोणक विश्लेषण करैत ओकर अन्तर्वस्तुक मूल्यांकन करबाक गेल अछि अत अहाँ अपन भाषामे दृष्टिकोणक विचार कऽ ओकर अन्तर्वस्तुक समुचित मूल्यांकन कऽ सकैत छी ।

8.11 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

(1) क (2) ख (3) ख (4) क (5) क
(6) ख (7) ख (8) क (9) क (10) क
(11) ग (12) ब (13) क

अभ्यासक उत्तर

[illegible]

[illegible]

महत्वी उमनो नौक नहि लगैह अछि ।"

[illegible]

कथावस्तु कतहु शिथिल नहि भेल अछि ।

5 [illegible]

6 [illegible]

7. [illegible]

8 [illegible]

9 [illegible]

१० एटि एकांकीक अंतर्गत एक निम्न-मध्यवित्त परिवारक कथा आधिक स्थितिक आलोकमे केवल दारु परिवारमे ई हर छोटमे कलकत्ता बीच रहल छथि आ दुनिया एक दुखद स्थितिक विकास जल अन्तर्मनस्क छथि। एतेक लोकक ई आशा छैक जे ओ कहियो ने कहियो एकटा स्थिति सुधारवा लेल प्रयत्न हेबेतह किन्तु परिणाम नियति प्रवेत ऊहि। हर गप्प बहि आर्थिक आग्रहपर कारभार चल जाइत छथि पिताकें विशेष आइत छथि हुनक नेह सांत्वनाकें विषयी नकारिक जीवन दौर्बल्य सत्यानुकरण करए लगैत छथि। उमाकर पिता जनमणि मिश्रा पुत्र मोहकें हृदयस्थ क अपन जीवन काटि रहल छथि।

११ एटि एकांकीक एकटा अ शैलक मध्य एक निम्नमध्यवित्त परिवारक लक्षण स्थितिक दुखद घटनाक प्रस्तुति भेल अछि। कथा घरक कि सदस्यक छिट्टा कलकत्ता मे मजाक काटा आर्थिक स्थिति पूर्वतन रहि जाइत। ऐ लेल पाया घरक वैचारिक बाधा सम्बन्ध नेम अछि। घरे में घरे रहते थीक किन्तु विचार प्रति ई सम्बन्ध विचार दर्शनक अनुरूप होइक। कथा हर ने छिट्टा कलकत्ता मे गल छथि छिट्टाके मजाक मान सुरेशवत दाम अन्तर्मनकें स्वार्थ पिताक आग्रहपर कारभार चल जाइत छथि। एतेक बात छिट्टाके एकर उल्लेख नहि करैत छथि जे ओ दोसर के पास ओलाह 'आपनु कारभारमें आपस हमरा ने पुत्र ४४ लिखुय' कहि अपन कर्तव्यक मजाक भीर कए लेने छथि। मात्र एतेक गप्प मजाक मजाक घटना मोड़ लैत अछि किन्तु एहि घटनाक एकांकीकार एकटा इंडक बात प्रस्तुत कए। मध्यम परिवारक विशेषत मजाकें आर्थिक स्वतन्त्रक प्रति कर्तव्यविमुखताक स्पष्ट करबाक चेष्टा।

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

व्यावहारिक मैथिली

3

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

– इन्दिरा गाँधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

– Indira Gandhi

इग्नू
जन जन की
विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
ज्ञानगंगोत्री विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

3

व्यावहारिक मैथिली

इकाइ 9
सरकारी पत्राचार, टिप्पण आ प्रारूपण 5

इकाइ 10
संक्षेपण, भाव पल्लवन एवं निबंध लेखन 38

इकाइ 11
अनुवाद 55

इकाइ 12
संवाद शैली 74

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. चौथराम द्विज
पूर्व प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय
संस्कृत विवि., बरेली
डॉ. सोनम द्विज
प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
लसाविवि., दरभंगा
डॉ. नवीन चन्द्र पिंजा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
मैथिली विभाग,
[illegible]

डॉ. वेदव्रत द्विज
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष मैथिली
विभाग, डी.एस.पी.एम. विवि.
मुजफ्फरपुर
डॉ. नन्दवन्दन द्विज
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष मैथिली
[illegible]
प्रो. अयोध कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
[illegible]

संयोजक सदस्य
डॉ. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग
[illegible]
श्री मैथिली शरण
नई दिल्ली- 110065
डॉ. विमलेश चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
[illegible]
नई दिल्ली- 110065

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाई लेखक
डॉ. [illegible]
[illegible]
एस.एस.एल. कॉलेज, दरभंगा
डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र (इकाई 10)
प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
बनारसी सिंघिया महाविद्यालय, दरभंगा
डॉ. ओम झा (इकाई 11)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग
पी जी सेन्टर, सहरसा
डॉ. कमलाकान्त झा (इकाई 12)
पूर्व प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
एस.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा

पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. शत्रुघ्न झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, मैदान गढ़ी
नई दिल्ली- 110068

प्रबन्ध संयोजक
डॉ. ए. एन. त्रिपाठी
डॉ. एस. एस. मिश्र
[illegible]
[illegible]
दरभंगा

सामग्री निर्माण

बी सी एस पाण्डेय
[illegible]
जनवरी 2012
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अंगरेजीमे काहल बातकेँ मैथिलीमे हम्मा कऽकऽ कहऽ पड़य ।

इकाइ 9 सरकारी पत्राचार, टिप्पण आ प्रारूपण

इकाइक रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 पत्र लेखनक प्रकार

9.2.1 अनौपचारिक पत्र

9.2.2 औपचारिक पत्र

9.3 सरकारी पत्राचारक प्रक्रिया

9.3.1 टिप्पण , व्याख्या

9.3.2 प्रारूपण (मसौदा लेखन

9.4 सरकारी पत्राचारक विभिन्न प्रकार

9.4.1 सरकारी पत्र

9.4.2 अर्ध सरकारी पत्र

9.4.3 कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय अनुपत्ति (आफिस)

9.4.4 परिपत्र (सर्कुलर)

9.4.5 अधिसूचना आ अधिनियम

9.4.6 पुस्तिका

9.5 सारांश

9.6 सन्दर्भावली (ग्रन्थसमूह)

9.7 अभ्यासक प्रश्न

9.0 उद्देश्य

सरकारी पत्राचारमे सम्बन्धित एहि इकाइमे हम विभिन्न प्रकारक सरकारी पत्रलेखनक चर्चा करब। आ पहिने हमी व्यावहारिक रूपमे चर्चित्रांक प्रयोग विभिन्न क्षेत्रमे होइत अछि आ होयबाक चाहिअनि आ विभिन्न स्थिति मे निर्णयक लेबाक हमी पत्रक माध्यमे कोना आ प्रभावपूर्ण ढङ्गसँ प्रस्तुत करी से सीखब। एहि दृष्टिकेँ ध्यानमे राखि विभिन्न प्रकारक सरकारी पत्र लेखन विधिक ज्ञान इकाइक उद्देश्य अछि ।

एहि एकाइकेँ पढ़लाक पश्चात अहाँ :

- लिखित भाषाक अनौपचारिक एवं औपचारिक रूपक अन्तर कए सकब
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लिखि सकब,
- सरकारी पत्राचारक प्रक्रियाक चर्चा कऽ सकब,
- टिप्पण आ प्रारूपणक महत्वकेँ बुझि सकब,
- कार्यालयमे प्रयोग होबयबला विभिन्न प्रकारक पत्रक उत्तरकेँ लिखि सकब
- प्राप्त पत्रपर टिप्पणी लिखि सकब,
- पत्रक प्रारूप तैयार कऽ सकब ।

9.1 प्रस्तावना

[illegible] आजकल व्यावसायिक महत्त्वपूर्ण वस्तु बन जाता है।

[illegible] मुख्य भूमिका होता है।

[illegible] भूमिका होती है, अतएव एक पत्र सोच कर लिखा जाता है।

9.2 पत्र-लेखन के प्रकार

विशेष प्रकार [illegible] डाकघर द्वारा पत्र अर्थात् लेन-देन होता है।

9.2.1 अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये किसी व्यक्तिगत विषय अथवा निजी आवश्यक भावपूर्ण पत्र लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इन पत्रों में हम अपने हृदय के भाव अथवा व्यक्तिगत बातें लिखते हैं। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है।

अनौपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये किसी व्यक्तिगत विषय अथवा निजी आवश्यक भावपूर्ण पत्र लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इन पत्रों में हम अपने हृदय के भाव अथवा व्यक्तिगत बातें लिखते हैं। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है।

अनौपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये किसी व्यक्तिगत विषय अथवा निजी आवश्यक भावपूर्ण पत्र लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इन पत्रों में हम अपने हृदय के भाव अथवा व्यक्तिगत बातें लिखते हैं। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है।

अनौपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये किसी व्यक्तिगत विषय अथवा निजी आवश्यक भावपूर्ण पत्र लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इन पत्रों में हम अपने हृदय के भाव अथवा व्यक्तिगत बातें लिखते हैं। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है।

अनौपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये किसी व्यक्तिगत विषय अथवा निजी आवश्यक भावपूर्ण पत्र लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इन पत्रों में हम अपने हृदय के भाव अथवा व्यक्तिगत बातें लिखते हैं। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है।

अनौपचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं। ये किसी व्यक्तिगत विषय अथवा निजी आवश्यक भावपूर्ण पत्र लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इन पत्रों में हम अपने हृदय के भाव अथवा व्यक्तिगत बातें लिखते हैं। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं। इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है।

इन पत्रों में भाषा सरल, सहज और आत्मीयतापूर्ण होती है। इनमें किसी प्रकार के औपचारिक नियमों का पालन नहीं किया जाता। ये पत्र अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाते हैं। इनमें हम अपने हृदय के भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते हैं।

1) अनौपचारिक व व्यक्तिगत पत्र लिखे जाते हैं या ये सामान्य प्रकार के लिखने जाते हैं।

2) ...

3) ...

4) ...

5) ...

6) ...

अनौपचारिक अ व्यक्तिगत पत्रक बानगी

(1) मकान नंबर 105
अभिलाषा निवास
विद्यापति नगर
सुपौल 852131
09.03.200x

2) प्रिय सोनी
(3) बहुत-बहुत स्नेह।
(4) आशा, अवश्य पत्र भेजना....

अनेक दीदें
(5) अभिलाषा दीदी

(1) पत्रप्रेषक का, सर्वप्रथम अपना व पत्रिका का पूरा एवं शुद्ध पता देना चाहिए।
इसके बाद ही शुरू होता।

अभ्यास 1

[illegible] रहल छी, आकर शुद्ध करू ।

अतुल कुमार
चुलाकी रोड गोरखपुर
815301

[illegible]
[illegible] ।
बहुत दिनसँ अपनेक कोनो पत्र नहि भेटल
[illegible]

भवदीय
अतुल कुमार

9.2.2 औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र [illegible] व्यवहारमे बेसि [illegible] अछि जे ने व्यक्तिगत कार्यसँ [illegible] सार्वजनिक संस्था [illegible] । [illegible] औपचारिक पत्रक [illegible] प्रकारक पत्र व्यवहार [illegible] छैक ।

1) व्यावसायिक पत्र

2) [illegible]

3) आवेदनपत्र

4) बन्धुक आ बिक्री-पत्र

5) सरकारी पत्र

औपचारिक पत्रक [illegible] कोनो [illegible] [illegible] [illegible]

औद्योगिक तंटा नियमांच्या कलम ३ च्या उपकलम (१) अन्वये केलेल्या आदेशाच्या विरुद्ध [illegible] औद्योगिक न्यायालय, [illegible] यांच्याकडे दाद मागण्याचा [illegible] हक्क आहे.

हा कोर्ट दाखल करण्यासाठी औद्योगिक न्यायालयाचे [illegible] आहे. आदेश बजावल्याच्या तारखेपासून ४५ दिवसांच्या आत अर्ज दाखल करणे आवश्यक आहे. या मुदतीनंतर आलेले अर्ज विचारात घेतले जात नाहीत. अर्जासोबत आदेशाची प्रत जोडणे आवश्यक आहे.

अर्जाचा नमुना

अर्जाचा नमुना खालीलप्रमाणे आहे. [illegible] कलम ३ च्या पोटकलम (१) अन्वये केलेल्या आदेशाविरुद्ध औद्योगिक न्यायालयाकडे दाद मागण्यासाठी हा अर्ज वापरावा.

१) [illegible] अर्जदाराचे नाव व पत्ता लिहावा. [illegible] त्यांच्या नावापुढे लिहावा.

२) [illegible] यांचे नाव व पत्ता लिहावा. [illegible] त्यांच्या नावापुढे लिहावा.

३) संबोधनासाठी 'महोदय' हा शब्द वापरावा.

४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] तारीख [illegible] आदेशाची प्रत [illegible] जोडावी.

५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] दाखल करावा.

६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

११) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

२९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

३९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

४९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

५९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

६९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

७९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

८९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९०) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९१) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९२) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९३) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९४) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९५) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९६) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९७) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९८) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

९९) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

१००) [illegible] यांच्या [illegible] आदेशाचा [illegible] उल्लेख करावा.

नोकरी साठी अर्जदाराच्या माहितीसाठी

संपर्क

(2) प्रबंध निदेशक
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड,
पार्लियामेंट स्ट्रीट
दिल्ली-110001

(3) महोदय,

[illegible] के संबंध में मैं/हम [illegible] के अनुसार [illegible] आवेदन करना चाहता/ती हूँ/हम व्यक्तिगत विवरण नीचे प्रकार हैं—

नाम

पता

व्यावसायिक पैकिंगसी

अनुभवक संबंधमे सूचना .....

अन्य उपलब्धिक सूचना .....

यदि हमरा ठकि पहर रचा करबाक अवसर देल जायत त हम सदय एकर योग्य सिद्ध करबाक पूर्ण प्रयास करब ।

(5) सधन्यवाद,

(6) भवदीय,

(7) जोन प्रकाश
श्री भवानीपुर
लहेरियासराय, दरभंगा 846001

(8) 21.12.2006

विशेष अनुमति लेल आवेदनपत्रक बाबत

(1) सेवामे

(2) राजकीय महाविद्यालय,
महरसा ।

(3) महोदय

[illegible] अनुमति प्रदान करबाक कृपा करब ।

(5) सधन्यवाद

(6) भवदीय

(7) कल्पना झरण
प्राध्यापिका
संगीत एवं कला विभाग
राजकीय महाविद्यालय
महरसा 844120

(8) 10.01.2007

कोनो सभ्यसँ वा संस्थासँ हैत प्रकारक जानकारी लेल एकरा ठीकसँ वा शिकायत करबाक अछि तँ सेहो एहि पत्रक द्वारे लिखल जाइछ । एकरो संबोधक महोदय/महोदया वा श्रीमान् आदि शब्दक प्रयोग करी अछि । लिखबाक चालिसँ तँ अहाँ पत्रक रूप देखि गेल होयब जे लिखबाक क्रम की अछि । अनौपचारिक पत्रसमे लिखल जाइत अछि ।

व्यावसायिक अथवा आपारिक पत्र

अनौपचारिक पत्रक अतिरिक्त जे व्यावसायिक पत्रक लिखबाक हुए विषय रूपेँ सूचीबद्ध कएल अछि एकर एक व्यापारिक व व्यवसायिक संगठनक बीच परस्पर आपसक [illegible] लिखल जाइछ तथा ग्राहकसँ सेहो अपन व्यापारक प्रसारक दृष्टिसँ लिखल [illegible] जाइछ । एहि लेखमे निम्नलिखित तथ्य ध्यान देबाक अछि

ई पत्र पत्र [illegible] पंजीकृत [illegible] [illegible] भेजब आ फास्टक मार्फत [illegible] [illegible] ई 'जरूरी' बुझलक [illegible] [illegible] लिखबामे सुविधा होइत छैक ।

2 कतो कोनो [illegible] [illegible] [illegible]

(6) भवदीय

(7) भाइश्वर राम
कृते मैथिली अकादमी

(8) संलग्नक
पोथांक सूचना

अभ्यास 2

पोस्टमास्टरसँ कौल एक पत्र लिखू ।

एक लिखब आरंभ करबा सँ अछि ।

एकरा पूर्ण करू ।

प्रबंधक
उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास निगम,
मसूरी (उत्तर प्रदेश)

भवदीय

सरकारी पत्राचार

निश्चित प्रक्रिया होती है ।

9.3 सरकारी पत्राचारक प्रक्रिया

9.3.1 टिप्पण (व्याख्या)

[illegible]

- **!** [illegible]
- **१** [illegible] **समस्यामपर्मी पूर्ण अवगती घ३ लक्षय ।**

[illegible]

टिप्पणी लेखनाक समय ध्यान रखबायोग्य बात

[illegible]

१ **पूर्णता** [illegible] **स्थान नहि होएत । ई विधान पूर्ण होयबाक चाही ।**

२ **संक्षिप्तता** [illegible] **अनावश्यक विषय सँ बचबाक चाही ।**

३ **तर्कसंगत विचारक्रम** [illegible] **रखबाक चाही ।**

४ **स्पष्टता** [illegible] **होयबाक चाही ।**

५ **तटस्थता** [illegible] **आधार नहि होयबाक चाही ।**

6 कार्य करण्यास अनधिकृत असलेल्या अधिकाऱ्यास तो दर्शक असेल तेथे टिपणीवर टिप्पणी लिहिण्यास सांगू शकतो. परंतु असा अधिकारी अवर सचिव किंवा त्यापेक्षा खालच्या दर्जाचा नसेल.

7 टिप्पणीच्या शेवटी ज्या व्यक्तीने टिप्पणी लिहिली असेल तिचे नाव व पदनाम लिहिलेले असते.

टिप्पणी लेखन

कार्यालयात दररोज अनेक पत्रे येतात. त्यांचा अभ्यास करून त्यावर निर्णय घेण्यासाठी वरिष्ठ अधिकाऱ्यांना सादर करावे लागतात. त्यासाठी टिप्पणी लिहावी लागते. टिप्पणी लिहिण्याचे दोन भाग असतात. पहिला भाग टिप्पण भाग, तर दुसरा भाग पत्रव्यवहार भाग.

पत्रव्यवहार भागात आलेल्या पत्राची माहिती, त्या संदर्भातील कार्यालयाचे धोरण याबाबत माहिती असते. टिप्पण भागात विषय, संदर्भ, विश्लेषण व शिफारस असते.

टिप्पणी लिहिण्यासाठी एक विशिष्ट प्रकारचा कागद वापरला जातो. त्याला टिप्पणीचा कागद असे म्हणतात. त्याचा आकार खालीलप्रमाणे असतो.

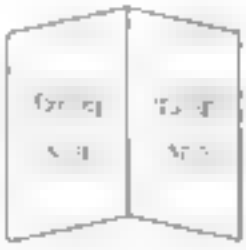

अशा कागदाच्या डाव्या बाजूला पत्रव्यवहार भाग लिहिला जातो. उजव्या बाजूला टिप्पणी लिहिली जाते.

3 टिप्पणी लिहिण्याचे काही नियम ठरलेले असतात.

4 टिप्पणीचे तीन भाग पडतात. 'विषय' लिहून त्याचा क्रमांक लिहिला जातो.

I) आवश्यक विषय II) कारण (III) नियम

IV) कार्यालयाने कार्यवाही स्थिती V) सुझाव

वरील अनुक्रमे क्रमांकाने टिप्पणी लिहिली जाते. टिप्पणीचे दोन भाग असतात. विशेष अधिकार असलेले अधिकारी हे असतात.

4) टिप्पणीचा अंतिम मसुदा तिन्ही भाषांत तयार करतात आणि अधिकाऱ्याला सादर करतात. संबंधित अधिकारी टिप्पणीचा दर्जा कायम ठेवतात, असा अधिकारी वाचन करतात.

5) काही अधिकाऱ्यांना प्रस्ताव करावे लागतात. अशा वेळी 'लाल शाई' वापरली जाते. एखादा 'मार्क' करायचा असेल तर वापरतात.

टिप्पणीक नमूना

(1) मैथिली प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग
भारतीय भाषा संस्थान-मैसूर 570006

2) क्रमांक _____(आयतो) पृष्ठ,_____ पत्राचार

3 [illegible]

4 [illegible]

[illegible] प्रशिक्षण सेल की सकैत अछि ।

8) सुधाकर जयपुरिया
मैथिली अधिकारी

21 अगस्त 200"

7) अनुधान अधिकारी

[illegible]

विभिन्न स्तरक अधिकारी द्वारा लिखित नोस लागल अछि ।

टिप्पणीक प्रकार

5 [illegible]
ई दो प्रोटिपय डेगसँ कारबाइ कऽ सकैत अछि । जेना

[illegible]
नोस उपरक अधिकारी लग पठा दैत अछि ।

[illegible]
अछि ।

[illegible]
निखउचली व्यक्तिकेँ आपस कऽ दैत अछि ।

[illegible] अधीनस्थ [illegible] अनुरोध [illegible] अनुमति [illegible] आदेश [illegible] आवश्यक [illegible] उपलब्ध [illegible] कार्यालय [illegible] कार्यवाही [illegible] कृपया [illegible] गोपनीय [illegible] जानकारी [illegible] टिप्पण [illegible] तत्काल [illegible] तथ्य [illegible] दिशा-निर्देश [illegible] निर्णय [illegible] पत्राचार [illegible] प्रस्ताव [illegible] प्रारूप [illegible] फाइल [illegible] बैठक [illegible] मंत्रालय [illegible] विभाग [illegible] विषय [illegible] शीघ्र [illegible] संलग्न [illegible] सरकारी [illegible] सहायक [illegible] सूचना [illegible] हस्ताक्षर [illegible] ।

उदाहरण

अनुमति सेल प्रस्तुत ।

आगे कोनो करवाइ अपेक्षित नहि ।

देखि लेल, धन्यवाद ।

विमर्श

एहि मायिलाक सिरकार नीचामे प्रस्तुत अछि ।

ख [illegible] अधिकार [illegible] पत्र [illegible] का [illegible] आवश्यक [illegible] दैत अछि [illegible] वा अन्य जानकारी मांगैत अछि ।

उदाहरण

- [illegible]
- सभ संबद्ध कर्मचारी लिखि अछि ।
- बिना मंत्रालयसँ अनुमोदन प्राप्त कऽ लेल जाय ।
- [illegible]

ग [illegible] अधिकारी [illegible] [illegible] अधिकारी [illegible] [illegible] अधिकारी कार्यालयपर निर्णय लैत अछि ।

[illegible] ई [illegible] अधिकारी [illegible] [illegible] अधिकारी [illegible] [illegible] स्वतः पूर्ण होइत अछि ।

घ [illegible] विभाग [illegible] [illegible] ।

ङ [illegible] [illegible] [illegible]

विभिन्न स्तरपर टिप्पणी लेखनक नमूना

[illegible]
राजभाषा विभाग
भारतीय भाषा संस्थान मैसूर 570006

[illegible] पत्राचार

[illegible] अपर निदेशक [illegible] [illegible] [illegible]

9.3.2 प्रारूपण (मसौदा लेखन)

[illegible]

प्रारूपणमे ध्यान रखबाक योग्य बात

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

भाषा, सुसंगत आ प्रभावपूर्ण होयबाक चाही ।

4 [illegible]

5 [illegible]

प्रारूप तैयार करब

[illegible]

पश्चात सरकारी पत्राचारक विभिन्न रूपक प्रसंग विचार करब ।

[illegible]

(1) पहिल पंक्तिमे पत्रशीर्ष ।

[illegible] कार्यालय संज्ञात्मक नाम आ विभागक नाम ।

आवश्यक पत्र प्रेषक नाम आवश्यक कार्यालय पत्रमे कार्यालय एवं घटक सरकारक कार्यालयक नाम लिखल जाइत अछि ।

3 [illegible] कार्यालयक नाम लिखल जाइत अछि ।

4 [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

३) पुनः तिथि दहिना भाग लिखल जाइत अछि ।

४) हेतर खण्डमे संक्षेपमे पत्रक विषयक उल्लेख होइत अछि ।

५ [illegible] पत्रक प्रारंभ [illegible] संबोधन करैत पत्रालयक [illegible] कथन अछि जे पत्रालय [illegible] अनुरोध अछि जे [illegible] आवश्यकताक पूरा हि [illegible]

६ पुनः पत्रक मूलभूत विषयवस्तुक विस्तृत चर्चा अछि जकरा लगभग एकसँ अधिक विषय हो मे [illegible] भिन्न भिन्न पैराग्राफमे लिखबाक चाही ।

[illegible] पत्रक मुख्य प्रयोजन स्पष्टीकरण [illegible] अछि । एकर [illegible] (टेलीफोन) नम्बर लिखल जाइत अछि ।

७ [illegible] पत्रक अन्त करब [illegible] अछि । [illegible] संक्षिप्त रूपमे [illegible] अछि । एकर उपरान्त [illegible] अछि । पृष्ठांकनक [illegible] हस्ताक्षर होइत अछि ।

सरकारी पत्रक नमूना

१) सं. ←

[illegible]

२ [illegible]

[illegible]

(३) बी दिल्ली

तिथि ६.६.७५

४) विषय : पुस्तक सजाबे आपात करबाक प्रस्ताव ।

५) महादय

[illegible] निम्नलिखित अंकड़ा संग्रह पठबथि

क) राज्यमे पुस्तक कतेक सामिला दर्ज भेल ?

ख) राज्यमे कतेक लोककेँ पुस्तकदान देल गेल ?

[illegible]

७) भवदीय

ह. क ख ग

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

८) प्रति : सब राज्य सरकारकेँ ।

रिक्त स्थानमे सही शब्द भरू

१ सरकारी पत्र ... होइत अछि (वैयक्तिक/औपचारिक)

२ सामान्य सरकारी पत्रमे संबोधनक रूपमे.... .... लिखल जाइत अछि (महोदय/प्रिय महोदय)

३ सरकारी पत्रम पृथक पृथक विषय रहि कथन जरूरी । (अन्य/एक)

४ सरकारी पत्रम स्वनिर्देश लेल के प्रयोग होइत अछि (अहाँक/अपन)

५ सरकारी पत्रम प्राप्तकर्ताक नाम पतानाम पृथक लिखल जाइत अछि । (ऊपर/नीचाँ)

9.4.2 अर्ध-सरकारी पत्र

अर्धसरकारी पत्रक प्रयोग कखन आ किएक कयल जाइत अछि ?

सरकारी पत्रक प्रमुख अर्द्ध तत्व पूर्ण कयलहुँ आब अर्धसरकारी पत्रक प्रसंगमे देखी । जहाँ धरिबाहुँ ई सरकारी पत्र औपचारिक होइत अछि मुदा अर्धसरकारी पत्रमे औपचारिकताक ध्यान नहि राखल जाइछ । एहि आधार पर दुनू पत्रक उद्देश्य आ कार्यक्षेत्र भिन्न अछि ।

क. कोनो पारिवारिक निमंत्रण लेल अधिकारी सरकारी कार्यालयक औपचारिक कार्य भाषामे प्रयुक्त पारिवारिक पत्र अर्धसरकारी पत्रक प्रयोग करैत अछि

ख अर्धसरकारी पत्र द्वारा कोनो पारिवारिक निमंत्रण लेल एक विभागक अधिकारी २ ३ विभागक अधिकारीक ध्यान आकर्षण करबाँ आकृष्ट करैत अछि

ग कोनो सरकारी कार्यक निष्पादनमे एहेन कोनो समस्या आ कठिनाइ उपस्थित भेला उपरांत कोनो अन्य कार्यालयक अधिकारी पुनः पुनः स्मरण कराबक लेल अर्धसरकारी पत्र व्यवहार करैत अछि । अर्धसरकारी पत्र व्यक्तिगत स्तरपर लिखल जाइत अछि

घ अर्धसरकारी पत्रक प्रयोग व्यक्तिगत अपन मनोरंजन वैयक्तिक रंग कखनो जाइत नहि

ङ अर्धसरकारी पत्रमे सदिच्छ पूर्वक अंतमे हम व्यक्तिक प्रयोग कयल जाइत अछि

च अर्धसरकारी पत्र सरकारी पत्रक भूमिकामे अर्धसरकारीक रूप व्यावहारिक होइत अछि एकर एक अधिकारी द्वारा अधीनस्थ कर्मचारीक लिखित जाइत एहि प्रकारे 'संबोधन' आ 'स्वनिर्देश' मे भिन्नता होइत अछि ।

अर्धसरकारी पत्रलेखन

१ एहिमे कुशल पत्रक दक्षिण भाग अर्धसरकारी पत्र पत्रक बाम भाग सरकारी विभागक नाम स्थान आ तिथि लिखल जाइत अछि ।

२ पृष्ठक बामा भाग अर्धसरकारी पत्र पत्रप्रेषक अधिकारीक नाम पदनाम आ दूरभाष संख्या लिखल जाइत अछि ।

३) संबोधनक रूपमे 'प्रिय श्री' क प्रयोग होइत अछि ।

४) एकर नीचाँ मुख्य विषय होइत अछि ।

५ तत्पश्चात् सम्बन्धवाद सामान्य औपचारिक उल्लेख होइत अछि

६ स्वनिर्देशक रूपमे पत्रक नीचाँ पत्रप्रेषकक स्थानपर 'अपनेक अहाँक प्रयोग कयल जाइत अछि तकर नीचाँ पत्रप्रेषकक हस्ताक्षर जाइत अछि ।

अन्य पुस्तक कार्य करने वाले अधिकारी तथा संबन्ध विभागों तथा संस्थाओं के साथ संपर्क

अभ्यास 5

अर्धसरकारी पत्रक नमूना देखें तथा नीचे अर्धसरकारी पत्रक नमूना दिया जा रहा है। इसे देखकर अपनेको दिया हुआ अर्धसरकारी पत्र का सरकारी पत्रक कार्य अंतर अंतर से फार्मेटकरें लिखें।

अर्धसरकारी पत्रक नमूना

अ स रा स

भारत सरकार

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

नई दिल्ली दिनांक .....

विषयका

उपसचिव

दूरभाष सं. 467582

3) प्रिय श्री कृष्णदेव राय,

4) .....

.....

.....

.

क) को पत्रलेखन [illegible] अधिकार छैक ?

ख) की प्राप्त करयबलाकेँ प्रेषक कहन चाहत अछि ?

ग) की सरकारी पत्रमे पृष्ठांकन लिखल जाइत अछि ?

9.4.3 कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेश

[illegible] अहीं [illegible] कार्यालयक पत्रमे [illegible] होइत अछि ।

कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशक प्रारूपी रूप

[illegible] निम्नलिखित प्रकारेँ आगाँ विभाग एहि प्रकारेँ अछि–

[illegible] विभाग एवं स्थानक नाम आ तिथि लिखल जाइत अछि ।

[illegible] अछि ।

[illegible]

[illegible] 2 सँ आरंभ कऽ क्रम सं. लिखल जाइत अछि ।

[illegible] लिखल जाइत अछि ।

[illegible] लिखल जा सकैछ

[illegible] उदाहरण देखू

ङ) सरकारी अभिलेख सूचना आदेशक अनुमति देने जाती अहि ।

छ) कुशीदी कुलाल को कपल बालना सहायक उपलब्ध अनुशासन नियुक्त कपल जाते अहि ।

ग श्री एल सहायक प्रशासन कर्मी अनुशा अधिकार नियुक्त कपल गेल अहि

घ इ कार्यालय अपन प्रशासनिक प्रभार विभागक सरकारमे निहित कपल गेल अहि ।

ङ) प्रारूप मूल रूपसँ मैथिलीमे तैयार कपल जाय ।

च, हिन्दीक अ एवं अंग्रेजीक स्थान अ शुद्ध मैथिलीक प्रयोग करबाक चाही

कार्यालय ज्ञापनक प्रयोगक क्षेत्र

आब नीचाँ इ कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग कपल जाय हेतु निर्देश कपल गेल अछि ।

१ कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग भारत सरकारक मंत्रालय आ विभागक आपसी पत्र व्यवहार कपल जाइत अहि ।

२) विभाग कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग अपन कार्यालयमे सूचना भेजब लेल वा सामान्य सूचना देबा लेल करैत अहि ।

१ कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग सबहु आ अधीनस्थ कार्यालयक मे पत्र व्यवहार लेल नहि कपल जा सकैत अहि ।

कार्यालय ज्ञापनक नमूना

1) सं. 200262/5/95-रा.भा.(मै.)

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग (2) लोकनायक भवन, दिल्ली

दिनांक: 25 जुलाइ, 1995

3) कार्यालय ज्ञापन

4) विषय कपले सरकारक कार्यालय सभमे सामंजस्यक आधारपर अनुवादक कोज

५) एकि विभागक २ फरवरी ७०-क, कार्यालय ज्ञापन २ ४३१ ९५ ग ।

ग द्वारा ई विदेश दल गेल छल जे सभ कार्यालयमे दोभाषी अथवा अनुवादक वहि अछि अछि अवसरक काज कार्यालयक अपनी योग्य कर्मचारी मानदेयक आधारपर कराओल जाय ई के अंतर्गत चल दूरभाष सम्पर्क लेल 1500 टाका मानदेय निर्धारित कपल गेल छल ।

२) राजभाषा विभाग अनुवादमे वहिष्कार पुनरीक्षण कऽ विभिन्न मंत्रालय अहि ग अनुवाद लेल निर्धारित दरि हजार शब्द पर ९) शब्दक स्थान पर ९०) शब्दक दरमे मानदेय दर कपल । मानदेयक संशोधित दरि विभागक १ फरवरी 1995क कार्यालय ज्ञापनक अनुसार पूर्ववत रहत

३) ई आदेश सभि कार्यालय अपनाबक लेल हमरासँ विचार प्राप्त होयत

4) ई कार्यालय ज्ञापन वित्त मंत्रालय आ एकार्यालयक सूचना विभागक 13 जुन सम्बन्ध अंतर्विभागीय विचारक ( ) संख्या दल गेल सहमतिसँ जारी कपल जा रहल अहि ।

(6) ह/ ए. हसैन

उपसचिव भारत सरकार

6) प्रति प्रेषित

1) भारत सरकारके सभ मंत्रालय/विभाग ।

2) भारत सरकारके नियंत्रण एवं महालेखा परीक्षकके कार्यालय ।

3) संघ लोकसेवा आयोग ।

4) [illegible]

5) राजभाषा विभागके सभ डेस्क/अनुभाग ।

6) राजभाषा विभाग (ग) डेस्क (150 अतिरिक्त प्रति) ।

कार्यालय आदेशक प्रयोग क्षेत्र

कार्यालय आदेशक [illegible] करने संबंधी [illegible] प्रयोग किया जाता है ।

क) कर्मचारीके नियमित छुट्टीके स्वीकृति

ख) अधिकारी/कर्मचारीके अनुभागमें कामके घटबढ़ा

ग) कर्मचारीके एक अनुभागसे दूसरे अनुभागमें स्थानांतरण ।

कार्यालय आदेशक नमूना

1) सं. 9-9145 प्रशा 5

भारत सरकार

केन्द्रीय पैथिली निदेशालय

नई दिल्ली 15.01.07

2) कार्यालय आदेश

3) (विषय नहि लिखल जाय)

4) [illegible] प्रशासन [illegible] सहायक प्रोफेसर [illegible] की सेवा अनुभागमें नियुक्त करल जाइत अछि ।

5) ह. श्री माहत

उपनिदेशक (प्रशासन)

6) प्रति प्रेषित :-

1) श्री शंकर ठाकुर

2) श्री ललका झा

3) श्री विधुलेन्दु भेटल

4) संबंधित अनुभाग एक

5) रोकड़ अनुभाग

अभ्यास 7

[illegible] के [illegible] सहायक पदक काज करैत छथि आ [illegible] अवस्था ५७ टा पर आछि चल अबैत कथन छथि [illegible] पूरा करू ।

[illegible]

लोकनायक पतन

[illegible]

[illegible] के [illegible] आवश्यक [illegible] पूरा कथन [illegible] अछि से पर आछि [illegible] टा [illegible] दर [illegible] पड़त

[illegible]

1) [illegible]
2) [illegible]
3) [illegible]
4) [illegible]

अभ्यास 8

[illegible]

9.4.4 परिपत्र (सर्कुलर)

[illegible]

परिपत्रक नमूना

कार्यालय
अमुकर आयुक्त
पत्तन चिह्न

सं. दि. 11.12.2001

परिपत्र

विषय: सामान्य भविष्यनिधिक नामांकन परिपत्र भरना ।

[illegible] सामान्य भविष्यनिधिक नामांकन [illegible] भरने [illegible]

(रमेश सुमानी)
प्रशासनिक अधिकारी

सभी
सभी अधिकारी एवं कर्मचारी

9.4.5 अधिसूचना का संकल्प

[illegible] अधिसूचना [illegible]

अधिसूचनाक नमूना

(भारतीय राजपत्र भाग-I, खंड 2 में प्रकाशनार्थ)

भारत सरकार
वाणिज्य मंत्रालय
नई दिल्ली

केन्द्रीय सरकार सं. आ. सं..... दिनांक..... वाणिज्य [illegible] अधिनियम 91 [illegible] की [illegible] प्रस्तावित घोषित करती है ।

ह.

(क. ख. ग.)

[illegible]

(भारत सरकारके राजपत्र भाग II, खंड 3मे प्रकाशन लल,

स.....

सेवामे

सचिव, पेट्रोलियम मंत्रालय

नई दिल्ली

तारीख .

संकल्प

[illegible] संस्था/व्यक्तिकेँ मनोनीत करबाक अछि ।

2) समितिक अध्यक्ष श्री..... होयताह ।
निम्नलिखित सदस्य होयताह

1.
2.
3.
4.

3. समितिक निम्नलिखित पदेन सदस्य भरपाई करताह

1.
2.
3.

4. समिति [illegible] मे अपन कार्य [illegible] सचिव,
सामक होयत ।

ह. अ.

सचिव भारत सरकार

आदेश [illegible] राजपत्रमे प्रकाशित करबाक चाही ।

क. ख. ग

सचिव,भारत सरकार

पृष्ठांकनक प्रयोग निम्नलिखित स्थितिक लेल कयल जाइत अछि—

[illegible] पृष्ठांकनक अन्तर्गत आन लोक वा [illegible] एकर अंतर्गत [illegible] पठयबाक हो

[illegible] अथवा संबद्ध कार्यालयकेँ पठयबाक हो

1, यदि पत्र मूल रूपमे प्रेषककेँ घुरयबाक हो ।

[illegible] प्रेषक कार्यालय [illegible] एकर [illegible] प्रतिलिपि [illegible] संबद्ध अधिकारी [illegible] पृष्ठांकन [illegible] प्रेषकक सहित आँख

क) मूल पत्रक नीचाँ लिखिकऽ

ख) फाइलमे घारूप बनाकऽ ।

[illegible] पत्र [illegible] संलग्नक [illegible] दाखिल

[illegible] एक एकटा आर नमूना [illegible]

पृष्ठांकनक नमूना

प्रतिलिपि...

की सूचना लेल/ कारवाइ लेल / शीघ्र अनुपालन लेल प्रेषित ।

पदनाम

[illegible] पृष्ठांकनक [illegible] पृष्ठांकन [illegible] प्रेषक [illegible] पृष्ठांकन [illegible] प्रेषक [illegible] पृष्ठांकन [illegible] प्रेष

अभ्यास 9

अभ्यास 10

9.5 सारांश

9.6 शब्दावली

स्वनिर्देश : अपने प्रसंगमें उल्लेख । (उदाहरण, अपनेक, मनदीप भवदीया,

मंत्रालय, कार्य पता आदि विवरण कमल होअय ।

पूर्ववृत्त : कोनो पत्र वा व्यक्तिक पहिलुक विवरण ।

प्रायोजित : संबद्ध विषय द्वारा पठाओल गेल ।

अनुस्मारक : स्मरण करायब लेल लिखल गेल पत्र ।

कार्यालय : [illegible]

राजपत्र : राजपत्र

9.7 अभ्यासक उत्तर

अभ्यास 1

सौम्या निकेतन
1.9- ए, अशोकनगर नगर

आहरणीय कार्यालयी,
6 मार्च 2006

[illegible]

अभ्यास 2

( )

महाशय
पोस्ट मास्टर
मेहता पोस्ट ऑफिस [illegible]
महाशय

[illegible]

संलग्नित 200 रुपये आणि दहा पोस्टलेखे ।

[illegible]

कळावे लोभ असावा ही विनंती

धन्यवाद

[illegible]

16 अगस्त,2007

अमरनाथ मालहोत्रा
शंकर चौक, महरसा

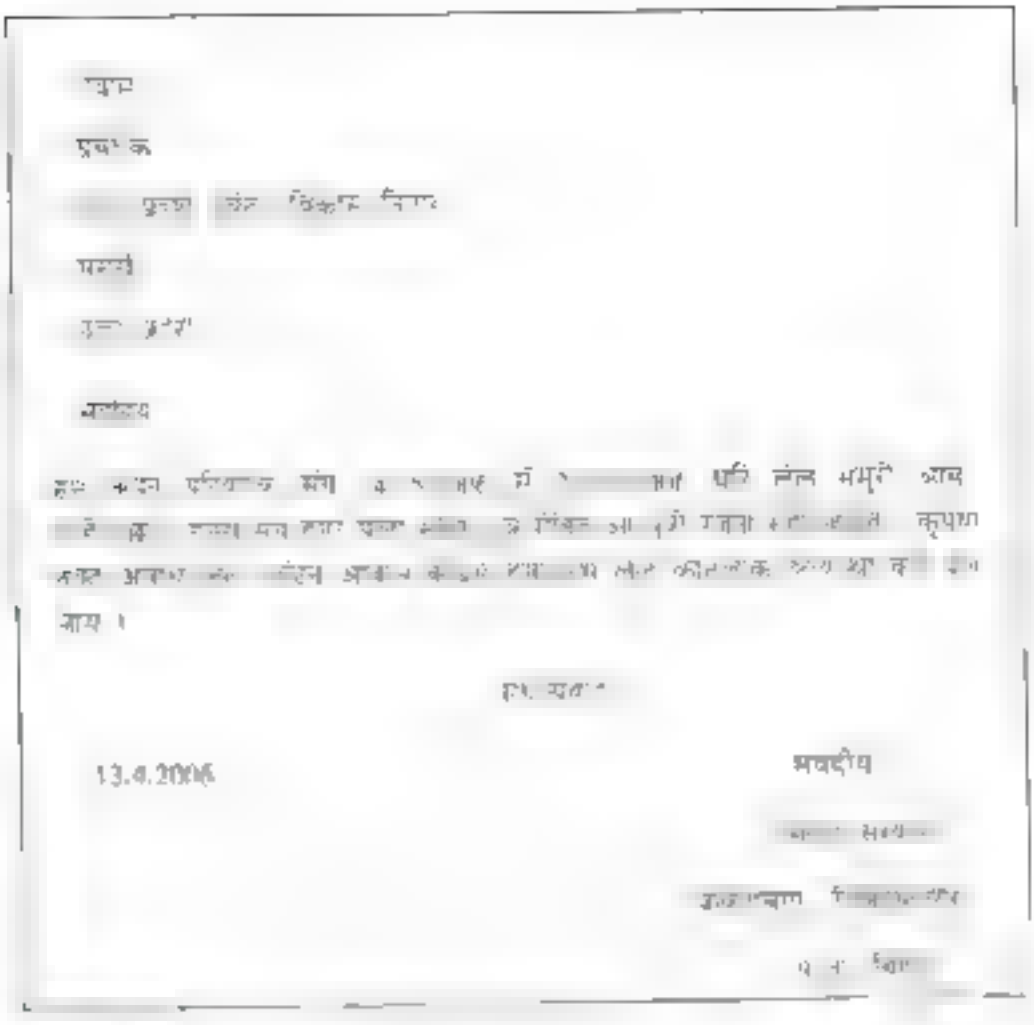

13.6.2006

अध्यास 3

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

(ग) [illegible]

(घ) [illegible]

(ङ) [illegible]

दा. पा. ह.
,सहायकका आधारार,
वि
अनु. अधि,
संलग्नित प्रारूप हस्ताक्षर लेख प्रस्तुत अछि ।

से. सि. अ.
(अनु. अधि. क आधारक)
दि.

श्री [illegible] हस्ताक्षर [illegible]
आदेश अछि

अवर सचिव
क.पा.र.,

[illegible]

अभ्यास 4

[illegible]

अभ्यास 5

[illegible]

वि, हुनक पाहुन कपसे अंतर होइत अछि ।

[illegible] काल लिखल जाइत अछि ।

[illegible] कालमे लिखले जाइत अछि ।

[illegible] अधनेक'क प्रयोग होइत अछि ।

[illegible] अछि

[illegible] अछि ।

अभ्यास 6

(1) (क) अपेक्षित (ख) कृपया (ग) सरकारी (घ) सरकारी

(2) (क) नहीं (ख) नहीं (ग) हैं

अभ्यास 7

स. I 16/93 स्थापना
भारत सरकार
स्वास्थ्य विभाग
गृह मंत्रालय

लोकनायक भवन
खादीव मार्केट
नई दिल्ली
11.04.93

कार्यालय ज्ञापन

विषय : कार्यालय अधिग्रहण ।

[illegible]

प्रतिलिपि प्रेषित

1) कार्यालय आदेश रजिस्टर,
2) वित्त अनुभाग,
3) प्रशासन अनुभाग,
4) श्री एस. के. अग्रवाल ।

एस. चौहान
(प्रशासनिक अधिकारी)

अभ्यास 8

स.-4 5678

भारत सरकार
राजस्व विभाग
वित्त मंत्रालय

राजस्व भवन
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली
5.12.2006

कार्यालय आदेश

[illegible]

शंकर स्वामी
निदेशक

प्रतिलिपि प्रेषित
कार्यालयक सभ कर्मचारी ।

अभ्यास 10

केन्द्रीय जल आयोग
ब्लॉक, सेक्टर 1 रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली
-

परिपत्र

दिनांक,

विषय : मैथिली पोथी खरीद ।

कार्यालयक [illegible] ई-कार्यक [illegible] अनुपलब्ध [illegible] कार्यालयक [illegible] प्रयोग [illegible] पोथीक सूची [illegible] पुस्तकालयकेँ [illegible] शामिल कयल जा सकय ।

धन्यवाद

अधिकारी एवं कर्मचारी गण

(विमल मिश्र)

कार्यनिदेशक

इकाइ 10 संक्षेपण, भाव पल्लवन एवं निबंध लेखन

इकाइक रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 संक्षेपण

10.2.1 संक्षेपणक महत्त्व

10.2.2 संक्षेपणक गुण

10.2.3 संक्षेपणक विधि

10.3 भाव पल्लवन

10.3.1 भाव पल्लवनक महत्त्व

10.3.2 भाव पल्लवनक विधि

10.4 निबंध-लेखन

10.4.1 निबंध लेखनक स्वरूप एवं प्रकार

10.4.2 निबंध लेखनक विधि

10.5 सेराफा

10.6 शब्दावली

10.7 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

10.0 उद्देश्य

एहि [illegible] अध्ययन कएलाक उपरान्त अहाँ [illegible]

- संक्षेपण तथा भाव पल्लवनक महत्त्वक विषयमे कहि सकब
- संक्षेपण प्रक्रिया अथवा विधिकेँ बुझि सकब,
- कोनो अनुच्छेद अथवा दत्त गद्य अंशक संक्षेपण कऽ सकब,
- भाव पल्लवनक प्रक्रिया बुझि सकब
- कोनो वाक्य अथवा भावक भाव पल्लवन कऽ सकब
- निबंध लेखनक विभिन्न पद्धति प्राप्त कऽ सकब
- विभिन्न विषयपर निबंध लिखि सकब ।

10.1 प्रस्तावना

[illegible] विभिन्न आवश्यक ज्ञानक प्राप्त करब तथा एकरा लिखबक शैली सिखब ।

10.2 संक्षेपण

संक्षेपण का शाब्दिक अर्थ संक्षिप्त करना होता है। संक्षेपण में किसी लंबी अभिव्यक्ति या विस्तृत गद्यांश को संक्षिप्त करने के लिए उसके मुख्य भाव या विचार को ही ग्रहण किया जाता है। इसमें मूल अवतरण के विस्तार, उदाहरण, तर्क, व्याख्या आदि को छोड़ दिया जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के विस्तार को संक्षिप्त करते समय उसकी मौलिकता को बनाए रखना आवश्यक होता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के किसी भी अंश को छोड़ा नहीं जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के किसी भी अंश को छोड़ा नहीं जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के किसी भी अंश को छोड़ा नहीं जाता है।

10.2.1 संक्षेपण का महत्त्व

संक्षेपण का महत्त्व आज के युग में बहुत बढ़ गया है। आज के व्यस्त जीवन में लोगों के पास समय की कमी है। इसलिए लोग लंबी रचनाओं को पढ़ने के बजाय उनका संक्षिप्त रूप पढ़ना पसंद करते हैं। संक्षेपण से समय की बचत होती है और मुख्य विचार को आसानी से समझा जा सकता है। संक्षेपण से लेखन कौशल का विकास होता है और विचारों को व्यवस्थित करने की क्षमता बढ़ती है। संक्षेपण से भाषा पर अधिकार बढ़ता है और शब्दों का सही प्रयोग करने की क्षमता विकसित होती है।

10.2.2 संक्षेपण के गुण

संक्षेपण के कई गुण हैं। इसमें मूल अवतरण के मुख्य विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के विस्तार, उदाहरण, तर्क, व्याख्या आदि को छोड़ दिया जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के किसी भी अंश को छोड़ा नहीं जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के किसी भी अंश को छोड़ा नहीं जाता है। संक्षेपण में मूल अवतरण के किसी भी अंश को छोड़ा नहीं जाता है।

10.2.3 संक्षेपण की विधि

संक्षेपण करने के लिए कुछ विधियों का पालन करना आवश्यक होता है। संक्षेपण करने से पहले मूल अवतरण को ध्यान से पढ़ना चाहिए। मूल अवतरण के मुख्य विचारों को रेखांकित करना चाहिए। मूल अवतरण के मुख्य विचारों को अपने शब्दों में लिखना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के शब्दों का प्रयोग कम से कम करना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के वाक्यों को छोटा करना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के अनुच्छेदों को संक्षिप्त करना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के शीर्षक को बदलना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के उद्धरणों को छोड़ देना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के आँकड़ों को संक्षिप्त करना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के चित्रों को छोड़ देना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के तालिकाओं को संक्षिप्त करना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के ग्राफों को छोड़ देना चाहिए। संक्षेपण में मूल अवतरण के मानचित्रों को छोड़ देना चाहिए।

[illegible] प्रतिदिन [illegible] पुनरावृत्ति [illegible] करके [illegible] अति अंतिमे काज चलि जाय [illegible] प्रतिदिन दू घंटा प्रात-सायमे दैत छथि ।"

[illegible] पुस्तकालयक [illegible] भागमे [illegible] एकान्त [illegible] दू-चारि [illegible]

आब अपन [illegible] करियै किंतु पैघ [illegible] स्थान दए [illegible] भोजन [illegible] करी । पानि लिअए जे आवश्यक समझ निम्न वाक्य अछि–

[illegible] पढ़ि [illegible] एक [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2) संक्षेपणक आशय चारि पंक्तिमे स्पष्ट करू ।

3) संक्षेपणक कोनो दू लाभक उल्लेख करू ।

अभ्यास 1

निम्नलिखित वाक्यमे प्रयुक्त अनावश्यक शब्दकेँ रेखांकित करू

विनय हरदम समय पे सबके अभिवादन करैत छथि मुदा परीक्षा समाप्त होइ तकर कतो चिन्ता नहि ।

2) निम्नलिखित वाक्यक संक्षेपण करू ।

विभिन्न वैदिक कालहिमे आन संस्कृति सं सम्पर्कसँ एक विशिष्ट वातावरण बनि गेल छल जाहिमे एक दोसर संस्कृतिकेँ आत्मसात करबाक प्रवृत्ति छल । एकर एक प्रमुख कारण एकर एक विशाल भू-भाग पर विस्तृत होयब छल ।

3) निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण करू

समस्त प्राणीमे मानव सर्वश्रेष्ठ अछि । एकर कारण ई जे एकरामे चिन्तन शक्ति अछि । एकर अपन भाषा अछि । एकर अपन सुसंस्कृत समाज अछि । मुदा यदि पाश्चात्य दृष्टि सभकेँ नहि बुझैत अछि तँ एकरा ई अधिकार प्राप्त अछि जे एकरा विना आधारकेँ पशुक समान घोषित कऽ दी । बुद्धि विवेकसँ सम्पन्नताक अभावमे जीव-जन्तुसँ भिन्न आ सर्वश्रेष्ठ मानल गेल अछि ।

4) निम्नलिखित गद्यांशका संक्षेपण करीब एक तिहाइ शब्दमे करू :

संसारचक्र परिवर्तनक परम्परा प्रगतिशीलताक कारणे सृष्टिक समस्त कार्य व्यापार चलैत अछि । मनुष्यक जीवन तिल मात्र नहि छैक । कखन परिवर्तन चलायमान उपस्थित भेटि नै हकर पूर्वमे तेहन परिवर्तन छोड़ि जे मुनक प्रकाशमे करबा एहि मानक पर प्राप्त कऽ परिणाम मोड़ित इहन सांचे परिवर्तनकेँ प्राप्त करैत रहय । से मानल करैत अछि एकान्तर इसबरक जहन कखन जे दुनियाँ अछि ओ तहि परिवर्तनशील परिवर्तनशील बुझल जाइछ

10.3 भाव पल्लवन

अर्थ प्रकाशनक विधिमे प्रति चुकल की । अर्थ जेहन हो से सम्पन्न करब विस्तृत अक्षरमे प्रतिपादन रंगित छोड़ करब जाइछ । भाव पल्लवन संक्षेपनक ठीक विपरीत अछि पल्लवनक के शाब्दिक अर्थ अछि विस्तार करब अर्थात भाव पल्लवनक अर्थ अछि कोनो गद्यांशक मुख्य विचार कालान्तरित भावेँ पुनः भाषाक विस्तारपूर्वक प्रकाशन करब एवं प्रकाशक हेतु भाषाक उपयोगिकरण व्यवस्थित अर्थ शब्द प्रयुक्त होइछ

10.3.1 भाव-पल्लवनक महत्त्व

भाव विस्तारमे भाव पल्लवनक महत्वपूर्ण स्थान छैक। मनुष्यमे मनोभाव वाक्यमूल प्रकार स्वभाव कौशल छी। मानव जिज्ञासु छ अर्थ करबहुँ वैज्ञानिक आधार पर करबामे प्रयोजन बड़ा स्थान नहि होइछ। प्रत्येक विद्यार्थी भाव छ गहिरे मे अन्तर्हित भेद विशेषक बोध करब। तथा अभिव्यक्तिकेँ प्रकाश करबा लेल भाषाक व्यवस्थित पाण्डित्य एवं व्यवस्थित करबाक आवश्यकता होइछ। भाषाक विस्तार करबाक लेल भाषाक विभिन्न शैलीक प्रयोग करब पड़ैछ। प्रत्येक भाषाक अपन-अपन शैली होइछ जे भाषाकेँ अन्य भाषासँ भिन्न बनबैत अछि। भाषाक शब्द शब्दावली भाषाक विशेषता होइछ। कोनो भाषाक अर्थ करबाक लेल ओहि भाषाक शब्दावली एवं शैलीक ज्ञान होयब आवश्यक अछि। भाव पल्लवन करबा लेल भाषाक विभिन्न शैलीक प्रयोग करब पड़ैछ

आवश्यक- विवेचनात्मक प्रत्यक्षण होइछ

10.3.2 भाव पल्लवनक विधि

आर उदाहरण देखी ।

कवितापर आधारित ई मौखिक कियाकलाप बनाओल जा सकैत छै

सर्वप्रथम सिखबै छी । एहि सम्बन्धमे विद्यालयकार्यनिक अवधारणा ।

रचनाकारक दृष्टिसँ एकरा समझा कऽ ।

दृष्टिसँ ओकर समझने कऽ सकी छैं से विशेष ध्यानाकर्षित होयत

> बरि आर ए ही रैत. रैत माने यहि चूहा,
> चूहा कोन पदार्थ बोलू, मनमे ई चूहा ।
> कहि भाषा बलें बूझो चूहा थाक मुसरी
> भऽ एकाग्रा:चित्त अहाँ तकना बुधि बिसरी ॥

[illegible] पुनः [illegible] ठक्कि या वाक्यांशमें कथ्यका [illegible] ।

[illegible] एतिये वे 'कथ्य' 'अर्थ' शैलीक प्रयोग छोडल अछि वे संवाद शैलीक ।

[illegible] ।

बोध प्रश्न 1

1) पल्लवनक शाब्दिक अर्थ की अछि ? मुखाक्ष लिखू ।

[illegible]

एहिमर्मे सही कथनक आगाँ (✓) चेन्ह लगाबे ।

i) भाव-पल्लवनक मूलमे संक्षेपक प्रवृत्ति कार्य करैछ ।

[illegible]

iii) भाव-पल्लवनक मूलमे रोचक प्रवृत्ति रहैछ ।

iv) भाव-पल्लवनक मूलमे अलंकारक प्रवृत्ति रहैछ ।

[illegible]

i) भाव पल्लवन संक्षेपणक..... अछि । (विपरीत/ समानार्थी)

[illegible]

अभ्यास 2

[illegible]

व्यावहारिक वैज्ञिकी

१ निम्नलिखित [illegible] के रहन विवक्ष लड़का पुरुष लोहे मे एक के भाव पल्लवन करके ।

[illegible] है एहने कैटेक से चनक शोकमे विशिष्ट पर्यन्त पर जाइछ

परन्तु [illegible]

(I) [illegible]

(II) [illegible]

(III) [illegible]

(IV) [illegible] पंक्तियें पल्लवित करक ।

V) 'जीवक पहुआ लोरेक भाव पल्लवन करू ।

10.4 निबंध लेखन

[illegible]

10.4.1 निबंधक स्वरूप एवं प्रकार

[illegible]

मूलतः निबंधक दो रूपकों मान्यता प्रदान करता गेल अछि :

1) विषय प्रधान या विचारात्मक निबंध ।

2) भाव प्रधान या भावात्मक निबंध अथवा ललित निबंध ।

[illegible]

10.4.2 निबंध-लेखनक विधि

[illegible]

[illegible] अर्थात् केन्द्रीय कथ्य (3) उपसंहार ।

[illegible] सकते हो । ये पुस्तकालयक महत्व निम्नांकित अंश ।

पुस्तकालयक महत्व ।

रूपरेखा

1) भूमिका

2) पुस्तकालयक महत्व

I) ज्ञानवर्द्धनक दृष्टियें

II) शिक्षा, संस्कृति, मर्यादा वा आत्मपरीक्षणक दृष्टियें

III) व्यापारिक दृष्टियें

IV) जीवनक विविध पक्षक दृष्टियें

3) पुस्तकालयक स्वरूप

4) उपसंहार

[illegible] अहाँ एहि चिन्तन-बिंदुक विस्तार सहजहिँ कऽ सकैत छी ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

2) रिक्त स्थानकों भरा-

[illegible] च [illegible] हेतु मातृभाषा [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] संकेत हो ।

- [illegible] रहेछ [illegible] हो

- [illegible] निबंधक तीन भाग हुन्छ– (1) भूमिका (2) मुख्य भाग (3) उपसंहार

- [illegible] विषयवस्तु निबंध लिखि सकेत हो ।

10.6 शब्दार्थसंग

[illegible] : [illegible] गर्नेछ । समासयुक्त अवयवहरू आलंकारिक भाषा झल्काउन जाहिछ ।

क्रमबद्ध : क्रमिक, क्रमपूर्ण, क्रमानुसार ।

उपादेय : उपयोगी, आवश्यक ।

अत्यावश्यक : बेकार कोनो प्रयास वा औचित्य नभि हो

10.7 बोध प्रश्न/ अभ्यासका उत्तर

बोध प्रश्न 1

- [illegible] राख्न, भाव वा विचार मूल अंशको एक तहाइ शब्दमा आबि जाइछ ।

3) I) क्रम को सम्पन्न बनाउन होइछ ।

II) आवश्यक वाक्यहरू कममें कम शब्दमा प्रकट गरिएको जाइछ ।

बोध प्रश्न 2

1) 'पल्लवन'के शब्दिक अर्थ विस्तार विस्तारपूर्वक ।

2) II ✓ (4) IV ✓

(1) विषयवस्तुसंबंधी (2) विस्तारपूर्वक

बोध प्रश्न 3

(1) लघु (2) विस्तार (3) भावात्मक (4) अपने

2) (1) विषय-प्रधान किंवा वैचारिक वा विचारात्मक निबंध ।

(2) भाव प्रधान किंवा भावनात्मक अथवा ललित निबंध ।

अभ्यास 1

1) रहन सहन एवं व्यवहार ।

2) अधिकार पहिले आ कि कर्तव्य ?

3) की मनुष्य समाजिक प्राणी ? पहिले व्यक्ति की समाज ?

4) [illegible]

अभ्यास 2

[illegible]
निम्नलिखित नमूना उत्तरों पर्याप्त लिखने आवश्यक नहीं) ।

[illegible]

1) [illegible]
खाने [illegible] भाजकरी जीवन औरत आकर्षण विषय ।

2) [illegible]
गेहमे खत्का काल आपनहुँ देखक अवधि हुए भऽ बाइट सैक ।

3) [illegible]

- परंच से स्थायी संतोषी आ सयाची अछि, सैह अमर होइछ ।

[illegible]
काहनी बड़ प्रचलित अछि

1) भूमिका

2 साहित्य समाजक दर्पण

) साहित्यकारपर समकालीन समाजक प्रभाव ।

2) साहित्य युगक प्रतिनिधित्व करैछ

3) साहित्यमे यथार्थक प्रतिपादन ।

4 साहित्यक भूमिका समाज सम्पादक परिवर्तनक उदाहरणक रूप

5) राष्ट्रीय एकताक परिप्रेक्ष्यमे साहित्यक प्रदानक ।

6) सामाजिक संदर्भमे साहित्यकारक दायित्व ।

3) सम्पर्क

2) [illegible]

3 [illegible]

4) [illegible]

इकाइ 11 अनुवाद

इकाइक रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अनुवाद शब्दक अर्थ ओ व्याख्या

11.3 अनुवादक प्रक्रिया (1) अर्थग्रहण

1.3.1 शब्दकोश

1.3.2

1.3.3 व्याकरण

1.4 अनुवादक प्रक्रिया (2): संप्रेषण

1.4.1 शब्दक समुपयोजक सिद्धान्त

1.4.2 क्लिष्ट शब्द

1.4.3 वाक्यक समानार्थकताक सिद्धान्त

1.4.4 विचारक समानार्थकताक सिद्धान्त

11.5 अनुवाद करबाक व्यावहारिक ज्ञान

1.5.1 भाषाक प्रकृतिक ज्ञान

1.5.2 शब्दक संपत्ति ज्ञान

1.5.3 भाषा रचना

1.5.4 अनुवाद में विभिन्न शब्द योगक

11.6 सारांश

11.7 बोध प्रश्न / अभ्यासक डहार

11.0 उद्देश्य

[illegible]

- कहि सकब जे अनुवाद की थिक,
- अनुवादक प्रक्रियाक वर्णन कs सकब,
- [illegible]
- [illegible]
- अहाँ स्वयं एहि प्रकारक अनुवाद कार्य कs सकब ।

11.1 प्रस्तावना

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बोध प्रश्न 1

1) अनुवादकका काजमा ? उत्तर पुग्नाकाे लिखि् ।

[illegible] ✓ ।

अशुद्ध कथनक सामने (गलत) चिह्न लगाउ ।

क [illegible]

ख [illegible]

ग) अनुवादकक लेखु दुनु भाषाक ज्ञान अपेक्षित नाेह । (

घ) अनुवाद लेख विषय का पूरा भाषाक ज्ञान अनिवार्य । (

ङ [illegible] ।

अनिवार्य अंग हिक । (समाचार लेखन, अनुवाद, कविता कथा,

4) स्रोत भाषा आ लक्ष्य भाषाक तात्पर्यकेँ स्पष्ट करू ।

11.3 अनुवाद प्रक्रिया (1) अर्थग्रहण

अनुवादक [illegible] भाषाम अनुवाद [illegible] भाषा अनुवाद [illegible]

अनुवाद प्रक्रियाक दुइ प्रमुख चरण [illegible] अर्थग्रहण करैत छथि । अनुवादक [illegible] पाठक [illegible] हेतु [illegible] लक्ष्य [illegible]

[illegible] किछुआ भरपेमा कहल्याक अधिकारमे वंचित रहैछ ।

11.3.1 शब्दकोष

[illegible]

[illegible] 'बसबाक पसन्नति' लिखित अछि ।

[illegible]

His treatment of the subject is unrivalled .

Their treatment of their guest is commendable

[illegible]

11.3.2 वाक्यकोष

[illegible]

[illegible] हो तो अनुवाद करना असम्भव होता है। शब्दों के स्थान पर वाक्य लेकर अनुवाद करने से अनुवाद में सरलता आती है। अनुवादक को मूल लेखक के भावों को समझने की आवश्यकता होती है। सरल तथा स्वाभाविक अनुवाद तभी हो सकता है जब अनुवादक को मूल भाषा तथा लक्ष्य भाषा दोनों के वाक्यों की संरचना और प्रकृति का भली-भाँति ज्ञान हो। वाक्यगत दोष रहित अनुवाद संभव होता है।

11.3.3 रचनाबोध

किसी शब्द के स्पष्ट अर्थ जानने अथवा सुन्दर अनुवाद करने के लिए शब्द-समूह के [illegible] का ज्ञान होना आवश्यक है। शब्दों के अर्थ में वाक्य के [illegible] के कारण परिवर्तन होता है। किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द का अर्थ उस वाक्य के [illegible] पर निर्भर करता है। इसलिए वाक्य में शब्दों के [illegible] को जानना आवश्यक है। इसी को रचनाबोध कहते हैं। [illegible] के लिए [illegible] के [illegible] का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके बिना अनुवाद में [illegible] आ सकती है। अनुवाद करते समय [illegible] का ध्यान रखना आवश्यक है। इसलिए विषय के समुचित ज्ञान के साथ रचनाबोध होना परमावश्यक है।

[illegible] के लिए आवश्यक पाँच प्रक्रिया- [illegible] करते समय आपको कौन-कौन से तथ्य जानने

1) शब्दों के समूह का ज्ञान

2) शब्दसमूह के [illegible] जिसमें वाक्यों के [illegible] का [illegible]

3) रचना और विषय का ठीक-ठीक ज्ञान।

अनुवाद में [illegible] एक दोनों में [illegible] अनुवादक को [illegible] विषय के [illegible] को [illegible] और शुद्ध रूपों में [illegible] करना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित में कौन सा 'अनुवाद' सही अनुवाद है? (सही के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए)

क) [illegible]

ख) [illegible]

ग) [illegible]

घ) [illegible]

ङ) अनुवाद करने में पूर्व अनुवादकर्ता को [illegible] का [illegible] चाहिए। [illegible] दीजिए।

[illegible]

11.4 अनुवादक प्रक्रिया (2) समीक्षा

[illegible]

[illegible]

भाषा में तालव ।

11.4.1 शब्दक समतुल्यताक सिद्धान्त

[illegible]

ठीक ठीक ज्ञान अनुवादकक हेतु आवश्यक अछि ।

[illegible]

'The killings of innocent people in Punjab must be condemned'

विशेषण भी हमेशा अपने शब्दकोश अनुवाद सहज उपलब्ध करवाता है।

11.4.2 श्लिष्ट शब्द

11.4.3 वाक्यक समानार्थकताक सिद्धान्त

मुद्रा हुएउ किन्तु विस्तारमे जेबाक प्रयोजन अछि ।

अनुवादक लेल प्रकाश-स्तम्भ होएब ।

किछु जानपै :

गेल अछि, से सहजहि आगाँ ऐछि सकैत छी ।

[illegible] प्रकाशित समाचार [illegible] Reforming to Prime Minister Shri Jawahar Lal [illegible] egarding kidnapped woman Smt said एकदर अनुवाद समाचारपत्रमें के प्रकाशित पैसे से एवा छल-

[illegible]

11.4.4 रचनात्मक समानार्थकताका सिद्धान्त

[illegible]

[illegible]

बोध प्रश्न 3

1) [illegible]

II) निम्नलिखित विकल्पोंमें दिये वाक्योंमें अक-

[illegible] (उदाहरण)

I [illegible]

[illegible]

क) पंजाबमें सिक्खोंद्वारा हत्याके निराकरण मांगवाक चाही ।

ख) पंजाबमें सिक्ख लोकक हत्याकेँ खत्म करै लेवाक चाही ।

[illegible]

घ) पंजाबमें सिक्ख लोकक हत्याक निराकरण करबाक चाही । ( )

III [illegible]

I shall go with you to the meeting if you come in time.

क [illegible]

ख [illegible]

[illegible]

घ [illegible]

11.5 अनुवाद करबाक व्यावहारिक ज्ञान

[illegible] अनुवाद नहि कयल जा सकैछ ।

11.5.1 भाषाक प्रकृतिजन्य ज्ञान

[illegible] एतऽ अंग्रेजी भाषाक दुइ गोट वाक्य उद्धृत अछि-

i) I wonder if this is true.

ii) I have two sons.

एहन होयत

ii) हमरा आश्चर्य होयत जौं ई सत्य अछि ।

iii) हमरा लग ई पुस्त अछि ।

If लाक्ष अर्थात् से जकर कोन प्रयोग [illegible] होयत 'हमरा एकर सत्यतामे संदेह अछि ।'

अंग्रेजक दोस्त प्रयोग have नामक [illegible] होयत 'I have a pen' मतलब जे एक कलम अछि I have to go हमर अर्थ अछि I [illegible] होयत 'I have no idea' हमरा कोनो [illegible] अछि ।' ई अनुवाद याचक प्रकृतिक अनुकूल अछि ।

अभ्यास 1

[illegible]

क) I doubt if he will come

ख) We wonder if he accept this.

ग) I doubt if Ram will be going

घ) I am not sure if you can do this.

ङ) I do not think if this is a good book.

अभ्यास 2

आह, अब have लागल किछु वाक्यक अनुवाद करी--

क) I have three daughters.

ख) I have lost my pen.

ग) I have no idea.

घ) I have passed B A. Examination.

ङ) I have a headache

च) I have fever

छ) I have a pen

ज) I have pain in my neck

11.5.2 शब्दक उचित प्रयोग

[illegible] कोनो शब्दक [illegible] प्रयोग [illegible] चाही । कोनो शब्दकेँ [illegible] शब्दक [illegible] भाषा आन विषयक [illegible] कोनो [illegible] शब्दक [illegible] कारण [illegible] (Operation) [illegible] अछि । [illegible]

i) 'The operation done by Doctor is successful

ii) 'The police operation in that area was a failure.

अनुवाद

i) डाक्टरकेँ "शल्य-क्रिया"मे सफलता भेटलनि ।

ii) एहि क्षेत्रमे पुलिसक 'कामयाब' असफल रहल ।

[illegible] एकर प्रयोग करबाक चाही ।

[illegible] आर देल जा रहल अछि—

अभ्यास 3

क) 'Treatment' of patient by doctor was not satisfactory

ख) 'Treatment' of subject by scholar was not satisfactory.

ग) Interest' rate of bank is very high

घ) He has no interest' in sports.

ङ) His main aim' is to be an I.A.S. Officer

च [illegible]

1) Treatment [illegible]

2) Interest अधिकार, लाभ, स्वार्थ, रुचि, सूद, ब्याज ।

3) High ऊँच, बेसी ।

4) Aim लक्ष्य, निशाना लगायब ।

5) Accurate– ठीक, अचूक

11.5.3 वाक्य रचना

[illegible]

[illegible]

एकटा बानगी इटालिक

[illegible]

अनुवाद

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ध्यानै [illegible]

[illegible]

क [illegible]

wealth' of the local rulers, noble Zamindars

कठिन शब्दांचे अर्थ

1) Monopoly- एकाधिकार

2) Rapidly- शीघ्रतापूर्वक

3) Beyond the imaginarian- कल्पनातीत

4) Acquired direct control- प्रत्यक्ष अधिकार प्राप्त करून घेतले होते

5) State revenues- राज्यकर

6) Grab- हडपणे

7) Accumulated wealth-एकत्र धन

11.5.4 अनुवादाचे विविध क्षेत्रांतील योगदान

करता येते.

विज्ञान आणि समाज विज्ञान

आहे.

पारिभाषिक शब्दांचे पर्यायांमुळे तेवढे सर्वच अर्थच्छटांचे अचूकपणे

) अन्तरराष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावलीक प्रयास ।

) सैद्धान्तिक पारिभाषिक शब्दक निरूपण तथा अकर प्रचलनद प्रयोजन

) अन्तरराष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावलीक वैशिष्ट्यीकरण ।

विज्ञान आ समाज विज्ञानमे सम्बन्धित कयकार आधारभूत सिद्धान्तिक ग्रन्थमे रहि कयल आ सकैत अछि पुन एहि लेल अलग-अलग विषय हेतु अपन-अपन पारिभाषिक शब्दक ज्ञान क

साहित्यिक अनुवाद

कोनो भाषाक साहित्यकेँ आन भाषामे अनुवाद कयबाक एकटा परिपाटी चलि अबैत अछि आ अनुवाद-प्रक्रियामे अनुवादकक दायित्व आ अनुवादकक क्षमताक अपन-अपन महत्त्व रहैत अछि अनुवादक मूल लेखकक भाव विचार आ भाषाकेँ पूर्ण प्रकारेँ हृदयङ्गम करैत मूल रचनाक प्रवाह एवं प्रभाव अक्षुण्ण बनल रहय आ अनुवाद कृत्रिम नहि लगैक एकरा संग-संग भाषाक प्रति हमर अनुवादक पूर्ण एकटा अतिरिक्त पुल रचनाक प्रवृत्ति आ प्रासङ्गिक मोह-लगाव सेहो अनुवादककेँ दायित्वक भीरी आनि दैत छैक एकर अतिरिक्त अनुवादक एक साहित्यिक कर्तव्य बुझैत लक्ष्यित आ कहबी भीरेँ अन्य भाषाक प्रवाह कोनो अंशमे अक्षुण्ण रहय भाषाक लोकोक्ति आ मुहावरा यदि प्रकारेँ समाप्त करैत ई अनुवाद भाषाक अभिवृद्धिमे सहायक होइत बानगी द्रष्टव्य

[illegible]

अनुवाद :

एक क्षणक लेल हिमालयक शान्त एवं गम्भीर वातावरण रहैत अछि एक दिस जा एहि पृथ्वी एक गोट नैसर्गिक लोक अछि जे मनुष्यक लेल अछि आ दोसर दिस ओ लोक जे मनुष्यक लेल नहि अछि आ जकरा देखि मनुष्य भयभीत भऽ जाइत अछि आ जकर वर्णन करैत लोककेँ सम्बोधित करैत कहल गेल अछि जे मनुष्यक लेल ई लोक नहि अछि पार्वती मनमाधव बनाओल गेल छल ।

एहि अनुवादमे कतहु अनुवाद करब ई शब्द प्रयोग कयल गेल अछि मैथिलीमे भाषा शब्द कहल गेल अछि अंग्रेजीक लोकोक्ति अछि Proof of the pudding is in the eating मैथिलीमे एकर समानान्तर शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि 'खाधमे' ।

एहि लेल ई लोकोक्ति pudding के अर्थात् भोजनकेँ खाबय पूर्व कयल गेल अछि ई जहाँ pudding के आस्वादक लेल अछि तँ ओकर खयबाक समय लक्ष्य जेना प्रतिष्ठा करब वचन दब आदि एहिठाम काजक अछि एहि अर्थमे काजसँ सम्बन्धित रहबाक कारण ई एकटा भिन्न लोकोक्ति भेल करैत अछि आ एकर अनुवाद एहि रूपमे भऽ सकैत अछि जे काजसँ प्रमाणित करब ई अर्थ आवश्यक परिवेशमे मैथिलीक लोकोक्ति प्रकृति आ प्रकृतिक संदर्भक अनुकूल अछि ।

[illegible]

अभ्यास 5

मैथिलीमे अनुवाद करू–

There was a beautiful girl. He was [illegible] a place. It was [illegible] was [illegible] and was [illegible] any other word.

The mother-in-law on seeing him said. 'Are you all right ?'

The fool said 'yes

She asked 'Is my daughter well ?'

The fool said: No

Is she suffering from fever ? The mother-in-law asked

Yes said the fool

Is she not well now ? asked the mother in law

[illegible]

उत्तर अनुवाद

[illegible] व्यावहारिक प्रस्तुतिक कोना अर्थक अनर्थ भऽ गेल ।

[illegible]

[illegible] अर्थक प्रयोग करैत अनुवाद करैत अछि ।

आगमी :

[illegible] stan in the near future

[illegible] सम्भावना कऽ देलनि ।

[illegible]

Government and seek constructive assistance from them. एही संदर्भमे एक प्रयास अहुँ करू—

अभ्यास : 6

India has urged the United States to reconsider and grant Palestine Liberation Organisation PLO chief Yasser Arafat a visa to enable him to attend the U N General Assembly's Debate on Palestine

कठिन शब्दक अर्थ

1. अनुरोध/ आग्रह 2. संयुक्त राज्य अमेरिका 3. पुनर्विचार
4. फिलस्तीने मुक्ति संगठन 5. संयुक्त राष्ट्रक आमसभा ।

11.6 सारांश

- [illegible] अनुवादक दुइ प्रकारक होइत छथि । एकटा 'अर्थग्रहण' आ दोसर 'अभिव्यक्ति' । अनुवादक दुनू प्रकारक कार्यक प्रयत्न करैत छथि । अनुवादक कोन काल शब्दक प्रयोग कयलनि आ स्रोतभाषाक विशेषताक ध्यान रखलनि अछि अर्थ ग्रहणक क्षेत्रमे अनुवादकक सम्बन्धमे विशेष महत्व होइत छैक । 'अभिव्यक्ति' अनुवादक दोसर आ अंतिम प्रक्रिया थिक । एतय अनुवादकक लक्ष्य भाषाक शब्दावली आ वाक्यसंरचनाक ध्यानमे राखब आवश्यक होइत छैक । दुनू प्रकारक अनुवादमे 'अभिव्यक्ति'क सम्बन्धमे पर्याप्त [illegible] अनुवादक कुशल अछि एहि तथ्यक मूल्यांकन करा सकैत छी ।

- एकटी रेडियो वार्ता अर्थात् जे कोन अनुवादक हेतु अहींक सुविधा लेल एक सूत्र यात दन [illegible] एकटा भाषामे अर्थात् अपन मातृभाषा आ महत्वपूर्ण अनुवाद करय लेल अहाँ सम्पन्न करब चाही । अनुवादक सैद्धान्तिक ज्ञानक अतिरिक्त अहाँमे अनुवाद 'कला' सिखबाहुँ आवश्यक अनुवादक व्यावहारिक आदतसँ परिचित भयहुँ अत अहींकेँ एहि इकाइक माध्यम अनुवादक एक समग्र चित्रक संकेत एक गाइड निश्चित दृष्टिया प्राप्त भ [illegible] अहाँमे अहाँ सफल अनुवाद करा सकैत छी

11.7 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न 1

एक भाषामे व्यक्त भेल अे विचारकेँ दोसर भाषामे यथावत उपस्थित करब अनुवाद थिक

i) क) (गलत), ख (सही), ग (गलत), घ (सही)

ii) अनुवाद

iii) जहि मूल भाषकेँ अनुवाद करबाक अछि आकरा स्रोत भाषा आ जाहिमे अनूदित हएब आकरा लक्ष्य भाषा कहल जाइत अछि ।

बोध प्रश्न-2

i) (ख

ii) अनुवादकार्य केर अनुवादकर्मी ई अपेक्षा रहैत अछि जे ओ मूल भाषा अथवा स्रोत भाषामे निहित विचारकेँ ठीक ठीक ग्रहण करथि ।

बोध प्रश्न 3

एक शब्दक स्थानपर आनि अधिक अथवा आनिसँ विस्तारथ अथवा लगय शब्दक प्रयोग कए (शब्दक विस्तार करबेर अछि अनुवाद कर्ता कोन कोन अन्य भाषाक शब्दक स्थानपर लक्ष्य भाषामे आनि शब्दकेँ ग्रहण करबाक पड़त शब्द स्वीकृत अछि ।

i) उदाहरण

ii) देखू 1.4.1

iii) देखू 1.4.3

अभ्यासक उत्तर

अभ्यास 1

क) हमरा हुनक अवस्थामे संदेह अछि ।

ख) हमरा संदेह अछि जे ओ एकरा स्वीकार करता ।

ग) हमरा हमरा अवस्थामे संदेह अछि ।

घ) हमरा संदेह अछि जे अहाँ ई काज कए सकैत छी ।

ङ) ई पोथी नीक अछि. तेकर हमरा संदेह अछि ।

अभ्यास 2

क) हमरा तीन टा बेटी अछि ।

ख) हम अपन लेखनी पाछिए देलहुँ ।

ग) हमरा किछु नहि बुझल अछि ।

घ) हम बी. ए.क परीक्षामे उत्तीर्ण भेलहुँ ।

ङ) हमरा माथमे दर्द अछि । (हमर माथ दुखाइत अछि)

च) हमरा ज्वर अछि ।

छ) हमरा दर्द अछि ।

ज) हमर गर्दनि दुखाइत अछि ।

अभ्यास-3

क) डाक्टर कानीकेरणाक संतोषजनक चिकित्सा नहि कयलनि ।

ख) विद्वान संतोषजनक रीतिएँ प्रतिपादन नहि कयलनि ।

ग) बैंकक 'सूद-दर' बेसी अछि ।

घ) क्रीड़ामे रुचि नहि अछि ।

ङ) आइ.ए.एस. अधिकारी बनब ओकर मुख्य लक्ष्य अछि ।

च) [illegible]

अभ्यास 4

क) [illegible]

ख) [illegible]

अभ्यास 5

[illegible]

सासु ओकरा देखितहि पुछलनि 'ई हसन अछि ?'

मूर्ख उत्तर देलक– 'ई' ।

ओ फेर पुछलनि– 'तहर बेटी कुशल अछि ?'

मूर्ख बाजल– 'नहि'।

की ओकरा ज्वर छैक ? –सासु पुछलनि ।

'ई' मूर्ख उत्तर देलक ।

'की ओ एखनहुँ स्वस्थ नहि अछि ?' –सासु पुछलनि ।

' नहि' –मूर्ख बाजल ।

'की ओ मरि गेलि ?' ओ पुछलनि ।

' ई' मूर्ख कहलक ।

ई सुनितहि ओकर सासु भोकारि पाड़ि कानऽ लागलि ।

अभ्यास-6

भारत सदृश्य राष्ट्र [illegible] आमसभामे फिलीपीनपर संभावित बहस्मा संघिनित भऽ सकथि ।

इकाइ 12 संवाद शैली

इकाइक रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 वाक्य तथा वार्तालापक विशेषता

12.2.1 वाक्य

12.2.2 वाक्यक घटक

12.2.3 अनुतान

12.2.4 सम्पर्कक उद्देश्य

12.2.5 वाक्यक रूपक स्तर

12.3 वार्तालापक मूल घटक

12.4 वार्तालापक चर्च चर्चा

12.5 सारांश

12.6 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

12.0 उद्देश्य

[illegible] पाठ्यक्रमक परिधि [illegible] इकाइमे अहाँ अनुवादक [illegible] सहायतासँ अहाँकेँ मैथिली वाक्यक तथा वार्तालापक [illegible] विशेषता बुझि सकब। एहि इकाइक अध्ययनक उपरान्त अहाँ [illegible]

- लिखित भाषा आ मौखिक भाषाक अंतरकेँ जानि सकब,
- मैथिली भाषाक वाक्यक विशेषताकेँ बुझि सकब,
- मैथिली भाषामे वार्तालाप लिखि सकब,
- वार्तालापक मूलतः विशेषताकेँ बुझा सकब।

12.1 प्रस्तावना

[illegible] मुख्यतः दूटा भाषा मैथिली [illegible] भाषाक [illegible] लिखित रूप [illegible] । एहि इकाइमे हम [illegible] मैथिली भाषाक [illegible] । एहि वाक्य [illegible] मौखिक रूपमे [illegible] रूपक भाषाक [illegible] । एहि वाक्य [illegible] ।

एकटा [illegible] वार्तालाप [illegible] ।

किन्तु संवादक भाषा वस्तुत अनेक अर्थमे बहुत अछि। एक कथन अहाँ सहित दोसर से एहिमे सहजता रहैत अछि एवं अपने पक्षमे तर्क अहाँकेँ सहजहि स्वीकार्य लगैत अछि। एतऽ हम अपने संवाद शैलीक विभिन्न रूपक उदाहरण प्रस्तुत कऽ रहल छी। भाषाक शब्द अथवा वाक्यक अपन भाषाक मे सभक अलग अलग विशेषता होइत अछि जे आंकरा 'कोहेसिविसस' कहल जाइत अछि।

12.2 वाक्य तथा वार्तालापक विशेषता

आब अहाँ स्वयम् सं संवादक विचार करी एवं दोसर से अपन व्यवहारिक संवाद करैत छी से बोली एवं भाषा

12.2.1 वाक्य

भाषामे वाक्यक महत्व एक विचारक अनेक हेतु अछि। एक वाक्यमे अनेक शब्दक विभिन्नता एक विशेष अर्थ स्पष्ट होइत अछि। अत एहि पुस्तकमे हम वाक्य कोन

एहि बातकेँ अनुभव कऽ विचार करब आवश्यक अछि।

भाषा वैज्ञानिक अनेक शब्दमे वाक्यक अपन अपन परिभाषा प्रस्तुत कयने छथि। एक शब्द वाक्यक रूपमे अपन स्वतन्त्र अर्थ रखैत अछि। अनेक शब्दक एक अर्थपूर्ण समूह वाक्य कहबैत अछि। वाक्यमे कर्ता, कर्म, क्रिया आदि रह

I) अकर्मक वाक्य : मनोज सुतलाह ।
कर्ता क्रिया

II) सकर्मक वाक्य : श्याम पढ़ि रहल अछि ।
कर्ता कर्म क्रिया

III) गंतव्यसूचक वाक्य : मीरा कार्यालय गेलीह ।
कर्ता गंतव्य क्रिया

IV) द्विकर्मक वाक्य :
हम ओकरा चेटी देलिऐक ।
कर्ता प्राप्तकर्ता कर्म क्रिया

V) पूरक वाक्य :
हमरा ज्वर अछि ।
कर्ता पूरक क्रिया

VI) कर्मपूरक वाक्य
हम [illegible]
कर्ता कर्म [illegible]

[illegible] संकेत [illegible] ।

[illegible] लिखू ऐच्छिक वाक्यांशक उल्लेख कऽ रहल छी :

ऐच्छिक वाक्यांश

- स्थान वाचक घरमे, खिड़कीपर, टोटपर ।
- समय वाचक बेलपहर ठीक तीन बजे ।
- कारण वाचक कुसतरिमे ।
- प्रयोजन वाचक रामजीसँ भेंट ।

[illegible] ऐच्छिक वाक्यांश [illegible] ।

वाक्यक्रम

[illegible] ।

I) काल्हि साँझमे हम मैथिली नाटक देखलहुँ ।

II) हम कालुक साँझमे मैथिली नाटक देखलहुँ ।

III) काल्हिए हम साँझमे मैथिली नाटक देखलहुँ ।

[illegible] एक अवधारणा एक भाषामे कैटा लिखित वाक्यक रूप होइछ आ दोसर मौखिक घटक एकरा सभसँ स्वतंत्र रूपमे अबैछ अछि ।

एक अवधारणा एक भाषामे कैटा लिखित वाक्यक रूप होइछ आ दोसर मौखिक घटक एकरा सभसँ स्वतंत्र रूपमे अबैछ अछि । [illegible] हम देखलहुँ' लिखित रूपमे भा क्रियापद नहि पाबि वक्तामे वाक्यांशक विषयमे तेहन अनुमान करब उचितक प्रयोजन भेल अछि ।

वाक्यांश किछु व्याकरणिक संबंध मात्र रहैत अछि आ [illegible] वाक्यांशमे कर्ता कतहु कतहु कर्मक [illegible] [illegible] [illegible]

अभ्यास 2

निम्नलिखित वाक्यकेँ विश्लेषित करैत ई कहू जे ई कोन रूपक वाक्यक प्रकारे अछि ?
उदाहरणार्थ

हम	रघुवरकेँ	आम	पठबैत छी । (द्विकर्मक वाक्य) ।
कर्त्ता	प्राप्तकर्त्ता	कर्म	क्रिया

1) खलमे बकरी घास चरि रहल अछि ।

2) भोगपुरा धरमे पाठशाला गेल ।

[illegible]

4) लोकनाथ दस दिनसँ कलकत्तामे बीमार छै ।

5) बौआ दूध पीबिकऽ सुति रहल ।

12.2.2 वाक्यमे पदक्रम

[illegible] अनुसार परिवर्तनो करबामे आ सकैत अछि । जेना

सामान्य पदक्रम– कर्ता, क्रियासँ अपन बकिऔता ।

परिवर्तित पदक्रम– अपन बकिऔता क्रियासँ ।

[illegible] 'अग्रगामिता' कहल जाइत अछि ।

उदाहरण :

[illegible]

[illegible]

क) अहाँ रामूकेँ कतेक टाका दोसरनि ?

ख) पाँच ।

[illegible] कर्त्ता अथवा कर्मकेँ क्रियाक पूर्व राखि अन्य पदक्रम सेहो राखल जा सकैत अछि । जेना

"काल्हि हम इमर बही नहि दऽ सकलौं हेँ ....

"हम चलि हेँ देब मुदा ....'

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] अधिकार [illegible] चेष्टा करेंगे अधिक ।

12.2.4 सम्प्रेषणक उद्देश्य

[illegible] इस वाचक क्रमकें अर्थों बहरैत छी ।

[illegible] समाधित झाँपल अर्थक चिन्ह

क) बापदा रसगुल्ला की पड़ सलेक ?

[illegible]

12.2.5 वाक्यर्सं ऊपरक स्तर

[illegible] रहल छलैक, मुदा हम नहि जा सकैत छलहुँ ।'

[illegible]

'बाबा सऽ रहल सलैक हे' हम नहि जा सकैत छलहुँ ।'

[illegible]

बोध प्रश्न- 2

निम्नलिखित प्रश्नक संक्षिप्त उत्तर दियऽ ।

[illegible]

अनुच्छेदमा प्रयोग भएका मुहावरा छानी वाक्य बनाउनुहोस् ।

एउटा कोठा कागज र पेन्सिल आफ्नो कलम भएको व्यक्तिको अतिरिक्त कोन कोन क्रियाका प्रयोग कहाँ छ ?

4 पूर्वमा फकरा फाल्न ?

विराम चिह्न

वाक्यका बीच वा अन्त्यमा अर्थ स्पष्ट पार्नका लागि प्रयोग गरिने चिह्नहरूलाई विराम चिह्न भनिन्छ । यसलाई अंग्रेजीमा Punctuation भनिन्छ । यसको प्रयोग कहिले गर्ने भन्ने बारेमा विद्वानहरूमा मतभेद रहेको पाइन्छ ।

क) अल्पविराम

कागज, कलम, पेन्सिल, मसी, दवात, किताब, कापी, झोला, डस्टर, ब्याग, पुस्तक, पेन्सिल बक्स, रबर, सिसाकलम, मार्कर, कम्पास, बोर्ड, चक, मेचो, टेबल, कुर्सी, बेन्च, डेस्क, घडी, भित्ता, झ्याल, ढोका, छानो, भुइँ, पर्दा, बत्ती, पंखा, ट्युबलाइट, बल्ब, स्विच, बोर्ड, चक, डस्टर, मेचो, टेबल, कुर्सी, बेन्च, डेस्क, घडी, भित्ता, झ्याल, ढोका, छानो, भुइँ, पर्दा, बत्ती, पंखा, ट्युबलाइट, बल्ब, स्विच

3) एहिना संयोजक बाद । जेना– सबु, कनेक एम्हर आउ तँ ।

4 कोनो चरित्रक दहसत 'कें' प्रत्यय [illegible] क प्रयोग [illegible] क अलगसँ क्लासिकऽ परिश्रम करू ।

5 जे वाक्यक बंधन [illegible] प्रयोग हुअए ओहि [illegible] चाही ।

एकर बाद हम [illegible] संग हंसबाक [illegible] हम आँठो फेकब

ख) अर्थविराम Semi [illegible] अर्थक [illegible] अपेक्षा होअय ओतय अर्धविराम [illegible]

एहि वाक्य मे [illegible] नैतिकताक विकास कोना कयल जाय ?'

ग) उपविराम Colon [illegible] आगाँ [illegible] ओ [illegible] पहिने [illegible] महाकाव्य : अध्ययन अनुशीलन,

सिंघला : भारतक मुकुट ।

घ पूर्णविराम Full [illegible] पूर्णविराम [illegible] प्रयोग [illegible] करब ओ [illegible] अछि ।

ङ , प्रश्नवाचक Interrogation [illegible] बहू गेला की ?

च) विस्मयादिबोधक Exclamation [illegible] आरे वाह ! वाह ! कि. कि. !

छ) संयोजक चिह्न Hyphen [illegible] (अल्प यतिक) [illegible] संयोजक चिह्नक [illegible]

अभ्यास 3

एहि किछु वाक्य लिखू आरु चिह्नित [illegible] लगबऽ एहि वाक्यकेँ पूरा करू ।

क) की नौ दिनाकरबी की हालचाल

ख) जेहन जहिं एहि बेर अबैत तेहन कहियो से आबय

ग) आतङ कहियो काल पाथ्यो खसै छै

घ) एह कतक नीक शब्दकोश अछि

ङ) वसंत ऋतित फूलसभ फुलाय लगैत छथि पक्षी कलरव मनमा चुसि दैत अ

गुनगुनाय लगैत अछि मनुष्य वसलक समय फोनाय लगैत अछि

च) मिथिला एक सांस्कृतिक भूमि मिक

छ) राधा-विरह महाकाव्य अध्ययन विश्लेषण

ज) आ काज करैत काल खेलाइ घिनाइ समटा बिसरी जाइत अछि

12.3 वार्तालापक मूल पाठ

अहाँकेँ आब हम 'मात्राक तैयारी' विषयक वार्तालाप प्रस्तुत क. रहल छी पहिने अहाँकेँ देखबाक अछि जे वार्तालापक क्रमम (वार्तालापक केना वाचक पाचक प्रयोग होइत अछि तथा लिखित पाचक रूप संवादक पाचारी कोना भिन्न होइत अछि

(मल्लिकजी भोजनपर बैसल छथि । भोजन कऽ छथि आ परिवारक आन सदस्यमे गपो कऽ रहल छथि ।)

मल्लिकजी सुनै छी अगिला हाटमे हमरा बास लिअक सुतरी अछि मगबै तँ ओ कनहु पाबापर आइ ।

पत्नी एहन हेन पाहुन पहिने एहन बाते सुनलहुँ अछि छोटू, मखोला बेर भर तक करैत रहब । यो अकालपुरुषक पाहुन छी, अहाँ मन कमोआ क पालनहिट मे चालू थकि छुटटीमे ।

छोटू अवश्य अवश्य करब सर्वतोभद्र पालन पत्नी खलकक होअय मे चालू रामेश्वरम ।

मल्लिकजी पापा खलकक हो पत्नी तँ कालुपालटू गाम, बाँकी तँ जयपुर चालू । कतेक्ति बड़ सुन्दर शहर छै ।

छोटू पापा हँ छौंड़ी पहिना किछु कहि देलक अछि । पापाक दुनियाँ मधुबनी मोक रामेश्वरम ।

पत्नी : भेलै । बाप पहिने तैयार होयुन तखन ने ।

मल्लिकजी एतेक घोषणा करबाक करब करब छोटू, अहाँ दामोदर अङ्कलेँ पता लगा आ कोन कोन स्थान देखबाक अछि आ बाकस कऽ कऽ करना ले

(छोटू दामोदर बाबूसँ भेट करैत छथि)

दामोदर : की हौ छोटू, कोनो काज की ?

छोटू काका । पापाकेँ छुट्टी छनि हनुमानजक दिन अछि । अहि दुनियाँ कतौ घुमबा जाब । कोनो दर्शनीय स्थान छऽ कहू ?

दामोदर देखहु लहेरिया सराय में शिवजक मन्दिरक सामनेमे पुस्तकालय कऽ योगेन्द्र आदि बहुतो दर्शनीय स्थान छै भुवा सँ जाय करब चालित छऽ ।

छोटू हमरा सँ गुरुजनक्रम जगदाक सम्बन्ध अभिलाषा अछि मुदा 'अट कोना कौ छै, से बुझबाक अछि ।

दामोदर ठीक छै हे, सब स्थानक वर्णन पा करबाक' हम नेने पेन्सिल आन आ सम्भवित एकरा देखिकऽ जऽ चाहै जा सकैत छै ।

(छोटे लखना आ छटपटाई लड़का अबैत अछि)

मनीषा : माँ, माँ, भैया आबि गेला । अबै, पहिने लक्सा देखब जरूरी छौ ।

पत्नी [illegible] हुनू पहिने मुँह चाह कऽ [illegible] जे काम सेहो हेतै से ।

मल्लिकजी उएह दै छनू आ [illegible] रिक्शा में एखन न चलै [illegible] में एक पन्द्रहिया रिक्शा पऽ गेली तखने घुमबाक आनन्द लेब कि से ।

पत्नी [illegible] हूँ सैर न करै छी [illegible] अहिंके काजक पाछू किछु पाय रहै । फेर एकमिसानक बात ?

मनीषा [illegible] अहाँ कऽले एलाक [illegible] बनत से काजा ? काजो बिगड़ पाछू पड़ैए अछा ।

छोटू [illegible] से पचा । ओहि डर सँ सँगे मल्ल [illegible] चाह जलऽ चला जयब करब

प. पत्नी : पचाकें 'टेन्शन' नहि दहू ।

मनीषा : माँ, पच्च बहका लाक छगिन, आने छैटमैन ।

मल्लिकजी [illegible] दिअना ने [illegible] कऽ माँ [illegible] [illegible] अछि जैत [illegible] [illegible] कच्चम खाइ गऽ

प. पत्नी पच्चा हुनका [illegible] आब हमर कथी खाइले [illegible] रहै माँ दुनू

मल्लिकजी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हरखित मैं बाबो गीत ।

मनीषा आ छोटू दुनू [illegible]

12.4 वार्तालापपर चर्चा-चर्चा

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

कालनी काल अनुसार बदलल्यासँ वाक्यक पदक्रममे कोनो परिवर्तन भऽ जाइत छैक अभिप्राय ई जे अनुसार बदलल्यासँ किछु शब्द वाक्यमे पूर्वि बढ़ल अछि आ किछु जाइत जाइत अछि अथवा वाक्यक रूप जे अनुसार हुबा कालो आश्रय अनुरूप अभिव्यक्ति आ छौंझ सदृश मनोभावकेँ व्यक्त करबा लेल अछि बजबाक क्रममे उक्त चढ़ल्यासँ शब्दकेँ उच्चस्वर आ मध्यिम लयसँ अपन मनोभावकेँ व्यक्त करबा लेल अछि ।

बलाघात वार्तालापमे बलाघातक बड़ महत्व होइत अछि । वाचक क्रममे हम अहाँ वाक्यमे अथवा शब्दोमे कोनो ने कोनो बल दैत छी किछु विशेष शब्दपर बल दैत छी एकर कारण अछि जे हम जहि शब्दपर बल दैत छी तकरा द्वारा हम ओ सूचना दैत छी जे उदाहरण लेल वार्तालापक निम्न संवाद देखू–

छोटू एम्मा रामेश्वरम कतू ने हम पढ़ने छी जे रामेश्वरम तीर्थस्थानमे सभसँ महत्वपूर्ण स्थान अछि

मनीषा ई कोन महत्वपूर्ण स्थान थीक ? एतेक पैघ यात्रा करब जाहिमे नीक जे कतेमाहू कतू । एतुनेक सभसँ नीक स्थान ।

एतऽमे स्पष्ट अछि जे सभसँ महत्वपूर्ण स्थान पर बल देल गेल अछि जाहिना ई कोन महत्वपूर्ण स्थान थीक' जाहिपर बल पड़ैत अछि ।

[illegible] वार्तालापमे एक सूचना अथवा कथनकेँ अन्य विशेष बातक महत्व देबा लेल शब्दपर आ वाक्यपर बल देल जाइत अछि ।

अभ्यास 4

निम्नांकित वाक्यमे अनुच्छेदमे कोन वाचक मनोभाव व्यक्त होइत अछि ?

1) छोटू, की क्यातः चल जायत । ( )

2) धात ! खूब कहलहुँ अहाँ । ( )

3) माँ, इहसभी देखऽ कतू ने । ( )

4) तोँही सभटा चॉकलेट खा गेलही । ( )

5) तोँ सभटा चॉकलेट खा गेलही । ( )

6) तोँ सभटा चॉकलेट खा गेलही ? ( )

अभ्यास 5

निम्नलिखित मनोभावकेँ व्यक्त करबालेल एक एक वाक्य बनाउ उपर लिखबामे पहिने अभ्यास 4 केँ ध्यानपूर्वक पढ़ि लेलासँ उत्तर लिखबामे सुविधा होयत

1) (आश्चर्य) ...

2) (आश्चर्य आ प्रसन्नता) ....

3) (सामान्य सूचना) .....

4) क्रोध .....

5) अनुरोध .....

कोडमिक्सिंग :

[illegible] [illegible] [illegible] [

अभ्यास 6

मोहन की हो ! चलै छह नै ?

मोहन

मुरारी शिवरात्रिमे बाबा कुशेश्वरक दर्शन करऽ ?

मोहन

मोहन नहि भेबऽ हँ यात्रामे घटरगमती करैत रहऽ ।

मोहन

मुरारी हमहूँ हँ बरक काजे आसल छलहुँ ।

मोहन

मोहन से पैसऽ दैत छी

मोहन

मोहन धनी ने भाइ, सब किनो रहब हँ मगा आनि लेबै ।

मुरारी

मोहन

मुरारी आब कोन बातक छी ?

मोहन

मोहन

मोहन धन्यो ये ! अबै तैयार भऽजाऽ । तीन बजे बस खुलैत छै ।

शब्दार्थ विश्लेषण

मैथिली भाषाशैलीमे अन्य भाषाक शब्दशैलीक प्रयोग

मैथिली बजबा अथवा लिखब काल किछु लेखक अथवा वाचक तेहन शब्दक प्रयोग करैत छथि किछु एहना स्थिति जे एकर अतिरिक्त किछु शब्द उर्दूक हिन्दीक वा आन भाषाक प्रयोग करैत छथि कारण आन भाषाक शब्दशैलीक प्रयोगसँ आजुक वैश्वीकरणक युगमे बचल नहि जा सकैत अछि संस्कृत भाषाक शैली मैथिली मैथिलीक संस्कृति सभ्यतामे पचल अछि, किन्तु एकर अतिरिक्त जतए धरि बनि सकय अन्य भाषाक शब्दक प्रयोगसँ परहेज करबाक चाही मैथिली भाषामे शब्दक बड़का भंडार अछि आन भाषाक जे प्रचलित रूप स्वीकार कए लेल गेल अछि से छोड़ि अन्य शब्दक प्रयोग कदापि नहि करबाक चाही किछु एहन शब्द छथि जे एकै रूपमे विभिन्न भाषामे स्वीकार कए लेल गेल अछि । यथा

उर्दू	हिन्दी	मैथिली
मकबूल	विवाहित	विवाहित
जिन्दगी	जीवन	जिनगी, जीवन
ठीक	ठीक	ठीक
कोशिश	प्रयास	प्रयास, अभ्यास
ख्वाब	स्वप्न	सपना

ई पाँच शब्द उर्दूसँ आएल शैली दृष्टिसँ भिन्नताक ई छोड़ये मिलान जुलान रूप अछि

अभ्यास ?

नि अतिरिक्त किछु उर्दू शैलीमे बजैत एवं ई लेल अछि आहाँ एहि शब्दकेँ मैथिली शैलीमे बदलिकऽ लिखबाक अछि ।

उर्दू शैली -

क) कैसा मिजाज है आपका ?

ख) जमाने के बाद आपसे मुलाकात हुई है ।

ग) इनकी तारीफ ?

घ) आप कहाँ से तशरीफ लाये हैं ?

ङ) चैती मिजाज की सनक समझिये ।

12.5 सारांश

मातृभाषा इकाइक एहि पहिलमे अहाँकेँ बहुभाषी अछि एहि देशक जे संपर्क भाषा वर्तालापक भाषा निर्धारित भाषासँ भिन्न होइत अछि । निर्धारित भाषा व्याकरणक नियमसँ बान्हल, आकार राखब कठिन होइत अछि मुदा जनसंचार वा संप्रेषक भाषामे लचक व्याकरणिकमे स्थानीय शब्दक प्रयोग आवश्यक बनि जाइत अछि वा एहन शब्दक प्रयोग करबी मुँहक बातकेँ लिखित रूप अछि भौतिक संपर्क विच्छेदताक अछि मैथिलिक भाषाक व्याकरण सामाक्ष उल्लंघन करैत चलैत अछि बहुत रास एहन शब्दक प्रयोग हमरामे कएल जाइत अछि जे लिखित भाषामे स्वीकृत नहि अछि अधिकांश ई सभ शब्द लेखक अपन भाषेतर भाषामेँ सम्पर्कित रहि कारणे एकर अनजानमे एहन शब्द हमर सम्प्रेषक हिस्सा बनि जाइत अछि जेना आर्थिक क्रिया, संदर्भ, प्रसंग प्रयोग आदि ।

12.6 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न-1

[illegible]

1) मौखिक रूप

1 [illegible]

बोध प्रश्न-2

[illegible]

4 [illegible]

अभ्यास 1

क) की यौ दिशाकरबी । की हालचाल ?

ख) भोजन आदि एहि मेर आयल, तेहन कहियो ने आयल ।

ग) आतंड कहियो काल पाथरो खसै छै ।

घ) एक । कतेक नीक शब्दकाश अछि ।

ङ) [illegible]

च) मिथिला एक सांस्कृतिक भूमि छिक ।

छ) राधा विरह महाकाव्य : अध्ययन विश्लेषण ।

ज) [illegible]

विविधा

4

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्तमान विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।'

– इन्दिरा गांधी

Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force cutting across the barriers of caste and class, smoothing out unequalities imposed by birth and other circumstances.

Indira Gandhi

इग्नू जन जन का विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

4

विविधा

इकाइ 13
भाषण शैली 5

इकाइ 14
मानविकी (ललित कला) क भाषा आ विश्लेषण 20

इकाइ 15
समाचार लेखन आ सम्पादकीय 41

इकाइ 16
विज्ञानक भाषा तथा पारिभाषिक शब्द 60

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. भीमनाथ झा
पूर्व प्राध्यापक मैथिली विभाग
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष मैथिली
विभाग, बी.आर.ए. बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर

डॉ. नवलकान्त झा
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.एन. कॉलेज, पटना

प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग ल.ना.मि.वि., दरभंगा

संकाय सदस्य
प्रो. लक्ष्मण कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू मैदान गढ़ी
नई दिल्ली-110068

डॉ. विमला चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी
नई दिल्ली-110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाई लेखक
डॉ. देवेन्द्र झा (इकाई 13)
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
बी.आर.ए. बिहार वि.वि. मुजफ्फरपुर
डॉ. बटेन्द्र झा (इकाई 14)
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
पी.जी. सन्त सहायक
डॉ. अशोक कुमार मेहता (इकाई 15)
मैथिली विभागाध्यक्ष
सी.एम. साइंस कॉलेज, दरभंगा
डॉ. रमण झा (इकाई 16)
प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि. दरभंगा

पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. भीमनाथ झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक
प्रो. लक्ष्मण कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

प्रबन्ध संयोजक
डॉ. ए. एम. तिवारी
श्री सत एम सिंह
क्षेत्रीय निदेशक
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री जी एन पाण्डेय

जनवरी 2012

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2012

इस पाठ्यसामग्री का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

इग्नू की पाठ्यसामग्री मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित मैथिली पाठ्यक्रम के लिए तैयार की गई है।

मोहन प्रेस्क्रिप्ट सेटिंग टेक्स मैथिली एण्ड कम्प्यूटर C 206, A-F Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक राज पैकर्स, ए-9 सेक्टर बी-2 इंडस्ट्रियल एरिया लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)-201 102

खण्ड 4 क परिचय : विविधा

ई चारिम आ अंतिम खण्ड थिक एहि खण्डमे मात्र चारि इकाइ अछि ई चारू चारि प्रकृतिक अछि, तैं एकर नाम विविधा राखल गेल अछि ।

इकाइ ४म भाषण शैलीक अध्ययन कयल गेल अछि एहिमे डॉ. अमरनाथ झाक एक भाषण बालकक हेतु देल गेल अछि जे श्री अखिलेश भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनमे अध्यक्ष पदसँ दय रहथि अखिलेशक भाषणमे कोन कोन तत्त्व होयबाक चाही भाषणकर्त्ता कोना विषयक निर्वाह करए एवं एकर लेल कोन विधि अपनाबैत छथि आदि भाषणक प्रभावी बनयबैत छथि तकर सभ विषयक उदाहरण सहित बुझाओल गेल अछि एहि भाषणक अध्ययन विश्लेषणसँ मैथिली भाषण कुशलता एवं भाषणकलामे निपुणता पाओल जा सकैत अछि ।

इकाइ ५मे ललित कलाक अन्तर्गत स्थापत्यकला मूर्तिकला चित्रकला संगीतकला आ काव्यकलाक परिचयक माध्यम द्वारा कोनहुना एकर संक्षिप्त जानकारी प्रदान कयल गेल अछि

इकाइ ६मे पत्रकारितिक माध्यम परिचय देल गेल अछि । फिर मोहियाक दिनानुदिन बढ़ैत प्रभावक कारणेँ मैथिलीक माध्यमसँ आइ अहम प्रयोजन जानि रखनाइ आवश्यक छैक एहि हेतु समाचारक परिभाषा समाचार लेखनक आ सम्पादन समाचारपत्रक धारा, सम्पादकीय लेखनक महत्त्व आ लेखन विधि बिलगाओल गेल अछि किछु उदाहरण द्वारा विषयकेँ विशेष स्पष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

इकाइ ७ चित्रात्मक भाषासँ सम्बद्ध अछि एहि इकाइमे वैज्ञानिकक चित्रण शोधन एवं अन्वीक्षक यन्त्रक रूपमे ओकर उपयोगिताक प्रसंग उठाओल देल गेल अछि तथा पारिभाषिक शब्दक व्याख्या कयल गेल अछि ।

एहि सात इकाइमे व्याख्यात्मक चारि प्रश्न एवं अभ्यास देल गेल अछि जकरा हल करऽ लागि छात्र अनेकेँ एक प्रेम विषयपर एकटा पत्र आबय तँ दोसर दिन पाबक कौशलक विकास भेनहो होयत ।

एहि पाठ्यक्रमक लक्ष्य यैह रहल अछि जे एकर माध्यमसँ अहाँ मैथिली भाषा एवं साहित्यक विभिन्न पक्षक सामान्यतया अध्ययन करू एवं ओहिसँ आगाँ ऐच्छिक पाठ्यक्रमक अध्ययनमे अहाँकेँ ई ठोस आधारक काज करऽ सकये ।

एहि पाठ्यक्रमक विषयवस्तु अहाँक मुक्तकण्ठसँ रस व्याप्त काव्य बनिनी एकर रूप आगाँ भाव निखरि सकैक ।

इकाइ 13 भाषण शैली

इकाइक रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 भाषण

13.3 भाषणक शैलीगत विशेषता

13.3.1 पुनरावृत्ति

13.3.2 वाक्यक्रम

13.3.3 प्रत्यावर्तन

13.3.4 संबंधित कारक

13.4 संयोजन कारक

13.5 सारांश

13.6 शब्दावली

13.7 अभ्यासक हेतु

13.8 अनुकार्य

13.0 उद्देश्य

एहि इकाइक पढ़लाक बाद अहाँ

- भाषणक भाषा आ लिखित रूपक भाषा मे अन्तर बुझि सकब, तथा अपन शब्दमे व्यक्त कऽ सकब,
- विषयसँ सम्बन्धित शब्दावलीक चर्चा कऽ सकब
- भाषणक शैलीगत विशेषता कहि सकब
- भाषणक भाषा एवं लिखित भाषाक अंतर बूझि सकब,
- संयोजन कारक के दृष्टि मे जानि आकर मर्म बुझा कऽ सकब

13.1 प्रस्तावना

ई चारि खण्डक पहिल इकाइ थिक। एहिमे हमरा सभकेँ भाषा आ भाषाक प्रकार, भाषा मानकता पर्यावरण आदिक संग भाषणक विषय विस्तृतसँ बुझबाक अछि। एहि इकाइक अध्ययनसँ अहाँकेँ भाषा आदिक बारेमे बहुत अनुभव भेटत। एहि संबंध अध्ययनसँ अहाँकेँ भाषा आदिक बारेमे बहुत

एहि इकाइमे हमरा भाषण कलाक दृष्टिकोण सँ व्याख्यात्मक ढंग सँ बुझबाक अछि। एहि लेखमे सामान्य परिचयक संग भाषणक प्रकार, भाषणक शैलीगत विशेषता, भाषणक भाषा आ लिखित भाषाक अंतर, संयोजन कारक आदिक संग भाषणक संबंधक चर्चा कऽ सकब। एहि विषयक ज्ञान हेतु अहाँकेँ कोनो पुस्तक पढ़बाक आवश्यकता नहि पड़त। ई भाषण लेखि अहाँकेँ एहि विषयक ज्ञान हेतु पर्याप्त होयत। एहि विषयक ज्ञान हेतु अहाँकेँ कोनो अन्य पुस्तक पढ़बाक आवश्यकता नहि पड़त। ई भाषण लेखि अहाँकेँ एहि विषयक ज्ञान हेतु पर्याप्त होयत।

अँ ई बात 'मातृभाषा छलैक तँ ओ अहाँ रूपमे दान वा गहल अछि आकि अहाँ मातृभाषाक प्रवाहमे डोकर पुनः जन्म सकी । एहि भावनामे अहाँ मातृभाषाक शैलीगत विशेषता आ आंहिसँ संबंधित व्याकरण विषयक विलक्षण प्रवाहक अध्ययन लेखा कऽ सकब

संगहि अहाँ संशोधन कारककेँ नियम बनाबऽ आ ओकर प्रयोग करब सहो सीखि लेब

13.2 वाचन

सन्दर्भवृन्द । अहोलिखनि बनितहिँ छँ

१ मातृभाषामे भाँज कऽकेँ नहि होइत छैक । जन्मोत्तरसँ जे बोली माइक मुहेँ सुनबाक सौभाग्य होइत छैक आहि बोलीक स्वर आरम्भ मातृस्वरहिँ होइत छैक आहिमे आपन हृदयक भावक स्वतः उद्गार होइत छैक एकर परिचय कोनो कोना कऽ सकैत अछि । वैभाषिक मनः कारणमे मौलिकक हार्दिक इच्छा करबामे मौखिकक प्रचारक उद्योग करबामे कोनो प्रकारक यदि उदासीनता हमरालोकनि देखैत छी तँ लज्जाक विषय थिक ।

२, कथनमात्र हम ई स्पष्ट कऽ देब उचित बुझैत छी जे हमर ई इच्छा नहिँ जे मैथिलीक हिन्दीक स्थान लिअय हिन्दीकेँ हम राष्ट्रभाषा बुझैत छी हिन्दीक हम यथायोग्य सेवा करब हिन्दीक समस्त देशक प्रचार हो तकेर हम उद्योग करब परन्तु हमरा इहो कहैत संकोच नहिँ जे हिन्दी हमर मातृभाषा नहिँ थिक हिन्दी हमर मातृभाषाक स्थान नहिँ लय सकैत आहि हिन्दीक अवहार हम नेनाकालमे स्वीकारो कऽ नहि कऽ सकैत छी राष्ट्रभाषा प्रचारक अर्थ ई नहिँ जे प्रान्तीय मातृभाषाक हानि हो अथवा ओकर लोप हो

३ एतबा अवश्य जे मातृभाषामे मैथिलीक आओर हिन्दीक माध्यम आकि हमरा लोकनि हिन्दीक प्रचारक ओतबे विरुद्ध छी हमरा लोकनि स्वीकार करैत छी जे हिन्दी हमर राष्ट्रभाषा थिक परन्तु हमर जे मातृभाषा तकेर नाश

४ ई रूपमे मातृभाषा थिक । एकर व्याकरण एकर रचनाशैली एकर लिपि हिन्दीसँ भिन्न अछि एतबेमे हिन्दिभक्तक मातृभाषा हमरालोकनि देखबामे भऽ कऽ जे संतोष उचित

५ विद्यापति हिन्दीक विषय कहिओ नहि छथि अनेक मैथिल हिन्दीमे रचनाकरना करबाने छथि । वह सुन्दर वह मैथिल कवि नाम प्रकाशित भेल पुस्तक आछ कहु अप्राप्त अछि । बहुतक मैथिल रचित हमरा लोकनि बालकाल पाठशालामे पढ़ैत छी

I) कुंडल मंडित है मुनि पोंछत कोर तनूजा से तनु सुन्दर
अंजन कमल विनिंदक लोचन चंचल मित्रोंवान से मदमन्तर

— लोचन

II) हरिणिनु का छल को गति कैसी ।
मूषण कमल सेवा सुन्दर तनु हात अंग विनु जैसी हर्षनाथ

III) सजनि, विषम विरह जैहेँ
साजन साजसे पुरिहेँ अथवा पीयम पयसम एहेँ चन्द्रकवि

६, मैथिल कवि हिन्दीमे नाना प्रकारक छन्दक व्यवहार करबा छथि तकर आबक कवि मात्रसँ परिचित बहि परन्तु हमर आशा आओरो लेखक हिन्दीकेँ दशलाभा राष्ट्रभाषा मानि हिन्दीमे रचना करबामे अपन मातृभाषा मानि नहि मातृभाषाक स्थान तँ सदा मैथिलिएकेँ छल ओ अछि ।

1 मैथिलीमे केवल हिन्दू रहन कथन मात्र म नहि [illegible] अनेक मुसलमान कवक एहो भेल अछि, जनिसँ आइ हमरा सभके [illegible] प्रतीत भेलहि अछि। मुसलमान हिन्दू की मुसलमान "मैथिलेक" साहित्यिक भाषाक रूप व्यवहार कौन हेतु सं कयने अछि तथा एहि प्रश्नक उत्तर देनि पहिने कौन हेतु मुसलमान मैथिल एहि भाषाक सौन्दर्य के नष्ट कयने छथि

"लाही बन भाइ अम्मा सिकियो नै डालै रे, हाय हाय।
ताही बन डंगा छह लड़ई रे हाय हाय।"

'किछु सम्प्रदाय मुहोमे गर्मियो [illegible] कवित्व स्फोरक मूर्ति [illegible]

8 प्रत्यक्ष सांस्थिक भाषमे पद्यक अपेक्षित रह [illegible] बहुत कम प्रचलित भाषामे अनुवादात्मक [illegible] पहु [illegible] अछि। मैथिलीमे की भय सकै [illegible] जकर भाव आधुनिक रह कठिन कय सकैत अछि [illegible] हिन्दी [illegible] कादम्बरी के शैलीक तुलना कद सकैत अछि। [illegible] प्रयोजन भाषामे भेटब कठिन [illegible] प्राचीन समयमे आओर कतेक [illegible] नहि अछि –ई विशेषता मैथिलीए टामे अछि।

9 ई सांस्थिक स्तर भाषाक कोनो आओर साहित्यमे कथाक [illegible] अछि। [illegible] भाषाक रूपे [illegible] अछि। [illegible] कवि [illegible] अछि। [illegible] मैथिलीक कवि कालिदास कहि [illegible]

10 मैथिलीक [illegible] आओर साहित्यक वृद्धि [illegible] अछि। [illegible] [illegible] [illegible] करत। मैथिली पत्र [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] एकर पर अपन कृत्य अछि मैथिली साहित्यमे शुद्ध मैथिली शब्दक आओर संस्कृतमे अशुद्ध मैथिल लोक व्यवहृत शब्दक संग्रह करक चाही एकर अतिरिक्त बहुत शब्द एहन अछि जे चन्दौसी लहरिया मानर कुमहर चमार डोम कपार खतिहर पंजिआर पुरोहित नटुआ, बजनियाँ धरि [illegible] इत्यादि अपन अपन व्यवसाय विशेषमे व्यवहार करैत छथि एकर संग्रह आवश्यक [illegible] कहानिआक संग्रह करबाक चाही मैथिलक एकटा विस्तृत व्याकरण आवश्यकता अछि मिथिलाक गायक नायक उत्पत्तिक अन्वेषण एक अहोरा मैथिल इतिहास प्रामाणिक रूपमे लिखबाक चाही ग्रामगीतक सुन्दर संग्रह सबाक चाही जाहिमे सिरपक गीत गजन कथालाप इत्यादि जनसाधारण धरि जाइत अछि [illegible] एकर पर [illegible] सांगीतिक धन लुप्तप्राय भेल अछि [illegible] कवर लक्ष्मीनाथ [illegible] गोसाञिक गीत ने हम बालावस्थामे यथावृद्धा कुटुम्बिनीक मुहँ सुनल कतहुँ से अनेक [illegible] विस्मरण जाइत छथि [illegible] संग्रह होयबाक चाही [illegible] कालक्रमेण [illegible] चमत्कार हो वा नहिं समाजक अन्तःस्थित [illegible] [illegible] [illegible]

शृंगारमय कवितासँ आध्यात्मिक धरि, भक्तिक एक स्वतंत्रताय राकृरक ग्रन्थात्मक अवलोकन कऽ हम अत्र इएह चाहैत छी जे विद्यापति तथा चन्दिदत्तक स्वर मुनैत मातृभाषाक राग अलापैत मैथिलीकेँ अपन हृदय अर्पित करी ।

अपने सबहिक हम बहुत समय लेल अन्तर्राष्ट्रीकेँ धैर्यपूर्वक सुनबाक हेतु बहुत धन्यवाद

बोध प्रश्न

वाक्यक अगले कोष्ठकमे दिअ गेल कोनो एक आ दूटा शब्दमे रिक्त स्थानक पूर्ति करू

i) मातृभाषामे ..... करऽ चाही हमरा लैक ।
[अधिक, अधिक सँ अधिक]

ii) हिन्दीकेँ हम ..... मानैत छी
[राष्ट्रभाषा, राष्ट्रभाषा राजभाषा]

iii) मुसलमान मैथिल एहि भाषामे ..... रचना करय लगल
[लेखक, समर्थक, संरक्षक]

iv) पुस्तक प्रकाशनसँ .. आत्मतुष्टि होइ
[दोषक, सन्तोष, पाठक]

v) मैथिलिकेँ अपन स्वतंत्र लिपि लैक
[रहबाक, रहबाक चाही]

2 निम्नलिखित वाक्य कथनक दृष्टिसँ सही वा गलत कहू

i) मैथिलीक प्रसारक उद्देश्य लऽ कऽ ... ... हमरा लोकनि देखाबी ई तथ्यात्मक विवरण अछि ।

( ) सही ( ) गलत

ii) हिन्दीक व्यवसाय हम प्रसारमे ... ...

विषय

5) शास्त्रीयगीतक अर्थ बुझाउ ।

[redacted]

6) एक दक्षन संगितक महत्व की छाअय ?

[redacted]

7) कुनो अध्यायक दुआ अपन शास्त्रीय अनुभव अपने हृदय कक्षरा अंकित करऽ चाहैत छलहु

[redacted]

8) शिक्षणकार्यमे अपन दक्षक सह शिक्षणक अन्वेषणमे करबाक हेतु की करबि ?

[redacted]

9) एतऽ किछु शब्द समूह देल गेल अछि प्रत्येक समूहमे एक शब्द एहन अछि जे ओहि शब्द समूहसँ मेल नहि खाइत अछि अछि शब्दक छाँटिकऽ लिखू

i) मर्मस्पर्शी, चित्ताकर्षक, हृदयस्पर्शी, मनाकर्षक

ii) प्रचार, व्यापार, पसार, प्रसार

iii) नेनासमयमे, शिशुवर्गमे, स्कोलवर्गमे, बालकवृन्दमे

iv) वृद्धि, अवनति, उन्नति, विकास

v) उत्सव, उमंग, उल्लास, उद्घाट

५) निम्नलिखित कार्तिकामे क ख ग खंडमे उचित शब्द लिखू ।

6) निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्ति करू ।

i) ज्योतिरीश्वरक गद्यग्रन्थ _____ अछि ।

ii) हिन्दी क्षमर _____ थिक ।

iii) हर्षनाथ कविक रचना _____ अछि ।

iv) मातृभाषा इयत्तासोकनिक _____ अछि ।

v) मातृभाषा प्रत्यक्ष अर्थ ई नहि जे _____ हानि हो

13.3 भाषाक शैलीगत विशेषता

एहि इकाइमे हम अपनाके भाषण देब सेल अछि एहि भाषणकें पढ़बाक क्रममे अहाँ ई अनुभव करमे होयब जे लिखबाक भाषा एवं बोलबाक अथवा भाषणक भाषामे अन्तर होइत छैक भाषण प्रक्रियामे लिखबाक रहि अछि सँ भाषणकें बजैत काल वाक्यक रचना सेहो करा पड़ैत छैक । सँ भाषणमे लिखित गद्य जकाँ वैध भिन्न एवं कठिन वाक्य नहि होइछ अपितु छोट छोट वाक्य होइछ जे कतिपय उपवाक्यक संग लिखितक बनैत अछि । श्रोता अपन विचारकें स्पष्ट करबाक हेतु, कोनो बिन्दुपर बल देबाक हेतु आ लोककें प्रभावित करबाक हेतु कखनो एकै शब्द अथवा वाक्यकें कतेको रूपमे दोहरबैत अछि अथवा ओ अपन सम्पूर्ण भावनाकें एहन छोट छोट उपवाक्यमे बाँटिकऽ बजैत अछि जाहिसँ विषयपर अधिक बल पड़ैक वक्तालोग श्रोतागण अपन बातमे सम्मिलित करबाक हेतु ओकरा प्रत्यक्ष रूपें संबोधित करैत अछि. श्रोतागण भिन्न भिन्न श्रोतिक फराक फराक चर्चा करैत अछि. ओकरा आगू आगू कऽ आकृष्ट करैत अछि एतऽ हम किछु उदाहरण एवं अभ्यासक द्वारा भाषणक शैलीगत विशेषताकें बुझबाक प्रयास करब ।

13.3.1 पुनरावृत्ति

भाषणमे अपन बातकें स्पष्ट करबाक हेतु आ अधिकपर बल देबाक हेतु वक्ता पुनरावृत्ति करैत अछि उदाहरणार्थ एहि इकाइमे देल गेल भाषणक निम्नलिखित अंशकें देखू

क) जाहिसँ जे बात्ती आइक पूर्व सुनबाक सौभाग्य होइत छैक, काहि बोलाक स्वर आजुक समस्यासँ होइत छैक, चाहिसँ अपन हृदयक भावक स्वतः उद्गार होइत छैक ।

उक्त वाक्यक रेखांकित वाक्यांशमे 'जे बोलो' 'अहि बोलोक' एवं 'जाहिसँ' कथनक पुनरावृत्ति अछि जे अपन बातकें स्पष्ट करबाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि संगहि एहिसँ बातपर सेहो बल देल गेल अछि ।

2) निम्नलिखित वाक्यांश के पूर्वानुवर्ती एक [illegible] चुनकर लिखिए । [illegible]
जानकर हल देवाक हेतु अथवा अन्य

i) हम अपना भाषा आओर साहित्यकेँ [illegible]
कृतिकेँ सुरक्षित रखैत सेतु [illegible]

ii) प्रत्येक विषयपर प्रत्येक श्रेणीक [illegible]
चित्रान मृगांक, इतिहास [illegible]
लक्षन आकरा के [illegible]

iii) सर्वप्रथम मैथिलीकाकाक [illegible]
समिति नियुक्त हो [illegible]

13.3.2 वाक्यक्रम

[illegible]
[illegible]
एहिमे शब्द वा पदक क्रम संगे [illegible]

उदाहरण : "मैथिलिजाकेँ" [illegible]

[illegible]
[illegible]
कयल जाइत छैक ।

उदाहरण [illegible]

एहि ठाम संगे [illegible]
[illegible]
क्रम राखल छैक ।

अभ्यास :

1) निम्नलिखित वाक्यकेँ सही क्रममे [illegible]

i) [illegible]

ii) मैथिली हिन्दीक स्थान [illegible]

iii) तत्पतलकेँ [illegible]

iv) बहुत शक्ति उत्तम साहित्यभंडार प्रस्तुत भऽ सकैत अछि यदि तीन-चारि प्रयत्नसँ विद्वान ई कार्य अपना ऊपर लेथि ।

v) लेखन भाषाक एक स्वतंत्र अपन लिपि रहलैक लेखनहि कोनो भाषा साहित्य सर्वांङ्गपूर्ण भऽ सकैत अछि ।

13.3.3 उपवाक्य

भाषामे वाक्य रचना एहि प्रकारें करबाक चाही जाहिसँ कथ्य स्पष्ट होइत चल जाए आ अनर्थ बातपर बल लेबा अधिक प्रयत्न एवं तेल बचबा उपवाक्यक अधिक उपयोग करैत अछि जेना ऊपर कहल गेल जे वाक्य तँ कहल जाइत मैक एहन शब्दसमूहकें जे विचार पूर्णरूपसँ प्रकट करा देअय जेना 'चाभिलाषे हिन्दीक विरोध करिया नहि कल' ई वाक्य अछि एहिमे शब्दक एहन समूह छैक जे पूरा विचार प्रकट भऽ दैत छैक मुदा कखन पूरा विचारकें प्रकट करबाक हेतु एकर्थे अधिक वाक्यक आवश्यकता होइछ आ जाहिसँ एक दीर्घ वाक्यक अन्तर्गत रहैक लक्षण अंश प्रत्येक वाक्यकें उपवाक्य कहल जाइछ उदाहरणार्थ

"हैदिल करि हिन्दीमे नाना प्रकारक शब्दक व्यवहार करबे छथि जकर आबक कवि लोकनिमे परिचित नहि" एहि वाक्यमे दू उपवाक्य अछि पहिल अछि "हैदिल करि हिन्दीमे नाना प्रकारक शब्दक व्यवहार करबे छथि" दोसर अछि "जकर आबक कवि लोकनिमे परिचित नहि ।"

एतऽ ई ध्यान रखबाक आवश्यकता छैक जे यद्यपि वाक्यक भाषा आ लिखबाक भाषा दुनूमे उपवाक्यक प्रयोग बेसी होइत छैक जे हम ऊपर आवश्यक छाक उपर्युक्त भाषामे देखि सकैत छी

भाषामे ई उपवाक्य सम्पूर्ण वाक्य रचनामे परसल रहैत छैक यदि हम एकरा लिखबाक भाषामे परिवर्तित कऽ दिअक तँ स्वाभाविक छिक जे भाषामे प्रयुक्त वाक्य संरचनाक तुलनामे लिखित वाक्य छोट आ बेसी सुगठित होयतैक ।

उदाहरण :

भाषणक वाक्य- "हिन्दीकें हम राष्ट्रभाषा मानैत छी हिन्दीक हम यथासाध्य सेवा करब हिन्दीक समस्त देशमे प्रचार हो एकर हम उपाय करब " 20 शब्द

लिखित वाक्य-

"हिन्दीकें हम राष्ट्रभाषा मानैत यथासाध्य सेवा कऽ समस्त देशमे प्रचारक उपाय करब ।" (12 शब्द)

उदाहरण :

भाषणक वाक्य "शेक्सपिअरक परिचय कऽ, गालिबक अध्ययन कऽ, सूर औ विद्यापतिक वात्सल्य आ शृंगारमय कविताकें आत्मसात भऽ बंकिम एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुरक ग्रन्थरत्नक

अवलोकन के हम अब कुछ चरित्र की ओ विशेषता तथा लेखिकाका स्वर सुनेर नाटकीय रूप अल्पपैन पैंठिलोकें अब हृदय अंकित करें ५, शब्द

लिखित वाचन :–

शंकरपिल्लर गलिनव मुद्रा विद्यार्थी बंकिम चंद्रोदय नाटकका उद्धरण का हम आब विद्यालोके गांगिद्दलक स्वर मुनेर पैंठिलोकें अब हृदय अंकित करो ५, शब्द

अभ्यास

4) निम्नलिखित वाक्यकें लिखबाक भाषामे परिवर्तित करू–

I अन्यांहमें ओ बाली साइक मुँह मुखाक सौभाग्य हासल लैक डाँड़ बालक स्वर अजाच्य सर्वस्पर्शी हासल लैक अंगिते अन्य दृश्यक भावक लाए सहाय हासल लैक, तकर परिचय कोना कय सकैत अछि ?

II एहिमें एक अपूर्व मौलिकता सरलता स्वाभाविकता थिक । एहिमे अलंकारादिक विन्यास कलाकारक आह्लाद थिक एहिमे थिक हृदयक तुरन्त निकाल भेलाक बाद

II एहो देह मुखा क बाद एहो व्यक्तिमें पूर्ण ५ भिन्न भावक सौन्दर्यमें प्रमाणित भेल भिन्न भिन्न रसक आस्वादन करू भिन्न भावनाक अनुभवमे क पुलकित अंकित करब अतिरिक्त प्रयास अपन अनुभूतिमा व्यक्त क चाहैत लोक

13.3.4 संबोधित कारक

भाषणमे वक्ता अपन श्रोताकेँ कोन अवस्थिति कहैत अछि तेँ जानकारी भाषा संबोधनक भाषा कहैत छैक । उदाहरणार्थ प्रस्तावक वाक्य एहि प्रकारक रहैत छैक- सज्जनवृन्द अहाँलोकनि जानतहिँ छी', 'बन्धुगण आजुक लोकनिक' इत्यादि वक्ता कतेको बेर अपन श्रोताकेँ भिन्न भिन्न वर्गमे विभक्त क' अहि भागमे सम्बोधित विषयपर अधिक बल देबाक प्रयास करैत अछि ई श्रोतालोकनि तटस्थ भावसँ दर्शक सकैत छी उदाहरण लेल समाजक प्रबुद्ध वर्गकेँ संबोधित करैत हुअ जमनालाल झा अपन विचार एहि प्रकार राखैत छथि "मैथिलीपुत्रो समाजस्यो विजयताम । छत्र छाह बेन्द स्थापित कय दू तीन व्यक्ति भिन्न भिन्न स्थानमे अ अहि तुलक प्रतियोगिता परिचालित भए अथवा आ प्रचीन पुस्तक संग्रहक संरक्षण नवीन पुस्तकालय खोलनलाकेँ सहायता लाइब्रेरियालाक आयोजन सार्वजनिक यानक प्रबंध वैद्युतिक एवं अन्य प्रमुख सार्वजनिक विभागक अवस्थानपर वार्षिक उत्सवक प्रबन्ध कएल जाय "

विशेष रूपसँ हम एहन प्रसंगक प्रयोग नहि कए सकैत छी भाषण करबाक समय एहि प्रकारक संबोधनमे श्रोतासँ घनिष्ठ सम्बन्ध बनैत छैक आ अहि अभिव्यक्तिमे वक्तव्य बेसी प्रभावोत्पादक भए जाइत छैक ।

13.4 संबोधन कारक

हमरा कखनो ककरो कोनो काज लगे भेने पड़ैत अछि आ बोला हे बच्चा हौ भैया ! हौ सुनैत होह हँ भाइ रमा । व्यवहारमे अहाँ प्रकारक बजबाक हेतु ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु प्रयुक्त शब्दक संबोधन कारक कहल जाइत संबोधन कारकक रूपकेँ हम एहि प्रकारेँ देखि सकैत छी ।

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	बाबा भैया	बाबालोकनि भैयालोकनि, भैयागण
स्त्रीलिंग	बहिन धौआ	बहिनलोकनि धौआगण

एहि अहाँ मैथिलीमे सामान्य रूपसँ प्रयुक्त होमएबला संबोधनक उदाहरण देखलहुँ । संस्कृत भाषामे संबोधन कारकक किछु भिन्न प्रकार अछि जे नीचेक भागमे प्रस्तुत कएल गेल अछि संस्कृत भाषामे प्रयुक्त संबोधन कारकक किछु उदाहरण ई रहल अछि

मूल शब्द	संबोधन
देवी	देवि
बालक	बालक
साधु	साधो

५ निम्नलिखित शब्दक द्वू वचनम संबोधन कारकक रूप लिखू ।

मूल शब्द	एकवचन	बहुवचन
सज्जन		
ऋषि		
सभासद		
हंस		

13.5 सारांश

एहि इकाइमे आरंभिककालि सँ अद्यतनधरिक भाषाक अध्ययन कएलहुँ अछि । मैथिल आलोचक भाषण शैली के विभाजनक दृष्टि सँ [illegible] भाषाक भाग एवं विभिन्न भागक मध्य एहन ऐक्य संबंधक स्थापना करबाक [illegible] अछि । एहि इकाइक अध्ययनक बाद अहाँ जानब–

- मातृभाषाक महत्व जानि गेलहुँ ।
- राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक अन्तर बुझि गेलहुँ ।
- [illegible]
- मातृभाषाक माध्यमक द्वारा [illegible]
- भाषण शैलीक को विशेषता होइत अछि से बूझि गेलहुँ
- भाषणक भाग आ विभिन्न भागक [illegible]
- [illegible]

13.6 शब्दावली

मर्मस्पर्शी	:	हृदयकेँ स्पर्श करबला ।
हृदयग्राह	:	हृदयमे रहनिहार ।
रचनाशैली	:	लिखबाक (रचना करबाक) पद्धति ।
हृदयस्पर्शी	:	आत्मपूर्वक ।
अपेक्षित	:	आकांक्षित ।
मर्मस्पर्श		पुस्तकक पढ़ि कए वा [illegible] मर्मस्पर्शी कहल जाइत अछि ।
साम्य	:	समानता ।
साक्ष्य	:	सहयोग योग्य ।
मुद्रणार्थ	:	प्रकाशित करबाक हेतु ।
चमत्कृतता	:	चमकी ।
नापित	:	हजाम, नौआ ।
ग्राम्यगीत	:	ग्राममे प्रचलित लोकगीत ।
सृजन	:	रचना ।
मुग्ध	:	आनन्दित

13.7 अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न :

1) I) भक्ति II) राष्ट्रभाषा III) भक्तिकाल IV) कोशक V) निरहता

2) I) गलत II) सही III) गलत IV) सही V) सही

3 I राष्ट्रभाषा वस्तुस्थिती साइक मुळे स्पष्ट आहे, एकदा स्वर आजन्म सयंस्थगी होइत सैक । इहयक व्यावक स्वरः उदगार प्रतिमें होइत सैक ।

II) कावर कमदार्ढनि गैरोक संत व्यावहारिक संत आदि इत्यादीत थिक जे सब दाम वस्तुका चुटुम्बोक मुह सुनल जाइछ एहिमे धैर्यिकता सरलता एवं स्वाभाविकता रहैत सैक ।

III) देश दशन सामाजिक उद्देश्य ई हो ब निर्यिलाक मौलिक वर्णन तैयार करय एवं पुस्तक लाभो नहीं, साधारण पुस्तिकाक व्यावक प्राथमिकतासँ आइ तकक वर्णन तैयार हो ।

IV) दुनी अध्यायक हा अदर अन्तिम समय आनुभाषा व्यावहार कs विद्यापति तथा अन्य इहयक स्वर सुनैत आनुभाषाक सब आलोचना सैधिलोकों प्रकट हृदय आर्पित करs चाहैत छलाह ।

V) मिथिलाक्षरमे भाषा सम्बन्धि एक हजार वर्षाति पशु पक्षी सम्बन्धि सब [illegible] सम्बन्धि सामग्री एहि [illegible] कs आपन दशक सब विद्यापक ज्ञानोपार्जन कs सकैत छथि ।

4) I) अनाकर्षक II) व्यापार III) स्वीकर्णीय
IV) अमानति V) उद्घाट

5) (क) लोहन (ख) सम्पादक (ग) पाठक

6) I) वर्णरत्नाकर II) राष्ट्रभाषा III) रागतरंगिणी
IV) मैथिली V) प्रान्तीय भाषाहमक

उत्तरमाला

1) I) हिन्दीकेँ, हिन्दीक, हिन्दीक
II) मैथिलीक, मैथिलीक, मैथिलीक
III) हास हो, क्षति हो
IV) आवश्यकताक अछि आवश्यकता अछि, आवश्यकता अछि

2) I) कथनक स्पष्टता II) बातपर बल III) आग्रह

3) I) भाषाभाषामे अछि सकारात्मक नहि कहल जा सकैत छैक ?
II) हमर ई इच्छा रहि जे मैथिली हिन्दीक स्थान लिअय ।
III) आवश्यकता अछि तत्परतापूर्वक इत्यादिक अभाव परिलक्षित ।
IV) यदि अहाँ अपने अध्ययनमे विद्वान ई कार्य अपना कृपा लेखि तँ बहुत श्रेष्ठ उत्तम साहित्य भंडार प्रस्तुत भऽ सकैत अछि ।

VI) कोणी काय साहित्य वस्तुनिष्ठ मूल्यांकनपूर्ण घेऊ शकेल असे, उदाहरण आहित पाठाचा एक स्वतंत्र आपण लिहि द्यावे ।

4 I) अन्यायिर्सें जे बोलणे माइक पुढें धुरकाक सौजन्य शब्द करावें आ जे आवश्यक मार्गदर्शन रहेत हुनका घावनाक उद्देश कोण नकर करण काय त्यागत ? (22 शब्द)

II) एहम सौलकता स्वभावोक्तता सम्बन्धक आहि हम विशेषक विश्लेषण उदाहरण सेटत । (9)

III) प्रत्यक्ष अपेक्षा देशातन कऽ विविध प्रकारक पाक साहित्यक रसास्वादन ओ प्रकृतिक दर्शन कऽ अनिवार्य समजल आपन मतव्यक्तिगत रूप, उदाहरण आहि (21 शब्द)

5) एकवचन बहुवचन

सज्जन	सज्जनवृन्द
कवि	कविगण
हम	हमसब
सभासद	सभासदलोकनि

13.8 अनुक्रार्य

हों० अमरबाधाक आगाक पाठ ८ (a) १८ क' कथामें गद्य एवं पद्य शैली आधारपर विवेचन लिखू आवश्यक लगे पाठ विद्यार्थी सूचीक लिखू आवश्यक अछि

इकाई 14 मानविकी (ललित कला) क भाषा औ विश्लेषण

इकाईक सरंचना

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 [illegible]

14.3 [illegible]

14.4 [illegible]

14.5 [illegible]

14.6 [illegible]

14.7 [illegible]

14.8 [illegible]

14.9 [illegible]

14.10 [illegible]

14.11 [illegible]

14.12 [illegible]

14.13 [illegible]

14.14 [illegible]

14.15 [illegible]

14.16 [illegible]

14.17 [illegible]

14.18 [illegible]

14.19 [illegible]

14.20 [illegible]

14.21 [illegible]

14.22 [illegible]

14.0 उद्देश्य

[illegible] [illegible] [illegible] [

पाठक शिक्षित होना हमर सम्पत्तिक वैशिष्ट्यक धारणे धारणा छिक भारतीय कला संस्कारमे भाग लेने समे आँखि आ मनक पारस्परिक पूर्णविरोध आँखि उ कल्पनामे पाठक अपि एतुलका अनजानलक संग मिलिजुलि रहि सम्पर्कसँ रक्षा धारण करा दि होइ एकक आपसी अवलम्बनक परिणाम छिक ।

एहि इकाइमे हम मुख्यरूपेण व्यापक मूर्ति चित्र एवं संगीत कलाक धारा पर अछि पाठक गण से बोधगम्य हम पहिल अछि आँखिमे अनेकों पाठकें कुटुम्बमे धारण धारा पहिने देखब से विश्लेषणक प्रयास एहि पानमे केमो पहिल अछि एहि लेल स्वाभाविक पेनसनमे हम विश्लेषणक किछु पक्ष आ धरहरा बचा करने छी एहिमे अनेकों विश्लेषणक संग रेख पर्याप्त करबामे सहति पानल । एही हेतु नानान रचनामे हम अन्य सम्बन्धक चयनमे चिन्ता करने छी आहमे एक वाक्यशास्त्र लिए वस्तव आ कल्पक हो पर हमर अछि हम एहिन पहिल सम्भव समक रचनाक विषय आधार सम्बन्धमे विचार करबामे लाभ पानमे मोहि एहि प्रकारक पुस्तिकाके सुधारामे सहति धारा

14.2 भारतक ललिना कला

कला की छिक ?

कथालोकनिमे एत्र सम्बन्धे विवरण किछु एहन प्रश्न अछि जकरा विषय प्रकाशक आनन्दक अनुभूति हएत्र । कलाकार जखनिक श्रेष्ठताक सम्बन्धे कलाकार संगीत सुन्दरक या कलाकार शिल्पकक कलाकार सम्बन्धे कलाकार कलाकार कलाकार

हेतु करैत अछि आ ललित कलाक अन्तर्गत अबैत अछि फलतः सौन्दर्यात्मक उद्देश्यक रूपे अछि जे हमर मन-आत्माकेँ आनन्द दैछ ।

4) एहेन हम सभटा ललित कलाक चर्चा करब ललित कला कतेक अछि से अहाँ जनैत छी । अहाँ नाओनहरकेँ देखने होयब, देखने जँ नहियो होयब तँ ओकर वास्तुकलात्मकताक प्रशंसा अवश्ये सुनने होयब । मजबूत मुगल आ विभिन्न चित्रशैलीकेँ संग देखने होयब, भीमसेन आशे या गुमथुइ मल्लिकक गायन सुनने होयब विद्यापतिक गीत आ चन्दा झाक रामायण बजने होयब हरिमोहनझाक 'कन्यादान' वा लिखने एक 'सरीफिका' पढ़ने होयब तथा अनकानक हिट्टी आ मैथिली चलचित्र देखने होयब । ई सभटा ललित कला थिक । एहि ललित कलाकेँ हम पाँच वर्गमे विभाजित कऽ सकैत छी स्थापत्य (गृहनिर्माण), मूर्ति, चित्र, संगीत आ काव्य ।

14.2.1 ललित कलाक भिन्न भिन्न स्वरूप

5) जीवनक एक महत्वपूर्ण अंग आ बेगरता थिक आवास । ई हमर छोट मन मसोसि थिक जतऽ हम जनमैत आ बढ़ैत छी आ जतऽ हमर सुख दुखमे भरल जीवनक कतोक क्षण बितैत अछि । जैठाम थिक ओ मनुष्य अपना लेल सभ सुविधासँ परिपूर्ण आवास टा नहि, अपितु भव्यता आ सुन्दरता सेहो देखऽ चाहैत अछि एहि लेल प्रयोजनीय होइत अछि वास्तुकला आ स्थापत्यक अनुरूप घर बनायब । तेँ ई कला' थिक । एहि कलाकेँ सफल करबा लेल वास्तुकलाक विशेष महत्वमे लोक एहि दुआकेँ पूर्ण करैत अछि जे स्थापत्य कलाक अभिव्यक्ति होइत अछि भवन महल पुल पूजाघर मन्दिर, मस्जिद गुरुद्वारा गिरिजाघर आदि) स्थापत्यक निर्माण सहजे नहि भऽ जाइत होइत अछि ।

6) मन्दिरमे स्थापित मूर्ति जाहिमे भक्तगण ईश्वरक साक्षात रूपक दर्शन करैछ मूर्तिकलाक उत्कृष्टताकेँ अभिव्यक्त करैत अछि । मूर्तिकलामे जतऽ शारीरिक सौन्दर्यक कलात्मक निर्माण होइत अछि ओतहिठाम मूर्तिक मुखमंडलपर विभिन्न भाव वा मुद्राकेँ जीवन्त करब ओकर महत्वपूर्ण अंग थिक स्थापत्य कलामे पाथरपर छेनी हथौड़ीक चारीक चोटसँ सुन्दर आकृति बनाओल जाइत अछि । मूर्ति सेहो पाथरकेँ तराशिकऽ बनैत अछि धातु, काठ आ कतोक ठाम तँ मूर्तिक रचना हाथसँ रहल अछि स्थापत्य जे पाथर अथवा कोनाक मुख्य कलाक आधार अछि आ चाहे मूर्तिक पाछाँ पाछाँ चलैत अछि स्थापत्य आ मूर्तिकलामेँ स्थापत्य बेसी स्थूल कोटिक थिक ।

7) भवन आ मन्दिरक भित्ति सभ कोनमे आ ऊँच नीचमे होइत अछि तेँ एकरा त्रिआयामी कला कहल जाइछ चित्रकला द्विआयामी होइत अछि किएक तँ चित्रादिक निर्माण मात्र चारू कातमे होइत अछि चित्रकार कागज कपड़ा अथवा भित्ति देवाल पर रंग रेखामेँ चित्र बनबैत अछि । स्थापत्य आ मूर्तिकलाक अपेक्षा चित्रकला जीवनक बहुआयामी अंकन कऽ सकैछ । एहि सभ कलामे चित्रकला सभसँ बेसी सूक्ष्म थिक ।

8) जँ अहाँ स्थापत्य मूर्ति आ चित्रकलापर ध्यान देने होइ तँ अहाँकेँ किछु समान विशेषतापर नजरि पड़ल होयत जेना ई सभ कला 'दिक्' पर आधारित अछि, कारण एहि सभकेँ हम दिक (Space) मे ग्रहण करैत छी , जतऽ धरि भौतिक उपादानक प्रश्न अछि से एहि सभ कलामे जेना स्थापत्यमे पाथर सुरकाम पाथर माटि धातु अथवा काठ आदि सामंजस्यक बनाओल जाइछ । संगीत आ काव्यकलामे भौतिक उपादानक बेगरता नहि होइछ दोसर प्रकारक भिन्नता ई होइत अछि जे संगीत एवं काव्यकला काल आश्रयित थिक अर्थात एहि कलाक आस्वादन हम कालक प्रवाहमे करैत छी तेसर प्रकारक भिन्नता स्थापत्यक अछि स्थापत्य, मूर्ति आ चित्रकलामे कलाकार भावनिक भाव आ विचारात्मक अभिव्यक्ति स्थूल रूपमे होइछ जखन कि संगीत एवं

काव्यमे सूक्ष्म रूपमे सन्निहित कलाक आयाम स्तर आ लय जकरा कालाकार गायन अथवा वादन द्वारा प्रकट करैछ सांगीतिक भावनात्मक आवेग अवधारणक सूक्ष्मताकेँ व्यक्त कयल जा सकैत अछि । तेँ संगीत काव्यसँ बेसी भावप्रधान कहल जाइछ

9) काव्य आ साहित्य सभमेँ फराक सुरंक कला थिक । एहिमे भाषाकेँ कला रचनाक उपकरणक रूपमे प्रयुक्त कयल जाइत अछि साहित्य सभमेँ सूक्ष्म कला थिक कारण एकरा माध्यम हम अपन भाव आ विचारक जटिलता आ सूक्ष्मताकेँ सहजहि प्रस्तुत कऽ सकैत छी काव्यमे कलाक विधा अबैत अछि जेना कथा उपन्यास नाटक कविता आदि नाटक एहि दृष्टिमेँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तेँ रंगमंचपर नाटकक प्रस्तुतिमे आनि आन कलाक संग समावेश भऽ जाइत अछि नृत्यक संग नाटक आ संगीत दुनूमेँ अछि फलतः एकरा दुनू कलामे सम्मिलित कयल जा सकैछ ।

0) अहाँक मनमे स्वाभाविक रूपेँ ई प्रश्न उठल होयत जे 'फिल्म' कला थिक / आ फोटोग्राफी ? निश्चित रूपेण ई दुनू कला थिक फिल्मकेँ नाट्यकला आ फोटोग्राफीकेँ चित्रकलाक विकास कहल जाइत अछि । वस्तुतः आधुनिक तकनीक एहि दुनू कलाकेँ संघर्ष बनौलक अछि ।

बोध प्रश्न

1) नीचाँ किछु शब्द आ ओकर आकृति देल गेल अछि एकरा सभकेँ ठीकसँ मिलान करू

1) मनुष्यक द्वारा कृत्रिमतासँ कयल गेल काज	क) स्थापत्य कला
2) भौतिक उपयोगसँ प्रेरित भऽ कयल गेल काज	ख) संगीतकला
3) सौन्दर्यक उद्देश्यसँ प्रेरित भऽ कयल गेल काज	ग) उपयोगी कला
4) नाम धाकर आ उँचाइमे निर्मित कला	घ) चित्रकला
5) काल आधारित कला	ङ) मूर्तिकला

2) नीचाँ देल गेल ललित कलासभकेँ विभाजित करू

कलाक नाम	काल आधारित	दिक् आधारित	त्रिआयामी	द्विआयामी	दृश्यकला	श्रव्यकला
	क	ख	ग	घ	ङ	च
स्थापत्य						
चित्रकला						
मूर्तिकला						
संगीतकला						
काव्य						
नाटक						
फिल्म						
फोटोग्राफी						

11) एवढा बृहत्काल वर आहोंकि मनमें कदाचित हे जिज्ञासा उत्पन्न होणंच स्वाभाविक अहि जे भारतमें एहि कलात्मक विकास कहिया आ कोना भेल । तँ आठ आहोंकें एकर पाछ बहुत परिश्रम कऽ देी । भारतीय ललित कलाक इतिहास जतेक पुरान अहि जतेक भारतक इतिहास अहोंकें बुझल होयत जे भारतक सभ्यताक आरंभ हड़प्पा सभ्यतासँ मानल गेल अहि । ई सभ्यता पाँच हजार वर्षसँ बेसी पुरान अहि । एकर अवशेषकें देखलासँ ई स्पष्ट भऽ जाइत अहि जे भारतमें ललित कलाक विकास हड़प्पासँ पुरान अहि किएक तँ ई सभ्यता खूब विकसित सभ्यता छल । आठ पाँचोटा ललित कलासँ अहोंकें परिचय करबैत छी ।

14.2.2 स्थापत्य कला

12) अहाँ इतिहासक पोथीमें मोहनजोदड़ो आ कालीबंगामें भेल उत्खननसँ भेटल अवशेषक देखने होयब । एहि सभ्यताकें देखि अहाँ स्थापत्यक अवस्था आ विकासक [illegible] । सकैत छी जे [illegible] योजनाबद्ध ढंगसँ बनल होइत छल आ दुनूटा होइत रहय । सभ घर [illegible] स्नानघरक सम्बन्ध छलपर जखन आ [illegible] । एकर [illegible] पानिक खूब नमहर चौहद्दी बाँधल गेल बड़ी आ पोखनीक व्यवस्था [illegible] । छतलेक अवशेषमें दुनू आ तुरंत भेटि अहि । एहिसँ स्पष्ट अहि जे तत्कालीन [illegible] किला बनेबा आ सुन्दर घर पैघ बाहर छल आ ओकर निर्माण नगरीय जीवनक आवश्यकता अनुकूल कयल जाइत छल ।

[illegible] । [illegible] अहि । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

14 [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

5. द्रविड़ शैली मंदिरों में प्रवेश हेतु एक अति ऊँचे शैलीकृत मंडपम आकृतियों द्वार, जिसे गोपुरम कहते आइए इसके ऊँचे होते अति से आ प्रधान मंदिरों के शिखरों कलाकृति और झाँपि देख आते। मुख्य देवता मंदिरों के गर्भगृह आ कोष्ठाकारमक मंदिर पूर्व ऊँचे आ गोपुरमक अनुकलाकृतिक आंतरिक से दूसरे सम्बन्ध वास्तुक समर्थनताओं वृद्धिए कौन अति, घटनेत नहि अति।

6. द्रविड़ शैलीक आरंभ इसाक शताब्दी भाग पल्लव आरंभ एकाश्म शैलालोकनिक मंदिरों भाग से कांचीपुरम कलाकृति अति शैलीक महत्वपूर्ण मन्दिर वनौलनि तंजौरक चोल राजराजेश्वर संदर्भ मंदिर विशेषाम स्तुत्व प्रसाद रहल। तंजौरक विशाल बृहदीश्वर आ गंगैकोण्डम मंदिर स्थापत्यक दृष्टिसँ अवलोकनीय अति। द्रविड़ शैलीक मंदिरसमूहक अंतिम संस्कृत पालसम श्रीरंगम् क मंदिर विशाली आ भव्य अति रामेश्वरम मंदिर शैलीक मंदिर गोपुर दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अति मदुराइक विशाल मीनाक्षी मंदिर स्थापत्य शैली विकसित नायक। १६ वम शताब्दीमे। कलाकृति गोपुर अति भव्य अति एहन गहन पारंपरिक अभिव्यक्ति आन कोन प्रदेशमे बनाओल होइत अति। रामेश्वरमके मन्दिर तँ आओ पवित्र तीर्थ आ स्थानो अत्यंत सुन्दर अवश्य भाँति अति।

7. अहाँ सारनाथ आ साँचीक बौद्ध स्तूप देखने होयब। धर्मराजिका स्तूप बहुत नामी अति स्तूप वस्तुतः एक पवित्रक समाधि स्थान हेतु अर्द्ध गोलाकार आकृति बनाओल जाइत अति। मूलतः ईसासँ पहिने शताब्दीमे ईंट आ पाथरसँ बनाओल गेल छोट छोट आकारक ईंट आ पाथरसँ अर्द्धगोलाकार ढाँचा आ संरचना बनाओल गेल। अहाँ सोचैत भेलहुँ जे ई ढाँचा किएक बनाओल गेल? एहिसँ वास्तवमे सौन्दर्य आ सांकेतिक भावनाक विशेषता बनि जे मनोहर एतबाम्हन संस्कृतिमे प्रथम अभिलेखिक अनुकूल स्थापत्य कलाक रूप लैत गेलनि। मूलतः इसा पूर्व शताब्दीमे हिन्दू आ बौद्धधर्मावलम्बी धार्मिक आ पवित्र स्थल अति। किन्तु अपन सरहक एकमात्र साक्ष्य (अवशेष) कुशनकालीन निर्माणमे हिन्दू वास्तुकारक योगदान रहल अति गौणरूपक प्रसिद्ध अमरावती महाचैत्य अकबर द्वारा बनाओल आगराक किला आ फतेहपुर सीकरीक कलाक भवनमे मुगलकालमे पूर्व भारतीय स्थापत्य शैलीक प्रभाव देखल जा सकैत अति विशेष हुमायूँक मकबरा ई वास्तवमे वास्तुकलाक मुगलशैलीक आभास देइत अकबर तथा मकबराक इसानो शैलीमे बनाओल गेलनि औरंगजेबके छोड़ि प्राय सभ मुसलमान शासक कलाक उत्थानमे योगदान देलनि मुदा एहिमे शाहजहाँक योगदान अविस्मरणीय अति ओ दिल्लीक लालकिला सहित बहुतो भव्य भवन बनबौलनि मुदा मुगल सभमे सुन्दर आ सौम्य वास्तुकलाक विकास करबाय श्रेय स्थापत्य कलाक शिखरपर पहुँचा देलनि वास्तवमे तँ अपने अनुपम आ विलक्षण सौन्दर्यक कारण विश्वक आठ आश्चर्यमे एक मानल जाइत अति शाहजहाँ अपन प्रिय पत्नी आरजुमंद बानु बेगम मुमताज महलक स्मृतिमे एकटा बनबौन छलाह। आगरा यमुनाक कछरपर उज्जर संगमरमरसँ बनल ई मकबरा अपन शालीनता आ

14.2.3 मूर्तिकला

[illegible]

20) [illegible]

[illegible]

[illegible] शैलीक विकास भेल एहि शैलीक मूर्तिक्रम बौद्ध स्थल सभहँ उपलब्ध भेल अछि। बुद्धक मूर्ति गुप्तकाला [illegible] भेल। प्रथम सहस्राब्दक धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रामे बैसल बुद्धमूर्ति शिल्पकला आ सौन्दर्य दृष्टिसँ अद्वितीय अछि वस्तुतः मूर्तिकलाक विकासमे बौद्ध धर्मक अपूर्व योगदान रहलहुँए अछि।

22) हिन्दू धर्मक मूर्तिपूजा वैशाख पर्यन्त प्रमुख आधार रहल अछि। [illegible] आधारभूत तथ्य मूर्तिसंरचनाक [illegible] वैशाख पर्यन्त प्रमुख अंग अछि। [illegible] विभिन्न अवतार तथा अन्य [illegible] बहुत परिवर्तन [illegible] अछि। [illegible] प्रतीक पूजा भेल। किन्तु [illegible] मूर्ति [illegible] मूर्तिकी प्रति [illegible] अछि। [illegible] प्रतीक [illegible] मूर्ति [illegible] मूर्तिक [illegible] अछि। [illegible] मूर्तिक [illegible] [illegible] मूर्तिक [illegible] [illegible] [illegible]

I) चित्रांकित कलाकृतीस सदर कलाकार चित्रशाखेचे असून अजिंठा एक गाव विशेषता संगीतमय केंद्र म्हणून आहे, बरोबर ।

क) संगीत काल आधारित कलाकृती चित्रे ।

ख) संगीत दिग्गजांची कला चित्रे ।

ग) संगीतिक साधने कलाकारांचे भावसमाधी आधारित दाखवित आहे ।

घ) संगीतामध्ये कलाकार आधार स्वर आणि ताल आहे । ( )

4) खालील प्रश्नांची उत्तरे लिहा ।

I) चित्रातील शैलीविषयक नाव लिहा ।

II) भारतातील स्वतंत्र कलाकार कोणत्या तीन शैलींचा नावे लिहा ?

III) गायन शैली कलेचा कलाकार आहात कसे ?

14.2.4 चित्रकला

चित्रकला ही एक दृश्य कला (दृश्य माध्यमाद्वारे) आहे. ही रेषा, रंग, आकार, पोत, रूप, मूल्य आणि अवकाश यांसारख्या घटकांचा वापर करून द्विमितीय पृष्ठभागावर (जसे की कागद किंवा कॅनव्हास) तयार केली जाते. चित्रकला ही एक अत्यंत प्राचीन कला आहे जी मानवी संस्कृतीच्या सुरुवातीपासून अस्तित्वात आहे. चित्रकलेचे विविध प्रकार आणि शैली आहेत, जसे की वास्तववादी, अमूर्त, प्रभाववादी, घनवादी, अतिवास्तववादी, इत्यादी. चित्रकार विविध माध्यमांचा वापर करतात, जसे की तैलरंग, जलरंग, ॲक्रेलिक रंग, पेस्टल, शाई, इत्यादी.

चित्रकलेचे विषय आणि उद्देश खूप वैविध्यपूर्ण असू शकतात. काही चित्रे निसर्गाचे सौंदर्य टिपतात, तर काही चित्रे सामाजिक, राजकीय किंवा वैयक्तिक भावना व्यक्त करतात. काही चित्रे केवळ सजावटीसाठी असतात, तर काही चित्रे विचार करायला लावतात. चित्रकला ही एक अशी कला आहे जी प्रेक्षकांना वेगवेगळ्या पातळ्यांवर प्रतिसाद देण्यास प्रवृत्त करते.

1. अजिंठा शैली
2. गुजरात शैली
3. मोगल शैली
4. राजपूत शैली
5. दख्खनी शैली
6. आधुनिक शैली

चित्रकला ही एक अशी कला आहे जी दृश्य माध्यमाद्वारे भावना, विचार आणि कल्पना व्यक्त करते. चित्रकार विविध साधने आणि तंत्रांचा वापर करून द्विमितीय पृष्ठभागावर (जसे की कागद किंवा कॅनव्हास) प्रतिमा तयार करतात. चित्रकलेचे विविध प्रकार आणि शैली आहेत, जसे की वास्तववादी, अमूर्त, प्रभाववादी, घनवादी, अतिवास्तववादी, इत्यादी. चित्रकार विविध माध्यमांचा वापर करतात, जसे की तैलरंग, जलरंग, ॲक्रेलिक रंग, पेस्टल, शाई, इत्यादी.

कौशलके प्रदर्शित कयलनि अछि एवं एहि पर पाछाँ देब लगा सुन्दर आ सजीव रूपमे चित्रित कयल गेल अछि । एहिमे अद्भुत कल्पनाक दर्शन होइत अछि

16 गुजरात शैलीक दोसर नाम जैन शैली अछि किएक तँ एहि शैलीमे चौरंगकल्प जैन कल्पसूत्रक ग्रन्थ चित्रक कयल गेल अछि एहन शैलीक चित्र बेसी पढ़ल जाइत अछि एहो शैलीमे लघुचित्र जैन लिखितक सह उपलब्ध अछि एकर विषय धार्मिक नहि, लौकिक अछि ।

17 मुगलकालीन शैली भारतीय चित्रकलाक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अछि किएक तँ ई शैली एकमात्र ई भारतक मध्यकालीन एकमात्र धर्मनिरपेक्ष शैली अछि । मुगल शैलीक आरंभ हुमायूँ नामा ग्रन्थक चित्रसँ भेल । एहि कालक चित्रकारमे अब्दुस्समद मीरसैयद अली फर्रुखबेग आदि छलाह किएक तँ एहि समय चित्र कागजपर बनल छल आरंभिक मुगल चित्रकारी पूर्णतः फारसी शैली छल अकबरनामा रज्मनामा बाबरनामा चित्र एकर प्रमुख एहि प्रकार साहित्य आ चित्रकलाक सुन्दर समन्वय भेल मुगल शैलीमे लिखितकालिक महत्वपूर्ण स्थान अछि मुगल शैली प्रमुख चित्रकार विशन सिंह हरिवंश अनिरुद्ध सिंह मनोहर मुकुन्द आदि छलाह एहि समय चित्रकला प्राय भारतक सभ प्रांत धरि पहुँच गेल छल एहि समय चित्रकार द्वारा बनाओल चित्र छल

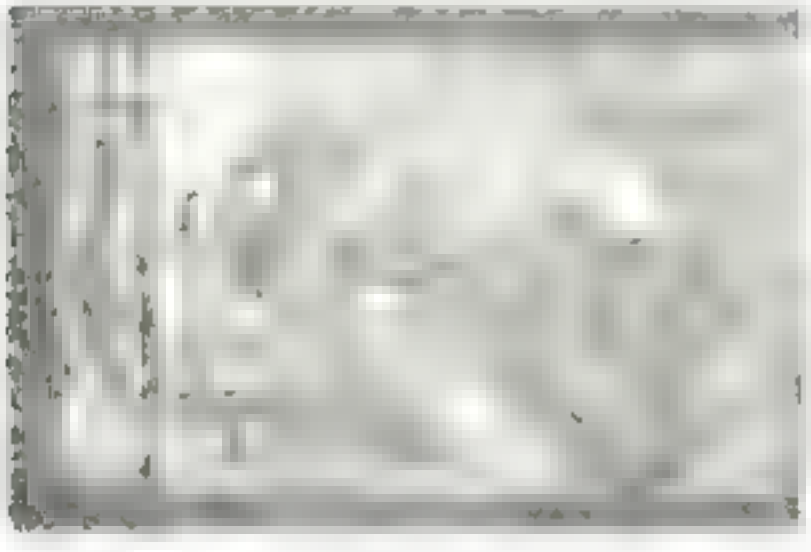

मुगल दरबार

18 राजपूत शैलीक विकास राजस्थान कुलसहित ई शैलीमे मालवा मालवा शैली एवं शैलीक चित्र मालवामे मालवा शैलीक अन्य राजपूत शैलीसँ मूल रूपमे देखल अछि पुरा अतिरिक्त एहिमे शैलीक प्रधान केन्द्र मेवाड़ छल । रङ्गक प्रयोग अधिक प्रमाणमे आ विशेष बनल एहि शैलीक चित्र बेसी परम्परागत प्रयोग करैत अछि स्थान विशेषक कारण एक दोसरसँ भिन्न भेल जाइत अछि इन पहाड़ी शैली उत्पन्न बहराय आदि ई शैली मध्यकालीन कलाक प्रतीक एहिमे चित्रित कयल अछि एकर कुछ प्रमुख महाकाव्य पुराण भागवतपुराण कि कुछ चित्र आ प्रकृति आधारित कला संगीत आ सांस्कृतिक आदर्श संबंधित अछि चित्रक चित्र एहि शैली अछि

19 दक्कनी शैला मालव शैलीमे एकमात्र प्रान्तीय शैली छिक यह मुसलमानी एहन अछि आ मुख्यत बीजापुर गोलकुण्डा एक विशेष चित्रकलाशैलीक

मुख्यतः यांत्रिक कलाक प्रभाव अछि मुदा अवनींद्र नाथ ठाकुरक प्रयत्नसँ अजन्ता आ मोगल शैलीकेँ पुनः विकसित करबाक काज कयल गेल। भारतीय कलाकेँ भारतीय आत्मबोधसँ जोड़बाक प्रयत्न अवनींद्र नाथ ठाकुरक संगहि नन्दलाल बसु, असित हालदार आदिक नाम प्रमुख अछि।

14.2.5 संगीत कला

30) संगीत संगीत कलाक अधिकार नहि लगैछ ? मुदा, रुचि विचारक कुआरेँ किछु गोर शास्त्रीय संगीतक आनन्द लेने छैक किछु गोर सुगम संगीतमे रमि जाइछ। किछु एहनो लोक छोड़ि जे मनोरंजक फिल्मीक संगीत सुनि झूमि उठैत छथि। गाम घरक लोक मगन भऽकऽ लोकगीत गबैत छथि। कलाक तात्पर्य जे कोनहुँ विशेष अवसर हो किंवा मनोरंजक आकर कल्पना निर्देशक स्वरूप। भारतमे ई प्रथा आदिसँ पुरान अछि अथवा सत्य। वटुक ऋचा पहिने गाओल जाइत छल आ अहाँ गाओल जाइत अछि। वस्तुतः, सामवेदक रचना ई एहने दृष्टिसँ भेल अछि। ई. शतीक प्रारंभमे भरत नाट्यशास्त्रमे मनोरंजक विशद व्याख्या प्रस्तुत कयलनि। कोलदास अपन विलक्षण रचना मालविकाग्निमित्र नाटकमे संगीत आ नृत्यसम्बन्धी विस्तृत विचार प्रस्तुत कयलनि। एहिसँ फलाफल भऽ गेल जे भारतीय शास्त्रीय संगीतक आरंभ बहुत पूर्वांह भेल छल।

31) भारतीय संगीत एक व्यक्तिगत प्रकृति थिक जे अपन सर्वोपरि अछि। राग स्वर ताल वादन गान आ अन्य संगीतक ई मूलभूत अंग मानल गेल अछि। रागक विकासमे मूलतत्त्व मनोरंजनक विशेष योगदान रहल अछि। ध्वनि वर्ण गति आदि अनेक तत्त्व पूर्णरूपेण कार्यान्वित भेल। एतबा अवश्य जे रागक लोकशैलीकेँ विकसित करऽ शास्त्रीय रूप देबाक महत्त्वपूर्ण कार्य संगीत मनीषी गायकलोकनि कयलनि। आइक प्रायः दुनू शास्त्रीय संगीतमे जतेक प्रचलित गायकशैली अछि।

32) संगीत संगीत मे कण्ठ एवं यन्त्र थिक। भारतीय संगीतमे गायकी प्रधानता रहल अछि। संगीत वैशिष्ट्य अछि। विशेष गायन शैली, भाषा भाव आदि अनेक शास्त्रीय तत्त्व रहैछ। श्रोता गायक वक्ता दोसर पक्षसँ शास्त्रीय रूपेण आत्म परिचय करैत छथि। अतः ई प्रधान गुणवत्ता मानल जाइछ।

33) भारतीय संगीतक दुइ प्रकार रहल अछि। शास्त्रीय आ लोकसंगीत। लोकसंगीत अपन अपन क्षेत्रक अनुरूप विकसित होइत रहल अछि। शास्त्रीय संगीतक दुइ रूप भेल हिन्दुस्तानी एवं कर्णाटक। हिन्दुस्तानी शैली मुख्यतः उत्तर भारतक क्षेत्रमे प्रचलित अछि। दक्षिण भारतमे कर्णाटक शैली। अवश्य जे दुनूमे मौलिक रूपेँ किछु अन्तर अछि। अन्य रागक अंग जे स्वरूप अछि तामेँ अन्तर नहि। अन्य गायकीमे कर्णाटक शैलीमे किछु परिवर्तन कयलनि। मुदा दुनिओक संगीत आदरक पात्र रहल। मुसलमान लोकनिक आगमनसँ भारतीय आ फलतः अपनो संगीतक अनेक रूप भेल। परिणामस्वरूप कतिपय नव नव रागक निर्माण भेल। लोकमे हिन्दुस्तानी संगीत अधिक लोकप्रिय भेल।

34) नृत्य ई संगीतक अंग मानल अछि। ऋग्वेदमे नृत्यक कलाक उल्लेख भेल अछि। शुक्लयजुर्वेदमे नृत्यक अनेक कतिपय रूपक अंकन भेल अछि। संगीत जकाँ नृत्यक क्षेत्रो दुइ भाग पाओल जाइछ। लोक आ शास्त्रीय। शास्त्रीय परम्परोक दुइ रूप अछि। उत्तर भारतीय आ दक्षिण भारतीय। उत्तर भारतीय नृत्यमे प्रमुख अछि– कत्थक। कत्थकक विकासमे मुसलमानी शासनकालमे सहायता भेल। कहल जाइत अछि जे अनेक नवल धारणा भेला सँ कत्थकमे विशेषता रहैछ। कत्थकमे भावक

अभिव्यक्ति साथ ही दर्शक तृप्तिसाधन महत्त्वपूर्ण महत्त्व आदि। मुद्रा का शास्त्रीय संचालनमें अवश्य भाव व्यक्त करते आती। भरतनाट्यम् अभिनय दासी प्रधान नृत्य कलाके कथकली आदि। संस्कृत है एक प्रकारका नृत्य नाटक विधि जाहिर कथाक नृत्यात्मक अभिव्यक्ति होता। शास्त्र पुस्तक कुचीपुडी आंध्रप्रदेश आंध्रपुरी मणिपुरी मणिपुरी आदि नृत्यके नाटकीय शास्त्रीय शैली गया। आधुनिक युगमें एक सभ नृत्य शैलीके संरक्षण और विकासमें करनेमें महत्त्वपूर्ण प्रयत्न चल रहे हैं।

14.2.6 काव्य कला

३९) एक इकाइमें हम काव्यके सर्व विस्तारसे नहीं कर सकेंगे किन्तु ने साहित्यिक अध्ययन यहाँ विस्तारसे कुछ चुकेंगे ही। एक सच्चा भारतीय साहित्यिक प्रत्येकमें विविधताके महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन प्रयास करेंगे। भारतीय साहित्यिक समर्थमें प्राचीन गुप्त कालदेवके कालिदास कला साहित्यिक उत्कृष्टताके प्रकट करेंगे। आनंदवर्धन काव्य सभ्यमें तत्कालीन जन की ओजपूर्ण हुआ रहे उत्साह उल्लास और आकांक्षा आदि अत्यन्त भावप्रधानताके रूप को कल्पनाशील रूपमें व्यक्त पाते। आधुनिक संस्कृतमें विशाल भारतके समर्थमें प्राचीन ग्रन्थ विधि। आदिकवि वाल्मीकिके रामायण को महाकाव्य महाभारत संस्कृतके अपर महाकाव्यके विधि कालिदासमें भवभूति माघ अश्वघोष आदि कितने प्रमुख संस्कृत रचनाकार हुए जो महान काव्यग्रन्थ अपने संस्कृत रचना कर्तृत्व। संस्कृतके अतिरिक्त प्राकृत पालि अपभ्रंश आदि भाषा यहां महान का विशेष साहित्यिक लिखे गये। एक भाषासमें मुख्यतः बौद्ध को जैन धर्मके पुस्तक साहित्यिक रचना गया। अपभ्रंशके कवियों आधुनिक भारतीय भाषाओंके जन्म दिये। प्राकृत बोलियों बांग्ला बंगला अथवा हिन्दी एवं मराठी पुरानी पुराने कहलाते आदि प्रमुख भाषा। धर्मशास्त्रीय साहित्य में एक हजार वर्षोंसे अधिक समय तक। दोहराते रहे भाषा साहित्य लेखनी सम्पन्नमें को कवियोंके साहित्यिक रूप महत्त्वपूर्ण और। भारतीय साहित्य में गद्य कहते भाषे पुराने पाते। भारतके गद्य आधुनिक भाषाओंमें कथा महत्त्वपूर्ण। ने विस्तार रचनाओंके स्थान पाते। और उपन्यास पर चलते।

३८) प्राचीन साहित्य पुस्तक कविता और नाटक कथा पुराने पाते। भारत भारतकलाके विकास चलते आते। यहां द्वारा भिन्नभिन्न भारतीयात्मक दृष्टियों साथ पाते। इसके अतिरिक्त कलाके आचार्य नाटकके विभिन्न और कथाओं विस्तारमें चर्चा करते रहे। भारतीय काव्यशास्त्रके प्रमुख सम्प्रदायोंके भारतीयमें प्रतिनिधित्व आयात। भारतीय परम्परामें भारतके तीन स्थान और से नाटकोंमें अपनेके स्थान होते। भारतमें संस्कृतके अनेकों विकास पाते। भारतीयात्मक रचना संस्कृत और उपभोगके पक्षपर विस्तारमें विचार करते गये।

३७) एक प्रकारसे भारतीय कलाके परम्परा अत्यन्त समृद्ध रहा। साहित्य कलाके सभ क्षेत्रमें भारतीय जन विस्तृत दृष्टिकोण दर्शन। मुख्यमें महत्त्वपूर्ण तथ्य ने है रहना। जो भारतीय भूमिमें और बनाकर विदेशोंसे भारतीय यात्रादिके भारतीय कलाको स्वतंत्रतन मनोरंजन करा। भारतीय कलाके जो स्वरूप हमारे सामने प्रकट। और एक सभ लोकके भावनाके सहयोगके साथ चलिये। एक। भारतीय यूनानी शक, कुषाण मुसलमान आदि वंशसमूह मुख्य।

योग्य पर्याय

5) निम्नलिखित चित्रशैली कोण कलेशी संबंधित आहे स्पष्ट करा.

I) गांधार शैली	[ ]	II) राजपूत शैली	[ ]
III) कंपनीकलेची	[ ]	IV) पहाडीचित्र	[ ]
V) मुघल	[ ]	VII) पहाडी कलम	[ ]

6) I) चौकटीत दिलेल्या नावा व्यतिरिक्त विशेष कलाचा प्रतिनिधित्व करीत असून एक गट नाव आहे कलाचा प्रतिनिधित्व नाही करीत आहे, ते कोण थिक ?

अ) कुचीपुडी

ब) कथकली

क) तुमरी

ड) आंध्रदेशी [ ]

II) चौकटी दिलेल्या नावा व्यतिरिक्त विविध शैलीचा प्रतिनिधित्व करीत आहे असून एक गट नाव अन्य गटामध्ये नाही करीत ते कोण थिक ?

अ) कथकली

ब) ओडिसी

क) कुचीपुडी

ड) कर्णाटक [ ]

7) I) स्पष्ट करा. (१) पुनर्जागरण काळ दोन वैशिष्ट्ये लिहा.

II) चित्रकलेचे विविध शैलीचे नाव लिहा.

III) शास्त्रीय संगीताचे दोन प्रमुख शैलीचे नावे उल्लेख करून त्यांची स्पष्ट करा.

IV) संगीत आणि काव्यकलेचे दोन समान विशेषतांचे उल्लेख करा.

14.3.1 विश्लेषण

[illegible] अनुपम सौन्दर्य । एतद् अनुपम लाक्षणिकलक्ष सौन्दर्यक विश्लेषण विधि ।

एहो प्रकारक किछु वाक्य देखी :

क) शाकवाहनक सांपदान अभिस्मरणीय अछि ।

ख) हिमाचल प्रदेशक मंदिर रमणीय अछि ।

[illegible]

आब एहि [illegible] शब्द संज्ञा अथवा [illegible] विशेषण कहल जाइछ ।

एहन वाक्यकेँ हम निम्नलिखित रूपमे सेहि सकैत छी ।

क) शाकवाहनक अभिस्मरणीय सांपदान

ख) [illegible]

ग) मूलमे रेखांकित सील विक्रमात्त जैन मंदिर

उपर्युक्त तीनू वाक्यमे रेखांकित शब्दक अर्थ विधि पाबि विश्लेषण करबामे आबि रहल अछि । एहि तीन गोट विशेषण विशेषण शब्दक [illegible] अर्थ विधि विशेषण कहल जाइछ । विशेषण शब्दक [illegible] विशेषण कहल जाइछ । विशेषण विशेषणकेँ पुनः विशेषणसँ आ 'पुनः विशेषण'केँ [illegible] विशेषण [illegible] छी ।

अभ्यास :

नीचाँ [illegible] पुनः विशेषणक' विशेषण निर्धारण [illegible]

1) वाक्य : भारत देश धर्मनिरपेक्ष अछि ।
भारत धर्मनिरपेक्ष देश अछि ।

II) रामचरितमानस नामक काव्य लोकप्रिय अछि ।

III. आमरा मिथिल शाकमछलि भक्ष्य अछि ।

IV [illegible]

(V) ओ व्यक्ति महान छथि ।

विविधा

१) निम्नांकित वाक्यमे प्रयुक्त विशेष्य विशेषणक पूरक विशेषणमे परिवर्तित करू

I) ओ केहन स्वस्थ मेना अछि ।

II) 'कन्यादान' हरिमोहनझाक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास अछि ।

III) मूर्तिकलाक विकासमे बौद्ध धर्मक उल्लेखनीय योगदान अछि ।

IV) पौर्वकालीन मूर्तिमे अद्भुत सौन्दर्य अछि ।

विशेषणकेँ संज्ञामे परिवर्तित करब

विशेषणकेँ संज्ञामे परिवर्तित करब सेहो अति आवश्यक भऽ जाइत अछि । जेना कन्यादान एक लोकप्रिय उपन्यासक नाम अछि । कन्यादान नामक उपन्यासक लोकप्रियता कारणसँ बदलि सकैत अछि । पुनः लोकप्रियक संज्ञा बनि । उपन्यास नामक 'मन्दिरक रमणीयता'मे परिवर्तित कऽ सकैत अछि

[redacted]

१ निम्नांकित वाक्यमे प्रयुक्त विशेषणकेँ संज्ञामे परिवर्तित करू

I) ओ केहन स्वस्थ मेना अछि । ( )

II) भारत देश धर्मनिरपेक्ष अछि । ( )

III) ओ रोगसँ दुर्बल भऽ गेल अछि । ( )

प्रविशेषण

एहि पाठमे अहाँ पढ़ि चुकल छी जे जतऽ विशेषणक प्रयोग कयल गेल अछि ओतऽ कर्तामे वा अन्यत्र बेसी बहुत ओहि शब्दसमूहक प्रयोग विशेषणसँ पूर्वहि भेल अछि यथा अत्यंत सुन्दर मूर्ति, विशेष सम्मेलनमे अहि वाक्य प्रयोग । अर्थात विशेषणकेँ आर विशिष्ट करबामे प्रकट करबाक लेल अत्यन्त, विशेष, बहुत आदि शब्दसमूहक प्रयोग कयल जाइत अछि । एकरहि प्रविशेषण कहल जाइत अछि ।

एतय किछु प्रविशेषण देल अछि एकरा वाक्यमे प्रयोग करू

अति, अत्यंत, विशेष, बेसी, बहुत ।

विशेषणक तुलना

अहाँ पढ़ने निम्न वाक्यसमूहकेँ पढ़ने होयब :

१) संगीत कलासँ बेसी भावप्रधान होइत ।

२ स्थापत्य आ मूर्तिकलासँ स्थापत्य अत्यंत स्थूल कला अछि

३) संस्कृत भारतक सभसँ प्राचीन भाषा थिक ।

४) एहि तीनूमे चित्रकला सभसँ अधिक सूक्ष्म कला अछि

उपर्युक्त चारू वाक्यमे विभिन्न वस्तुक विशेषता कहल गेल अछि मुदा आन वस्तुक तुलनामे पहिल दुइ वाक्यमे दुइ वस्तुक परस्पर तुलना कयल गेल अछि जखन कि शेष दुइ वाक्यमे दुइसँ बेसी वस्तुक तुलना कयल गेल अछि ।

दुइ वस्तु व्यक्तिक तुलना अतः दुइ वस्तु अथवा व्यक्तिक विशेषताक तुलनात्मक रूपमे प्रस्तुत कयल जायत आओर वाक्य रचना निम्नवत होयत

I) राम गोपालसँ पैघ अछि ।

II) श्याम आ गोपालमे राम पैघ अछि ।

पहिलुक वाक्यम तुलना लाग मे आ दोसर वाक्यमे मे क प्रयोग अछि । दुनू वाक्य रचनासँ एकर कारण आहाँ बुझि गेल होयब ।

दुइसँ बेसी वस्तु/व्यक्तिक तुलना अतः दुइसँ बेसी वस्तु अथवा व्यक्तिक विशेषताक तुलनात्मक रूपमे प्रस्तुत कयल जायत तँ आओर वाक्य रचना निम्नवत होयत :

I) राम अपन वर्गमे सभसँ पैघ अछि ।

II) भारतमे अनेक भाषा बालल जाइत अछि, ताहिमे हिन्दी सभसँ बेसी बालल जाइछ

अहाँ एतय देखब जे एहि प्रकारक वाक्यमे आना तुलना दुइसँ बेसी वस्तुक कयल गेल अछि आ अतिशयसँ काजा एकक सभसँ बेसी अथवा कम विशेषतायुक्त बतायल गेल अछि तहि लेल एहन वाक्यमे 'सभसँ'क प्रयोग होयत ।

अभ्यास

+ निम्न वाक्यमे दुइ वस्तु अथवा व्यक्तिक तुलना कयल गेल अछि अहाँ एहि वाक्यक भिन्न रूपमे लिखू ।

उदाहरण :

I) राम श्यामसँ पैघ अछि ।

राम आ श्याममे राम पैघ अछि ।

II) 'हिरामन'सँ 'कन्यादान' बेसी लोकप्रिय अछि ।

III) संगीत काव्यसँ बेसी भावप्रधान अछि ।

IV) स्थापत्य आ मूर्तिकलामे स्थापत्य बेसी स्थूल कला छिक

V) गोपाल विनोदसँ बेसी चपल अछि ।

14.3.2 वाक्य-रचना

वाक्य रचनामे कारि वस्तुक ध्यान राखब आवश्यक अछि :

I) क्रम

II) संगति

III) अभ्यास

IV) लाघव

क्रम :

(1) सामान्य नियम है कर्ता से वाक्यांश प्रारंभ होता है तत्पश्चात् क्रिया फिर पूरक और पुनः पूरक विस्तार अथवा अधिक वाचक शब्दों जोड़ने अवरोह जैसा- 'काली गाय घरक लक्ष्मी हांडछ' ।

2. कर्म कर्मवाच्य क्रियाक पहिने राखल जाइछ , जखन कर्म पुरुषक पहिने छी गोविन्द आम खाइत छथि अथवा अकर्मक क्रियाक पूर्व कर्मसँ पहिने राखल जाइछ जेना- केना खाने सूतल अछि । मो निन्नसँ खसि उठल ।

द्विकर्मक क्रिया, जौ कर्म ओहन अवैध गुरुजन + मुख्य कर्म यथा- गाय सुशीलक राजा कहैलनि । शिक्षक छात्रकेँ रेखागणित पढ़ौलनि ।

4 कर्म कर्मवाच्य अन्यान्य वा कर्मवाच्य अन्तिम क्रियाक सन्निकट राखब आवश्यक छैक आन कोनो विशेषक कर्मो पूर्व राखब आवश्यक अछि जखन एकसँ अधिक वस्तुक अपेक्षा वस्तु [illegible] राखब [illegible] जाइछ तँ सम्बन्धी के [illegible] सम्बन्धी शब्दक पश्चात् राखल जाइछ । यथा- हम छोट लाल कलम लाल लाल पर्दा [illegible] कीनब [illegible] लऽ सकैत छी ।

5) सम्बोधन [illegible] प्रथम + दुनू पूरा कर्ता

6) सामान्य [illegible] क्रियाक [illegible] जेना- छात्र सभ गाम चलिअऽ सुखपूर्वक पैसल अछि ।

7) काल [illegible] आ [illegible]

अभिप्राय बुझबा लेल निम्नक विषय द्रष्टव्य-

राम जे नीक छात्र से सभ कियेक जाय ।

एहि जगह पाँच व्यक्तिक हेतु पैंच चाहैत ।

सङ्गति :

वाक्यमे [illegible] अनुकूलताक [illegible] क्रियामे [illegible] भावो शब्द एहन [illegible] करबा चाहत ।

संज्ञा और क्रियाक संगति :

पैंचिल्ला क्रियाक [illegible] व्यवहृत भेनाइ [illegible] अनुसार किछु [illegible] जेना- छात्रक सर्वनाम जे उद्देश्य वा विधेयमे आबय तदनुकूल [illegible]

क्रियाक [illegible] क्रियाक हेतु जे पैंचिल्ला क्रियाक हे विशेषता भागलपैयाक [illegible] ।

पुदा मैथिलीमे दु, वचन आ लिंगमे समान रूप हएत यद्यपि एक लेखु छी स्त्रीलिंग वा छी स्त्री वा पुरुष पुदा आन पुरुषक कोना सँहि सम्पर्क सर्वाह क्रियाक रूप बदलि जाइछ, तथा हम नाहरा मड चलैत छियहु हुनका सड चलैत छियनि आदि व्याकरणमे जायत

संज्ञा आ सर्वनामक संगति :

संज्ञाक लिंग वचन पुरुष आ सर्वनामे भाव अर्थवत्ती सहि एम

श्यामसुन्दर गाम गेल छथि आ चारि दिन बहि औतह ।

बृथना गाम गेल अछि, आ चारि दिन बहि आओत ।

बालिकालोकनि पढ़ए गेलि अछि, आसन चारि बजे धरि ।

स्त्रीगण गंगास्नान गेलि छथि, आलकाल्हि अति औतीह ।

विशेष्य आ विशेषणक संगति :

विशेष्य आ विशेषणमे मात्र आहो रहा प्रयोग हएत, तथा व्याकरणमे लिंग परिवर्तन हएत, हिनि स्थानमे पुलिंगवाची विशेषणक रूप पुलिंग विशेष्यक आ स्त्रीलिंगवाची विशेषणक रूप स्त्रीलिंग विशेष्यक अवेश आन ठाम सम्पर्क रूप एक रहत अर्थात् विशेषणक कोनो परिवर्तन नहि भए

ई स्त्री बड़ दयालि किन्तु ई पुरुष बड़ निर्दयी अछि ।

धीरा भारी पोथा पढ़ए आ बड़ पण्डिता बनि गेलि अछि । हिनि कोनो काज नहि करथि' आदि रूप नहि होएत ।

क्रिया सम्बन्धी द्योतक संगति :

किछु सर्वनाम विशेषणिसभ्यो सँ अन्यान्य प्रकार क्रियाक सहित व्यवहृत होइत रहथि भेलासँ दासीक अपेक्षा अनेकानो पर बहुत बेसी स्वतन्त्रता आछए स्वतन्त्रता बोध भेलासँ अथवा ओहिपर बहुत अधिक अवलम्बन होएबाक कारणसँ [illegible] ई दुटि [illegible] मे अक्षान सम्बन्ध, जैं-तैं, जेहन तेहन, जतेक-ततेक आदि ।

जैं अर्था हो तैं यान होएतो ।

यद्यपि हम अनहि सम्पर्क [illegible] किन्तु तत्र [illegible]

यद्यपि एतेक भेलनि, तैयो लोभ बढ़ले जाइ छनि ।

राम तँ आयल, मुदा श्याम नहि आयल ।

जे एहन पापी अछि, से दण्डित किएक ने हो ?

बखान पुस्तिए होएत स्वालोह सखान के मिथ्या हएत ?

लाघवे

भाइसँ बाड़ शब्दमे बहुसँ बात पुरुष के [illegible] लाघवे बाड़ शब्द लाघवक अर्थ दु यदि सिकैके ई अर्थ चिन्तु बात [illegible] करबाक हेतु लाघवक बदला वाक्य विस्तृत भए सकैछ ई क्रमे लाघवे रहि [illegible]

अभ्यास

अभ्यास हुन्छ [illegible] अभ्यासक व्यक्तिमा [illegible] ।

मातृभाषा अभ्यास [illegible] ।

अभ्यास १

क) [illegible]

ख) [illegible]

ग) [illegible]

घ) [illegible]

ङ) [illegible]

14.4 सारांश

- मानविकीक भाषाप्रयोग सिद्धान्तक सहटे कहाँ भारतीय ललित कलाक विकासक परिचय प्राप्त कयलहुँ। ताहिमे अहाँ भारतीय ललित कलात्मक विकास स्वयं अपना भाषामे बुझा सकैत छी
- एहि पाठमे विश्लेषणात्मक अधिकांशिक प्रयोग भेल अछि एहि सब व्याकरणिक विवरणमे विश्लेषणक अध्ययन द्वारा समर्थन सदर्भक प्रयोग अहाँ सिखल छी। आब अहाँ स्वयं विश्लेषणक उचित रीतिसँ प्रयोग कऽ सकैत छी।
- विश्लेषण शब्दक संज्ञा शब्दमे परिवर्तन करब सिखलहुँ। अहाँ स्वयं विश्लेषणकेँ संज्ञामे परिवर्तित कऽ सकैत छी। अहाँ विश्लेषणक माहा ठीक ठीक प्रयोग कऽ सकैत छी
- ६ अथवा तहिसँ अधिक वस्तुक तुलनात्मक वाक्यकेँ उचित रूपमे लिखब सेहो सिखलहुँ।
- वाक्य रचनाक अन्तर्गत प्रकार क्रम संगति लाघव एवं अर्थात्मक संगति वाक्यमे भिन्न वचन आदिक प्रयोग संबंध अहाँ पढ़लहुँ आब अहाँ एहि आधारपर स्वयं वाक्य रचना कऽ सकैत छी।

14.5 सहायक पोथी

पौथली व्याकरण एवं रचना खगेन्द्र झा फकौ मयंक एण्ड

14.6 बोध प्रश्न/ अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न

१) (I) च (II) ग (III) क (IV) ङ (V) ख

2) चित्रकला – ख, घ, ङ
मूर्तिकला ख ग ङ
वास्तुकला क घ
काव्य क ग
नृत्य क ख ङ घ
गायन क ख ङ च
चित्रपट – क, ख, घ, ङ, च
फोटोग्राफी ख घ ङ

3) I ग (II. ख

4) I) द्रविड शैली, नागर शैली एवं वेसर शैली
II) आगराक ताजमहल
दिल्लीक लालकिला
दिल्लीक जामा मस्जिद

[II] संस्कार प्रदर्शन गीक कलाकार अपन शैलीमे जाहि भारतीय विषयसमक अभिप्राय प्रतीकक कलात्मक रूपक्रम कएलनि ओ संस्कार शैलीक नामसँ जानल जाइत अछि

5) I) मूर्तिकला II) चित्रकला III) नृत्य
IV) संगीत V) संगीत VI) चित्रकला

6) I) ग II) घ

7 I) क) स्थापत्य आ मूर्तिकला दुनू दिक आधारित कला थिक

ख) दुनू कला त्रिआयामी थिक ।

II) चित्रकलात्मक शैली: 1. अजन्ता 2. गुप्तकाल 3. मोगल
4. राजपूत 5. पहाड़ी 6. आधुनिक

III हिन्दुस्तानी आ कर्णाटक दुनू शैली मूलतः एके थिक । अंतर एतबे अछि जे उत्तरमे बाहरसँ अनुनिहार जाति अपन वांगर्मे संगीतक रूपमे आ अलंकरणक रूपमे किछु परिवर्तन कऽ देलक ।

IV) क) दुनू अव्यक्त थिक ।

ख) दुनूमे भावक सूक्ष्म अभिव्यक्ति भऽ सकैछ ।

अभ्यास :

1) I) एगबरितमावस लोकप्रिय कलाक थिक ।

II) पक्ष सन्यासक आगमसँ सिक्त अछि ।

III) ओहि खामे सूचित भेल अछि ।

IV) ओ सहज वर्णित छथि ।

2) I) ओ खासक कोइन स्थापत्य अछि ।

II हरिमोहन झाक उपन्यास कन्यादान' सर्वश्रेष्ठ अछि

III मूर्तिकलाक विकासमे बौद्ध धर्मक योगदान उल्लेखनीय अछि

IV) भौर्यकालक मूर्तिमे सौन्दर्य अद्भुत अछि ।

3) I) स्थापत्य (II) धर्मनिरपेक्षता (III) दुर्बलता

4) I 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन'मे 'कन्यादान' बेसी लोकप्रिय अछि ।

II) संगीत आ कलामे संगीत बेसी आवश्यक अछि ।

III) मूर्तिकलामे स्थापत्यकला बेसी स्थूल अछि ।

IV) गोपाल सिंहमे बेसी चपल अछि ।

इकाइ 15 समाचार लेखन आ सम्पादकीय

इकाइक रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 समाचारक परिभाषा एवं स्रोत

15.2.1 सकनार्सँ प्राप्त जानकारी

15.2.2 समाचारक स्रोत

15.3 समाचारक लेखन आ सम्पादन तथा सम्पादकीय लेखन

15.3.1 समाचार संरचनाक आरंभ

15.3.2 मुख्य जानकारी

15.3.3 शीर्षक

15.3.4 समाचारक संगठन

15.4 समाचारक भाग

15.4.1 समाचारक भाषा ओहन रूपमे

15.4.2 समाचारक वैशिष्ट्यपूर्ण भाग

15.5 सारांश

15.6 शब्दावली

15.7 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

15.0 उद्देश्य

एहि इकाइक अध्ययनक उपरान्त आहाँ :

- समाचार आ सम्पादकीयक विषयमे जानकारी दऽ सकब
- समाचार संकलन कोन कयल जाइछ एकर वर्णन कऽ सकब
- समाचार लेखन कऽ सकब,
- समाचार सम्पादन कऽ सकब
- सम्पादकीय लेखनक मूलभूत विशेषता बुझि सकब,
- समाचार आ सम्पादकीयमे पृथक्‌ पाबाक लेखनी शैलीक परिचय प्राप्त कऽ सकब

15.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाइमे समाचार लेखन आ सम्पादकीयक विषयमे चर्चा कयल जायत। विभिन्न समाचार माध्यमसँ प्राप्त विभिन्न समाचार आ सम्पादकीयक विभिन्न प्रकारक जानकारी लेल जायत अहाँ प्रतिदिन विभिन्न प्रकारक राजनीतिक सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक खेल आ अन्य विषयक समाचार सुनैत आ पढ़ैत छी। विभिन्न प्रकारक समाचारमे सँ कऽ सुदा समाचार कोन कारण सँ कोना आ कहिया लिखल अछि कथा विश्लेषणात्मक छाप लिखल गेल अछि मुख्य मुद्दा एकत्रित करबाक बाद कोन क्रमसँ कोन शैलीमे समाचार लिखल जाइछ तकर अनेक मतमे आहाँ अहि ई सभ जानकारी हासिल कयने अछि मे होइत अछि समाचारपत्र अथवा अन्य समाचार माध्यमसँ अहाँ ई सभ जानकारी हासिल कयने अछि

15.2 समाचारक परिभाषा एवं स्रोत

चौम्बरमार्सपेक उद्घाटन करैत विहाक मुख्यमन्त्री डा भागवत झा 'आजाद खेलक विकास लेल अनेक महत्वपूर्ण घोषणा कयलनि प्रत्येक जिलामे स्टेडियम निर्माण योजनाक अ निश्चय उल्लेख कयलनि । राँचीमे स्थायी पटनामे इन्डोर स्टेडियम एवं स्वीमिंग पूल निर्माणक घोषणा कयलनि संगहि पटनामे अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैचक आयोजन लेल पूर्ण सहायताक वचन देलनि खेलक महत्वपर प्रकाश दैत डा झा एकरा शिक्षाक अभिन्न अंग कहलनि ग्रामीण क्षेत्रमे खेलक विकास लेल खेल मंत्रालयपर आ बल देलनि आ खेलकूदमे प्रकाश डालल मानवाहरणमे सभमे आगाँ विहार पुलिस टीम आ सभमे पाछाँ मणिपुरक खिलाड़ी रहल छलाह उद्घाटनक बाद पुलिस प्रधान श्री बन्दूककक सलामी देलनि आ मुख्यमंत्री बेलून आ पटहा उड़ाकऽ सफल आयोजनक कामना कयलनि अंतमे पूर्व मिथिला मंत्रि प्रज्वलित कयल गेल एकरा प्रज्वलित कयलनि प्रसिद्ध बालक सुधीर कुमार ।

– डॉ० बीरेन्द्र झा

पूर्वरूप उल्लेख कयल गेल अछि ने समाचार क स्रोतो कखनो एकाएक टपैत अछि जना राजनैतिक सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक साहित्यिक आ खेल प्रधान एकक व्यक्तिक अभिरुचि कखनो कखनो होइछ तँ अनेक होइ खेल जगतमे अछि तँ तत्कालीन विभिन्न समाचारपत्रक अतीतक सिंहावलोकन सिलसिलाक जनवरी 1980 क अंकमे प्रकाशित एकर खेलसँ सम्बन्धक कोटि पाठ हएत जाहिमे खेलक बड़ पैघ महत्व छैक खेल जगतमे प्रगति आदि क्षेत्रक विवरणक मुख्य होइछ । मुदा गणतंत्रराज्य बिहार आ राज्यसरकार विभिन्नताक खेलक चाहत लक्षण बनाबिते रहल अछि एहना स्थितिमे समाचारमे बिहार खेलकूद (एम आर्थन पुरुषोत्तम) सँ सम्बन्धित आलेखन कयल सारगर्भक पटना मण्डल जयन पूरा समाचार पत्रलाय ई लक्ष्य मात्र आहो प्रयत्न अछि । एकरा खेल लेखनी समाविष्ट कयल गेल अछि, अतिरिक्त प्रतियोगिताक व्याख्यक दृष्टिकोण 'बहरक किछु चर्चित प्रतियोगिता उल्लेख तथा खेल भाषाक प्रयोग पुनः नोटिस बनी सहा योग्य अछि । ई सभ सूचना समाचारक सम्पूर्ण लिख दृष्टिगत कयल गेल अछि । एवं प्रकार खेल आ 'समाचारमे क्रम अर्थात पत्रकारिता मैथिलीमे समाचार' ई आ समाचारपत्रक दुनूमे अपूर्ण खबरि होइत रहियो आ रेडियोक खेल एवं खबरि पूर्ण घ: सकैछ मुदा समाचारपत्रमे प्रकाशित खबरि पहल विशेषक अपेक्षा रखैछ ।

15.2.1 समाचारमे आवश्यक जानकारी

प्रत्येक समाचारमे कोनो ने कोनो जानकारी अवश्य घटैत अछि आ सम्पूर्ण समाचार पूर्ण मानल जाइत अछि एकर लेल करबाक लिखे निम्नलिखित बात होइ

I) कोन गतिविधि वा घटना भेल ?

II) कोनि गतिविधिमे की भेल ?

III) गतिविधि कतऽ भेल ?

IV) गतिविधि वा घटना कहिया भेल ?

V) गतिविधि वा घटना किए भेल ?

अहि उपयुक्त बातक उद्देश समाचारक आधार बनाकऽ जाँचल जा सकैछ ।

I) कोन गतिविधि वा घटना भेल ?

उत्तर बिहार प्रदेशक 62म आर्थन एथलेटिक चैम्पियनशिप आयोजित भेल ।

II) कोनि गतिविधिमे की भेल ?

उत्तर– प्रतियोगितामे 28 प्रकारक खेलक आयोजन भेल ।

[II] गतिविधि कधिया घेतल ?

उत्तर- 19 डिसम्बर सँ 22 दिसम्बर 1989 धरि घेल ।

[V] गतिविधि कतऽ घेल ?

उत्तर- मधुबनीमे घेल ।

V) गतिविधि किए भेल ?

उत्तर- एक समयमे एक चर्चा भेल अछि- राज्यस्तरीय विभिन्न आलोचक ई ग्रंथ कहाँ छल- कहि ओ एहि एहेन समाचार हमरा कतेक जिज्ञासु भाव करैत अछि आब प्रश्न भेल एहि ग्रंथ के आलोचकक ई ग्रंथकी भेल कोना अछि- अर्थात् समाचार प्राप्तिक स्रोत की होइत अछि ?

15.2.2 समाचारक स्रोत

प्रत्येक समाचारपत्रकेँ समाचार प्राप्त करबाक मुख्यतः तीनटा स्रोत होइत अछि

I) समाचारपत्रक संवाददाता

II) सरकारी विज्ञप्ति,

III) समाचार एजेंसी ।

I) समाचारपत्रक संवाददाता

समाचारपत्र स्वयं समाचार प्राप्त करबाक अपन एक व्यवस्थित नमूना भेल अछि- जे अन्तर्गत समाचारपत्रक संवाददाता- समाचार प्राप्त करबाक क्षेत्रमे संवाददाता राखि अथवा विभिन्न स्थिति उपस्थित भेलापर संवाददाता पठाबि- जे विभिन्न स्थानपर रहल संवाददाता विभिन्न प्रकारक समाचार संकलित करैत अछि- जे संवाददाता समाचारपत्रक कार्यालयमे पठाबैत अछि- जतय ओ समाचार सभ एकत्र कऽ पत्रक लेल तैयार करैत अछि- जतय ओ एक संवाददाता विशेष संवाददाता- संवाददाता समाचारपत्रक कार्यालयमे रहैत अछि- जे समाचार संकलन करबाक क्षेत्रमे जाइत अछि- जतय ओ संवाददाता समाचारपत्रक कार्यालयमे रहैत अछि- जे समाचार संकलन करबाक क्षेत्रमे जाइत अछि

II) सरकारी विज्ञप्ति

समाचारक एकटा महत्वपूर्ण स्रोत सरकारी विज्ञप्ति होइत अछि- सरकारी अथवा विभिन्न प्रशासनिक सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थानकर्तृक समय समयपर विज्ञप्ति जारी कएल जाइत अछि- समाचारपत्रक कार्यालय ओहिमे समाचारक स्वरूप पाबि- ओकरा संकलित करैत अछि

III) समाचार एजेंसी

संसारमे अनेकानेक एजेंसी विभिन्न प्रकारक समाचार प्रदान करैत अछि जाहिमे समाचारपत्रक समाचार प्राप्त होइत अछि । समाचारपत्र एजेंसीसभमे प्रायः मुख्यतः एतय कए सार्वजनिक महत्वक समाचार प्रकाशित करैत अछि ।

संसारक घटनाक समाचार एजेंसी करैत अछि- मुख्यतः मुख्य तीन एजेंसी तथा एम दूरदर्शी एजेंसी- एजेंसी एहि तीन एजेंसीक समाचारकेँ एवं एम तथा तीन एजेंसी समाचारक स्थान विशेषमे प्रकाशन करबाक अधिकार संपूर्णतः करैत अछि

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार एजेंसी अछि- जाहि द्वारा समाचार संसारक क्षेत्र होइत अछि- जाहि अन्तर्गत अछि- जाहि एजेंसी (रायटर- एजेंसी- फ्रान्स- प्रेस- यू.पी.आई. अमेरिका

समाचार एजेन्सीक सम्बन्धमे विभिन्न समाचारक पृष्ठ देखल अछि । एहि समाचारक आं टेलीप्रिंटर टेलीग्राम टेलीफोन अथवा माइक्रो द्वारा मुख्य कार्यालयक प्राप्त करैत अछि एहि ठाम समाचारक संपादन होइछ आ तकर बाद एहि समाचारक टेलीप्रिंटर द्वारा विभिन्न समाचारपत्रक पठा देल जाइत अछि । अहन नँ सभ काज कम्प्यूटर द्वारा सचालित होइत अछि ।

बोध प्रश्न

आहाँ उपर्युक्त अशक अध्ययन कयलहुँ । आब निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअउ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलान करू ।

.) मधुबनीमे खेलक कोन प्रतियोगिता सम्पन्न भेल ?

I) 62म ओपन एथलेटिक चैम्पियनशिप,

II) 62म राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता

III) 62म अन्तर्विद्यालय खेल प्रतियोगिता,

IV) उपर्युक्तमे सँ कोनो नहि । उ० ( )

2) प्रतियोगिताक उद्घाटक के छलाह ?

I) चन्द्रशेखर मिश्र

II) विन्देश्वरी दुबे

III) कीर्ति झा आजाद

IV) जगन्नाथ झा मनोज उ० ( )

3) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर एक-एक पंक्तिमे दिअउ ।

क) मुनेश्वरी की सिखै ?

ख) 'जिला संवाददाता द्वारा' समाचारमे एहि कथनक की अभिप्राय ?

ग) 'मधुबनीमे 11 दिसम्बरसँ 17 दिसम्बर धरि बिहार प्रदेशक 62म ओपन एथलेटिक चैम्पियनशिप शानिदार ढंगसँ सम्पन्न भेल ' एहि कथनसँ समाचारक कोन पक्ष उजागर होइत अछि ?

4) समाचार संकलनक विभिन्न स्रोतक नामोल्लेख करू ।

5) समाचार एजेन्सीक कार्यप्रणालीक संक्षेपमे लिखू ।

6 समाचारमे कान पाँचटा महत्त्वपूर्ण बिन्दु होएब आवश्यक अछि

क)

ख)

ग)

घ)

ङ)

अभ्यास 1

1) तल एकटा विभिन्न विद्वानमे एकत्रित एकटा सँक्षिप्त समाचार देल गेल अछि. एहि समाचारक पाँच प्रमुख बिन्दुक चिह्नित करबाक अछि से की ई सम्पूर्ण समाचार थिक ?

राजनारायण गिरफ्तार

[illegible] गत [illegible] जूनक हुंकारीक सामोलमे प्रातेक नेता राजनारायणक गिरफ्तारी क [illegible] मंत्रि [illegible] ओ हरियाणाक भजनलालक मांगकेँ चलाबय करबा लय अनशन क [illegible] बाद [illegible]

15.3 समाचार लेखन आ सम्पादन तथा सम्पादकीय लेखन

समाचारक मूलमे कोनो हालहि सामान्य घटनाकेँ बुझल जाइ छैक जाहि [illegible] हजारो पाठक समक्ष [illegible] ओहि समाचारक पाठ समाचार पत्रकेँ विक्रय क पूर्वमे सम्पादक तथा सम्पादकीय सहयोगी द्वारा सम्पादित कयल जाइ छैक. एकरा [illegible] विभिन्न स्तरमे पाठ मूलभूतरूपेँ समाचारक स्वरूप बदलि सकैत अछि ओ [illegible] सम्पादन थिक । जँ कोनो समाचार सम्पादकक कार्यमे पाठ होइत अछि तँ [illegible] तकनीकी अशुद्धि सहित प्रकाश कयबाक कयल जाइत. एकरा [illegible] बहुत रास सम्पादकीय आवश्यकता होइत. सम्पादन लिखबाक पूर्व समाचार सम्पादक प्रधान पत्रकारकेँ एहि बातक अवश्य पता लगबाक चाही जे ओहि समाचारमे सम्पादन सम्बन्धी प्रभाव नहि पड़क. एकर दृष्टिकोण सदैव समाज आ राष्ट्रक हित सम्बन्धी चाही. जँ [illegible] समाचारमे धार्मिक सम्प्रदायिक क्षेत्रक आलोचना आ भावना विद्वेष परसैत अछि तँ ई [illegible] अनुचित एवं निन्दनीय मानल जाइत. समाचार सम्पादनमे पूर्व एहि आधारभूत बातक [illegible] ध्यान राखल जयबाक चाही ।

आब एहि विन्दुपर विचार करब जे समाचार लेखन कोना कयल जाइत अछि

15.3.1 समाचार लेखनक आरंभ

कोनो समाचारक मुख्यतया तीन भाग होइत अछि–

1) हेडिंग

2) आमुख

3) मुख्य कलेवर

यद्यपि कथा समाचारमे एहनक्रम नहिंवत महत्वक्रम पहिने अंतिम मुदा एकर विधारण समाचार लम्बनक रूप रहल अछि चारुमुख आ मुख्य कलेवर एकर महत्वपूर्ण हिस्सा मानल जाइछ तैं एकर चर्चा बादमे करब आवश्यक ।

आमुख वा इंट्रो

प्रत्येक समाचारक आरंभमे जाहि शीर्षक प्रोक्ति समाचारक घर उद्धृत कयल जाइत अछि जाहिमे आगेक समाचारक मुख्य विषयक उल्लेख होइत अछि उदाहरण लेल खाल समाहरुवला समाचारक प्रथम अनुच्छेद द्रष्टव्य थिक-

> **विधिवत्संघलक केन्द्रमंत्रीमंडल मङ्गलवार 19 दिसम्बरमे 22 दिसम्बर धरि बिहार प्रदेशक 62म आगन एथलेटिक चैम्पियनशिप शान्तिपूर्ण वातावरणमे सम्पन्न भेल जाहिमे 28 जिलाक टीम आ 10 अन्य टीम तथा टेम्का टिम्का सी॰पी॰एल टीमक 1100 खेलाड़ी भाग लेलनि, जाहिमे करीब चारि सय महिला खेलाड़ी सेहो छलीह ।**

समाचारक अनुच्छेदमे आवश्यक पूर्ण विवरण प्रस्तुत करब आवश्यक नहि मात्र मुख्य मुख्य समाचारक तथ्य संकेत आमुखमे रहैत अछि शेष समाचार तथ्यक विस्तार होइत अछि समाचार लम्बनमे आमुखक महत्व सर्वाधिक होइछ किएक तँ अधिक समाचार पत्र केवल आमुख पढ़ि समाचारक निर्णय लैत अछि । समयाभाव अथवा कोनो कारणें पाठक समाचार पूरा नहि पढ़ैत छथि तँ आमुख पढ़ि संपूर्ण समाचारक तथ्यकें बुझि सकैत छथि । एहि प्रकारें आकर्षक लम्बनक दृष्टिसँ समाचार पत्रक मांग बढ़ि सकैछ ।

आमुख लिखबाक काल दोसर ध्यान देबाक चाही जे आमुख समाचारक पहिल अनुच्छेद होइत अछि तँ एहिमे समाचारक सभ तथ्य नहि आबि सकैछ मात्र एक तथ्य एहन लेब आवश्यक जकरापर आमुख लिखबाक प्रयास करब ।

मान लिअ ।

(i) दरभंगामे विधानसभा चुनाव सम्पन्न भेल ।

(ii) चुनावी हिंसामे 10 गोटे मारल गेल ।

(iii) मधुबनी तथा चुनावक अंतिम चरण 10 अक्टूबरकें भेल

(iv) विधिवत रातिमे फुलल सभी ईवीएम सील कय देल ।

(v) एहिमे 250 सँ अधिक मतदान केंद्रपर पुनर्मतदान भेल ।

आब एहिमे कोन पाँच तथ्यकें आमुखमे राखब, किएक तँ सभ तथ्य कहब

कोन घटना — विधान सभा चुनाव ।

कहाँ भेल — चुनाव दिवस । मतदान संख्या आ अधिक संख्यापर चुनाव गतिविधि भेल ।

कतिया भेल - 20 अक्टूबरकें ।

कतऽ भेल - दरभंगामे ।

किएक भेल - चुनावी हिंसाक कारणें ।

देल गेल तथ्यक आधारपर चयनक पाँचो बातकेँ ध्यानमे रखितहि अहाँ आमुख तैयार कऽ सकैत छी ।

दसम्बर 20 अक्टूबर । संवाद एजेन्सीक नाम आइ धुनाबक अंतिम चरणमे 0 लोकक जान गेल । कुल 1500 चुनावी सामिला खातमे दर्ज भेल ।

एकर बाद सम्भाव्यता उपलब्ध तथ्यक आधारपर समाचारकेँ विस्तार देल जा सकैछ

15.3.2 मुख्य कलेवर

आमुखक बाद विस्तारपूर्वक लिखबाक आवश्यकता जिस्सा समाचारक मुख्य कलेवरमे कहबाक आछ एहिमे ओ सभ सूचना दैत चाहैछ जे कोनो समाचारपत्र अपन पाठक धरि पहुँचा करए चाहैत अछि मुदा समाचारक सभ सूचनाक समावेश भऽ जायब ई संभव आछ जे आवश्यकतेसँ संवाददाता द्वारा एकत्र अथवा संकलन एजेन्सीसँ प्राप्त समाचारमे प्रयोजनसँ बेसियो सूचना रहि सकैत अछि । इहो सभव छिक जे प्राप्त सूचनामे महत्वपूर्णक अभाव रहय । किन्तु सूचना आपूर्ण अनावश्यको भऽ सकैछ एहि लेल समाचार लेखनमे पूर्व किछु बातक ध्यान राखब जरूरी अछि–

समाचार लेखन आरंभ करबासँ पूर्व उपलब्ध तथ्यक मूल्यांकन अति आवश्यक अछि जे कोना संवाद एजेन्सीसँ समाचार प्राप्त कयल गेल अछि ई जानकारी संपादकीय डेस्क आवश्यक छिक ।

संपादकीय सूचना आ नेपथ्यसंबंधी समाचार लेखनसँ पूर्वहि हटौंह दी

समाचार लेखनमे क्रमबद्धताक बाबत जाहो आवश्यक निर्णय पूर्णतया स्पष्ट भऽ जाय

संपादकक एहि विषयमे अनावश्यक समय बर्बाद क, आवश्यक शीघ्रातिशीघ्र निर्णय करी

पूर्वाभ्यास समाचारपत्रक अपन दृष्टिकोण होइत अछि आशि विश्लेषणक' कारण संपादन विश्लेषणात्मक रूपेँ समाचार लेखन करबाक चाही ।

संपादनक भाषा सरल आ सहज रहय आवश्यक सामान्य पाठकक समझि सकय

आब पैराग्राफ द्वारा प्राप्त सूचनाक आधारपर समाचार लेखनक प्रयास करबाक चाही

)1 अहिनाकेँ पहलहिसँ विभिन्न माध्यम लगले निम्नलिखित समाचार प्रेषित कयलक

[महात्मा विलास सोसाइटीमे पाथ चालीस अभिनेत्री छलीह । मनोरंजन व्यवसाय २५ वर्षक बाबत मुहूर्तहुन्ह ओ पहिने अपन आत्मकथामे अतिरिक्त आन मानक पर्याप्त सामग्री मुहैया करैछ । प्रथम आवरणपर अनुभव प्रदर्शनक हेतु पूर्व सोझा सभक रूपमे अनेक गेल आ अवस्थामे आइत काल बाजीमे हुन्ह तृप्ति देलक । स्वा ० वर्ष पुरान ०० वर्ष रहन्ह ५ वर्ष विपत्ता अछि अन्यान्य एक दर्जन पत्रक प्रकाशन परबाक यहा खबरि आछ घटनाक कारणक पता नहि चलि सकले अछि ।

[[आइ भोर मधुबनीपुर स्थित कर्पूरीग्राम गैस सिलेण्डरक विस्फोटमे रेलवेमे विश्वनाथ पाँडेक पत्नी रन्ना २० वर्षक बचर्स उम्रक गंभीर रेलवे अस्पतालमे चिकित्सक उपचारक बाद एक डाक्टरक हत्र पटना रेफर क, देल गलनि । मधुबनी फायर ब्रिगेड पहुँचि जयबाक कारण स्वत बुझाने आगिक अग्निकाण्डमे बचि गेल

[[[मुजफ्फरपुर शहरक आमबगैचे आइ अपराह्न ० बज बिजलीक शार्ट सर्किटमे टायरक पान गादामे आगि लागि गलेक । बज पहुँचा हबाक कारणेँ दमकल गाड़ी पहुँचबा धरि

आगलगीमे दसटा दोकान सुरक्षाह भऽ गेल कोनो व्यक्तिक हताहत सम्बन्धक सूचना नहि अछि पांच अग्निकाण्डमे भेल नाकसानक आकलन कयल जा रहल अछि

IV पछिला चौबीस घंटामे उत्तर बिहारक आठ नोन ठाममे अग्निजनीक सूचना अछि विस्तृत ब्योराक प्रतीक्षा कयल जा रहल अछि ।

आब एकर सभ सूचनाक आधारपर समाचारपत्र लेल समाचार बनयबाक अछि समस्त सूचना अहाँलेल प्राप्त भेल सभ घटनाक सम्बन्ध अग्निकाण्डसँ अछि । सभटा समाचार घटनासँ प्राप्त भेल अछि आब क्रमबद्धतापूर्वक सँ समाचार लेखन प्रारंभ करब । प्रारंभ नोन सर्वप्रथम लिखब :

पटना, 3 अप्रैल (समाचार संकलक नाम) ।

एकर बाद आद्यांत लिखबाक अछि उपर्युक्त समस्त सूचनामे महत्वपूर्ण घटना अछि अग्निकाण्ड एहिमे एक व्यक्तिक मृत्यु तीन व्यक्ति एक गंभीर रूपसँ घायल तथा एक दर्जन पशुक अकस्मिक मरबाक सूचना अछि अपन सम्पादकीय संकलनसँ एहो भेल अछि जे एहि सभ बातकेँ एकत्रित कऽ आमुख लिखबाक लेल तँ ओ अत्यंत महत्वपूर्ण होयत

आमुख उत्तर बिहारमे पछिला चौबीस घंटामे भयंकर अग्निकाण्डमे एक व्यक्तिक मृत्यु तीन व्यक्ति आ एक गंभीर रूपसँ घायल भेल आब समाचारक मुख्य कलेवरक विवरण करबाक अछि एजेंसीसँ प्राप्त धारिए समाचार अछि मात्रात्मक सम्बन्ध अग्निकाण्डसँ अछि । एहिमे पहिल दुन घटना बेसी महत्वपूर्ण अछि तँ कलेवरमे एहि दुनूक सम्बन्ध प्रमुखताक संग कयल जा सकैत अछि तेसर घटनाक चर्चा पहिने कऽ सकैत छी मुदा आवश्यक नहि कारण घायल घटनाक सूचना प्राप्त नहि अछि तेँ बाद-बाद ओकर उल्लेख कयल जा सकैछ आबो सभ सूचनाकेँ क्रमबद्धतापूर्वक सँ सहज आ सरल भाषामे प्रस्तुत करी जे अगिला दिन समाचारपत्रमे प्रकाशित होयबो ।

समाचार :

पटना 4 अप्रैल । एजेंसी उत्तर बिहारमे पछिला चौबीस घंटामे भयंकर अग्निकाण्डमे एक व्यक्तिक मृत्यु तीन व्यक्ति एक गंभीर रूपसँ घायल भेल।

मधुबनी जिलाक मानबरमा गाममे काल्हि राति लगभग अग्निकाण्ड भेल एहिमे 10 वर्षीय बालकक मृत्यु भऽ गेलैक आ रम्भा 4 वर्ष, रमाकांत 4 वर्ष एवं राहुल 6 वर्ष घायल अछि । दर्जन भरि पशु सेहो अकस्मिकरूपेँ मरि गेल ।

मधुबनीपुरक रमण कालेजक गैस सिलिंडरक विस्फोटसँ लोकसभा विधानसभा पंडितक एकटा रेखा 40 सभार रूपसँ घायल भऽ गेलाह मुजफ्फरपुर शहरक आसपास क्षेत्रमे होयबा गहमा सहित दसटा दोकान अग्निकाण्डसँ सुरक्षाह भऽ गेल ।

उत्तर बिहारक आनो तीन ठाम अग्निजनीक सूचना अछि ।

15.3.3 शीर्षक

समाचारक शीर्षक समाचार लेखनक महत्वपूर्ण अंग छिक । जे आमुख लिखि लेल जाइत अछि तँ शीर्षकक विभागमे आसानी होइत अछि । शीर्षकक चयनकालमे निम्नलिखित बातकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक अछि–

1 शीर्षक एहन हो जे समाचारक केन्द्रीय भावकेँ अभिव्यक्त करय

(I) शीर्षकमें सम्पूर्ण समाचार घटनाक उल्लेख अछत होअय

(II) शीर्षकमें कहल गेल समाचार द्वारा पुष्ट होअय ।

(V) शीर्षक छोट, पांच शब्दक स्पष्टताक संग व्यक्त करय ।

उपर्युक्त आहि समाचारक बनैत अछि आब आउ शीर्षक आसानीसँ देल जा सकैत अछि ।

उत्तर बिहारमे भीषण अग्निकांड

अथवा

अग्निकांडमे एकटा मृत्यु, तीन निपत्ता

अथवा

आब कोना शीर्षक देल जा सकैत अछि ।

15.3.4 समाचारक संपादन

समाचार लेखन आ समाचार सम्पादन एक दोसरासँ भिन्न प्रक्रिया थिक । ई दुनू काज संग संग होइत अछि आ पृथक पृथक करब । प्रकाशनक पूर्व संपादकीय प्रभाग द्वारा समाचारक संपादित कयल जाइत अछि । उदाहरण द्वारा एकरा नीक जकाँ बुझल जा सकैत अछि संपादक एकटा समाचार सम्पादकीय प्रभागक अपन सम्पादनी आ सबसँ पजेसी दुनूक व्यवस्था करैत अछि । समाचार दुनू प्रक्रियासँ सम्बद्ध अछि घटनाक उल्लेख एकटा स्थान ओ समय कयल गेल आइ काली संवाददाता सम्मेलन घोषणा पत्रकार भेल कोनो गतिरोध संसूचना द्वारा अथवा आन पत्र पत्रिका सँ ओ संवाददाता सम्मेलन स्वयं देखाक सामग्रीसँ सामाइस पड़ैत अछि आ तखन कोनो खबर आ छोट समाचार संवाददाता नेतृत्व पूर्णिया पत्रकारक रूपमे लिखि कयल गेल

एहि घटनाक समाचार एजेन्सी द्वारा विस्तृत रूपमे प्राप्त भेल

पत्रकारसँ सम्मेलन जे कहल कोनो महत्वपूर्ण विषय गोल घोषणा लूटपाट भेल एहि भेलासँ कोनो पाँच अथवा पाचसय शब्द अछि । प्रेस सूचनाक अनुसार तथ्यक ७ ८ बात सामान्य अनुच्छेद अछि । एहि सब विषय कोनो संवाददाता सम्मेलन भेल अछि समाचार सम्पादनमें पूर्वोक्त नियम व्यवस्था अनुरूप अहिंसा लिखित पाठकक संक्षेपक पहिनेसँ प्रतीक्षाक करैत छथिक सम्पादक संख्यामे इहेसन सामग्री चयनक जे आशा रखैत छथि ओहि दृष्टिसँ पाठकक समुचित ध्यान देबाक चाही । प्रथम अनुच्छेदमे प्रमुख तथ्यक संक्षेपमे देल गेल अछि । प्रथम अनुच्छेदमे प्रमुख तथ्यक संक्षेपमे देल गेल अछि । प्रथम अनुच्छेदमे प्रमुख तथ्यक संक्षेपमे देल गेल अछि । प्रथम अनुच्छेदमे प्रमुख तथ्यक संक्षेपमे देल गेल अछि ।

आब दुनू समाचारक तुलना करू अहाँ देखब जे दुनू समाचारमे किछु तथ्यक समानता अछि मुदा किछु भिन्नता सेहो अछि । पहिल समाचारमे किछु तथ्यक छोड़ देल गेल अछि तँ दोसरमे सेहो किछु तथ्यक अभाव अछि ।

आब अहाँकेँ पहिने दुनू समाचारक संपादित करू समाचार बनबऽ पड़त समाचार संपादकीय दायित्वक निर्वहन करैत तथ्यपरक समाचार बनाबैत छी एहि संपादन करैत किछु बातक ध्यान राखब आवश्यक अछि । यथा-

1) समाचारक संपादनमे तथ्यक रक्षा कयल जायबाक चाही ।

II) समाचारकेँ सीमित रूपमे प्रस्तुत करबाक चाही ।

III) अनावश्यक दृश्यक आ समाजविरोधी बातक उल्लेख नहि करबाक चाही

IV) भाषाकेँ संतुलित आ आकर्षक बनयबाक चाही ।

V) समाचारक उचित शीर्षक देब सेहो संपादकीय कार्य थिक ।

संपादित समाचार

कामी एक्सप्रेसमे भयंकर त्रुटि

23 अप्रैल '84' (निज संवाददाता/एजेंसी) ।

कामी एक्सप्रेस विगत राति पोथण इस्टेशन पँत यात्रा करबा काल आ सकल स्थिति विश्लेषक अछि पहाड़ी इलाका आ कम कामी एक्सप्रेसक सभसँ धमाकेदार स्टेशनक बीच भेल दुर्घटनाक भेल सूत्रिसाक बहस कयेक लोक मुख आ दुखद लोकक सँख्याकेँ घटी बढ़ी बतबाक प्रयास कयलक । लगभग आधा घंटा धरि चलल दोर सूत्रकेँ पाँच गाम भेल सेहो भेल छोटम सभसँ कामी एक्सप्रेस एकटा छोटसन इलाका सदर अस्पताल पहुचबाक लेल कहल गेल । जँहि घटनाक अवधिमे लगभग तेसर एलाम यात्रा रहल यात्रीक एतबे लोक बेसी घायल भेलाक निश्चित कोन कारणसँ ई दुर्घटनाक शृंखलि पकड़ि लेल जायत

संपादकीय दायित्व

समाचार संपादक संपादकक कार्यो सम्पादन लगभग अनेक पहलू सम्पादकीय दुर्घटनाक लेल सोचब आ सम्पादकीय लेखक अनेक अछि समाचारपत्रमे एहि प्रयास कम्प्यूटराइज्ड संपादकीय सम्पादकीय कहल जाएत । विभिन्न विशेषज्ञ ज्ञ संपादकीय लेखक अनेक एकटीमक सम्पादकीय के अंग होएत अछि विभिन्न समाचार दैनिक दैनिकी सीमित लेल सम्पादन कार्य एकर उपयुक्त अंग अछि सम्पादकीय सम्पादकीय सम्पादकीय

विविधा

खोज प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नके उत्तर दिअउ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल उत्तरसँ मिलान कऽ लिअउ ।

1) समाचारक मुख्य तीन् अंगक नाम लिखू ।

2) आमुख आ मुख्य कलेवरमे की अन्तर अछि ? अति संक्षेपमे लिखू

3) समाचार लेखन आ संपादनसँ सम्बन्धित निम्नलिखित वाक्यमेँ किछु गलती । सही/गलतक क्रमशः हँ/नहि मे उत्तर दिअउ ।

I) समाचारक शीर्षक विषय सँ सम्बन्धक चाही । (

II) समाचारमे वस्तुक रक्षा करबा आवश्यक नहीं । (

III) शीर्षक मुहरुक समानान्तर अंश देखाक चाही ।

IV) समाचारक भाषा सरल आ बोधगम्य रखबाक चाही । (

V) केवल सरकारी सूचनापर भरोस करबाक चाही । (

अभ्यास 2

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअउ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलान

1 निम्नांकित तथ्यक आधारपर मधेपमे एकटा काल्पनिक समाचार लिखू ।

दरभंगाक ग्रामीण इलाकमे वार्षिक पानि परबी देल अछि । जिला प्रशासन प्रभावित लोककेँ सुरक्षित स्थानपर पहुँचेबाक अछि । बाल मालक अलावा नाव-यातायात सुविधा अछि । पैदल टा लोक खाद्य वस्तुक पानि कमी सदृश छोड़बाक आवश्यक अछि ।

2 दिनांक 3 4 दुए 14 दिसम्बरकेँ चुनाव प्रणालीमे सुधारकेँ लऽकऽ विभिन्न समाचार प्रकाशित भेल अछि । मुदा 1 सँ 14 दिसम्बरकेँ प्रकाशित समाचार देल जा रहल अछि आ नीचेक समाचारसँ प्राप्त सूचना संग प्रस्तुत अछि । एहि आधारपर 15 दिसम्बरकेँ प्रकाशित होइ लेल समाचार बनाउ । समाचारक प्रत्येक अंग यथा शीर्षक आमुख, मुख्य कलेवर लिखू ।

13 दिसम्बर सरकार चुनाव प्रणालीमें व्यापक सुधार करना लगि एक दू दिनमे संसदमे विधेयक पेश करऽबला अछि । एहि विधेयकमे मतदेधिकारक वयस २ सँ घटाकऽ 18 करबाक प्रस्ताव अछि । चुनावमे इलेक्ट्रानिक्स मशीनक उपयोग सहित कतोक आनो सुधारक प्रस्ताव कयल गेल अछि ।

4 दिसम्बर आइ लोकसभामे कानून मंत्री वी० शंकरानंद चुनाव प्रणालीमें व्यापक सुधारमे सम्बन्धित दूटा विधेयक पेश करलनि । पहिल विधेयक मतदेधिकारक उमेर 21 वर्षसँ घटाकऽ 18 वर्ष करबाक सम्बन्धमे अछि । ई विधेयक संविधानमे ६१म संशोधनक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि दोसर विधेयक जनप्रतिनिधित्व अधिनियम विधेयक 1951 क धारा संख्या परिवर्तन करबाक सम्बन्धमे अछि एहिमे चुनावमे इलेक्ट्रानिक्स मशीनक उपयोग करबाक प्रस्ताव अछि एहि विधेयकमे सम्बोधनक अयोग्यताकेँ आरो बेसी स्पष्ट कयल गेल अछि आब मूल संविधान संशोधन कयलाक बाद सार्वजनिक स्थिति पदाधिकारी दहेज अपराधी घूस आ जमाखोरक अयोग्यक सजा निर्धारित कयल गेल अछि ।

4 दिसम्बर सूचना

1. विधेयकपर लोकसभामे होत चर्चाक बाद ।

II. सभ पक्ष द्वारा मतदेधिकारक आयु ४ वर्ष करबाक स्वागत । बहसमे 2 मंत्री सहित सत्तापक्ष आ विपक्षक ६ दर्जनसँ बेसी सदस्य भाग लेलनि ।

III अनुप्रतिनिधित्व कानूनक १ धारा ५५ उपधारा ६५ संशोधन मसौदा पेश ।

IV) बहस अपूर्ण रहल ।

समाचार: लेखक :

भाषण

मुख्य कलेवर

15.4 समाचारक भाषा

एहन बहि एहि इकाइमे समाचार लेखन आ संपादनक विषयमे जानकारी प्राप्त कयलहुँ अछि । मुदा एहि महत्त्वपूर्ण बातक माध्यमता नञि सिद्ध होयत जखन समाचारमे प्रयुक्त भाषा तदनुकूल हो पूर्वमे एहि बातक चर्चा कयल गेल अछि जे समाचारक भाषा सहज आ आमफहमी बोधगम्य होयबाक चाही आब एहि ठाम समाचारक भाषाक संदर्भमे विचार कयल जायत इहो जनबाक प्रयास कयल जायत जे विभिन्न विषयसँ संबंधित समाचारक भाषा कोन प्रकारक होयत ?

15.4.1 समाचारक भाषा केहन हो ?

समाचार लेखन प्रारंभ करबासँ पूर्व सदैव किछु बातक ध्यान रखबाक चाही ई बात ध्यान रखबाक चाही जे सामान्य भाषाज्ञानक लोक समाचार पढ़ैत अछि । कठिन भाषाक प्रयोग भेलासँ ओहन व्यक्तिकेँ बात बुझबामे असुविधा होयतैक इहो आवश्यक अछि जे प्रत्येक व्यक्ति एकाग्रचित्त भऽ समाचार पढ़ैत अछि बहुत रास पाठक एहना अछि जे गाड़ीमे सफर करैत रहैया वा स्थानांतर भुटैत अथवा सामान्य शोरगुल कोलाहलक बीच रहल होअय एहन सभ स्थितिमे समाचारक भाषा सहज आ सहज एहन लोक समाचारमे व्यक्त बातकेँ बुझि पाओल अतएव समाचारक भाषामे निम्नांकित गुण रहब आवश्यक अछि

I) आवश्यकताक अनुसारहि बात लिखल जाय ।

II पैघ आ जटिल वाक्यसँ बचैत छोट आ सरल वाक्य बनाबी

III) आमफहमीमे प्रचलित शब्दक प्रयोग करबाक चाही । कठिन आ व्याकरणसम्मत शब्दसँ बचबाक चाही ।

IV) बोलचालक भाषाक प्रयोग करी ।

V शब्दकेँ आकर्षक आ हृदयस्पर्शी बनाबाक चाही

VI गतिवाक अनुरूप भाषा आ शब्दक प्रयोग करबाक चाही ।

VII) भाषामे अश्लीलताक पुट नहि अयबाक चाही ।

VIII) भाषामे मौलिकता रहय ।

ई उपरुक्त बातकेँ ध्यानमे राखिकेँ कोनो व्यक्ति समाचारक भाषा सभ लोक चाहे बोध सकैत अछि । अहि दृष्टान्तक रूपमे समाचारक किछु नमूना प्रस्तुत अछि एहिमे प्रयुक्त भाषाक आकलन करू ।

६९ वर्षीय मैथिलीक मूर्धन्य विद्वान आ मैथिली विभाग सी एम कॉलेज दरभंगाक पूर्व अध्यक्ष हंसराजक सपत्नी एगिद्ध मंत्रनाथ झाक जे अपन पाछाँ पत्नी तथा एक कन्या आ पुत्रकेँ छोड़ि गेल छथि आइ राति ० बजे दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे निधन भऽ गेलनि हुनक अनुरूपेँ कानिह अपराह्न ४ बजे गाम स्थित अपन आवासमे पूर्ण दरभंगा आवासमे आम लोकक दर्शनार्थ राखल गेल अछि ।

आब एहि समाचारक दोसर रूप द्रष्टव्य अछि–

मैथिलीक मूर्धन्य विद्वान आ सी एम कॉलेज दरभंगाक पूर्व अध्यक्ष मंत्रनाथ झा 'हंसराज'क आइ राति दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे निधन भऽ गेलनि ओ ६९ वर्षक छलाह हुनक पाछिसँ शोकसंतप्त परिवारमे पत्नी एक कन्या आ एक पुत्र छथिन हुनक पार्थिव शरीरकेँ

जीम जीनाक दर्शन लेल चारि बजे दिन धरि दर्शनार्थ आवश्यकता राखल गहत अन्तिम संस्कार डेढ़ानमे होयतनि ।

दोसर नमूना पहिलसँ बेसी सरल अछि एकरा बुझबामे आसानी होयत ।

15.4.2 समाचारक वैविध्यपूर्ण भाषा

समाचारपत्रक क्षेत्र अत्यंत व्यापक अछि सामान्य समाचारक किछु क्षेत्र भिन्न राजनीतिक घटनाक्रम अपराध खेल जगत आर्थिक आ वाणिज्यिक, स्वास्थ्य शिक्षा मौसम । एहि विशिष्ट क्षेत्रक समाचारक भाषा संग्रह अहिसँ सम्बन्धित होयबाक चाही तँ संवाददाताकेँ उक्त क्षेत्रविशेषक एवं अहिसँ जुड़ल शब्दक पर्याप्त जानकारी रहब आवश्यक अछि उदाहरण लेल क्रिकेट खबरिमे सम्बन्धित समाचार तैयार करबाला व्यक्तिकेँ रन, विकेट मेडन पारी कैच बोल्ड एल बी डब्लू, साइड, नौ बॉल फिल्डिंग बैटिंग विकेट कीपर सिल्वो ब्याट बैकफुट स्टंप स्लिप गली, बाइ आदि शब्दक अर्थ बुझल रहबाक चाही कोनो क्षेत्रविशेषक तकनीकी पक्षकेँ बिना बुझने ओकर समाचार नहि लिखल जा सकैछ ।

बोध प्रश्न :

0) समाचारक भाषाक कोनो पाँचटा विशेषताकेँ रेखांकित करू

I .....

II .....

III .....

Iv .....

V) .....

1) क्षेत्रविशेषक समाचार लेखन लेल कोन कोन बातक ध्यान राखब आवश्यक अछि ?

.....

.....

.....

अभ्यास 5

अपन क्षेत्रक कोनो महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक पर्वक समाचार आठ पंक्तिमे बनाउ । (विद्यापति स्मृतिपर्व अथवा मखान महोत्सव वा कोनो कविसम्मेलनक समाचार बनाओल जा सकैछ ।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास 6

मिथिलाचलक [illegible] समस्यापर 100 शब्दमे एकटा संपादकीय लिखू ।

[illegible]

15.5 सारांश

- देश विदेशमे घटल विभिन्न सूचनाक स्रोत थिक समाचारपत्र अथवा अखबार समाचार द्वारा समाजमे भिन्न भिन्न प्रकारक जानकारी भेटैत अछि आ एकर सामाजिक एवं सार्वजनिक जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ैत अछि ।
- एहि प्रकारक अध्ययन मननक उपरान्त अहाँ एहि बातक व्याख्या कऽ सकैत छी जे कोना सूचना समाचार कोना बनैत अछि आ समाचारपत्र विविध तथा विस्तारमे कोना एकत्रित करैत अछि ?
- समाचार लेखनक क्षेत्र उपलब्ध सूचनामे आवश्यक सूचनाक छानबीन करऽ पड़ैत अछि । उपलब्ध तथ्यक आधारपर समाचारक विभिन्न घटकक आवश्यक मूल्य कथा आ शीर्षक लेखा करऽ पड़ैत अछि आ महत्वपूर्ण सूचनापर संपादकीय लेहो लिखल जाइछ ।
- समाचार लेखनमे शब्दचयनमे सतर्कताकेँ आवश्यकता होइत अछि कारण शब्दक प्रयोगमे परिवर्तन एकटा छोट छोट वाक्य आ छोट छोट पैराक समाचार लिखबाक चाही समाचारक भाषा सरल एवं बोधगम्य होयबाक चाही ।
- एहि सभ बिन्दुक आधारपर उत्तम कोटिक समाचार लेखन संभव अछि ।

15.6 शब्दावली

अपराह्न : दू पहरक बादक समय वा बेरुपहर ।

अंतरराष्ट्रीय : देशसँ बाहर ।

पार्थिव : माटिसँ बनल शरीरक निर्माणमे पंचतत्वमे एकटा पृथ्वी अर्थात् माटि सहो अछि ।

पूर्वान्ह : पूर्वाह्न (दिन)क उत्तरार्द्ध, अर्थात् बेरा ।

राजनीतिक : राजनीतिसँ सम्बन्धित ।

वाणिज्यिक : वाणिज्य अर्थात् व्यापारसँ सम्बन्धित ।

सामाजिक : समाजसँ सम्बन्धित ।

आधारशिला : -स्तंभ पाथर ।

संगम : मिलन ।

उद्घाटन : आरंभ करबाक विधि ।

अग्रिम : अगिला, आगाँक ।

15.7 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

1) ii)

2) iv)

3) क) समाचार एजेंसी

ख) समाचारक स्रोत बिंदु

ग) आमुख ।

4) समाचार संकलनक स्रोत बिंदु-

समाचार एजेंसी, संवाददाता एवं सरकारी विज्ञप्ति ।

5) समाचार एजेंसी वैज्ञानिक युगमे व्यवस्थित रहैछ एजेंसीक संवाददाता समाचार एकत्रित करै लिखित माध्यममे अपन कार्यालयकेँ पठबैत अछि । एहि ठाम संपादनक बाद टेलीप्रिंटर द्वारा विभिन्न समाचारपत्रकेँ समाचार प्रेषित कएल जाइछ ।

6) क) कोन घटना वा गतिविधि भेल ?

ख) की भेल ?

ग) कहिया भेल ?

घ) कतऽ भेल ?

ङ) किएक भेल ?

7) i) शीर्षक ।

ii) आमुख

iii) मुख्य कलेवर ।

8) समाचारक आरंभमे संपूर्ण केंद्रीय भावकेँ अभिव्यक्त करैत जे बात लिखल जाइत अछि से आमुख कहबैत अछि विस्तारपूर्वक अर्थात् समाचारक सभ पक्षकेँ ठमाकेँ करैत लिखल जायबला समाचारक अंश मुख्य कलेवर कहबैत अछि

9) i) गलत

ii) सही

iii) गलत

iv) सही

v) गलत

विविधा

10) I) कठिन शब्दसँ बचैत आमजनमे प्रचलित शब्दक प्रयोग करबाक चाही ।

II) छोट आ सरल वाक्य बनाबी ।

III) नकारात्मक वाक्यक प्रयोग रहत ।

IV) भाषामे अश्लीलताक भाव नहि रहबाक चाही ।

V) घटनाक अनुरूप भाषा आ शब्दक प्रयोग होयबाक चाही ।

) खेलकूदक समाचार लिखब लेल संवाददाताक आहि क्षेत्रक सम्पूर्ण जानकारी रहबाक चाही समाचारक भाषा सही यथोचित ओहो क्षेत्रमे सम्बद्ध हो तँ से नीक । नै संवाददाताक सम्बद्ध खेलविशेषमे प्रचलित शब्दक चयन तथा तकनीकी पक्षक ज्ञान होयब जरूरी अछि ।

अभ्यास :

1) कोन घटना खेल : गिरफ्तारी ।

की खेल : अन्तर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट पार्टीक नेता राजनारायणकेँ गिरफ्तार कऽ लेल गेलनि ।

कहिया खेल : 17 जूनकेँ ।

कतऽ खेल : चंडीगढ़मे ।

किएक खेल : हरियाणामे भजनलाल सरकारक बर्खास्तगीक माँग कऽ रहल छलाह ।

2) दरभंगा 10 जुलाइ निज संवाददाता/एजेंसी । दरभंगाक ग्रामीण क्षेत्रमे आकस्मात बाढ़िक पानि पसरि बसबाक कारणेँ जान मालक बहुत नोकसानक खबरि अछि जिला प्रशासन प्रभावित व्यक्तिकेँ सुरक्षित स्थानपर पहुँचयबाक प्रयासमे लागल अछि

दरभंगा जिलाक कुशेश्वर प्रखंडक 10 गाम बाढ़िसँ घेरा गेल अछि कतिपय राहि अवरुद्ध कयनोक पानि अहि क्षेत्रमे प्रवेश कऽ गेल एहिसँ लगभग सात हजारक आबादी प्रभावित अछि । पानि गतिक तेजीसँ बढ़ल जे लोकि अन्न पानि छोड़ि जान बचा सुरक्षित स्थानपर पड़ायल बाढ़िक कारणेँ सड़क सम्पर्क भंग भऽ गेल अछि तथापि जिला प्रशासन नावक मदतिसँ लोककेँ सहायता लेल प्रयासरत अछि जिला मुख्यालयमे सूखा गुड़ मलाइ मोमबत्ती आ प्लास्टिक उपलब्ध कराओल गेल अछि

कमलाक जलस्तरमे अकस्मात भेल वृद्धि तथा नेपाल सरकार द्वारा कोसी बैराजसँ तीन लाख क्यूसेक पानि छोड़बाक सूचनासँ एहि क्षेत्रक लोक भयभीत अछि जिला प्रशासन राज्य सरकारकेँ प्राथमिक संदेश पठौलक अछि ।

3) शीर्षक चुनाव सुधार विधेयकपर लोकसभामे बहस

आमुख नव दिल्ली 14 दिसम्बर चुनाव सुधार संबंधी विधेयकपर लोकसभामे मेल बहुमत बीच सदस्य लोकनि मतदानक वयस 21 वर्षसँ घटाकऽ 18 वर्ष करबाक प्रस्तावक पूर्ण समर्थन कयलनि चुनाव सुधारक सम्बन्धमे दूटा विधेयक कानून मंत्री श्री० शंकरानन्द कालिह लोकसभामे प्रस्तुत कयने रहथि आइ चलल सात घंटाक बहसक मध्य सदस्यलोकनि कतेक संशोधन सेहो प्रस्तुत कयलनि

मुख्य कलेवर – आइ लोकसभामे चुनाव सुधारक सम्बन्धमे प्रस्तुत कयल गल विधेयकपर बहस प्रारंभ भल । बहसमे भाग लेनिहार सांसदलोकनि मताधिकारक वयस घटाओल जयबाक समर्थन कयलनि सत्तापक्ष आ विपक्ष दुनू जनप्रतिनिधित्व कानूनक 16 धारामे 95म संशोधन पेश कयलनि विपक्षी सदस्यलोकनि विधेयककेँ अपूर्ण कहलनि ।

काल्हि लोकसभामे कानून मंत्री डॉ० शंकरानन्द चुनाव प्रणालीमे व्यापक सुधारक सम्बन्धमे दूटा विधेयक पेश कयने रहथि । पहिल विधेयक मताधिकारक वयस 21 वर्षसँ घटाकऽ 18 वर्ष करबाक सम्बन्धमे अछि ई विधेयक संविधानमे 62म संशोधनक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

आइ भेल बहसमे दू मंत्री सहित सत्तापक्ष आ विपक्षक दू दर्जनसँ बेसी सदस्य भाग लेलनि सात घंटा धरि बहस चलल, मुदा अपूर्ण रहल ।

3 एवं 4 क उत्तर स्वयं तैयार करी ।

इकाइ 16 विज्ञानक भाषा तथा पारिभाषिक शब्द

इकाइक रूपरेखा

16.0 उद्देश्य
16.1 प्रस्तावना
16.2 पेट्रोलियम
16.3 पेट्रोलियमक स्रोत
16.4 तैलकूप खनन
16.5 तैलक शोधन
16.6 भारतीय स्थिति
16.7 पारिभाषिक शब्द
16.8 सारांश
16.9 अभ्यासक प्रश्न

16.0 उद्देश्य

पैघली भाषाक माध्यम सँ विज्ञान विषयक पाठ पढ़ल वा पढ़ाबै आहि ताहिसँ पहिनेसँ एतऽ परिचय करायल जायत। पैघलीक एक सशक्त विषय सिरुक अध्ययन विज्ञानक विषयक स्पष्टता आ पूर्णताक संग प्रस्तुत करबामे सहायक होयत।

एहि इकाइक पढ़िकऽ अहाँ :

- पेट्रोलियम शीर्षक विज्ञान विषयक पाठक एहि भाषा अभिव्यक्ति पद्धति सकल तथा पेट्रोलियमक विभिन्न क्षेत्रक एवं उत्पादक स्वरूप आदिक सामान्य परिचय ज्ञान प्राप्त कऽ सकब।
- विज्ञान विषयक पाठक पारिभाषिक शब्दक स्वरूप आ ओकर प्रयोगक विषयमे बुझि सकब आहिसँ समान विषयक शब्दक माध्यमे पाठक बुझा कऽ सकब।
- अतिरिक्त सामग्रीक सम्बन्धमे एहि पाठसँ अवश्यक सहयोग लऽ गंभीर रूपेँ अध्ययन आहिसँ स्वयं अनुसन्धान कऽ सकब जे अहाँ विषयक ज्ञानमे कोना कऽ सकब।
- गवेषणात्मक भाषामे स्पष्ट कथन तथा निष्पक्षतापूर्ण अर्थ ग्रहणक संदर्भमे सुनिश्चित करबा लेल सामग्री आ स्थापनाक प्रयोगक विषयमे सिखि सकब आहिसँ पाठक विषय वस्तुक व्यवस्थित रूपेँ अपन मनमे आत्मसात कऽ सकब।

16.1 प्रस्तावना

आइ सभ्यता विकासक चरम सीमाक छूबि रहल अछि आ प्रारम्भिक आवश्यकाकेँ बहुत पाछाँ छोड़ि चुकल अछि। आइ इलेक्ट्रॉनिकयुग यान चलि रहल अछि आइ मनुष्य पर्वतक पंक्ति हवाइ आ मुन्दर घर बनाकऽ रहि रहल अछि आ आइ यान आ विमानक माध्यमे जल, थल एवं हवामे स्वच्छन्द विचरण करैत अछि आ महो तनेक तरहेँ जे किछुए क्षणमे सैकड़ो किलोमीटर पहुँच जाइत अछि। इहनलोकनि सभ्य बेमि दूरदर्शनिक माध्यमे समस्त संसारक घटनाकेँ प्रत्यक्ष देखि लैत छी। ई सभकिछु विज्ञानक देन थिक मुदा ई सभकिछु तखने सम्भव भेलैक जखन मनुष्य जिज्ञासा अपन लक्ष्यक प्राप्तिमे कठिन श्रम कोरब अनुसंधानरत

रहल आ ऊर्जाक नव नव स्रोतकेँ तकबामे सफल भेल एहि दिशामे पेट्रोलियमक खोज एकटा महत्त्वपूर्ण घटना छल एहि अध्यायमे अहाँ पेट्रोलियमक खोज, आकर खनन आ ओहिसँ बनल वस्तुक विषयमे पढब ।

16.2 पेट्रोलियम

पृथ्वीक उत्पत्ति

अनुमान कयल जाइत अछि जे लगभग साढ़े चारि सय करोड़ वर्ष पूर्व एहि पृथ्वीक जन्म भेल छल आरम्भमे पृथ्वी तप्त गोलाक सदृश छल । ओहि समयमे पृथ्वीपर कोनो प्रकारक जीव अस्तुक कल्पना करब असम्भव छल कारण जे प्राणदायक आक्सीजन गैसक ओहि समयमे कतहु पता नहि छल खाली कार्बन डाइऑक्साइड वाष्पकण आ किछु अंशमे नाइट्रोजन गैस विद्यमान छल एहिना करोड़ो वर्ष व्यतीत भऽ गेल पृथ्वी क्रमशः ठंढा भऽ गेल यद्यपि पृथ्वीक आंतरिक हिस्सा लावा अत्यंत गर्म आ पिघलल सन छल किन्तु ऊपरक सतह ठंढा भऽ कपड़ा जकाँ पपड़ी सन भऽ गेल छल । एहि तरहेँ कतोक ऊँच ऊँच पहाड़ खाधि आ गहींर समुद्र बनि गेल । आर समय बीतल वायुमंडलमे परिवर्तनक कारणेँ वाष्पकण मेघक रूप धारण कयलक आ तापमान कम भेलापर मुसलाधार वर्षा होबऽ लागल वर्षासँ झील आ समुद्रक सृष्टि भेल आ पहाड़सँ नीचाँ गुहेँ नदीसभ बहऽ लागल एहिना, मनोकर यथोचितु बहुत समय धरि रहल ।

जीवक उत्पत्ति

आइसँ करोड़ो वर्ष पूर्व जीवक सृष्टि भेल । सर्वप्रथम उद्भिद् नामक जीव उत्पन्न भेल जे आइक सेमारसँ मिलैत जुलैत छल । एकरा लेल आवश्यक पोषक तत्व छल- जल आ कार्बन डाइआक्साइड जे पृथ्वीपर प्रचुर मात्रामे उपलब्ध छल तेँ आ उद्भिद् सम्पूर्ण पृथ्वीपर पसरि गेल पुनः ओहन अन्य जन्तुक उत्पत्ति भेल जकर आहार ई उद्भिद् छल आ प्राणीसभ जलमे रहनिहार छल जकर अकृति अति-कालिक घोंघा-सितुआसँ मिलैत छल । एहि प्राणीक उत्पत्तिसँ जे जीवन चक्र चलल से आइयो विद्यमान अछि । उद्भिद् कार्बन डाइआक्साइड ग्रहण करैत छल आ आक्सीजन छोड़ैत छल तथा अन्य प्राणी आक्सीजन ग्रहण करैत छल आ कार्बन डाइआक्साइड छोड़ैत छल एहि तरहेँ आपस एक दोसराक पूरक छल आ एक दोसराक पोषण संवर्द्धन करैत छल । सभ जीव परणशील छाड़ल अछि । सम्पूर्ण पृथ्वीपर पसरल उद्भिद् आ सभ जीव-जन्तु मरैत छल आ समुद्र सभमे बहि गलिकऽ अथवा छाड़ल छल एहिपर नदी द्वारा आनल गेल करोड़ो टन माटि आ कंकड़ जमा होइत छल ई प्रक्रिया करोड़ो वर्ष धरि चलैत रहल । आन्तरिक ताप आ भारी ऊपरी दाबक कारणेँ एहि जैविक कंकालसँ एकटा नव प्रकारक तरल पदार्थ बनल जकर नाम पड़ल खनिज तेल । वैज्ञानिक लोकनि ओही खनिज तेलक नामकरण कयलनि पेट्रोलियम आ एकरे अनगोत कतोक तेल अबैत अछि, जकरा हमसभलोकनि किरासन डीजल पेट्रोल आदि कहैत छिऐक ।

चट्टानक प्रकार

आब अहाँ कहि सकैत छी जे पेट्रोल किरासन तेल आदि तँ पानिमेँ हल्लुक होइत छैक तखन ईसभ पानिक ऊपरी तलपर छिलकैत किएक ने पड़ैत अछि ? एहि हेतु अहाँकेँ चट्टानक संरचनापर ध्यान देबऽ पड़त । पृथ्वीक प्रारंभिक कालमे ढलुआ लगातार बनल होइत छल आ बरखाक पानि ढलुआ पहाड़मेँ चहैत समुद्रमे पहुँचैत छल तेँ अपन संग बहुत पैघ मात्रामे कंकड़ आ माटि लऽ जाइत छल आहिसँ समुद्र तलपर परत बनि जाइत छल । कतोक वर्ष धरि लाखो टन माटि एक दोसराक ऊपर जमा होइत गेल, जे कालान्तरेँ कठोर बनि चट्टानक रूप धारण कयलक । एकक ऊपर एक स्तरक रूपमे होएबाक कारणेँ एकरा स्तरित चट्टान कहल जाइत

अछि । एहिमेसँ तरल पदार्थ चुबि सकैत अछि आ ई अपेक्षाकृत मोलायम रहैत अछि एहने समयमे पृथ्वीमे एकटा दोसरा तरहक चट्टान बनि रहल छल । पृथ्वीक भीतरी भाग अत्यंत गर्म छलैक आ तँ आनउ पिघलल अवस्थामे धातुमिश्रित पदार्थ छलैक । ई पदार्थ अछुत ऊपर दिस प्रवाहित होइत छल तँ कहुगर चट्टान बना दैत छल आगिसँ तप्त रहबाक कारणँ ई चट्टान कठुर आ अमरा रहैत छल जाहिसँ तरल पदार्थ चुबि नहि सकैत छल आगिसँ बनल रहबाक कारणँ एहि चट्टानक नाम पड़ल- आग्नेय चट्टान

16.3 पेट्रोलियमक स्रोत

पेट्रोलियम एक एहन तरल पदार्थ थिक जे चुबि चबिकऽ ठाम ठाम जमा भऽ जाइत अछि किन्तु आग्नेय चट्टानकँ ई पार नहि कऽ सकैत अछि जेना स्तरित चट्टान आ आग्नेय चट्टान पृथ्वीकँ भीतर कोना छापि गेल अछि आ पेट्रोलियम स्तरित चट्टानक बीच जमा भेल रहि जाइत अछि एहिना पृथ्वीक अन्तःस्थलमे तेलक भण्डार सेहो बनि जाइत अछि तेल भण्डारक नीचाँ आ चारूकात आग्नेय चट्टानक रहने पेट्रोलियम भीतर सुरक्षित रहि जाइत अछि एकर अतिरिक्त पृथ्वीक ठाम ठाम एहन रहि जाइत छैक जाहिसँ तेल बाहरक घरनोपर जमा भऽ जाइत छैक आ छानल-छानल प्राकृतिक रूपमे तेल बाहर निकलैत अछि वैज्ञानिकलोकनि निम्नांकित तथ्यक आधार पर पेट्रोलियम दू तरहँ मानैत अछि तेलकूपजसँ एवं निस्सादनी प्रस्तरसँ ।

निस्यंदन शैल

सर्वप्रथम लोकनि ध्यान आकृष्ट पेट्रोलियम दिस गेलैक जे प्रस्तरक माध्यमे पृथ्वीक सतहपर पसरल छल कारण जे एहि हेतु पृ सूक्ष्मनलक आवश्यकता नहि होइत छल ई शैल जल वायुरोधी पात्र नहि अपितु किछु गाढ़ तरल अछि । जमीनक कणमे जमा भेने आ वायुप्रवेशक माध्यमक रहने ई शैल किछु सूखा जाइत छैक आ काली कठोर पदार्थक रूपमे सेहो देखि पड़ैत अछि । यही पाथिक, ई शैलसम तथा तलछम पदार्थ बनि जाइत अछि जकरा एम्फाल्ट अथवा बिटूमन कहल जाइत छैक । एम्फाल्टक बोरीमे जल नहि रुकैत छैक एकर एही गुणक कारणँ प्राचीन समयमे जहाजक तख्ताक जोड़मे एकरा भरि सेल जाइत छलैक जहाजक पेंदी तथा भीतरक भागमे सेहो एकर लेप कयल जाइत छल मकानक निर्माणमे पाथरकँ सेहो एहि पदार्थमे जोड़ल जाइत छल । दक्षिण अमेरिकाक अन्तर्गत प्राचीन इंका सभ्यता आ प्राचीन बबीलोनी सभ्यताक अवशेषमे स्पष्ट होइत अछि जे ओलोकनि एम्फाल्टक उपयोग कोना छलाह मध्ययुगमे तँ निस्यंदन तेल कुरिऐनी तथा बाहरी औषधक रूपमे लगाओल जाइत छल आ अन्यो रोग एहिसँ बनिकऽ तैयार होइत छल । किन्तु शताब्दी पूर्व इंगलैंडक एक वैज्ञानिक एडवी माफ करबाक तरीकाक आविष्कार कयलनि जाहिसँ एकर तीनटा रूप सभक्षमे आयल

1) सभमेँ पातर स्वच्छ तरल पदार्थ जे दीपमे प्रकाशक द्योतक कार्य करैत छल
2) किछु मोट तरल पदार्थ जे मशीनमे स्नेहकत्विक कार्य करैत छल तथा
3) सभसँ गाढ़ पदार्थ, जाहिसँ बोगबत्तीक निर्माण भेल ।

एहि तरहेँ लोक निस्यंदन तत्वसँ किछु किछु परिचित तँ बहुत दिनसँ छल मुदा पृथ्वीतल द्वारा तेलकुइयाँ पेट्रोलियम निकालबाक विज्ञानमे जे भविष्यत भेल तकरा दू सौ सय वर्षसँ अधिक नहि भेल होयत एहि दिशामे चारि सएसँ आगाँ अछि जखन लगभग दू हजार वर्ष पूर्वहि कूप खुनल छल तल निकालल गेल आ बाँसक नलीक पाइप बनाकऽ पाइप लाइन द्वारा आकरी दूर लऽ जयबाक व्यवस्था कयल गेल किन्तु एकर विस्तृत विवरण उपलब्ध नहि अछि

विगत शताब्दीमे कूप खनन द्वारा तेल निकालबाक विधिमा अत्यन्त रोचक अछि । एलेक्स यूरोपमे अखुन अमेरिकामे जाकऽ कमऽ लागल तखन पंच जनक समस्त ओकर समक्ष अयलैक एलेक इनार खुनबऽ लागल ओहो क्रममे कतोक स्थानमे पानिक बदला अलीव रन तेल बहरायल । पहिने तँ एकर प्रहन स्थानकेँ लोक छोड़ैत गेल मुदा बादमे कमो बुद्धिमान व्यक्ति एकर औषध कऽ सिद्ध कयलनि जे एहिसँ प्रकाशक व्यवस्था कयल जा सकैत अछि, आहिमे वनस्पति तेलक बचल होयत । प्रारम्भिक दिन जे मूर्खन प्रकाशक हेतु वनस्पतिमे तेलक व्यवहार होइत छल प्रारम्भमे लोगमे आगि लगबिते फकड़ी अरि जाइत छलैक आ एकाएक कम धुआँ बला छलैक बादमे ओहो तेलकेँ शुद्ध करबाक प्रयास चल आ आ साफ प्रकाश देबऽ लागल लालटेनमे गोटे तेलक माह बढ़ऽ लागल जेना जेना एहि तेलक माह बढ़ल इनारकेँ खोदी गहीरे खुनबाक प्रयास कयल गेल । सन् 1959 मे अमेरिकाक पेंसिलवैनियाँ राज्यमे तेलक पहिल इनार खुनल गेल आ एहि खनन कार्यक संचालनक भार रेल कम्पनीक एक माह एडविन ड्रेक लेने छलाह 27 अगस्त 959केँ इनारक पेनोरँ तेल फुहारा जकाँ फूटि पड़ल आ मानव सभ्यताक विकासक इतिहास लिखनामे एक महत्वपूर्ण खण्ड पानल जाएत

तेलकुण्डक खोज

सम्प्रति तेलकुण्डक खोज एकटा कठिन कार्य थिक पहिने तँ लोक विस्फोटन तेलक स्थानमे सैलक कूप खुनऽ लागल किन्तु एहि स्थानपर तेल कम भेटैत छलैक कारण जे भूकम्प अथवा अन्य कारणेँ कूप छातमे विस्फोटन स्थानक मार्ग कठोर चट्टान द्वारा बन्द भऽ जाइत छलैक । अथवा इहो होइत छलैक जे पूरा छातमे विस्फोटन स्थान पर्याप्त दूर रहैत छलैक मध्यमधे पर्याप्त गहीरैमे अवस्थित तेलकुण्डमे पर्याप्त तेल-भण्डार रहैत अछि आहिपर बहुत समय धरि ध्यान कयल जा सकैत अछि एहि तेलकुण्डक आधारमे कपरसँ चाहि जाइत छैक आ एकर पता लगायब बड़ा दुष्कर छैक जखन एक बेर तेलकुण्डक पता चलि जाइत छैक तँ आन काज अपेक्षा भऽ जाइत अछि । तथा तथा वैज्ञानिक प्रणालीमे आब ई काज किछु आसान तँ अवश्य भऽ गेल अछि किन्तु एहिमे पर्याप्त समय आ धन खर्च होइत छैक ।

सर्वप्रथम हवाइ जहाजमे सम्पूर्ण धरातलक फोटो लेल जाइत अछि । पुनः आहि स्थानपर तेल भेटबाक सम्भावना रहैत छैक ओतऽ किछु वैज्ञानिक अध्ययन एवं परीक्षण कयल जाइत अछि । ई अध्ययन परीक्षण तीन तरहेँ कयल जाइत अछि भूगर्भशास्त्रीय भू भौतिकीय एवं भू रसायनिकीय भूगर्भशास्त्र द्वारा आहि ठामक चट्टानक संरचना आदिक पता लगाओल जाइत अछि ई पतालग जाइत अछि जे स्तरित चट्टान कतऽ अछि आ अग्नेय चट्टान कतऽ ? आ एक दोसरपर कोन क्रममे आ कोन ढंगे पड़ल अछि संगहि ईहो देखब आवश्यक जे कतऽ आग्नेय चट्टान फाटि बाहर आबि चुकल अछि । एहि हेतु धरातलक भीतर कोनो स्थानपर विस्फोट करा पड़ैत छैक आहिमे तरंग उत्पन्न होइत अछि । ई तरंग विभिन्न चट्टानक सतहसँ टकराइत अछि आ आपस अबैत अछि । एहि प्रतिध्वनिकेँ भू फोन ग्रहण करैत अछि । जेना प्रतिध्वनिक तरंगमे रहार वास्तुक प्रकृति आ दूरीक पता लगा लैत अछि. तहिना भू फोनमे पता चलैत अछि जे स्तरित चट्टान आ आग्नेय चट्टान कोना आ कोन तरहेँ पड़ल अछि भू भौतिकी द्वारा गुरुत्वाकर्षण आ चुम्बकीय शक्तिकेँ नापल जाइत अछि एहिसँ मुख्यसँ सदय अंतरमे तेलकुण्डक सम्भावित स्थितिक पता लगैत अछि । भू रसायनिकी द्वारा कपरी पदार्थ आ भिन्न भिन्न स्थानपर खुनल मिट्टीक रसायनिक परीक्षण कऽ खनिज तेलक उपलब्धताक सम्बन्धमे निष्कर्ष बहार कयल जाइत अछि । तेलकुण्ड सम्भवतः दुर्गम स्थान घनघोर जंगल मरुस्थान आ समुद्र सम्मे रहैत अछि तँ खर्च आरो अधिक चढ़ि जाइत अछि यदाकदा पर्याप्त धनराशि खर्च कइयाकऽ सफलता नहि भेटैत छैक ।

16.4 तेलकूप खनन

अखन तेलकुण्डक पता लागि जहन छैक तखने तेलकूपक खनन कार्य प्रारम्भ होइत अछि एहि विधान इजनियरलोकनि अनुपूर्व कुशलता प्राप्त क लेने छथि । लोकाक ऊँच ऊँच लिनकानियाँ मीनार बनबाल जाइत अछि जकरा हुकिक कहल जाइत छैक खनन यंत्रक 'ड्रीलिंग रिग' कहल जाइत छैक एकर मुँहपर मजगूत घैलिवाला नानटा चक्का तेज गतिमे घुमैत रहैत अछि जे कालान्तरे कठोर पाथरक काटि दैत छैक ई घिसन खन जे आरंभ चट्टानमे कखनहुँ कर ई तीन पाँच मास कोदाय दुरि जाइत छैक आ ओकरा पुन: पुन: बदलय पड़ैत छैक । एहि कठोर चट्टानक काटि काल मशीनक कारणवला होत गम भऽ जाइत छैक अ आकरा निरंतर ठंढा करऽ पड़ैत छैक पहिने थालक मग माटि बालु पाथरक टुकड़ी आ किछु कठोर चट्टानक अश निकलैत छैक वैज्ञानिक लोकनि ओहिना एकर सभक परीक्षण करैत रहैत छथि तथा तेल कतक दूरपर होयत एकर अनुमान लगबैत छथि ई अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य अछि कारण ई खनक खर्चपर पहिनहिसँ तेल प्राप्तिक संभावना कपर निर्भर छैक आ मशीनक एतेक अधिक मूल्य होने आरंभे आर लगायाक बाद खनन होत छैक एहिमे असावधानी रहला सँ आगू पाछू होयत सम्पूर्ण मेहनतपर पानि फिरि जाइत अछि अनेक विघ्नबाधा रहला उ तेलकूप खनने एक दुरूह आ जोखिमक कार्य थिक, जाहिमे अत्यंत सावधानी आवश्यक छैक ।

16.5 तैलक शोधन

आरंभमे तेल अत्यंत कम मात्रामे निकलैत छैक आ ओकर शुद्ध पाइप द्वारा पैघ पैघ टैंकमे गहुँमा देल जाइत छैक जखन छोट छोट भग कम भऽ जाइत छैक तँ पम्पक सहायतासँ ओकरा बाहर करऽ पड़ैत छैक कखनो कखनो प्राकृतिक गैसक ओलिहे तेलकूपपर फव्वारा जकाँ छुटि जाइत छैक । एकरा रोकबाक लेल विशेषप्रकारक वाल्वसभ लगाओल जाइत अछि आ अत्यधिक दबावक गैसकेँ क्रमश: कम कऽ देल जाइत छैक । तेलमे प्राय: पानि आ बालुक अंश रहैत अछि जकरा अलग करब आवश्यक होइत छैक । एकरा लेल तेलकूपसँ निकलल तेलकेँ पैघ पैघ टैंकमे राखि देल जाइत छैक । एहिमे तेल अपेक्षाकृत स्वच्छ भऽ जाइत छैक आ पानि आ बालु तरमे बैसि जाइत छैक । एहि टैंकमे तेलकेँ 30 मीटर तथा व्यास लगभग 6 मीटर रहैत अछि । एहि टैंकक विभिन्न विभिन्न ऊँचाइपर नल लागल रहैत छैक । यथार्थमे दानाक पैंजन-पर पानिमे गाढ़ तेल खसिते तल पैसक कारण पानि एहिमे कपरक मंजिलपर धकेलि पहुँचैत अछि, जाहिसँ ओकर नल द्वारा पानि एक भागक टैंक गाढ़ बनिकऽ 'तुलाकोलिन तल' बनबैत छैक एहिमे कपरक मंजिलमे दुनिल ओरमे कखन पेट्रोलियम किरासन तथा आरमे कखनो पेट्रोल जमा होइत छैक मध्यमे कपर पेट्रोलियम गैसक कारण घसि जाइत छैक आ मध्यमे नीचाँमे किछु गाढ़ पदार्थ बचि जाइत छैक जकरा पेट्रोलक कहल जाइत अछि एहिमे मोमबत्ती बनैत छैक पेट्रोलियमक अनेकानेक उपयोग किरासन तथा रत्नज तल सभो बनैत छैक, जाहिमे रंग, इत्र, दवाइ इत्यादि बनैत अछि ।

16.6 भारतीय स्थिति

भारतमे तेलकूपक खनन मुख्य रूपसँ बिहारीनाइ आकर नाकुत कचनाइ आसाम कार्य कछनाइ आ एहि संबंधी आनो दायित्व 'तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग'क देल गल छैक हमर देशमे डिगबाइ' एवं मुम्बइ हाइ तेलक पैघ स्रोत अछि एहु सभक तथा भारतीय समुद्र आयोजित तेल मुम्बइ काचाबे खोजी गुजरातमे बड़ौदा हल्दिया मथुरा आदि स्थानक

16.7 पारिभाषिक शब्द

[illegible] के पाठ पढ़ने पछि यहाँ यी विज्ञानसँ सम्बन्धित [illegible] । विज्ञानका विभिन्न विषयसँ सम्बद्ध विभिन्न विशिष्ट शब्दका माध्यमबाट पुस्तक लेखिएका हुन्छन् । जस्तो रसायनशास्त्रमा रासायनिक शब्दको प्रयोग गरिन्छ भने भू विज्ञानशास्त्रमा चट्टानका प्रकारका पृथक पृथक शब्द व्यक्त गरिन्छन् । यसैगरी यहाँ पाठमा प्रयोग भएका यस्ता चट्टानका नाम उल्लेख भएका छन् । यसले विद्यार्थीलाई विज्ञानका विशिष्ट शब्दहरू पारिभाषिक शब्द भनेको बुझ्न सहयोग गर्नेछ । यदि उनीहरूले पारिभाषिक शब्दको अर्थ ठीकसँग बुझ्न सकेमा उनीहरूलाई विषयवस्तु बुझ्न धेरै सजिलो हुनेछ ।

पारिभाषिक शब्द पाठ्यांशमा प्रयोग भएका छन् । यदि शब्दको परिष्कृत हिन्दी शब्द छोटो भन्दा लामो भएमा वा सरलता नभएमा [illegible] । यस यहाँ प्रयोग भएका केही पारिभाषिक शब्दको विश्लेषण प्रस्तुत गरिएको छ :

- **भू विज्ञान** — पृथ्वीको संरचना तथा गठन प्रदान गर्नेहरू विज्ञानका शाखाहरूलाई भू विज्ञान भनिन्छ ।
- **खण्डीकरण** — साधारणतया प्रयोग हुने ठूला ठूला कण जो खाद्यका रूपमा रहेका हुन्छन्, खाद्यकण भनिन्छ ।
- **वायुमण्डल** — पृथ्वीका चारैतिर रहेका विभिन्न गैस व्याप्त रहेका हुन्छन् जो वायु भनिन्छ । यसैले गर्दा सम्पूर्ण वातावरण वायुमण्डल कहलाउँछ ।
- **ह्युमस** — माटोमा रहेका सूक्ष्म वनस्पतिहरूको [illegible] । यसले माटोमा रहेका कार्बनिक पदार्थहरूलाई [illegible] । यसले गर्दा माटो [illegible] ।
- **उद्भिद्** — यो कोशिका भएका सबै प्रकारका पौधाहरू [illegible] । यसमा [illegible] ।
- **संसर्ग** — यो जनावर [illegible] । यसमा [illegible] ।
- **पोथी** : यो जनावर [illegible] ।
- **भित्ताभा** — यहाँ जनावर [illegible] । यसको [illegible] ।
- **भू-गर्भ** : पृथ्वीको आन्तरिक हिस्सा ।
- **भू खनन** : पृथ्वीको भीतर कायम गरिने खनन-कार्य ।

विविधा

- भूगर्भशास्त्र — जो शास्त्र आहिमे भूमिक भीतरी चनत्वनिक संबंधमे ज्ञान प्राप्त करबे अछि ।
- भूगर्भशास्त्रीय — भूमिसँ संबंधित शास्त्रक सम्बन्धमे ।
- भू भौतिकी - भूमिक भीतरक भौतिकशास्त्रीय अध्ययन ।
- भू रासायनिकी — भूमिक भीतरी पदार्थक रसायनशास्त्रीय अध्ययन
- ताप — प्रत्येक वस्तु (सजीव एवं निर्जीव) कमना कम आनो तापपर रहैत अछि आहमे बाह्य एवं आन्तरिक परिवर्तनसँ अन्तर होइत छैक तापकेँ यथोचित यन्त्र तापमापक यंत्र (थर्मामीटर) कहलैत अछि एकरा द्वारा नापल गेल ताप तापमान वा तापक्रम कहलैत अछि
- दाब — प्रत्येक वस्तु (सजीव एवं निर्जीव) तापहि जकाँ दाबमे सेहो रहैत अछि अर्थात् आकार वा कालक वातावरणक दबाव रहैत छैक दाबक घटने बढ़ने कोनो वस्तुक स्थिति आ रूपमे सहो परिवर्तन होइत छैक । ताप आ दाबमे अन्योन्याश्रय संबंध छैक । दाब बढ़लासँ तापमान बढ़ैत छैक आ दाब घटलासँ तापमान घटैत छैक । जैह कारणसँ आंतरिक ताप आ ओहीठाम दाबक कारणेँ तरल पदार्थ बनल, जकरा लावा सेहो कहल जाइत अछि ।
- भ्रंश (फौल्ट) — पृथ्वीक भीतर चट्टानक कठोरक परत फाटल छैक । ई चट्टान सभ स्थिरभाव रहैत अछि । कतहु सँसो तापक नै कमबे बेसी कारण थिक जे पृथ्वीक भीतरी रचनामे कठोरक स्थानपर चट्टान टूटि जाइत छैक, जकरा भ्रंश अथवा फौल्ट कहल जाइत छैक ।
- गुरुत्वाकर्षण — पृथ्वी आदि आकर्षणक बलसँ कोनो वस्तुकेँ अपना दिस खीचैत छैक, तकरा गुरुत्वाकर्षण कहल जाइत छैक ।
- चुम्बकीय शक्ति — चुम्बक लोहाकेँ अपना दिस खीचैत छैक । चुम्बकमे दूटा ध्रुव होइत छैक उत्तरी आ दक्षिणी पृथ्वीमे सेहो दूटा ध्रुव छैक अर्थात् पृथ्वी सेहो एकटा विशाल चुम्बक थिक जे कोनो वस्तुकेँ अपना दिस खीचैत छैक ।
- भू फोन — ई एकटा यन्त्र थिक जाहिमेँ पृथ्वीक भीतरमे होइत हलचलक सूचना प्राप्त होइत अछि एहिसँ चट्टानक स्थितिक पता लगैत अछि ।
- रेडार — ई एकटा यन्त्र थिक जे आकाशमे गतिशील वस्तुक दूरी आ प्रकृतिक संकेत ध्वनि तरंगक आधारपर दैत अछि ।
- सोनार — एहि यन्त्रमेँ ध्वनि तरंग द्वारा जलक भीतरक वस्तुक दूरीकेँ नापल जाइत अछि ।
- तेलकुंड — पृथ्वीक भीतर जतऽ तेलक भंडार रहैत अछि, तकरा तेलकुंड कहल जाइत अछि ।

- **तेलकूप** — भू-स्तरक द्वारा आदि खुनिसँ तेल निकालल जाइत अछि, तकरा तेलकूप कहल जाइत अछि ।
- **ड्रेरिक** — तेल-खननक हेतु तेलकूपमे स्थापित लम्बवत लोहाक ढेर-ढेर तिकोनियाँ मीनारनुमा यंत्र ।
- **ड्रिलिंग रिंग** — तेलकूपसँ तेल निकालबाक हेतु खनन यंत्र ।

OIL DRILL DIGGING DEEP INTO THE EARTH

PETROLEUM Primary Products

शोधन — खनिज तेल सदिखन कहाँ कयल जाइत अछि तैं ओ उपयोग करबाक योग्य नहि रहैत अछि । एकरा शोधनशालामे साफ कयल जाइत अछि । एहि प्रक्रियाकेँ शोधन क्रिया कहल जाइत अछि । शोधनक फलस्वरूप होजल किरासन पेट्रोल पेराफिन (जाहिसँ मोम बनैत अछि) एस्फाल्ट (जाहिसँ सुखौनिंग तेल बनैत अछि) आदि बनैत अछि ।

- **प्राकृतिक गैस** — तेल खननक समयमे पाइपसँ अपरिष्कृत तेल बहैत छैक तथा ज्वलनशील गैस सदा बहैत छैक । एहो गैसमे घरमे भोजन बनैत अछि । ई अधिक दबावपर तरल रूपमे रहैत छैक, किन्तु साधारण तापपर गैसक रूपमे परिणत भऽ जाइत छैक ।

किछु अन्य पारिभाषिक शब्द :

- **ऊर्जा** — ऊर्जाक अर्थ थिक शक्ति, सदा एहन ऊर्जा जे शक्ति थिक जाहिसँ कोनो कार्य कयल जाइत अछि ।
- **विद्युत ऊर्जा** — आइ काल्हि विद्युत ऊर्जा एक प्रमुख ऊर्जाक रूपमे थिक । ई ऊर्जा तेल आ तापसँ प्राप्त होइत अछि आ दूर दूर धरि तारक माध्यमे पहुँचाओल जाइत अछि ।
- **नाभिकीय ऊर्जा** — ई ऊर्जा परमाणु शक्तिसँ प्राप्त कयल जाइत अछि । एहिमे यूरेनियमकेँ परमाणुमे विखण्डित कऽकऽ ऊर्जा प्राप्त कयल जाइत अछि । एहि विधिसँ प्राप्त ऊर्जाक मात्रा आ शक्ति सभसँ अधिक होइत अछि ।

- **सौर ऊर्जा** - सूर्यक प्रकाशसँ उत्पन्न ऊर्जा सौर ऊर्जा कहबैत अछि सूर्यक प्रकाशमे ऊष्मा रहैत छैक जकरा परावर्त द्वारा ऊर्जामे परिवर्तित कयल जाइत छैक

- **परमाणु शक्ति** परमाणु कोनो तत्त्वक सभसँ छोट इकाइक नाम थिक एहि परमाणुकेँ विस्फोट द्वारा खण्डित कयने जे ऊर्जा प्राप्त होइत छैक तेह थिक परमाणु शक्ति ।

अतिरिक्त अध्ययन :

आहाँ एहि इकाइमे ऊर्जाक मुख्य स्रोत पेट्रोलियमक विषयमे पढ़लहुँ अछि ऊर्जाक प्रयोजन आजुक युगमे हेंग हेंगपर छैक घनसाधनमे, इजात करबामे मशीन चलयबामे वाहन घनयबामे इंधनक उपयोग सभ ठाम छैक पूर्वमे मनुष्य लकड़ी कोइला इत्यादिक प्रयोग ऊर्जाक हेतु करैत छल किन्तु ई विज्ञानक चमत्कार थिक जे मनुष्य नव ऊर्जाक स्रोत ताकि सकल । एकर परिणाम थिक पेट्रोलियम पदार्थक प्राप्ति विद्युत ऊर्जा आ नाभिकीय ऊर्जा सेहो ऊर्जाक नव स्रोत थिक विद्युत ऊर्जाक हेतु जल आ ताप विधिक उपयोग होइत अछि । नाभिकीय ऊर्जामे परमाणु शक्तिक प्रयोग कयल जाइत अछि । कोइला आ पेट्रोलियम एखनहुँ ऊर्जाक प्रमुख स्रोत थिक एकर पृथ्वीक खनन द्वारा निकालल जाइत अछि आ एकर समाप्तिक खतरा सतत रहैत छैक एहि दृष्टिएँ नाभिकीय ऊर्जाक महत्त्व अधिक अछि मुदा नाभिकीय ऊर्जाक अपशिष्टमेँ उत्पन्न खतरनाक कारणेँ एकर उपयोगकेँ सुरक्षित नहि मानल जा सकैत अछि । एखन ऊर्जाक नव स्रोतक खोज भऽ रहल अछि, जकर सम्भाव्यता भय नहि रहय एकर अतिरिक्त जल आ वायुक सहायतासँ सस्ता ऊर्जा उत्पादन करबाक प्रयास कयल जा रहल अछि एखन ऊर्जाक एहि प्राकृतिक स्रोतक विकास नहि भेलैक अछि । यद्यपि ई ऊर्जाक स्रोत निश्चिन्त प्रकृतिप्रदत्त अछि किन्तु कम खर्चमे सुगमतापूर्वक एकरा प्रयोगमे आनब अपेक्षाकृत उपाय साध्य भा रहल अछि इहो आवश्यक जे एहि ऊर्जाक उपयोग सम्बन्ध हेबय आहिमेँ खनिज तेलमेँ प्राप्त ऊर्जा सुरक्षित राखि सकल

अभ्यास–1

आहाँ पाठ मन लगाकऽ पढ़ने होएब एतऽ किछु लघूत्तरीय प्रश्न देल जा रहल अछि । एकर उत्तर देबाक प्रयास करू आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलान करऽकऽ देखू जे आहाँक उत्तर ठीक भेल अछि ।

1) निम्नलिखित वाक्यक प्रसंग कहू जे ओ सत्य अछि वा असत्य

अ) प्रारंभमे पृथ्वी पूर्णतः ठोस छल । (सत्य/असत्य)

आ) खनिज तेल उद्भिद् आ लघु जीवजन्तुक मृत शरीरसँ बनैत अछि ।
(सत्य/असत्य)

इ) तेलकुंडक चारू कातक दबाब चट्टानक बनल रहैत अछि
(सत्य/असत्य)

ई) निम्नस्तर तेल बहुत गहींर तेलकुंडमे पेटैत छैक (सत्य/असत्य)

उ) तेलशोधक कारखानामे सभसँ निचला मंजिलमे द्रौजल रहैत अछि
(सत्य/असत्य)

2) रिक्त स्थानक पूर्ति करू–

अ) पृथ्वीपर सभसँ पहिने जे तीन प्रत्यन्न तेल मे थिक

आ) पानिक संग बहिर्कऽ आयल मारि कऽकहर्मे चट्टान बनल

इ) खूप खननक बाद नीचाँसँ ____ निकालल जाइत अछि ।

ई) तलछट खोज करबाक परीक्षण तीन तरहँ होइत अछि भूगर्भशास्त्रीय भूरासायनिकीय ।

उ) आग्नेय चट्टानमे ड्रिलिंग मशीनक दाँत कखनहुँ कऽ फुटैमे टूटि जाइत छैक ।

१ कोष्ठमे देल गेल शब्दकेँ दबू आ आगिसँ शुद्ध शब्दकेँ बोहिकऽ रिक्त स्थानकेँ भरू

अ) किरासन तेल पानिसँ . होइत अछि । हल्लुक/भारी

आ) आग्नेय चट्टान स्तरित चट्टानसँ ____ होइत अछि । कठोर/कोमल)

इ) स्नेहन तेल ____ होइत अछि । (पातर/गाढ़े)

ई) स्नेहन तेल मशीनक कारण जाम भसमसा रहल बीच अहाँ अछि कऽए कहल जाइत अछि । (सुखाकेंटिंग तेल, एम्फाल्ट)

४ क एम्फाल्टकेँ बनबै लेल कोन तीन प्रकारक पदार्थ प्राप्त होइत अछि ओ लिख

अ) ..

आ)

इ)

ख पृथ्वीमे तलछट पता लगेबाक हेतु निम्नलिखित तीन परीक्षण कएल जाइत अछि

अ) ..

आ

इ

५ आहाँ यदि इकाइमे निम्नलिखित चट्टानक विषयमे पढ़लहुँ अछि

क) स्तरित चट्टान

ख आग्नेय चट्टान एहेन दुनू प्रकारक चट्टानकेँ चित्र द्वारा देखाबैत गेल अछि

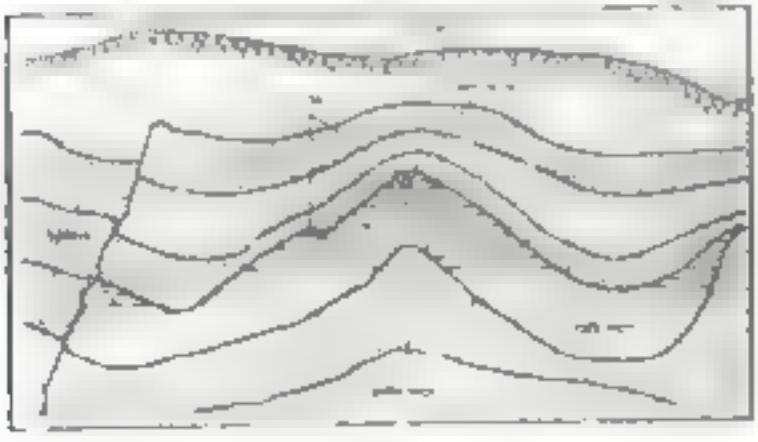

चित्रमे स्पष्ट अछि जे स्तरित चट्टान आ आग्नेय चट्टान कोन होइत अछि

अ आब अहाँ बुद्धि गल्ल छी जे तेलकूपसँ बहार कएल गेल तेलकेँ शुद्धिकरण कारखानासँ चारू प्रकारक पदार्थालयय पदार्थ बनेबा छैक एहेन चित्र देल जा रहल अछि । आहाँ देखिकऽ कहू जे एकर कोन तत्वसँ पेट्रोलियमक कोन प्रकारक तेल निकालैत छैक ।

आ) आहाँ एहा पदार्थहुँ आँखि जे हमरक खाज विभिन्न स्वरूपर लाइत छैक एहेन स्वरूप कारक जे विभिन्न स्वरूप तेलक खोज करबा लोइत छैक ?

तलक खाज प्रथम स्तर सभागित आवश्यक वायुमंडल द्वारा फारा

पारम्भ

– द्वितीय स्तर ..

– तृतीय स्तर

तेल पार्थिक

संकेत – चतुर्थ स्तर

– तेल निकालबाक हेतु खनन कार्य प्रारम्भ

6 आहाँ एकि पाठकेँ मन लगाकऽ पढ़ल होयब आरम्भमे आहाँ देखने होयब जे पृथ्वीक कोनमे समुद्र तथा झरना थरि जनबाक प्रक्रिया कहल गेल अछि ई प्रक्रिया क्रमबद्ध रूपमे कहल गेल अछि । एकरा क्रमबद्ध रूपमे एहेन प्रस्तुत कएल जा रहल अछि

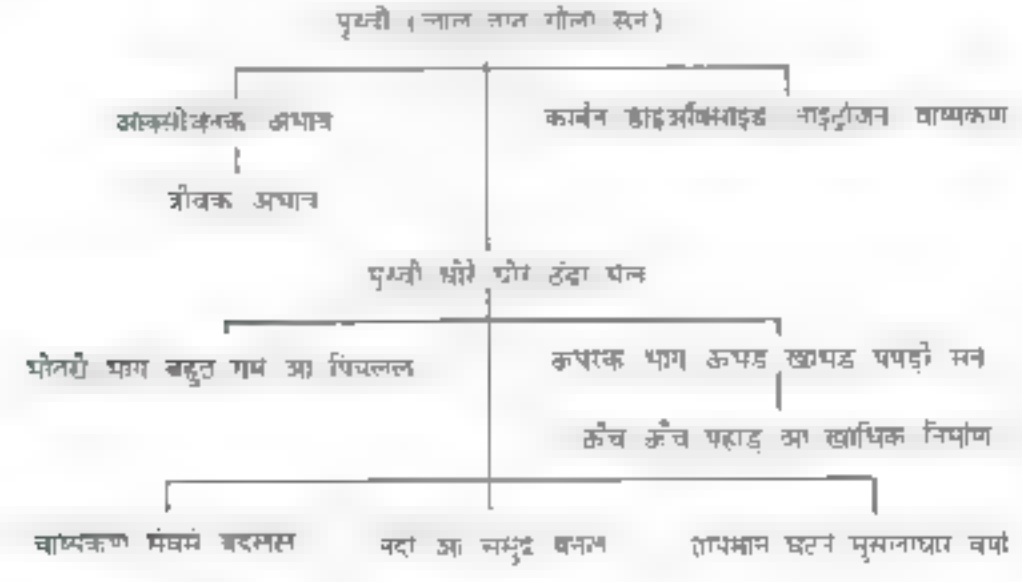

उपर्युक्त चित्रसँ पेट्रोलियमक उत्पत्तिकेँ देखाउ ।

1) ऊर्जाक विभिन्न स्रोतकेँ ध्यानमे राखि एहि प्रश्नक उत्तर लिखू–

अ) ऊर्जाक पारंपरिक स्रोत की सभ अछि ?

.....

.....

.....

आ) ऊर्जाक आधुनिक स्रोत की सभ अछि ?

.....

.....

.....

इ) विद्युत् ऊर्जा उत्पन्न करबाक दूटा प्रमुख विधिक नाम लिखू ।

.....

.....

ई) प्राकृतिक ऊर्जाक स्रोत की सभ अछि ? ओकर अपरंपरागत किएक कहल जाइत अछि ? दूटा कारण लिखू ।

.....

.....

उ) प्राकृतिक ऊर्जाक प्रयोगक संबंधमे आबऽवला दूटा कठिनताक उल्लेख करू ।

.....

.....

बीचमे अभ्यास देल जा रहल अछि, जाहिसँ अहाँक पारिभाषिक शब्दक भंडार बढ़त । एहि उत्तरक हेतु अहाँ पाठकेँ ध्यानसँ पढ़ू तथा अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोशक मदति लिअऽ ।

अभ्यास-2 :

1) एतऽ किछु परिभाषा देल जा रहल अछि । अहाँ एकरा पढ़ू आ पारिभाषिक शब्द लिखू ।

परिभाषा	पारिभाषिक शब्द
अ) समुद्रमे माटि आ कंकड़क तहमेँ बनऽवला चट्टान	.....
आ) जैव कंकालसँ बनल तरल पदार्थ	.....
इ) चट्टानक दरारमेँ चुबैत धरतीक तलपर पसरऽवला पेट्रोलियम	.....
ई) भिन्न-भिन्न जगहसँ निकालल गेल माटिक परीक्षण	.....
उ) चट्टानसँ उत्पन्न तरंगक प्रतिध्वनिक अध्ययन करऽवला यंत्र	.....
ऊ) भूगर्भमे तेलक खनन करबाक हेतु प्रयुक्त होबऽवला यंत्र	.....

2) एहऽ पाठमे प्रयुक्त किछु पारिभाषिक शब्दक उल्लेख कयल गेल अछि । एकर अंग्रेजी शब्द सेहो देल गेल अछि । अहाँ चौकिकऽ लिखू । उदाहरणार्थ, खनिज तेल– पेट्रोलियम ।

	परिभाषिक शब्द		अंग्रेजी शब्द
अ)	स्तरित चट्टान	1)	Gravity
आ)	भू-भौतिकी	2)	Cruid oil
इ)	गुरुत्वाकर्षण	3)	Geophone
ई)	अपरिष्कृत तेल	4)	Layered rock
उ)	भू-फोन	5)	Geophysics

3) अहाँ पाठमे देलक खोजक संबंधमे भूगर्भशास्त्रीय, भूभौतिकीय एवं भूरसायनिकीय परीक्षणक विधिक अध्ययन कयलहुँ । एहि विधिक संबंध भूविज्ञानसँ अछि । भूविज्ञानसँ संबंधित अध्ययनकेँ पूर्णता प्रदान करबाक हेतु विज्ञानक अन्यान्ये शाखाक प्रयोग कयल जाइत अछि । अध्ययनक एहन विशिष्ट क्षेत्रकेँ देखबाक हेतु भूभौतिकी (Geophysits) आ भूरसायनिकी (Geochemistry) शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि । विज्ञानक अन्य शाखासँ संबंधित विशिष्ट क्षेत्रक हेतु सेहो एहने शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

खगोलविज्ञान आ जीवविज्ञानक भौतिकशास्त्र तथा रसायनशास्त्रसँ संबंधित विशिष्ट अध्ययनक नाम लिखू–

खगोलविज्ञान	खगोल	जीवविज्ञान
	(अ)	(क)
	(आ)	(ख)

16.8 सारांश

एहि अध्यायमे अहाँ पेट्रोलियमक संबंधमे पढ़लहुँ अछि । विज्ञानसँ सम्बद्ध विषयक अध्ययनक मुख्य उद्देश्य अछिकेँ मैथिली भाषाक माध्यमे विज्ञान संबंधी लेखन-विधिसँ परिचय करायब अछि । एकरा संगहि अहाँ पेट्रोलियमसँ संबंधित निम्नलिखित पक्षक जानकारी सेहो प्राप्त कयलहुँ अछि–

- पेट्रोलियमक निर्माण कोना भेल ?
- पेट्रोलियमक स्रोत कोन प्रकारेँ कयल जाइत अछि ?
- पेट्रोलियम प्राप्तिक हेतु भू-खनन कोना कयल जाइत अछि ?
- पेट्रोलियम प्राप्तिक बाद ओकरा कोना शोधन कयल जाइत अछि तथा ओहिसँ आओर कोन वस्तु प्राप्त होइत अछि ?

एकर अतिरिक्त अहाँ ऊर्जाक विभिन्न स्रोतक ज्ञान सेहो प्राप्त कयलहुँ ।

एहि लेहेँ अहाँ उक्त विषयकेँ अपन शब्दमे लिखि सकैत छी ।

एहि इकाइमे अहाँ देखि लेलहुँ अछि जे पारिभाषिक शब्दक अर्थ की अछि तथा ओकर प्रयोगक की महत्व अछि ? हम आशा करैत छी जे एहिमे प्रयुक्त किछु पारिभाषिक शब्दक व्याख्या अहाँ स्वयं करबामे समर्थ होयब ।

16.9 अभ्यासक उत्तर

अभ्यास-1

1) (अ) असत्य (आ) सत्य (इ) सत्य (ई) असत्य (उ) असत्य

2) (अ) उद्भिद् (आ) सरित (इ) खनिज तेल (ई) भूभौतिकी (उ) 5.7

3) (अ) हल्लुक (आ) कठोर (इ) गाढ़ (ई) एस्फाल्ट

4) (क) (अ) सभसँ पहर तरल पदार्थ पीपमे प्रकाशक हेतु ।

(आ) सभसँ भारी पदार्थमे तुलीकेटिंग तेलक रूपमे ।

(इ) सभसँ गाढ़ मोमबत्ती बनबाक हेतु ।

(ख) (अ) भूगर्भशास्त्रीय ।

(आ) भूभौतिकी ।

(इ) भूरसायनिकी ।

5) (अ) सभसँ निचला तलमे खनिज तेल पैराफिन तलमे एस्फाल्ट आदि बहल रहैत छैक ।

प्रथम ट्रे	-	तुलीकेटिंग आयल
द्वितीय ट्रे	-	डीजल
तृतीय ट्रे	-	किरासन तेल
चतुर्थ ट्रे	-	पेट्रोल
सभसँ ऊपर	-	पेट्रोलियम गैसक रूपमे
(आ) द्वितीय स्तर	-	भूगर्भशास्त्रीय परीक्षण
तृतीय स्तर	-	भूभौतिकी परीक्षण
चतुर्थ स्तर	-	भूरसायनिकी परीक्षण

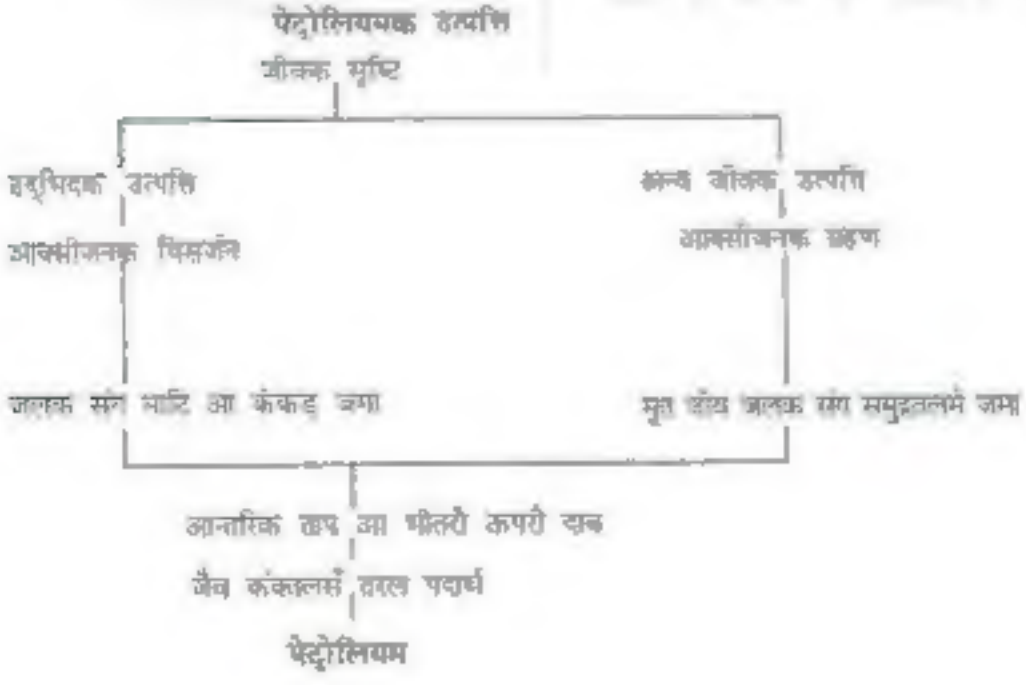

विविध

7) अ) लकड़ी, कोइला

आ) पेट्रोलियम, पदार्थ, विद्युत् ऊर्जा, नाभिकीय ऊर्जा ।

इ) कोइलासँ, लकरा ताप विद्युत् बनाओल जाइत अछि ।

जलक द्वारा, जकिरसँ फनिजलो बनैत अछि ।

ई) सौर ऊर्जा, वात आ वायुक संचालनसँ उत्पन्न ऊर्जा ।

पेट्रोलियम पदार्थ तथा कोइलाक भंडारकेँ खतम होयबाक आशंका ।

नाभिकीय ऊर्जामे अपशिष्ट (रेडियोधर्मिता)क प्रदूषणक खतरनाक कारण ।

उ) प्राकृतिक ऊर्जाक निर्माण खर्चीला होइत अछि ।

प्राकृतिक ऊर्जाकेँ सभ जगह आ सभ समय प्रयुक्त नहि कयल जा सकैत अछि ।

अभ्यास-2 :

1) (अ) प्लास्टिक चट्टान (आ) पेट्रोलियम

(इ) निलंबन सेतु (ई) भूगर्भशास्त्रीकेँ परीक्षण

(उ) भूकंप (ऊ) हिलिंग रिंग

2) (अ) -4 (आ) -5 (इ) -1 (ई) -2

(उ) -3

3) (अ) खगोल भौतिकी (आ) खगोल रसायनिकी

(इ) जैव भौतिकी (ई) जैव रसायनिकी

******